स्वाध्याय स्वमन्थन स्वावलम्बन

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय

इलाहाबाद

UGFODL

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा

प्रथम खण्ड : मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की अवधारणा एवं ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

द्वितीय खण्ड : मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में छात्र सहायता सेवायें

तृतीय खण्ड : मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की संगठनात्मक संरचना

चतुर्थ खण्ड : मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में चुनौतियाँ

विश्वविद्यालय परिसर

शान्तिपुरम् (सेक्टर-एफ), फाफामऊ, इलाहाबाद - 211013

खण्ड

1

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की अवधारणा एवं ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

इकाई-1 5
मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का स्वरूप एवं आवश्यकता

इकाई-2 17
मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का विकास

इकाई-3 29
दूरस्थ शिक्षक

इकाई-4 41
दूरस्थ विद्यार्थी

प्रथम–1 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की अवधारणा एवं ऐतिहासिक परिपेक्ष्य

इकाई–1 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का स्वरूप एवं आवश्यकता
इकाई–2 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का विकास
इकाई–3 दूरस्थ शिक्षक
इकाई–4 दूरस्थ विद्यार्थी

द्वितीय–2 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में छात्र सहायता सेवाएं

इकाई–5 स्व अध्ययन सामग्री
इकाई–6 परामर्श सेवायें
इकाई–7 अधिन्यास
इकाई–8 सूचना एवं सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी

तृतीय–3 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की संगठनात्मक संरचना

इकाई–9 राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
इकाई–10 राज्य मुक्त विश्वविद्यालय
इकाई–11 राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान
इकाई–12 दूरस्थ शिक्षा परिषद्

चतुर्थ–4 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा मे मूल्यांकन एवं चुनौतियां

इकाई–13 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की समस्यायें
इकाई–14 दूरस्थ शिक्षा में प्रशिक्षण
इकाई–15 दूरस्थ शिक्षा में मूल्यांकन
इकाई–16 दूरस्थ शिक्षा में अनुसंधान

खण्ड–1 मुक्त एवं दूरस्थ की अवधारणा एवं ऐतिहासिक परिपेक्ष्य

खण्ड परिचय

प्रस्तुत खण्ड में दूरस्थ शिक्षा की अवधारणा एवं ऐतिहासिक परिपेक्ष्य के बारे मे विस्तार से चर्चा की गई है। इकाई 1 में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के स्वरूप एवं आवश्यकता से विद्यार्थियों को परिचित कराया गया है। वास्तव में दूरस्थ शिक्षा परम्परागत शिक्षा प्रणाली के विकल्प के रूप में उभर कर सामने आयी है, किन्तु दूरस्थ शिक्षा परम्परागत शिक्षा प्रणाली के समान ही शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति में समर्थ है। जन संचार साधन के समाज में बढ़ते प्रयोग ने दूरस्थ शिक्षा को सरल एवं व्यापक बना दिया है। दूर शिक्षा प्रणाली लचीली होती है और छात्र को केन्द्र मानकर इसकी संरचना की गई है।

इकाई 2 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के विकास से सम्बन्धित है। शिक्षा के सार्वजनीकरण और लोकतंत्रीकरण के प्रयासों के कारण दूरस्थ शिक्षा एक पद्धति के रूप में विकसित और विकासशील देशों में विकसित हुई। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर दूरस्थ शिक्षा का आविर्भाव पत्राचार शिक्षा के रूप में हुआ। प्रथम मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना इंग्लैड में विगत शताब्दी में हुई। इसके पश्चात विश्व के अनेक देशों जैसे अर्जेन्टीना, मलेशिया, चीन, आस्ट्रेलिया रूस श्री लंका आदि में यह शिक्षा लोकप्रिय हुई। भारत वर्ष में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय 1985 में स्थापित किया गया। राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना के पश्चात् विभिन्न प्रदेशों में मुक्त विश्वविद्यालयों की स्थापना का क्रम जारी है। दूरस्थ शिक्षा के विकास को दृष्टि में रखकर इसे पांच पीढ़ियों में वर्गीकृत किया गया है इस वर्गीकरण को सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT) को ध्यान में रखकर किया गया है।

इकाई 3 में दूरस्थ शिक्षक की बहुआयामी भूमिका के बारे में विस्तार से चर्चा की गई है। दूरस्थ शिक्षक को विविध प्रकार के कार्य सम्पन्न करने होते हैं। परामर्शदाता के रूप में वह सत्रीय कार्य में छात्रों की सहायता करता है। इसके अतिरिक्त दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों की सूचनाओं का आदान प्रदान भी करता है। परामर्शदाता, अधिन्यास कार्य का मूल्यांकन एवं परीक्षण भी करता है। स्वअध्ययन सामग्री के निर्माता के रूप में उसकी भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। लेखक के रूप में वह अपना कार्य अनुबन्ध के आधार पर करता है। प्रश्न पत्र के निर्माण का कार्य भी दूरस्थ शिक्षक करता है। उसका एक अन्य महत्वपूर्ण उत्तर दायित्व उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन है। समन्वयक के रूप में वह अध्ययन केन्द्र के समस्त शैक्षिक एवं प्रशासनिक कार्यों के लिए उत्तरदायी होंता है।

इकाई 4 में दूरस्थ शिक्षा को पूर्ण रूप से समझने के लिये दूरस्थ विद्यार्थियों की प्रकृति,, विशेषताओं तथा अधिगम शैलियों के बारे में विवेचना की गई है। सामान्य रूप से दूरस्थ विद्यार्थियों को वयस्क विद्यार्थी, युवा विद्यार्थी, विकलांग विद्यार्थी, महिला विद्यार्थी के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। दूरस्थ विद्यार्थी को विविध प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन विद्यार्थियों की विशिष्ट शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये एवं उनकी विविध समस्याओं को दूर करने के लिये लचीली व व्यवहारिक प्रणाली की आवश्यकता है।

इकाई – 1 दूरस्थ शिक्षा का स्वरूप एवं आवश्यकता

पाठ्यक्रम संरचना :

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 दूरस्थ शिक्षा का स्वरूप

1.4 दूरस्थ शिक्षा की परिभाषायें

1.5 दूरस्थ शिक्षा में प्रयुक्त होने वाले प्रचलित शब्द

1.6 सारांश

1.7 अभ्यास कार्य

1.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1.1 प्रस्तावना

आप मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के स्नातक स्तर के छात्र हैं, परन्तु इसके पूर्व आपमें से अधिकाशं लोगों ने पारम्परिक शिक्षण विधि के माध्यम से कक्षा 12वीं तक अध्ययन किया होगा। परम्परागत शिक्षण में अध्यापक और विद्यार्थी का सम्पर्क नियमित रूप से एक निश्चित समय पर होता है परन्तु दूरस्थ शिक्षा में अध्यापक और विद्यार्थी का सम्पर्क बहुत कम समय के लिये होता है। दूरस्थ शिक्षा का आधार स्वअधिगम सामग्री है, जिसका निर्माण इस प्रकार किया जाता है कि छात्र को अध्यापक की कमी महसूस न हो अर्थात् स्वअध्ययन सामग्री की भाषा, लिखने का तरीका ऐसा होता है कि जैसे छात्र और अध्यापक संवाद कर रहे हैं। स्व अध्ययन सामग्री के विषय में विस्तार से वर्णन बाद की इकाईयों में किया गया है। यहाँ यह जानना आवश्यक है कि दूरस्थ शिक्षा में अध्यापक और विद्यार्थी आमने सामने बैठकर (F2F) अध्ययन नहीं करते। दूर शिक्षा परम्परागत शिक्षा प्रणाली के विकल्प के रूप में उभर कर सामने आयी है, किन्तु दूरस्थ शिक्षा परम्परागत शिक्षा प्रणाली के समान ही शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति में समर्थ हैं। इसे flk{kk d su okpk d s: Jke$kk t kjgkgS lpuk ,oal Eisk krd uhd (ICT) के समाज में बढ़ते प्रयोग ने दूरस्थ शिक्षा को सरल और आसान बना दिया है। दूर शिक्षा प्रणाली लचीली होती है, और छात्र को केन्द्र मानकर इसकी संरचना की जाती है। इसमें शिक्षक और शिक्षार्थी दूर बैठे होते है और शैक्षिक विचारों के आदान –प्रदान के लिये विभिन्न साधन अपनाये जाते हैं। दूरस्थ शिक्षा इस अर्थ में अनोखी है कि इसमें छात्रों में स्वस्थ प्रतियोगिता बढ़ाने, विचारों के आदान प्रदान के लिये नये प्रयोग किये जाते है।

इससे वे सभी लोग लाभ उठा सकते हैं जिनकी पढ़ाई किसी कारण छूट गई है, अथवा जिनके लिये नौकरी या घर गृहस्थी के कारण आगे पढ़ना सम्भव न हो, किन्तु उनमें ज्ञान और डिग्री पाने की लालसा हो।

1.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आप इस योग्य हो जायेंगे कि–

- दूरस्थ शिक्षा के स्वरूप को भली–भाँति समझ जायेंगे।
- दूरस्थ शिक्षा की विभिन्न परिभाषाओं का विश्लेषण कर सकेंगे।
- दूरस्थ शिक्षा के समानार्थी शब्दों की व्याख्या कर सकेंगे।
- दूरस्थ शिक्षा की आवश्यकता और महत्व को समझ सकेंगे।

1.3 दूरस्थ शिक्षा का स्वरूप

दूरस्थ शिक्षा की मांग दिन पर दिन तेजी से बढ़ती जा रही है, परन्तु इसके स्वरूप को लेकर अभी तक भ्रान्तियां बनी हुई हैं। वस्तुतः दूरस्थ शिक्षा का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है, यह नियमों और सीमाओं के बन्धन से मुक्त है, इसकी विशेषता इसका लचीलापन है। इसमें शिक्षार्थी को शिक्षा प्राप्त करने के लिये किसी संस्थान में जाना नही पड़ता वरन् शिक्षा स्वयं उसके दरवाजे तक जाती है। इससे युवा छात्रों के अतिरिक्त वयस्क, प्रौढ़ गृहणियाँ, विकलांग सभी तरह के लोग लाभ उठा सकते हैं। शिक्षा जगत में इसे एक नूतन प्रयोग कहा जा सकता है। संचार–साधनों ने इसे और प्रभावी बना दिया है। दूरस्थ शिक्षा ने भौगोलिक बाधाओं को ध्वस्त कर दिया है। दूरस्थ शिक्षा की विभिन्न विशेषताओं द्वारा इसका स्वरूप आपको और सुस्पष्ट हो जायेगा। 'मुक्त' या 'खुला' शब्द सामान्य रूप से दूरगामी शिक्षा के संदर्भ में प्रयोग किया जाता है। वस्तुतः यह शिक्षा की वह प्रणाली है जहाँ प्रतिबन्ध नहीं होते, न प्रवेश पर प्रतिबन्ध, न उपस्थिति पर प्रतिबन्ध, जितना अधिक से अधिक इन प्रतिबन्धों पर ध्यान नहीं दिया जायेगा उतना ही शिक्षा पद्धति लचीली हो जायेगी। दूरवर्ती शिक्षा शब्द बहुत व्यापक है दूरवर्ती शिक्षा ऐसे छात्रों को अध्ययन के अवसर प्रदान करती है जो आर्थिक दृष्टि से गरीब, गाँव में सुदूर निवास करते है। दूरवर्ती शिक्षा में अध्यापक तथा छात्र अलग–अलग होते हैं, तकनीकी माध्यमों का प्रयोग किया जाता है। छात्र समूह में नहीं होते पारस्परिक सम्प्रेषण के अवसर कम मिलते है। दूरवर्ती शिक्षा का उद्भव सामाजिक माँगों के फलस्वरूप हुआ है। संगठन एवं संरचना की दृष्टि से दूरवर्ती शिक्षा बहुत ही व्यापक प्रणाली है। इसका उद्देश्य ज्ञान एवं अधिगम को भिन्न – भिन्न स्थानों तक पहुँचाना है। दूरवर्ती शिक्षा मुद्रित सामग्री के अतिरिक्त औद्योगिक तथा

तकनीकी साधनों पर आधारित है।

दूरस्थ शिक्षा की प्रमुख विशेषतायें

- दूरस्थ शिक्षा का विद्यार्थी स्व अध्ययन सामग्री के माध्यम से स्वप्रेरित होकर अध्ययन करता है।
- इस शिक्षा में शिक्षक और शिक्षार्थी आमने सामने (एफ 2 एफ) बैठकर अध्ययन अध्यापन कार्य नहीं करते हैं।
- मुद्रित तथा तकनीकी संसाधनों की सहायता से शिक्षा प्रक्रिया आगे बढ़ती है।
- शिक्षक शिक्षार्थी के मध्य संवाद मूलतः स्वअध्ययन सामग्री के माध्यम से होता है।
- इसके द्वारा सभी प्रकार के पाठ्यक्रम चलाये जा सकते हैं। यह आम धारण गलत है कि प्रयोगात्मक विषय इसके द्वारा नहीं पढ़ाये जा सकते।
- दूरस्थ शिक्षा में अध्ययन केन्द्र जो परम्परागत शिक्षा प्रणाली के अंग होते हैं। वे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- मुक्त और दूरस्थ शिक्षा में परामर्शदाता छात्रों की समस्याओं का निदान करने के लिये उपलब्ध रहता है।
- परीक्षा और मूल्यांकन विधि परम्परागत शिक्षण से कुछ सीमा तक मेल खाती है।

1.4 दूरस्थ शिक्षा की परिभाषायें

विद्यार्थियों दूरस्थ शिक्षा का स्वरूप तीव्र गति से बदलते समाज में परिवर्तित होता जा रहा है। नवीन संसाधनों के विकास से इसकी प्रकृति में परिवर्तन हुआ है। इससे इसकी गुणवत्ता और प्रभाव बढ़ा है। 'दूरस्थ शिक्षा' शब्द को अनेक नामों से जाना जाता है जैसे दूरवर्ती शिक्षा, दूर शिक्षा, पत्राचार शिक्षा (Correspondence Education), मुक्त अधिगम (Open Learning), गृह अध्ययन (Home Study), परिसर के बाहर अध्ययन (Off Campus Study), इसे बहु माध्यम उपागम (Multi Media Approach), भी कहते हैं। दूरस्थ शिक्षा को गैर सरकारी उपागम के रूप में भी जाना जाता है। इसमें मुद्रित एवं अमुद्रित बहु माध्यमों का प्रयोग शिक्षण तथा छात्र के मध्य संचार के लिये किया जाता है। इसमें शिक्षक तथा छात्र एक दूसरे से अलग रहकर आवश्यक कार्यो तथा उत्तरदायित्व को निभाते हैं। दूरवर्ती शिक्षा ज्ञान, कौशल तथा अभिवृत्ति प्रदान करने की एक विधि है। इसमें छात्र परामर्श, अधिगम सामग्री का प्रस्तुतीकरण तथा छात्रों की प्रगति का निरीक्षण अध्यापकों के एक समूह द्वारा किया जाता है। इसमें स्वतः अध्ययन को महत्व दिया गया है। तकनीकी माध्यमों का प्रयोग

या मुद्रित व अमुद्रित माध्यम जैसे रेडियो, टेलीवीजन कम्प्यूटर, अध्यापक तथा छात्र को जोड़ने के लिये तथा पाठ्यक्रमों को पहुंचाने के लिये होते है। पत्राचार शिक्षा को परम्परागत शिक्षा का प्रसार माना जा सकता है, जबकि दूरवर्ती शिक्षा बहु माध्यम शिक्षण प्रणाली पर आधारित है। विभिन्न शिक्षाविदों ने इसे परिभाषित करने के प्रयास किये हैं। आप दूरस्थ शिक्षा का विद्यार्थी होने के नाते विभिन्न परिभाषाओं के विश्लेषण तथा संश्लेषण से मुक्त एक दूरस्थ शिक्षा की प्रकृति और अच्छी तरह समझ सकेंगे। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में शिक्षक तथा शिक्षार्थी एक दूसरे से दूर रहकर अपने अपने कार्यो एवं उत्तरदायित्वों को वहन करते हैं और बीच – बीच में विभिन्न साधनों द्वारा सम्पर्क करते हैं। उक्त तथ्य के विश्लेषण से स्पष्ट होता है।

- दूरस्थ शिक्षा में शिक्षक और शिक्षार्थी के मध्य दूरी होती है।
- शिक्षक और छात्र के मध्य कभी – कभी सम्पर्क होता है।

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की संरचना में पार्ट टाइम अध्ययन करने वालों को भी दूर रहकर पढ़ने के अवसर दिये जाते है। **मैकेंजी (1975)**

इस परिभाषा से दृष्टिगत होता है कि–

- वे लोग जिन्हें किसी कारणवश पढ़ाई छोड़नी पड़ी, वयस्क लोग जो पढ़ने के अवसर खो चुके हैं। वे लोग ज्ञान, कौशल, योग्यता, अर्जित करना चाहते हैं। उन सभी के लिये इसमें शिक्षा की व्यवस्था की गई है।
- ये शिक्षा पार्ट टाइम अध्ययन की सुविधा प्रदान करती है।

"दूरस्थ शिक्षा का केन्द्र बिन्दु स्व अध्ययन सामग्री है। इसमें अध्यापकों की टीम द्वारा मूल्यांकन कराया जाता है।" **डोहमैन**

इस परिभाषा में निम्न बिन्दुओं पर बल दिया गया है।

(1) दूरस्थ शिक्षा का केन्द्र बिन्दु स्व अध्ययन सामग्री है।

(2) इसमें समय – समय पर परामर्श एवं मूल्यांकन भी कराया जाता है।

"दूरस्थ शिक्षा ज्ञान और कौशल देने की एक विधि है। सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीक (ICT), तथा शिक्षा सामग्री के द्वारा दूरस्थ शिक्षा बहुत से छात्रों को एक साथ दी जा सकती है।" **ओटो पीटर्स**

इस परिभाषा के दो मुख्य बिन्दु है।

(1) दूरस्थ शिक्षा ज्ञान और कौशल देने की विधि है।

(2) इसमें बहुत छात्रों को एक साथ पढ़ाया जा सकता है, अर्थात यह जन शिक्षा पर बल देती है।

"दूरस्थ शिक्षा के अन्तर्गत सम्पूर्ण अध्ययन प्रक्रिया में अध्यापक और

विद्यार्थी एक दूसरे से अलग होते हैं, स्व अध्ययन सामग्री शिक्षण का आधार होती है तथा विभिन्न साधनों के द्वारा शिक्षक एवं शिक्षार्थी के मध्य अल्पकालिक सम्पर्क स्थापित किया जाता है।" **कीगन**

इस परिभाषा के आधार पर दूर शिक्षा की निम्न विशेषतायें ज्ञात होती है

(1) दूरस्थ शिक्षा में अध्यापक और विद्यार्थी अलग – अलग होते हैं।

(2) दूरस्थ शिक्षा में छात्र सहायता सेवाओं और स्वअध्ययन सामग्री का विशेष महत्व है।

"ऐसा प्रतीत होता है कि दूरस्थ शिक्षा एक प्रकार का कार्यक्रम है। जिसके अन्तर्गत सुनियोजित ढ़ंग से एक साथ शैक्षिक निर्देशन से अनेक विद्यार्थी से लाभान्वित होते हैं।"

इससे स्पष्ट है कि––

(1) दूरस्थ शिक्षा एक सुनियोजित ढंग से चलने वाला कार्यक्रम है।

(2) इसमें बहुत से विद्यार्थी लाभान्वित हो सकते है।

आशा है कि उपरोक्त परिभाषाओं के अध्ययन के उपरान्त आप दूरस्थ शिक्षा की अवधारणा को समझ गये होंगें। उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर सार रूप में दूरस्थ शिक्षा की निम्न विशेषतायें स्पष्ट परिलक्षित होती हैं।

(1) मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में अध्यापक और अध्येता के मध्य भौगोलिक दूरी होती है।

(2) स्व अधिगम सामग्री इस प्रकार निर्मित की जाती है कि विद्यार्थी को पढ़ते समय अध्यापक की कमी अनुभव न हों।

(3) छात्र सहायता सेवाओं को सुनियोजित ढंग से आयोजित किया जाता है जिससे सीखने की प्रक्रिया सहज, स्वाभाविक और प्रभावी हों।

(4) सूचना और सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी (ICT) की इस शिक्षा पद्धति में अहम् भूमिका है।

(5) मूल्यांकन पद्धति की प्रकृति कुछ भिन्नताओं के बावजूद परम्परागत शिक्षण प्रणाली से मेल खाती प्रतीत होती है।

पाठकगणों आगे की इकाई में हम इन सभी विशेषताओं का विस्तार से अध्ययन करेंगे। आशा है अब तक दूरस्थ शिक्षा की प्रवृत्ति की रूपरेखा आपके मानस पटल पर बन गई होगी।

बोध प्रश्न

1) दूरस्थ शिक्षा क्या है?

.....

.....

.....

2) दूरस्थ शिक्षा को जनमानस की शिक्षा क्यों कहा गया है?

.....

.....

.....

3) डोडमैन और ओटो पीटर्स की परिभाषाओं की तुलना कीजिये।

.....

.....

.....

1.5 दूरस्थ शिक्षा के लिये प्रयुक्त होने वाले प्रचलित शब्द

आपने अक्सर देखा होगा कि लोग दूरस्थ शिक्षा को **"पत्राचार शिक्षा"** समझते हैं। आपके मन में भी जानने की उत्सुकता होगी कि दूरस्थ शिक्षा और मुक्त शिक्षा एवं पत्राचार शिक्षा में वास्तव में कोई अन्तर है या वे एक ही हैं। क्या इसे गैर पारम्परिक शिक्षा कहना ठीक होगा, क्या यही 'जीवनपर्यन्त शिक्षा' अथवा 'प्रौढ शिक्षा' है। आप जानते हैं कि मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा ने सम्पूर्ण विश्व में अपना स्थान बना लिया है इस पर व्यय भी बहुत कम आता है। उन सभी विद्यार्थियों के लिये यह वरदान है जिन्हें किसी कारण से पारम्परिक शिक्षण संस्था में प्रवेश नही मिल पाता है। अब हम दूरस्थ शिक्षा के लिये सामान्य रूप से प्रयुक्त होने वाले विविध शब्दों का अध्ययन करेंगे।

मुक्त शिक्षा :

जैसा इसके नाम से विदित है कि औपचारिक शिक्षा में प्रवेश, पाठ्यक्रम शिक्षण विधियों तथा मूल्यांकन पद्धति में कुछ प्रतिबन्ध और नियम लागू होते है। मुक्त शिक्षा में इन प्रतिबन्धों को ढीला कर देते है, या हटा देते हैं। इस प्रकार मुक्त शिक्षा अधिक लचीली हो जाती है। मुक्त शब्द इस बात का द्योतक है कि इस प्रणाली में प्रवेश के लिये आवश्यक योग्यता, परीक्षा के उदार नियम, अपनी गति से आगे बढ़ने के प्रावधान

है। मुक्त शिक्षा में शैक्षिक तथा प्रशासनिक नियंत्रण भी कठोर नही है। मुक्त शिक्षा अधिक से अधिक व्यक्तियों, अधिक से अधिक स्थानों पर दी जा सकती है। इसमें शिक्षण के लिये भी अनेक विधियों का प्रयोग किया जाता है। इसमें नवाचारों (Innovations) को अपनाने की स्वतन्त्रता है। मुक्त शिक्षा – परम्परागत – शिक्षा पद्धति के नियमों से मुक्त होकर शिक्षण कार्य करती है।

मुक्त शिक्षा प्रदान करने के लिये मुक्त विश्वविद्यालय की संरचना की गई। इस समय देश में एक राष्ट्रीय तथा 15 राज्य सरकार के विश्वविद्यालय कार्यरत हैं।

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा :

यहाँ पर आवश्यक है कि आप जान जायें कि मुक्त और दूरस्थ शिक्षा की संकल्पनायें क्या हैं? क्या वे एक – दूसरे से पृथक है या एक दूसरे की पूरक हैं, क्योंकि आज – कल मुक्त विश्व विद्यालय/दूरस्थ शिक्षा संस्थान जैसे शब्दों का प्रयोग प्रायः किया जाता है। वास्तव में दूर से तात्पर्य भौगोलिक दूरी है वास्तव में दूर से तात्पर्य भौगोलिक दूरी से है। दूर एक साधन है। जबकि मुक्तता (Openness) एक दर्शन (Philosophy) है। इससे तात्पर्य बन्धनों के लचीले होने से है। प्रायः इन दोनो को एक दूसरे के समानार्थी शब्दों के रूप में प्रयोग किया जाता है। मुक्त शिक्षा (Open Education) के साथ साथ मुक्त अधिगम (Open Learning) शब्द का प्रयोग भी शिक्षा जगत में किया जा रहा है। मुक्त अधिगम का शाब्दिक अर्थ है बिना किसी बन्धन के सीखना। इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रदान करने के क्षेत्र में अग्रणी है। इसका कार्यक्षेत्र न सिर्फ भारतवर्ष वरन् एशिया है।

वर्तमान समय में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का प्रयोग एक साथ किया जाता है। अर्थात् वह शिक्षा जिसमें शिक्षक शिक्षार्थी के मध्य भौतिक दूरी भी है तथा नियमों और प्रतिबन्धों में शिथिलता भी है। इसी अवधारणा को शिक्षा जगत में स्वीकार किया गया है। हम लोग भी मुक्त और दूरस्थ शिक्षा की इसी अवधारणा के साथ आगे की इकाईयों में अध्ययन करेंगे।

पत्राचार शिक्षा

पत्राचार शिक्षा मूलतः डाक व्यवस्था द्वारा अध्ययन सामग्री छात्रों को भेजने पर आधारित है। इसमें छात्र अध्ययन करके अभ्यास के प्रश्न हल करके भेजते है और अध्यापक उत्तरों को मूल्यांकित कर, टिप्पणी और सुझाव के साथ उसे छात्र को वापस भेजता है। इस तरह शिक्षक के मार्गदर्शन में शिक्षा प्रक्रिया आगे बढ़ती है। इसमें भी अल्पकालिक शिक्षक शिक्षार्थी सम्पर्क कार्यक्रम की व्यवस्था की गई है। साधारणतया इसमें अध्ययन करने वाले परिपक्व छात्र होते हैं जो स्वप्रेरणा द्वारा अध्ययन सामग्री का अध्ययन करते है। अध्ययन सामग्री अत्यन्त सावधानीपूर्वक विशेषज्ञों द्वारा लिखवायी

और सम्पादित की जाती है। सम्पर्क कार्यक्रमों में छात्र अपनी समस्याओं को अध्यापक के सामने रखता है। विचार विमर्श करता है और पाठ्यक्रम की समाप्ति पर परम्परागत शिक्षा की भाँति परीक्षा देकर पाठ्यक्रम पूरा करने में सफल होता है।

जहाँ तक दूर शिक्षा और पत्राचार में अन्तर का प्रश्न है। दोनो ही प्रकार की शिक्षा पद्धति स्वअध्ययन सामग्री पर निर्भर करते हैं। दूरस्थ शिक्षा में बहुमाध्यमों का प्रयोग बहुत होता है। साथ ही यह भी आवश्यक नही है कि छात्र और अध्यापक आपस में सम्पर्क करें। दूरस्थ शिक्षा में छात्र सहायता सेवायें बहुत उपयोगी एवं आवश्यक होती हैं। पत्राचार शिक्षण संस्थान किसी न किसी पारम्परिक विश्वविद्यालय के अंग रूप में कार्य करता है। अतः इसकी प्रवेश प्रक्रिया एवं मूल्यांकन पद्धति परम्परागत शिक्षण प्रणाली के समान होती है।

द्वि–विध पद्धति (Dual Mode System)

आप विद्यार्थीगणों को इस समय द्वि–विध (Dual Mode System) विश्वविद्यालयों के प्रत्यय को भी अवश्य समझ लेना चाहिये। जिन विश्व विद्यालयों में विश्वविद्यालय के साथ – साथ पत्राचार संस्थान संलग्न रहता है उन्हें द्विमार्गीय विश्वविद्यालय कहते हैं जैसे इलाहाबाद विश्वविद्यालय। कुछ स्थानों पर पत्राचार संस्थान स्वतन्त्र इकाई के रूप में कार्य करता है। पत्राचार संस्थान उच्च शिक्षा के अतिरिक्त माध्यमिक शिक्षा के स्तर पर भी कार्य करता है।

जीवन पर्यन्त शिक्षा (Life Long Education)

यूनेस्को की 'लर्निंग टू बी' में जीवन पर्यन्त चलने वाली शिक्षा पर बहुत बल दिया है। शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। मनुष्य जन्म से मृत्यु तक लगातार सीखता रहता है। मनुष्य स्वयं शिक्षक भी है और वह सीखता भी है और सिखाता भी है। मानव स्वभाव से सीखने के लिये उत्सुक रहता है। बच्चे युवा, प्रौढ़ सभी आयु वर्ग के लोग जीवन भर किसी न किसी रूप में सीखते रहते हैं। जीवन पर्यन्त शिक्षा एक प्रक्रिया है एक अवधारणा है। दर्शन और आदर्श भी है। शिक्षा आजीवन चलने वाली एक ऐसी विचारपूर्ण प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति का शारीरिक, बौद्धिक, भावात्मक, सामाजिक, आध्यात्मिक आदि विकास सम्यक रीति से होता है। इसके फलस्वरूप व्यक्ति अपने व्यवहार में परिवर्तन और परिवर्द्धन लाता है। जिसमें व्यक्ति, जाति समाज और राष्ट्र तथा विश्व सभी का हित होता है। जीवन पर्यन्त शिक्षा की अवधारणा को भली भाँति समझने के लिये शिक्षाविदों द्वारा दी गई परिभाषाओं का अध्ययन आवश्यक है।

"जीवन पर्यन्त शिक्षा योजनाबद्ध मानवीय आधारित घटनाओं की श्रंखला है"।

जारीवस (1990)

"जीवन पर्यन्त शिक्षा जीवन भर चलती रहती है। जिससे व्यक्ति और समुदाय के जीवन स्तर को उन्नत बनाया जा सकें"। दूबे (1976)

"जीवन पर्यन्त शिक्षा एक प्रक्रिया है। व्यक्ति औपचारिक, निरौपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा से सीखता है"। यूनेस्को (1976)

सार रूप में जीवन पर्यन्त शिक्षा एक अत्यन्त व्यापक अवधारणा है। इसके अन्तर्गत वे सभी प्रक्रियायें शामिल हैं। जिससे व्यक्ति शिक्षा पाता रहता है। इसमें व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास की सम्भावनायें निहित होती हैं।

आशा है अब–तक आप मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के स्वरूप को जान गये होंगे। साथ ही मुक्त शिक्षा, दूरस्थ शिक्षा, पत्राचार शिक्षा जीवन पर्यन्त शिक्षा, जैसे शब्दों के अभिप्राय को भी समझ गये होंगे। अब आप आसानी से मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के मध्य अन्तर कर सकेंगे।

बोध प्रश्न

4) मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

5) दूरस्थ शिक्षा एवं पत्राचार शिक्षा के मध्य अन्तर स्पष्ट कीजिये–

.....

.....

.....

6) 'जीवन पर्यन्त शिक्षा' का स्वरूप अत्यन्त व्यापक है' स्पष्ट कीजिये –

.....

.....

.....

दूरस्थ शिक्षा आज मानव समाज की सर्वाधिक एवं सशक्त आवश्यकता के रूप में विकसित हो रही है। यह एक मात्र ऐसी शिक्षा व्यवस्था है जो 21वीं शताब्दी की आवश्यकताओं को पूरा कर सकती है। कुछ वर्षो पूर्व तक दूरस्थ शिक्षा औपचारिक शिक्षा की पूरक शिक्षा व्यस्था मानी जाती रही हैं, लेकिन 21वीं सदी के आगमन के साथ दूरस्थ शिक्षा अपने अभिनव स्वरूप के साथ उभरी है। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा को भारतीय संविधान ने शैक्षिक विकल्प के रूप में स्वीकार किया है। सामाजिक परिवर्तन की तीव्र गति, जनसंख्या वृद्धि, ज्ञान का विस्फोट और सीमित शैक्षिक साधन आदि के कारण पारम्परिक शिक्षा सभी को सुलभ नही हो सकती तथा भौगोलिक दृष्टि से दूरवर्ती क्षेत्रों में रहने वाले जनसमूहों तक यह नही पहुँच सकती है। ऐसी स्थिति में मुक्त अधिगम एवं दूरस्थ शिक्षा ही एक मात्र विकल्प के रूप में लोगों को शिक्षित करने में

सहायक सिद्ध हो रही है।

इस शिक्षा ने स्थान एवं समय की सीमा को अस्वीकार करते हुए तीव्र गति से विस्तार के चरम लक्ष्य को प्राप्त कर लिया है। इसकी पहचान समाज के विभिन्न समुदायों जैसे गरीब वर्ग, श्रमिक, गृहणी, विकलांग, वंचित एवं दूर–दराज के क्षेत्रों में रहने वाले लोगों में उच्च शिक्षा मुहैया कराने के रूप में की जा रही है। यह लचीली, मितव्ययी, जनतांत्रिक और, प्रभावशाली प्रणाली है। यह सभी लोगों को शिक्षा के समान अवसर 'प्रदान करने में' सहायता प्रदान कर रही है। आज के औद्योगिक और वैज्ञानिक युग में सभी देशों में शिक्षा का महत्व बढ़ा है। प्रत्येक आयु और प्रत्येक वर्ग का व्यक्ति अपनी आवश्यकता के अनुरूप शिक्षा प्राप्त करना चाहता है। प्रत्येक व्यक्ति की शैक्षिक आवश्यकतायें भिन्न होती हैं। साथ ही जीवन यापन करने की परिस्थितियाँ भी भिन्न होती है। ऐसी स्थिति मं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली शिक्षा के प्रसार तथा समान अवसर प्रदान करने में सार्थक सिद्ध हुई है। दूरस्थ शिक्षा गरीब देशों के लिये बहुत उपयोगी है जहाँ सीमित संसाधन के कारण सभी को शिक्षा नहीं दे पाते हैं।

भारत वर्ष में तीव्र गति से बढ़ती हुई जनसंख्या को सुशिक्षित करने हेतु और समाज के प्रत्येक वर्ग में शिक्षा का उचित प्रचार एवं प्रसार करने हेतु दूरस्थ शिक्षा की आवश्यकता अनुभव की जा रही है। सार रूप में दूरस्थ शिक्षा की आवश्यकता निम्न रूपों में समझाा जा सकता है।

- शिक्षा के सार्वभौमीकरण हेतु
- शिक्षा की बढ़ती माँग की पूर्ति हेतु।
- जीवन पर्यन्त शिक्षा के लिये।
- स्त्री शिक्षा हेतु।
- प्रौढ़ शिक्षा, ग्रामीण शिक्षा, विकलांगों की शिक्षा हेतु।
- कौशलों की अभिवृद्धि हेतु।
- सस्ती शिक्षा उपलब्ध कराने हेतु।

बोध प्रश्न

7) मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा को शैक्षिक विकल्प के रूप में क्यों स्वीकार किया गया है ?

.....

.....

8) मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की विशेषतायें बताइये–

.....

.....

.....

1.6 सारांश

दूरस्थ शिक्षा परम्परागत शिक्षा प्रणाली के विकल्प के रूप में उभर कर सामने आयी है, किन्तु दूर शिक्षा परम्परागत शिक्षा प्रणाली के समान ही शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति में समर्थ है। जन संचार साधन के समाज में बढ़ते प्रयोग ने दूरस्थ शिक्षा को सरल एवं व्यापक बना दिया है। दूरस्थ शिक्षा प्रणाली लचीली होती है और छात्र को केन्द्र मानकर इसकी संरचना की गई है।

दूरस्थ शिक्षा की माँग दिन पर दिन तेजी से बढ़ती जा रही है। दूरस्थ शिक्षा ज्ञान और कौशल के विकास की एक विधि है। दूरस्थ शिक्षा को मुक्त शिक्षा, पत्राचार आदि जीवन पर्यन्त शिक्षा जैसे विविध नामों से जाना जाता है। इसकी पहचान समाज के विभिन्न समुदायों जैसे गरीब वर्ग, श्रमिक, गृहणी, विकलांग, वंचित एवं दूर–दराज के क्षेत्रों में रहने वाले लोगों में उच्च शिक्षा मुहैया कराने के रूप में की जा रही है।

1.7 अभ्यास कार्य

(1) मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा से आप क्या समझते हैं?

(2) शिक्षा के लोकतन्त्रीकरण में दूरस्थ शिक्षा की भूमिका बताइये।

(3) दूरस्थ शिक्षा और पारम्परिक शिक्षा में अन्तर स्पष्ट कीजिये।

1.8 बोध प्रश्नो के उत्तर –

1. दूरस्थ शिक्षा में Distance का कोई अर्थ नही होता यह भौगोलिक दूरी की ओर संकेत करता है।
2. दूरस्थ शिक्षा ऐसे छात्रो को अध्ययन के अवसर प्रदान करती है जो आर्थिक दृष्टि से कमजोर है। एवं सुदूर गॉव में निवास करते है
3. डोडमैन ने स्वाध्ययन सामग्री केन्द्र बिन्दु है जब कि ओटोपीटर्स की परिभाषा में सूचना एवं संम्प्रेषण तकनीक पर बल दिया गया है ।
4. शिक्षा की इस प्रणाली में प्रतिबन्ध नही होते हैं न प्रवेश पर प्रतिबन्ध, उपस्थिति पर प्रतिबन्ध,
5. पत्राचार शिक्षा को परम्परागत शिाक्षा का प्रसार माना जा सकता है जबकि दूरवर्ती शिक्षा बहुमाध्यम प्रणाली पर आधारित है जबकि मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में शिक्षक तथा शिक्षार्थी एक दूसरे से दूर रहकर अपने अपने कार्यो एवं

उत्तरदायित्वो का निवर्हन हैं ।

6. शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। मनुष्य जन्म से मृत्यु तक लगातार सीखता रहता है मनुष्य स्वयं शिक्षक भी है और वह सीखता भी है । मनुष्य स्वभाव से सीखने के लिए उत्सुक रहता है।

7. मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली भी परम्परागत प्रणाली के समान ही शैक्षिक उद्धेश्यो की पूर्ति मे समर्थ है अतः इसे शैक्षिक विकल्प के रूप में स्वीकार किया गया है ।

8. मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की निम्न विशेषताएं हैं :

   1. छात्र एवं अध्यापक के मध्य भौगोलिक दूरी
   2. लचीली शिक्षा पद्धति
   3. मुक्त अधिगम
   4. लचीली प्रवेश प्रक्रिया
   5. परीक्षा के उदार नियम

1.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- गुप्ता, एस0 पी0 –भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्यायें, इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन, 1998
- गुप्ता एस0 पी0 – शिक्षा का ताना–बाना, इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन, 2000
- शर्मा, आर0 ए0 – डिस्टैन्स ऐजूकेशन, मेरठः ईगल बुक्स इन्टरनेशनल, 1995
- शर्मा, आर ए0 – दूरवर्ती शिक्षा, मेरठः सूर्या पब्लिशिंग 1996
- साहू, पी0 के0 – ओपन लर्निंग सिस्टम, न्यू देल्ही : उप्पल पब्लिकेशन्स,. 1994
- साहू, पी0 के0 – ऐजूकेशनल टेक्नोलोजी इन डिस्टेनस, न्यू देल्हीः अरावली, 1999
- Keegan, D. (1985): The Foundation of Distance Education, Croom Helm, London. Bhushan and Bhushan,(1999). Distance Teacher Education- Self Instructinal Material (Planning, Design and Development).New Delhi

इकाई – 2 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का विकास

संरचना

2.1. प्रस्तावना

2.2. उद्देश्य

2.3. अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा

2.4. भारत में दूरस्थ शिक्षा का विकास

2.5. दूरस्थ शिक्षा की पीढ़ियाँ

2.5.1– पत्राचार शिक्षा

2.5.2– टेली लर्निंग एप्रोच

2.5.3– मल्टी मीडिया एप्रोच

2.5.4– फ्लेक्सबिल लर्निंग एप्रोच

2.5.5– आन लाइन एप्रोच

2.6. सारांश

2.7. अभ्यास कार्य

2.8–बोध प्रश्नों के उत्तर

2.9–कुछ उपयोगी पुस्तके

2.1 प्रस्तावना

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा विश्व की सर्वाधिक महत्वपूर्ण शैक्षिक विचारधारा है। विश्व के लगभग सभी देशों में दूरवर्ती शिक्षा का उदय सामाजिक बाध्यताओं, परिवर्तन की गतिशीलता एवं नव संस्कृति के दबावों के फलस्वरूप हुआ है। इसे क्रान्तिकारी विकास की संज्ञा भी दी जाती है इसका कारण यह है कि इसने सदियों से चलने वाली परम्परागत शिक्षा पद्धति को नया आयाम दिया है। इसका उद्भव (Old Testament) ओल्ड टेस्टामेन्ट के अनुदेशनात्मक लेखों में देखा जा सकता है। आज के युग में तकनीकी आधारित दूरस्थ शिक्षा समस्त विश्व में उच्च शिक्षा देने का प्रभावशाली साधन है। यह शिक्षाशास्त्र के शिक्षार्थी के लिए उपयुक्त है जबकि इसके उद्भव एवं विकास पर चर्चा की जाये।

यदि दूरस्थ शिक्षा का इतिहास खोंजने की चेष्टा करें तो शिक्षण अधिगम की इस पद्धति का उद्भव पत्रों एवं साहित्यिक लेखों में देखा जा सकता है। 1840 में

सुव्यवस्थित ढ़ंग से पत्र व्यवहार के द्वारा दूरस्थ शिक्षा प्रारम्भ हुई। इस समय का द्विमार्गी पत्र व्यवहार दूरवर्ती शिक्षा की प्रमुख विशेषता रही है। सम्पूर्ण विश्व में पत्राचार शिक्षा कार्यक्रमों के प्रारम्भिक रूपों के लिये अनेक नाम है जैसे गृह अध्ययन, डाक द्वारा शिक्षण, पत्राचार पाठ्यक्रम, स्वतन्त्र अध्ययन या स्वाध्याय आदि। 1982 में इस सम्बन्ध में विश्व सम्मेलन आयोजित किया गया और दूरस्थ शिक्षा परिषद Distance Education Council का जन्म हुआ। वास्तव में पत्राचार शिक्षा की एक लम्बी परम्परा रही है। दूरस्थ शिक्षा वस्तुतः वैकल्पिक शिक्षा के रूप में उभर रही है। इसमें अनेक अनुसंधान किये जा रहे हैं।

आज इसमें नवीन तकनीकों का विकास अत्यन्त द्रुत गति से हो रहा है और इसका प्रभाव शिक्षा के स्वरूप और प्रकृति पर भी पड़ रहा है। समय – समय पर मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के विभिन्न माडलों का विकास हुआ जिन्होंने इसकी सफलता में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। शिक्षा के सार्वजनीकरण एवं लोकतंत्रीकरण के प्रयासों के कारण दूरस्थ शिक्षा एक पद्धति के रूप मे विकसित और विकासशील देशों में विकसित हुई।

दूरस्थ शिक्षा का प्रारम्भ पत्राचार पाठ्यक्रम से हुआ प्रतीत होता है जिसमें डाक व्यवस्था का प्रयोग बहुतायत में किया जाता था। अध्यापक छात्र द्वारा किये गये कार्य पर टिप्पणियाँ देकर उसे वापस करता था। दूरस्थ शिक्षा का उद्भव इंग्लैंड में 19वीं शताब्दी में देखा जा सकता है। यहीं पर सबसे पुराना पत्राचार संस्थान स्थापित किया गया था। बीसवीं शताब्दी में इंग्लैंड में अनेक पत्राचार शिक्षा संस्थायें स्थापित हुई इन संस्थाओं से अनेक छात्रों को लाभ मिला फिर भी इनकी प्रतिष्ठा अन्य संस्थानों की तुलना में कम थी।

दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में गत वर्षों में तेजी से परिवर्तन आये हैं। दूरस्थ शिक्षा के पुरातन तौर तरीके वर्तमान में उपयोगी एवं प्रासंगिक नही रह गये हैं उनका स्थान नवीन तौर तरीकों ने ले लिया है। पत्राचार के रूप में प्रारम्भ होने वाली शिक्षा की इस यात्रा को दूरस्थ शिक्षा की पीढ़ियों (Generations of Distance Education) के रूप में समझा जा सकता है। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा विश्वव्यापी, नूतन प्रकार की शिक्षा प्रणाली हैं। संचार साधनों की सहायता से दूरस्थ शिक्षा प्रणाली विविध माध्यमों से अध्यापक तथा छात्रों के बीच की दूरी को कम करती है। संचार साधनों के कारण दूरस्थ शिक्षा की पहुँच अधिक व्यापक हो कर अधिक से अधिक व्यक्तियों तक हो जाती है। भारत जैसे विकासशील राष्ट्र के लिये दूरस्थ शिक्षा प्रणाली अत्यन्त आवश्यक तथा प्रभावी सिद्ध हो रही है। दूरस्थ शिक्षा में परिवर्तन की प्रक्रिया जारी है। 1986 में दूरस्थ तथा मुक्त अधिगामी उपयोगिता को ध्यान में रखकर नवीन राष्ट्रीय शिक्षानीति तथा

1992 के Programme of Action (POA) में दूरवर्ती शिक्षा के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण संकल्प किये गये। उच्च शिक्षा के सुअवसर बढ़ाने तथा शिक्षा को जनतांत्रिक स्वरूप देने के लिये इस क्षेत्र में पहल की गई। लोकतंत्रीकरण के प्रयासों के कारण दूर शिक्षा एक पद्धति के रूप में विकसित हुई है।

2.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आप जान सकेंगे कि –

- अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का संक्षिप्त परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- भारत में दूरस्थ शिक्षा के विकास के इतिहास को समझ सकेंगे।
- दूरस्थ शिक्षा की विभिन्न पीढ़ियों के सम्बन्ध में जान सकेंगे।

2.3 अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा

विश्व के प्रथम मुक्त विश्व विद्यालय की स्थापना इग्लैंड में 1969 ई0 में हुई इस विश्व विद्यालय की प्रमुख विशेषतायें थीं प्रवेश पद्धति, एवं परीक्षा प्रणाली, में लचीलापन, बहुमाध्यम आधारित शिक्षण अधिगम, क्रेडिट प्रणाली, गैर परम्परागत पाठ्यक्रम आदि। 19वीं शतांब्दी के अन्त में अर्जेन्टीना में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की स्थापना हुई इसके उद्गम का मुख्य कारण शिक्षकों की आवश्यकता एवं देश की सीमाओं का विस्तार था।

1971 से मलेशिया में पत्राचार शिक्षा के रूप इसे प्रारम्भ किया गया 1990 के पश्चात दूरस्थ शिक्षा अत्यन्त लोकप्रिय हुई विश्वविद्यालयों ने दूरस्थ शिक्षा की इकाईयां स्थापित की। दक्षिण अफ्रीका का विश्वविद्यालय विश्व का प्रथम एकल माध्यम का दूरस्थ संस्थान था। श्रीलंका में राष्ट्रीय स्तर पर एकल माध्यम के दूरस्थ संस्थान की स्थापना 1978 में हुई।

चीन सबसे बडी जनसंख्या वाला विकासशील देश है यहां पर भी पत्राचार शिक्षा के रूप में 1960 में इसे प्रारम्भ किया गया वास्तव में पत्राचार शिक्षा की चीन में एक लम्बी परम्परा रही है यहाँ इसका प्रारम्भ बीसवीं सदी के प्रारम्भ में हुआ। 1979 में बीजिंग में सेंट्रल रेडियों एण्ड टेलीविजन यूनिवर्सिटी की स्थापना हुई यह विश्व विद्यालय सम्पूर्ण चीन के कर्मचरियों को शैक्षिक अवसर प्रदान करता है। इस विश्व विद्यालय में प्रवेश परीक्षा के माध्यम से किया जाता है अनुदेशन मुख्यतः दूरदर्शन के माध्यम से दिया जाता है तथा व्यक्तिगत सम्पर्क कार्यक्रम भी आयोजित किये जाते हैं।

बोध प्रश्न

1. विश्व में प्रथम मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना कब और कहां हुई?

.....

.....

.....

2. चीन में दूरस्थ शिक्षा किस रूप में प्रारम्भ हुई?

.....

.....

.....

3. मलेषिया में पत्राचार शिक्षा कब षुरू हुई?

.....

.....

.....

4. सेन्ट्रल रेडियों एण्ड टेलीविजन यूनिवर्सिटी की स्थापना कहां हुई थी?

.....

.....

.....

5. अमेरिका में दूरस्थ शिक्षा को क्या कहतें हैं?

.....

.....

.....

1980 में स्वतन्त्रता प्राप्त करने के उपरान्त जिम्बाबवे में स्कूल छोड़ने वालों की संख्या में बहुत वृद्धि हुई और इनको सरकारी विद्यालयों में समाहित करना मुश्किल था। मार्च 1930 में Jomteien में सभी के लिये शिक्षा (Education for All) पर विश्वस्तरीय संगोष्ठी आयोजित की गई, इसी समय यूनेस्को ने तनजानियां में दूरस्थ शिक्षा पर एक क्षेत्रीय संगोष्ठी आयोजित की।

दूरस्थ शिक्षा का स्वरूप एवं प्रकृति अमेरिका में थोड़ी परिवर्तित थी यहां इसे होम स्टडी या एकस्टरनल स्टडी (External Study) भी कहते थे। प्रारम्भ में दूरस्थ शिक्षा शिकागो विश्वविद्यालयों, कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय, फ्लोरिडा विश्वविद्यालय जैसे कई विश्वविद्यालयों में प्रारम्भ की गई।

आस्ट्रेलिया में दूरस्थ शिक्षा की लोकप्रियता का कारण उसकी भौगोलिक स्थिति थी क्योंकि यहां बहुत से द्वीप हैं जो एक दूसरे से दूर है आस्ट्रेलिया को प्रारम्भिक, माध्यमिक तथा उच्च स्तर पर पत्राचार कार्यक्रम चलाने का लम्बा अनुभव है।

रूस में दूरस्थ शिक्षा ने श्रमिकों की शिक्षा को भी एक नया आयाम दिया है।

रूस में पत्राचार शिक्षा माध्यमिक एवं उच्च स्तर पर काफी लोकप्रिय रही। एशिया में श्रीलंका के अतरिक्त बंगलादेश, थाईलैंड आदि में भी मुक्त विश्व विद्यालय की स्थापना की गई। सुखोथाई मुक्त विश्व विद्यालय की स्थापना 1976 में करके एक बड़ा कदम उठाया। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित दूरस्थ शिक्षा संस्थानों मे रेडियो, टेलीविजन का उपयोग बहुत अधिक मात्रा में किया जाता है। दूरस्थ शिक्षा संस्थानों को यूनिवर्सिटी आफ एअर भी कहा जाता है। इनकी स्थापना प्रमुख रूप से कार्यरत व्यक्तियों के लिये की गई। अनेक व्यवसायियों में उच्च स्तर पर आगे शिक्षण की आवश्यकता के कारण दूरस्थ शिक्षण संस्थान स्थापित किये गये कुछ विभिन्न देशों में ये दूरवर्ती शिक्षण संस्थान निम्न हैं –

- फर्न यूनिवर्सिटी – जर्मनी
- नेशनल ओपेन यूनिवर्सिटी – ताइवान
- ओपेन यूनिवर्सिटी हटलिन – नीदरलैण्डस
- श्री लंका इन्स्टीट्यूट आफ डिस्टेन्स एजूकेशन
- श्री लंका ओपेन यूनिवर्सिटी
- सुखोथाई थामिथ्रेट ओपेन यूनिवर्सिटी, थाईलैण्ड
- यूनिवर्सिटी आफ एअर – जापान
- यूनिवर्सिटी ऑफ साउथ अफ्रीका –प्रिटोरिया
- अथावास्का यूनिवर्सिटी अलवार्टा – कनाडा
- अलामा इकबाल ओपेन यूनिवर्सिटी

2.4 भारत में दूरस्थ शिक्षा का विकास

भारत में दूरस्थ शिक्षा का अविर्भाव पत्राचार शिक्षा कार्यक्रम के रूप में दिल्ली विश्वविद्यालय ने किया। माध्यमिक स्तर पर 1965 में पत्राचार शिक्षा के रूप में दूर शिक्षा प्रणाली का अविर्भाव हुआ दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा प्रारम्भ किये पत्राचार कार्यक्रम की सफलता ने शिक्षाशस्त्रियों का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया। कोठारी आयोग ने अपनी संस्तुतियों में इसकी आवश्यकता पर प्रकाश डाला। दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा संचालित पत्राचार शिक्षा की सफलता ने देश के अन्य विश्वविद्यालयों में दूरवर्ती शिक्षा प्रणाली के माध्यम से अनुदेशन को प्रोत्साहित किया।

भारत में प्रथम मुक्त विश्वविद्यालय 1982 में आन्ध्रप्रदेश में खोला गया सन् 1970 से 1980 की अवधि में अनेक प्रादेशिक विश्वविद्यालयों द्वारा पत्राचार शिक्षा के संस्थान निदेशालय प्रारम्भ किये गये जिससे दूरवर्ती शिक्षा की लोकप्रियता बढ़ी। दूरस्थ शिक्षा

संस्थानों की सफलता के बाद विभिन्न राज्यों में मुक्त विश्वविद्यालयों की स्थापना की मांग बढ़ गई यह भी अनुभव किया गया है कि दूरस्थ शिक्षा के विकास में पूर्णतः दूरस्थ शिक्षा को समर्पित उच्चतम संस्थान बहुत उपयोगी सिद्ध होंगे।

बोध प्रश्न

6) किस आयोग ने अपनी संस्तुतियों में दूरस्थ शिक्षा की आवश्यकता पर प्रकाश डाला ?

.....

.....

.....

7) भारत में प्रथम मुक्त विश्वविद्यालय किस प्रदेश में खोला गया ?

.....

.....

.....

8) भारत में दूरस्थ शिक्षा का अविर्भाव किस रूप में हुआ ?

.....

.....

.....

9) 1970 से 1980 के दशक में इस क्षेत्र में क्या विशेष प्रयास किये गये?

.....

.....

.....

परिणामतः 1985 में भारत सरकार ने इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्व विद्यालय स्थापित किया। इस विश्व विद्यालय का प्रमुख उद्देश्य मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली का विकास करने हेतु प्रतिमान स्थापित करना था। इस विश्वविद्यालय की स्थापना अधिक से अधिक व्यक्तियों को सस्ती उच्च शिक्षा प्रदान करने के लिये सुविधाजनक अवसर उपलब्ध कराने के लिये हुई क्योंकि अनेक लोग अनेक कारणों से उच्च शिक्षा से वंचित रह जा रहे थे। अतः ऐसे सभी व्यक्तियो को उच्च शिक्षा उपलब्ध कराने का सुअवसर प्रदान करने के लिये इस विश्वविद्यालय का गठन किया गया। इस विश्वविद्यालय को दिये गये कार्यों तथा अधिकारों में मुक्त विश्वविद्यालय के रूप में कार्य करने के साथ साथ देश में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के सर्वोच्च निकाय के रूप में कार्य करते हुए देश के अन्य मुक्त विश्वविद्यालयों की स्थापना व विकास करने में मार्गदर्शन करने, दूरस्थ शिक्षा प्रणाली का उन्नयन समन्वय करने, अन्य मुक्त विश्व विद्यालयों तथा शिक्षा संस्थाओं को सहायता प्रदान करने जैसे अत्यधिक महत्व के उत्तरदायित्व भी

सम्मिलित है।

राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय का उद्देश्य अन्य दूरस्थ शिक्षा संस्थानों को सहायता पहुंचाना है। भारत में दूरस्थ शिक्षण के विकास के लिये एक विश्वविद्यालय स्तर की संवैधानिक संस्था के रूप में दूरस्थ शिक्षा परिषद (Distance Education Council) की स्थापना 1992 में की गई इस परिषद में इग्नू, मानव संसाधन मंत्रालय,, यू0 जी0 सी0, राज्य के परम्परागत एवं मुक्त विश्वविद्यालयों के प्रतिनिधि, पत्राचार एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों के प्रतिनिधि आदि सदस्य होते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ शिक्षा शास्त्री आदि इस परिषद के सदस्य होते हैं।

इस परिषद का प्रमुख कार्य राज्य मुक्त विश्वविद्यालयों के लिये दिशा निर्देश तैयार करना है। दूरस्थ शिक्षा हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम को तैयार करना एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम देने की व्यवस्था करना भी इसका उद्देश्य है। राष्ट्रीय एवं राजकीय मुक्त विश्वविद्यालयों एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों की प्रोन्नति हेतु अर्थिक सहायता देना इसका प्रमुख उद्देश्य है।

राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना के पश्चात् इस दिशा में अनेक सार्थक प्रयास किये गये इसके परिणाम स्वरूप यशवन्त राव चव्हाण मुक्त विश्वविद्यालय, नासिक, कोटा मुक्त विश्वविद्यालय, राजस्थान, नालन्दा मुक्त विश्वविद्यालय, बिहार आदि खोले गये। प्रत्येक प्रदेश में एक–एक मुक्त विश्वविद्यालय खेलने की योजना है। अभी तक स्थापित राज्य मुक्त विश्वविद्यालय निम्नवत् है।

1)	डा0 बी0 आर अम्बेडकर मुक्त विश्वविद्यालय, हैदराबाद	1982
2)	वर्धमान महावीर मुक्त विश्वविद्यालय, कोटा	1987
3)	नालन्दा मुक्त विश्वविद्यालय, पटना	1987
4)	यशवन्तराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विश्वविद्यालय, नासिक	1989
5)	मध्य प्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय, भोपाल	1992
6)	डा0 बाबा साहिब अम्बेडकर मुक्त विश्वविद्यालय, अहमदाबाद	1994
7)	कर्नाटक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय मैसूर	1996
8)	नेता जी सुभाष मुक्त विश्वविद्यालय कोलकता	1997
9)	उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय इलाहाबाद	1999
10)	तमिलनाडू मुक्त विश्वविद्यालय, चेन्नई	2003
11)	सुन्दर लाल शर्मा मुक्त विश्वविद्यालय, विलासपुर	2005
12)	उत्तरांचल राज्य मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी	2006
13)	कृष्णकान्त हैन्डीक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय, गोहाटी	2006
14)	ग्लोबल ओपेन विश्वविद्यालय, नागालैण्ड	2008

2.5 दूरस्थ शिक्षा की पीढ़िया (Distance Education)

1995 में जेम्स टेलर ने दूरस्थ शिक्षा की चार पीढ़ियों का जिक्र किया। टेलर के द्वारा सन् 1995 में चार पीढ़ियों की प्रस्तुति के उपरान्त दूरस्थ शिक्षा की पांचवी पीढ़ी का उद्भव हो चुका है।

2.5.1 प्रथम पीढ़ी (First Generation): पत्राचार शिक्षा (Corrospondence Education)

दूरस्थ शिक्षा का प्रारम्भिक रूप पत्राचार शिक्षा में देखा जा सकता है। पत्राचार शिक्षा प्रणाली में 'मुद्रण' माध्यम (Print Medium) का उपयोग शिक्षण अधिगम हेतु किया जा सकता है छात्र अध्यापकों के मध्य सम्पर्क कार्यक्रम आयोजित किये जाते थे। प्रारम्भ में पत्राचार विधि का प्रचलन था इस समय अनेक विकसित प्रगतिशील और विकासोन्मुख देशों में डाक द्वारा पाठ्यक्रम व्यवस्था ने "जब चाहो सीखो" की सुविधा प्रदान की। शिक्षा के क्षेत्र में सामाजिक, आर्थिक परिवर्तनों के कारण अनेक परिवर्तन आये हैं शिक्षा सर्वव्यापक रूप से आधारभूत मानवीय अधिकारों में से एक है इस समय अध्ययन सामग्री को छोटी क्रमबद्व इकाइयों में विभाजित किया जाता है।

इस व्यवस्था में विद्यार्थी अपनी गति से सीखता है परन्तु इसके लिये उच्चस्तरीय अनुशासन की अपेक्षा की जाती थी। विद्यार्थी गृहकार्य हेतु शिक्षको की सहायता का अधिक लाभ नही उठा पाता था। पत्राचार शिक्षा में छात्रो को मुद्रित पाठ्यक्रम सामग्री दी जाती थी परन्तु आज की भांति इसे स्व अध्ययन सामग्री की विधि से तैयार नहीं किया जाता था। आज भी छात्र दूरस्थ कार्यक्रम को पत्राचार शिक्षा ही कहते हैं।

2.5.2 द्वितीय पीढ़ी(Second Generation): मल्टी मीडिया एप्रोच (Multi media Approach)

धीरे–धीरे मुद्रित सामग्री के साथ साथ कम्प्यूटर, कैसेट, सीडी जैसी अमुद्रित सामग्री का प्रयोग शिक्षा में बढ़ने लगा अर्थात द्वितीय पीढ़ी में शिक्षा में मुद्रित सामग्री के अतिरिक्त आडियो एवं वीड़ियो पाठ्य सामग्री का प्रयोग बढ़ने लगा परन्तु इस स्तर पर सम्प्रेषण सिर्फ शिक्षा संस्थानों की तरफ से होता था छात्र प्रतिक्रिया एवं संतुष्टि पर ध्यान नही दिया जाता था। इस स्तर पर बहु माध्यम तथा स्व अध्ययन सामग्री का महत्व बढ़ गया। तकनीकी दृष्टि से स्व अध्ययन सामग्री के क्षेत्र में इस पीढ़ी ने बहुत सफलता प्राप्त की दूरस्थ शिक्षा संस्थायें एवं मुक्त विश्व विद्यालय इस तरह की सामग्री का प्रयोग आज भी बहुत अधिक मात्रा में करते हैं।

2.5.3 तृतीय पीढ़ी (Third Generation) : टेली लर्निंग एप्रोच (Teli Learning Approach)

दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में इस पीढ़ी ने बहुत प्रगति हुई Tele Conferencing, Video Conferencing, Television तथा रेडियों द्वारा पाठ्य वस्तुओं का प्रसारण प्रारम्भ हो गया छात्र तथा अध्यापकों के मध्य क्रिया प्रतिक्रिया प्रारम्भ हुई परन्तु समय, स्थान तथा गति की दृष्टि से इसमें बहुत परिवर्तन नही आया। छात्र अध्यापकों के मध्य वार्तालाप फोन के जरिये तेजी से प्रारम्भ हो गये दूरस्थ शिक्षा कम लागत सर्व

सुलभ बनाने के प्रयास में बहुत तेजी आयी। इन्टरनेट का प्रयोग शिक्षा क्षेत्र में प्रारम्भ हो गया पाठ्यक्रम लचीला सरल एवं प्रभावी बनाने के ढेर सारे प्रयास किये गये।

2.5.4 : चतुर्थ पीढ़ी (Fourth Generation) : लर्निंग एप्रोच (Flexible Learning Approach)

कम्प्यूटर की सहायता से चतुर्थ पीढ़ी में विद्यार्थी अपनी सुविधा से अध्ययन कर सकता है। www (world wide web) पर बहुत सी शैक्षिक सामग्री उपलब्ध हैं। जिसका प्रयोग विद्यार्थी कर सकता है (Computer Assisted Learning CAL) कम्प्यूटर कान्फ्रेंसिंग (Computer Conferencing) ई मेल आदि का प्रयोग इस समय अत्यधिक हुआ। दूरस्थ शिक्षा संस्थान एवं मुक्त विश्व विद्यालय, ने शिक्षार्थी सहायता सेवा के अन्तर्गत इलैक्ट्रानिक साधनो का अत्यधिक प्रयोग किया।

2.5.5 : पंचम पीढ़ी (Fifth Generation) आन लाइन एप्रोच (On Line Approach)

वर्तमान समय में शिक्षा में मल्टी मीडिया का प्रयोग बहुत अधिक किया जा रहा है इसके प्रयोग से शिक्षार्थी कम समय में अधिक सीखता है। वैश्वीकरण के इस युग में मल्टीमीडिया का प्रयोग जीवन के हर क्षेत्र में हो रहा है शिक्षार्थी इसके द्वारा कम लागत पर अधिगम के विस्तृत अनुभव प्राप्त करने में समर्थ है। On Line अध्ययन करना, समस्या का समाध्यान करना इस पीढ़ी की विशेषता है। वर्तमान युग Virtual Universities की अवधारणा आकार ले रही है।

बोध प्रश्न

10. दूरस्थ शिक्षा की प्रथम पीढी किसे कहते है ।

.....

.....

.....

11. टेली लर्निंग एप्रोच से क्या समझते है ।

.....

.....

.....

12. फ्लक्सिबल लर्निंग एप्रोच किसे कहते है ।

.....

.....

.....

13. आन लाइन शिक्षा किसे आप क्या समझते है।

.....

.....

.....

2.6 सारांश

विश्व में दूरस्थ शिक्षा उच्च शिक्षा देने का सर्वाधिक प्रभावशाली साधन है शिक्षा के सार्वजनीकरण और लोकतंत्रीकरण के प्रयासों के कारण दूर शिक्षा एक पद्धति के रूप में विकसित और विकासशील देशों में विकसित हुई। दूरस्थ शिक्षा का उद्देश्य पत्राचार शिक्षा के रूप में हुआ प्रथम मुक्त विश्व विद्यालय की स्थापना इंग्लैड में 19वीं शताब्दी में हुई। इस विश्व विद्यालय की प्रमुख विशेषताये थी प्रवेश पद्धति परीक्षा प्रणाली में लचीलापन, बहुमाध्यम आधारित शिक्षण, क्रेडिट प्रणाली, गैर परम्परागत पाठ्यक्रम आदि। विश्व के अनेक देशों जैसे अर्जेन्टीना, मलेशिया, दक्षिण अफ्रीका, श्री लंका, चीन, जिम्बाबवे में धीरे धीरे इसका प्रसार हो गया। मार्च 1990 में Jomteien में **'सभी के लिये शिक्षा'** पर विश्व स्तरीय संगोष्ठी आयोजित की गई। इसी समय यूनेस्को ने दूरस्थ शिक्षा पर एक क्षेत्रीय संगोष्ठी आयोजित की। दूर शिक्षा की प्रकृति अमेरिका में थोड़ी परिवर्तित थी। यहां इसे होम स्टडी या एक्सटरनल स्टडी भी कहते थे। भारत में भी दूरस्थ शिक्षा का अविर्भाव पत्राचार शिक्षा कार्यक्रम के रूप में दिल्ली विश्वविद्यालय ने किया। 1985 में भारत सरकार ने इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय स्थापित किया। इसका प्रमुख उद्देश्य अधिक से अधिक व्यक्तियों को सस्ती उच्च शिक्षा प्रदान करने के लिये सुविधाजनक अवसर उपलब्ध कराने के लिये हुई। इसके अतिरिक्त इसका कार्य अन्य दूरस्थ शिक्षा संस्थानो को सहायता पहुँचाना है दूरवर्ती शिक्षा के विकास के लिये एक विश्वविद्यालय स्तर की संवैधानिक संस्था के रूप में दूरस्थ शिक्षा परिषद' की स्थापना 1992 में की गई।

राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना के पश्चात् विभिन्न प्रदेशों में मुक्त विश्वविद्यालय खोलने का क्रम जारी है। दूरस्थ शिक्षा के विकास को दृष्टि में रखकर इसे पांच पीढ़ियों में वर्गीकृत किया गया है इस वर्गीकरण को सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT) को ध्यान में रखकर किया गया है।

2.7 अभ्यास कार्य

- भारत में दूरस्थ शिक्षा के विकास पर प्रकाश डालिये।
- दूरस्थ शिक्षा में मल्टी मीडिया एप्रोच से आप क्या समझते हैं?
- दूरस्थ शिक्षा परिषद का क्या कार्य है?
- उच्च शिक्षा के लोकतंत्रीकरण में दूरस्थ शिक्षा की भूमिका स्पष्ट कीजिये।
- देश के मुक्त विश्वविद्यालयों को स्थापना के क्रम में व्यवस्थित कर तालिका बनाइये।

2.8 बोध प्रश्नो के उत्तर

1. विश्व के प्रथम मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना इग्लैंड में 1969 ई0 में हुई ।
2. चीन सबसे बडी जनसंख्या वाला विकासशील देश है यहां पर भी पत्राचार शिक्षा के रूप में 1960 में इसे प्रारम्भ किया गया
3. 1971 से मलेशिया में पत्राचार शिक्षा के रूप इसे प्रारम्भ किया गया। सन् 1990 के पश्चात दूरस्थ शिक्षा अत्यन्त लोकप्रिय हुई। अनेक विश्वविद्यालयों ने दूरस्थ शिक्षा की इकाईयां स्थापित की।
4. 1979 में बीजिंग में सेंट्रल रेडियों एण्ड टेलीविजन यूनिवर्सिटी की स्थापना हुई। यह विश्वविद्यालय सम्पूर्ण चीन के कर्मचरियों को शैक्षिक अवसर प्रदान करता है।
5. दूर शिक्षा का स्वरूप एवं प्रकृति अमेरिका में थोड़ी परिवर्तित थी। यहां इसे होम स्टडी या एकस्टरनल स्टडी (External Study) भी कहते थे।
6. कोठारी आयोग ने अपनी संस्तुतियों में इसकी आवश्यकता पर प्रकाश डाला। दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा संचालित पत्राचार शिक्षा की सफलता ने देश के अन्य विश्वविद्यालयों में दूरवर्ती शिक्षा प्रणाली के माध्यम से अनुदेशन को प्रोत्साहित किया।
7. भारत में प्रथम मुक्त विश्वविद्यालय 1982 में आन्ध्रप्रदेश में खोला गया
8. भारत में दूरस्थ शिक्षा का अर्विभाव पत्राचार शिक्षा कार्यक्रम के रूप में दिल्ली विश्वविद्यालय ने किया।
9. सन् 1970 से 1980 की अवधि में अनेक प्रादेशिक विश्वविद्यालयों द्वारा पत्राचार शिक्षा के संस्थान निदेशालय प्रारम्भ किये गये।
10. दूरस्थ शिक्षा का प्रारम्भिक रूप पत्राचार शिक्षा में देखा जा सकता है।
11. दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में इस पीढ़ी ने बहुत प्रगति हुई । रेडियों द्वारा पाठ्य वस्तुओं का प्रसारण प्रारम्भ हो गया छात्र तथा अध्यापकों के मध्य क्रिया प्रतिक्रिया प्रारम्भ हुई। परन्तु समय, स्थान तथा गति की दृष्टि से इसमें बहुत परिवर्तन नही आया। छात्र अध्यापकों के मध्य वार्तालाप फोन के माध्यम से प्रारम्भ हो गये। दूरस्थ शिक्षा कम लागत सर्व सुलभ बनाने के प्रयास में बहुत तेजी आयी। इन्टरनेट का प्रयोग शिक्षा क्षेत्र में प्रारम्भ हो गया, पाठ्यक्रम लचीला सरल एवं प्रभावी बनाने के ढेर सारे प्रयास किये गये।
12. कम्प्यूटर की सहायता से चतुर्थ पीढ़ी में विद्यार्थी अपनी सुविधा से अध्ययन कर सकता है। www (world wide web) पर बहुत सी शैक्षिक सामग्री उपलब्ध हैं

जिसका प्रयोग विद्यार्थी कर सकता है। Computer assisted learning (CAL) कम्प्यूटर कान्फ्रेंसिंग (Computer Conferencing) तथा ई मेल आदि का प्रयोग इस समय अत्यधिक हुआ। दूरस्थ शिक्षा संस्थान एवं मुक्त विश्वविद्यालय, ने शिक्षार्थी सहायता सेवा के अन्तर्गत इलैक्ट्रानिक साधनो का अत्यधिक प्रयोग किया।

13. वर्तमान समय में शिक्षा में मल्टी मीडिया का प्रयोग बहुत अधिक किया जा रहा है इसके प्रयोग से शिक्षार्थी कम समय में अधिक सीखता है। वैश्वीकरण के इस युग में मल्टीमीडिया का प्रयोग जीवन के हर क्षेत्र में हो रहा है शिक्षार्थी इसके द्वारा कम लागत पर अधिगम के विस्तृत अनुभव प्राप्त करने में समर्थ है। On Line अध्ययन करना तथा, शैक्षिक समस्याओं का समाधान करना इस पीढ़ी की विशेषता है। वर्तमान युग Virtual Universities की अवधारणा आकार ले रही है।

2.9. कुछ उपयोगी पुस्तके

- गुप्ता एस0 पी0 – शिक्षा का ताना–बानाः इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन, 2000
- शर्मा, आर0 ए0 – डिस्टैन्स ऐजूकेशन, मेरठः ईगल बुक्स इन्टरनेशनल, 1995
- शर्मा, आर ए0 – दूरवर्ती शिक्षाः मेरठ सूर्या पब्लिशिंग 1996
- शर्मा, आर0 ए0– शिक्षा तकनीकीः मेरठः इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस, 2002
- साहू, पी0 के0 – ओपन लर्निंग सिस्टमः न्यू देल्ही : उप्पल पब्लिकेशन्स, 1994
- साहू, पी0 के0 – ऐजूकेशनल टेक्नोलोजी इन डिस्टेनसः न्यू देल्हीः अरावती, 1999
- **Keegan, D. (1985): The Foundation of Distance Education, Croom Helm, London.**

इकाई 3 दूरस्थ शिक्षक

पाठ्यक्रम संरचना

3.1 प्रस्तावना

3.2 उद्देश्य

3.3 पारम्परिक और दूरस्थ शिक्षक

3.4 दूरस्थ शिक्षकों के प्रकार

- 3.4.1 पूर्ण–कालिक शिक्षक
- 3.4.2 अंशकालिक शिक्षक
- 3.4.3 परामर्शदाता
- 3.4.4 स्वअध्ययन सामग्री निर्माता
- 3.4.5 प्रश्न पत्र निर्माता
- 3.4.6 परीक्षक
- 3.4.7 समन्वयक

3.5 दूरस्थ शिक्षकों का प्रशिक्षण

3.6 सारांश

3.7 अभ्यास कार्य

3.8 बोध प्रश्नो के उत्तर

3.9 कुछ उपयोगी पुस्तके

3.1 प्रस्तावना

यद्यपि मुक्त एवं दूररथ शिक्षा परम्परागत शिक्षण प्रणाली से भिन्न है पर इसमें भी अनुदेशन (Instruction) का महत्वपूर्ण स्थान है। यहाँ अनुदेशन से तात्पर्य उन सभी क्रियाओं से है जो छात्र एवं अध्यापकों के मध्य अन्तःक्रिया का परिणाम होती हैं। किसी भी शैक्षिक प्रणाली के लिये मानव संसाधन की आवश्यकता होती है, अतः मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में शिक्षक की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। प्रश्न यह है दूरस्थ शिक्षक का स्वरूप एवं प्रकृति क्या होगी? यह प्रणाली अत्यन्त चुनौतीपूर्ण है अतः इसमें शिक्षक का कार्य भी अलग प्रकार का होगां। दूरस्थ शिक्षक की पहचान, भूमिका प्रशिक्षण की आवश्यकता आदि पर इस इकाई में चर्चा की गई है।

3.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आप इस योग्य हो जायेगे कि :

- पारम्परिक शिक्षक और दूरस्थ शिक्षक में अन्तर कर सकेंगे।
- दूरस्थ शिक्षक की विशेषताओं को समझ सकेंगे।
- विभिन्न प्रकार के दूरस्थ शिक्षक को जान सकेंगे।
- दूरस्थ शिक्षकों के प्रशिक्षण के बारे में जान सकेंगे।

3.3 पारम्परिक और दूरस्थ शिक्षक

पारम्परिक शिक्षण संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों को पारम्परिक शिक्षक कहते है। पारम्परिक शिक्षक नियमित रूप से कक्षायें लेते हैं। प्रवेश एवं परीक्षा के कार्यो में प्रतिभागिता करते है। शिक्षक और शिक्षार्थी एक दूरसे के निरन्तर सम्पर्क में रहते हैं। शिक्षार्थी अपनी सम्स्याओं के समाधान के लिए शिक्षक की प्रत्यक्ष रूप से सहायता ले सकता है। दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में अनुदेशन विधियां तथा अनुदेशन सामग्री परम्परागत शिक्षा प्रणाली से कुछ भिन्न तथा विस्तृत प्रकृति की होती है। अनुदेशन से तात्पर्य उन सभी क्रियाओं से है जो छात्रों को अधिगम करने में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष ढ़ग से सहायता प्रदान करती है। अनुदेशन का मुख्य लक्ष्य अधिगम को सहज बनाना है। शिक्षार्थियों को अधिगम के अवसरों को उपलब्ध कराकर प्रोत्साहित करना ही अनुदेशन है।

प्रभावी अधिगम के लिये शिक्षार्थियों के समक्ष एक प्रभावी वातावरण की आवश्यकता पड़ती है जिससे शिक्षार्थियों की शैक्षिक समस्याओं का निदान उनका ज्ञान, एवं कौशल विकसित हो सके। छात्रों की आवश्यकताओं तथा उपलब्ध संसाधनों के परिपेक्ष्य में सीखना प्रभावी हो सके। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का मुख्य उद्देश्य शैक्षिक उद्देश्यों को सरलता एवं शीघ्रता से प्राप्त करना है। परम्परागत शिक्षक की अपेक्षा दूरस्थ शिक्षा में शिक्षक को अधिक कुशल होना चाहिये तभी वह छात्रों की समस्याओं का समाधान कर सकेगा। दूरस्थ शिक्षक को छात्रों को इस भांति प्रेरित करना होता है वह स्वतः अध्ययन कर सकें।

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में शिक्षक और शिक्षार्थी का सम्पर्क मात्र परामर्श सत्रों में होता है। छात्र को स्व अध्ययन सामग्री वितरित कर दी जाती है। शिक्षक और शिक्षार्थी एक दूसरे से दूर होते हैं। दूरी के करण शिक्षक और शिक्षार्थी के मध्य अंतःक्रिया की सम्भावना बहुत कम होती है मूलतः दूर शिक्षक का कार्य पाठ्यक्रम सामग्री का निर्माण, प्रवेश, मूल्यांकन आदि है। वास्तव में वे शिक्षक जो शिक्षार्थी के सीधे सम्पर्क में नही आते वे सभी दूरस्थ शिक्षक कहलाते हैं।

बोध प्रश्न

1) दूरस्थ शिक्षकों और पारम्परिक शिक्षकों के मध्य अन्तर स्पष्ट कीजिये।

.....

.....

.....

2. दूरस्थ शिक्षा मे शिक्षक और शिक्षार्थी का सम्पर्क कैसे होता है ?

.....

.....

.....

3.4 दूरस्थ शिक्षकों के प्रकार

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में भी अध्यापक की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। अब अध्यापक को न केवल शिक्षण करना है वरन छात्रों को स्वयं सीखने के लिये प्रेरित भी करना है। दूरस्थ शिक्षा में अध्यापकों की भूमिका को पुनर्रेखांकित किया जा रहा है। मुक्त शिक्षा के छात्रों को विषय वस्तु, कौशल का ज्ञान कराना एक चुनौती बन कर खड़ा है। अतः दूरस्थ शिक्षक कोन केवल विषयवस्तु का सम्यक ज्ञान होना चाहिए वरन्, उसे शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग में निपुण होना आवश्यक है। दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षार्थियों की विशिष्ट आवश्यकता तथा परिस्थितियों के अनुरूप शिक्षक द्वारा अनुदेशन प्रक्रिया को नियोजित करके, संचालित करने तथा प्रोत्साहित करने पर बल दिया जाता है। दूरस्थ शिक्षक की सफलता उसके सम्प्रेषण, कौशल पर भी निर्भर करती है। दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में सम्प्रेषण एक अत्यधिक महत्वपूर्ण, प्रभावी तथा शक्तिशाली साधन है इसके अतरिक्त तकनीकी कुशलता भी शिक्षक के लिये आवश्यक है।

विभिन्न दूरस्थ शिक्षा संस्थानों में, मुक्त विश्वविद्यालयों में दूरस्थ शिक्षक के लिये विभिन्न शब्दों का प्रयोग किया जाता है जैसे परामर्शदाता (काउन्सलर), समन्वयक, ट्यूटर, मेन्टर, स्टाफ आदि, लेकिन इनके कार्य लगभग एक ही प्रकार के होते हैं।

दूरस्थ शिक्षक का एक वर्ग वह भी है जो लेखन सम्पादन, समन्वय, मूल्यांकन आदि करता है। कभी कभी एक ही शिक्षक दूरस्थ शिक्षा में विभिन्न भूमिकाओं का निर्वाह करता है। तात्पर्य यह है कि दूरस्थ शिक्षक समय–समय पर शिक्षण के अतरिक्त अन्य भूमिकाओं का निर्वहन भी करता है। इन शिक्षकों को हम पूर्णकालिक तथा अंशकालिक शिक्षक के रूप में वर्गीकृत कर सकते हैं। पूर्णकालिक एवं अंशकालिक शिक्षक विविध कार्यों को सम्पादित करने के कारण अलग–अलग नामों से जाने जाते

हैं जैसे– काउन्सलर, लेखक, मूल्यांकनकर्ता, परीक्षक आदि।

बोध प्रश्न :

3. दूरस्थ शिक्षक के लिये किन विभिन्न शब्दो का प्रयोग किया जाता है?

.....

.....

.....

4. मुक्त शिक्षा में क्या चुनौतियां है ?

.....

.....

.....

5. दूरस्थ शिक्षको को किस रूप मे वर्गीकृत कर सकते है ?

.....

.....

.....

3.4.1 : पूर्णकालिक शिक्षक (Full Time Faculty)

जिन शिक्षकों की नियुक्ति दूरस्थ शिक्षा संस्थानों में नियमित आधार पर होती है वे पूर्णकालिक शिक्षक, कहलाते हैं। पूर्णकालिक शिक्षक भी दो प्रकार के होते हैं। स्थायी अथवा संविदा पर। ये दोनो प्रकार के शिक्षक शिक्षण कार्यक्रम सुनिश्चित करते हैं, स्व अध्ययन सामग्री विकसित करते है अथवा विभिन्न विद्वानों के द्वारा लिखी सामग्री का समन्वय करते हैं।

जिन शिक्षकों की नियुक्ति दूरस्थ शिक्षा संस्थानों में नियमित आधार पर होती है वे कार्यक्रम की रूपरेखा से लेकर लेखन, समन्वय, संयोजक, परीक्षक आदि कार्यों को करते हैं। छात्रों के प्रवेश, परामर्श सत्रों के संचालन, अध्ययन केन्द्रों के अनुश्रवण के अतिरिक्त सेमीनार, गोष्ठियां, कार्यशालायें आयेजित करने का दायित्व भी इन शिक्षकों पर होता है। इस प्रकार मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में पूर्णकालिक संकाय की भूमिका बहुउद्देशीय और बहुआयामी होती है।

वस्तुतः पूर्णकालिक संकाय ही दूरस्थ शिक्षा संस्थानो एवं मुक्त विश्वविद्यालयों की नींव है। ये इन संस्थानों के भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पूर्णकालिक संकाय के समर्पित निष्ठावान होने से दूरस्थ शिक्षा प्रभावी होती है। संकाय का जन आकलन होता है क्योकि उनकी दुर्बलताएं एवं सबलताएं कोर्स की तैयारी, प्रस्तुतीकरण आदि में परिलक्षित होती है।

पारम्परिक शिक्षक से अधिक जिम्मेदारियां दूरस्थ शिक्षक की होती है यदि दूरस्थ शिक्षक कुशलता और निपुणता से कार्य नही करता है तो वहन केवल दूरस्थ शिक्षार्थियों को सफलता पूर्वक शिक्षण नही कर सकता वरन् उनकी समस्याओं का समाधान भी ठीक ढंग से नहीं कर पाता है। दूरस्थ संस्थानों में अक्सर शिक्षक को तरह–तरह के प्रशासनिक उत्तरदायित्व भी दिये जाते हैं।

बोध प्रश्न :

6. पूर्णकालिक शिक्षक किसे कहते हैं ?

.....

.....

.....

7. पूर्णकालिक शिक्षक से क्या तात्पर्य है ?

.....

.....

.....

8. दूरस्थ शिक्षा शिक्षकों से कैसे प्रभावित होती है ?

.....

.....

.....

3.4.2 : अंशकालिक शिक्षक :

कुछ विशिष्ट कार्यो हेतु मुक्त विश्वविद्यालय अंशकालिक शिक्षकों की नियुक्ति करता है। जैसे समन्वयक (Coordinator), मेंटर (Mentor), परीक्षक (Counsellor), प्रोजेक्ट सुपरवाइज़र आदि। इनकी भूमिका और उत्तरदायित्व सीमित होते है। वे कुछ निश्चित कार्य करते हैं जिनके लिये इन्हें मानदेय या पारिश्रमिक दिया जाता है। कार्य की प्रकृति के आधार पर वे अंशकालिक संकाय हो सकते हैं। जैसे आप जानते है कि मुक्त विश्वविद्यालय अध्ययन केन्द्रों की सहायता से अपने कार्य का संचालन करता है तथा क्षेत्रीय केन्द्र उसे लगातार विश्वविद्यालय में नवीनतम् विकास एवं गतिविधियों की समस्त जानकारियाँ प्रदान करते हैं। सामान्य रूप से समन्वयक संस्था का प्राचार्य निदेशक या अनुभवी शिक्षक होता है। समन्वयक के चयन के विश्वविद्यालय के कुछ मानक निर्धारित हैं उसी के अनुसार समन्वयक की नियुक्ति की जाती है। समन्वयक को निर्धारित पारिश्रमिक प्रति माह विश्वविद्यालय द्वारा दिया जाता है।

वस्तुतः मुक्त विश्वविद्यलाय में अध्ययन केन्द्रों का जाल होता है। प्रत्येक अध्ययन केन्द्रो को सामान्य या विशिष्ट कार्यक्रमों के लिये स्थापित किया जाता है जैसे कुछ केन्द्र सिर्फ बी.एड. के लिये होते हैं। समन्वयक को विद्यार्थी सहायता सेवाओं की

व्यवस्था करनी होती है। विश्वविद्यालय के मुख्यालय तथा क्षेत्रीय अध्ययन केन्द्रो के साथ समन्वय स्थापित करना होता है। गैर शिक्षक कर्मचारियों की नियुक्ति, अध्ययन केन्द्र की देखभाल, परीक्षा व्यवस्था, लेखा एवं वित्तीय कार्य की देखरेख भी समन्वयक का ही कार्य होता है। अध्ययन केन्द्रों की सफलता एवं गुणवत्ता का उत्तरदायित्व समन्वयक पर होता है।

बोध प्रश्न

9. अंशकालिक शिक्षकों की नियुक्ति मुक्त विश्वविद्यालय क्यों करता है ?

.....

.....

.....

10. अध्ययन और क्षेत्रीय केन्द्र क्या कार्य करते हैं ?

.....

.....

.....

11. समन्वयक के क्या कार्य हैं ?

.....

.....

.....

3.4.3 : परामर्शदाता

मुक्त विश्वविद्यालयों में तथा दूरस्थ संस्थानों में काउन्सलर की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। दूरस्थ प्रणाली में प्रवेश के इच्छुक एवं प्रवेश पा चुके छात्रों को दूरस्थ शिक्षा परामर्शदाता समय–समय पर परामर्श देकर उन्हें लाभान्वित करते रहते हैं। परामर्श सेवा से तात्पर्य व्यक्ति की आवश्यकता परिस्थिति तथा क्षमता को ध्यान में रखते हुए अनुकूलतम शैक्षिक अवसरों का उपयोग करने के लिये प्रेरित करना है। अच्छा परामर्शदाता शिक्षार्थी की समस्या/ जिज्ञासा को ध्यानपूर्वक सुनता है। दूरस्थ शिक्षा के कार्यक्रमों में शैक्षिक परामर्शदाता की भूमिका तथा महत्व भी अत्यन्त व्यापक तथा महत्वपूर्ण होता है। दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में परामर्शदाताओं को अपने कार्य मे निपुण तथा प्रशिक्षित होना आवश्यक है। परामर्श सेवा दूरस्थ शिक्षा प्रणाली की अनिवार्य सेवा है। किसी अच्छे परामर्शदाता में प्रभावी परामर्श प्रदान करने हेतु विशेष गुणों का होना आवश्यक है।

परामर्शदाता को शिक्षार्थियों की समस्याओं का समाधान करने के लिये तत्पर होना चाहियें। परामर्श सत्रों में सत्रीय कार्यों (Assignments) की समस्याओं को भी सुलझाया जाता है। परामर्शदाताओं के रूप में कुछ समर्पित कुशल व्यक्तियों को अध्ययन केन्द्रों पर शिक्षार्थियों की सहायता करने का दायित्व सौंपा जाता है। छात्रों की सहायता के अतिरिक्त दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों की विभिन्न सूचनाओं का आदान प्रदान

भी करते है, प्रवेश पूर्व परामर्श का कार्य भी परामर्शदाता अध्ययन केन्द्रों पर प्रायः करते हैं। स्व अध्ययन सामग्री के वितरण, नामांकन को प्रोत्साहित करने जैसे विविध कार्य भी परामर्शदाता करते हैं। क्रियाकलाप अध्ययन केन्द्रों के माध्यम से सम्पन्न होता है। परामर्शदाता परामर्श के अतिरिक्त Assignments का आकलन एवं मूल्यांकन का भी कार्य करता है। परामर्श सत्रों में स्व अध्ययन सामग्री के अध्ययन में आयी समस्याओं का निदान करता है, अधिन्यास के वितरण जमा कराने, मूल्यांकन कर टिप्पणी देने जैसे विभिन्न कार्य भी परामर्शदाता आवश्यकतानुसार करता रहता है।

बोध प्रश्न :

12. दूरस्थ शिक्षा में काउन्सलर की क्या भूमिका है ?

.....

.....

.....

13. परामर्शसेवा से क्या तात्पर्य है ?

.....

.....

.....

14. परामर्शदाता अधिन्यास सम्बन्धित क्या कार्य करता है ?

.....

.....

.....

3.4.4 स्व–अधिगम सामग्री निर्माता

स्व–अधिगम सामग्री निर्माता सामान्यतः ऐसे वरिष्ठ शैक्षिक विशेषज्ञ होते हैं जिनके पास दीर्घकालीन सेवाओं का अनुभव होता है। ये विशेषज्ञ पारम्परिक शिक्षा व्यवस्था से सम्बन्धित होते हैं। पाठ्यचर्या निर्माता दूरस्थ शिक्षा संस्था के या अध्ययन धगम सामग्री का निर्माण करते है। लक्ष्य समूह की आवश्यकता के अनुरूप दूरस्थ शिक्षा हेतु स्वअध्ययन सामग्री का निर्माण करना जिससे विशिष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति की जा सके यह पाठ्यक्रम निर्माताओं का मुख्य कार्य हैं।

स्व–अधिगम सामग्री का विकास निश्चित क्रम के अनुसार होता है। सर्वप्रथम कोर्स समन्वयक विशेषज्ञ समिति की बैठक बुलाकर पाठ्यचर्या Syllabus की रूपरेखा निर्धारित करता है। तात्पर्य यह है कि कोर्स के स्तर के अनुकूल प्रश्नपत्रों की संख्या, प्रयोगात्मक कार्य का विवरण आदि की रूपरेखा बनायी जाती है सम्मानित प्रसिद्ध लेखकों की सहमति के पश्चात लेखन कार्य प्रारम्भ होता है।

लेखक अपना कार्य प्रायः अनुबंध के आधार पर करता है। दूरस्थ शिक्षा संस्था का पूर्णकालिक संकाय भी लेखकों में सम्मिलित होता है। लेखन कार्य प्रारम्भ होने के पूर्व

कार्यशाला का आयोजन किया जाता है। लेखकों को लिखने के तरीके बताने के लिये पूर्व लिखित अध्ययन सामग्री नमूने के तौर पर दी जाती है। उनको निश्चित अवधि में लेखन कार्य समाप्त कर विश्वविद्यालय को देना होता है। इसके लिये इन्हें मानक अनुसार पारिश्रमिक दिया जाता है।

तत्पश्चात कोर्स समन्वयक लिखित सामग्री को परिमापक तथा सम्पादक के पास संवर्द्धन और सम्पदित करने के लिये प्रेषित करता है। परिमापक और सम्पादक भी विषय विशेषज्ञ होते हैं इस कार्य के लिये भी विश्व विद्यालय उन्हे भुगतान करता है। अन्त में लिखित पाठ्यसामग्री मुद्रत करा ली जाती है।

3.4.5 प्रश्न पत्र निर्माता

अधिन्यास तथा प्रश्न पत्रों के निर्माण का कार्य सामान्यतः पूर्णकालिक स्टाफ काउन्सलर या पारम्परिक शिक्षा के विषय विशेषज्ञ करते हैं। प्रश्न पत्र निर्माताओं के पैनल का गठन भी प्रतिवर्ष कुलपति की सहमति से किय जाता है।

3.4.6 परीक्षक

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में परीक्षकों की आवश्यकता विशेष रूप से अधिन्यास, मूल्यांकन तथा सत्रीय मूल्यांकन के लिये होती है। इसके लिये विश्वविद्यालय या संस्थान सम्बन्धित विशेषज्ञों की एक सूची बनाकर रखता है। सामान्य रूप से अधिन्यास कार्य (Assignments) तथा संत्रात उत्तर पुस्तिकाओं की जॉच पूर्णकालिक संकाय या काउन्सलर द्वारा करायी जाती है। पर आवश्यकतानुसार पारम्परिक शिक्षकों को भी मूल्यांकन कर्ता के रूप में आमंत्रित किया जाता है। उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन कार्य पारम्परिक विश्वविद्यालयों की भांति होता है पर अधिन्यास कार्य के मूल्यांकन की विधि थोड़ी भिन्न होती है। प्रत्येक पुस्तिका पर मूल्यांकनकर्ता को टिप्पणी देनी होती है उसी टिप्पणी के साथ अधिन्यास की कापी छात्र को लौटायी जाती हैं। टिप्पणी देने का आशय छात्र को उसकी प्रश्नों के उत्तर देने के तरीके की अच्छाइयों तथा कमजोरियों को बताना है।

3.4.7 समन्वयक

समन्वयक का कार्य अध्ययन केन्द्र के विविध क्रिया कलापों को समन्वित करना है। परामर्श सत्रों की संख्या, तिथि, आदि का निर्धारण करना, समय सारणी का निर्माण करना आदि कार्य करना समन्वयक के प्रमुख दायित्व हैं। समन्वयक केन्द्र के समस्त शैक्षिक एवं प्रशासनिक कार्यों के सुचारू संचालन के लिए उत्तरदायी होता है। विश्वविद्यालय में आयोजित गोष्ठियों कार्यक्रमों में भाग ले कर केन्द्र संचालन हेतु दिशा निर्देश प्राप्त करता है। एक प्रकार से अध्ययन केन्द्र की समस्त गतिविधियों का संचालन उसका उत्तरदायित्व होता है।

बोध प्रश्न

18. काउन्सलर/परामर्शदाता के दायित्व बताइये।

.....

.....

.....

19. अध्ययन केन्द्र समन्वयक के कार्य बताइये।

.....

.....

.....

3.5 दूरस्थ शिक्षकों का प्रशिक्षण :

अब तक आप जान गये होंगे कि 'दूरस्थ शिक्षक' से तात्पर्य क्या है। दूरस्थ शिखक से सार रूप से तात्पर्य उन शिक्षकों से है जो दूरस्थ शिक्षा के शैक्षिक क़ियाकलापो से जुड़े होते हैं। इनमें से अधिकांश शिक्षक पारम्परिक विश्वविद्यालयों से सम्बन्धित होते हैं और दूरस्थ शिक्षा की प्रकृति एवं स्वरूप के विषय में उनकी जानकारी होती है। दूरस्थ शिक्षकों को एक से अधिक भूमिकाओं का निर्वहन करना होता है। यह एक नवीन प्रणाली है इसमें अनेक चुनौतियां हैं। दूरस्थ शिक्षा से अनिच्छुक शिक्षकों को कभी भी दूरस्थ शिक्षक नही बनना चाहिये।

पारम्परिक विश्वविद्यालयों में शिक्षक बिना प्रशिक्षण के पढ़ा सकता है किन्तु दूरस्थ शिक्षा में बिना प्रशिक्षण के बहुआयामी जिम्मेदारियां नही निभा सकता सामान्य रूप से विश्वविद्यालय या डिग्री कालेज के शिक्षक छात्रों के बड़े समूह को सामूहिक रूप से सम्बोधित करते हैं। किन्तु दूरस्थ शिक्षक उससे भिन्न हैं, उसे प्रत्येक छात्र को व्यक्तिगत रूप से सम्बोधित करना होता है वह भी दूर रह कर। अतः दूरस्थ शिक्षा में कार्यरत लोगों के लिये प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है किन्तु यदि यह कोर्स दूरस्थ अधिगम विधियो द्वारा करना चाहिये दूरस्थ अधिगम विधि द्वारा प्रशिक्षण कोर्स करने से प्रशिक्षार्थी के हर स्तर से परिचित हो जायेगा।

चयनकर्ताओं को दूरस्थ शिक्षक का चयन करते समय अनिच्छुक शिक्षकों को नही लेना चाहिए क्योकि कोई भी संस्था व्यक्तियों की अभिवृत्ति पर निर्भर करती है।

दूरस्थ शिक्षा संस्थानों में कार्य करने के लिये प्रशिक्षण की आवश्यकता अनुभव की गई ओर इसी सम्बन्ध में Staff Training & Research Institute in Distance Education (STRIDE), की स्थापना की गई। इसके द्वारा लगातार कार्यशालायें आयोजित कर लोगों को दूरस्थ शिक्षा की अवधारणा एवं नवीनतम कौशलों से परिचित कराया जा रहा है।

आवश्यकता इस बात की है कि सभी मुक्त विश्वविद्यालयों एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों में भी इस प्रकार के प्रकोष्ठ विकसित कर समय – समय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

आयोजित किये जाये।

बोध प्रश्न

20) दूरस्थ शिक्षा में प्रशिक्षण क्यों आवश्यक है ?

.....

.....

.....

21) दूरस्थ शिक्षा में प्रशिक्षण के लिए किसकी स्थापना की गयी है ?

.....

.....

.....

3.6 सारांश :

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा परम्परागत शिक्षा प्रणाली से भिन्न है। किसी भी शिक्षण प्रणाली में मानव संसाधन की आवश्यकता होती है अतः मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में शिक्षक की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। पारम्परिक शिक्षक निरन्तर छात्रों के सम्पर्क में रहते हैं शिक्षार्थी अपनी समस्याओं के निदान के लिए उनसे सम्पर्क कर सकते हैं जबकि दूरस्थ शिक्षक की भूमिका बहुआयामी होती है। उसे विविध प्रकार के कार्य सम्पन्न करने होते हैं। परामर्शदाता के रूप में वह सत्रीय कार्य में छात्रों की सहायता करता है। इसके अतिरिक्त दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों की सूचनाओं का आदान प्रदान भी करता है। परामर्शदाता अधिन्यास कार्य का मूल्यांकन एवं परीक्षण भी करता है। स्वअध्ययन सामग्री के निर्माता के रूप में उसकी भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। लेखक के रूप में वह अपना कार्य अनुबन्ध के आधार पर करता है; प्रश्न पत्र के निर्माण का कार्य भी दूरस्थ शिक्षक करता है। उसका एक अन्य महत्वपूर्ण उत्तर दायित्व उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन है। समन्वयक के रूप में वह अध्ययन केन्द्र के समस्त शैक्षिक एवं प्रशासनिक कार्यों के लिए उत्तरदायी होंता है।

दूरस्थ शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण की सघन आवश्यकता है, क्योंकि उसकी भूमिका अनेक है और वह सामान्य रूप से पारम्परिक शिक्षा का अंग होता है।

3.7 अभ्यास कार्य

1) दूरस्थ शिक्षक हेतु प्रशिक्षण की आवश्यकता पर प्रकाश डालिये।

2) दूरस्थ शिक्षक की विविध भूमिकाये बताइये।

3) दूरस्थ शिक्षक की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिये।

4) दूरस्थ शिक्षक पारम्परिक शिक्षक से किस प्रकार भिन्न हैं?

3.8 बोध प्रश्नों के उत्तर :

1. दूरस्थ संस्था में कार्यरत शिक्षक को शिक्षण के अतिरिक्त अन्य कार्य भी करने होते हैं।
2. दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में शिक्षक और शिक्षार्थी का सम्पर्क मात्र परामर्श सत्रों में होता है।
3. विभिन्न दूरस्थ शिक्षा संस्थानों में, मुक्त विश्वविद्यालयों में दूरस्थ शिक्षक के लिये विभिन्न शब्दों का प्रयोग किया जाता है जैसे परामर्शदाता (काउन्सलर), समन्वयक, ट्यूटर, मेन्टर, स्टाफ आदि लेकिन इनके कार्य प्रायः एक ही प्रकार के होते हैं।
4. मुक्त शिक्षा छात्रों को विषय वस्तु, कौशल का ज्ञान कराना एक चुनौती बनकर खड़ा है।
5. शिक्षकों को हम पूर्णकालिक तथा अंशकालिक शिक्षक के रूप में वर्गीकृत कर सकते हैं।
5. जिन शिक्षकों की नियुक्ति दूरस्थ शिक्षा संस्थानों में नियमित आधार पर होती है।
7. जिन शिक्षकों की नियुक्ति दूरस्थ शिक्षा संस्थानों में अनियमित आधार पर होती है।
8. पूर्णकालिक संकाय के समर्पित निष्ठावान होने से दूरस्थ शिक्षा प्रभावी होती है।
9. कुछ विशिष्ट कार्यों हेतु मुक्त विश्वविद्यालय अंशकालिक शिक्षकों की नियुक्ति करता है जैसे– समन्वयक (Coordinator), मेंटर (Mentor), परीक्षक (Counsellor) प्रोजेक्ट सुपरवाइजर आदि ।
10. मुक्त विश्वविद्यालय अध्ययन केन्द्रों की सहायता से अपने कार्य का संचालन करता है तथा क्षेत्रीय केन्द्र उसे लगातार विश्वविद्यालय में नवीनतम विकास एवं गतिविधियों की समस्त जानकारियाँ प्रदान करते हैं।
11. समन्वयक को विद्यार्थी सहायता सेवाओं की व्यवस्था करनी होती है। विश्वविद्यालय के मुख्यालय तथा क्षेत्रीय अध्ययन केन्द्रों के साथ समन्वय स्थापित करना होता है। गैर शिक्षक कर्मचारियों की नियुक्ति, अध्ययन केन्द्र की देखभाल, परीक्षा व्यवस्था, लेखा एवं वित्तीय वर्ष की देखरेख भी समन्वयक का ही कार्य होता है। अध्ययन केन्द्रों की सफलता एवं गुणवत्ता का उत्तरदायित्व समन्वयक पर होता है।
12. दूरस्थ प्रणाली में प्रवेश के इच्छुक एवं प्रवेश पा चुके छात्रों को दूरस्थ शिक्षा परामर्शदाता समय–समय पर परामर्श देकर उन्हें लाभान्वित करते रहते हैं।
13. परामर्श सेवा से तात्पर्य व्यक्ति की आवश्यकता परिस्थिति तथा क्षमता को ध्यान में रखते हुए अनुकूलतम शैक्षिक अवसरों का उपयोग करने के लिए प्रेरित

करना है। अच्छा परामर्शदाता शिक्षार्थी की समस्या/जिज्ञासा को ध्यानपूर्वक सुनता है।

14. परामर्श सत्रों में स्व–अध्ययन सामग्री के अध्ययन में आयी समस्याओं का निदान करता है। अधिन्यास के वितरण जमा कराने, मूल्यांकन कर टिप्पणी देने जैसे विभिन्न कार्य भी परामर्शदाता आवश्यकतानुसार करता रहता है।

15. स्व–अध्ययन सामग्री निर्माता सामान्यतः वरिष्ठ शैक्षिक विशेषज्ञ होते हैं जिनके पास दीर्घकालीन सेवाओं का अनुभव होता है।

16. स्व–अध्ययन सामग्री का विकास निश्चित क्रम के अनुसार होता है।

17. लेखक अपना कार्य अनुबन्ध के आधार पर करता है।

18. मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में परीक्षकों की आवश्यकता विशेष रूप से अधिन्यास, मूल्यांकन तथा स्त्रीय मूल्यांकन के लिए होती है।

19. समन्वयक का कार्य अध्ययन केन्द्र के विविध क्रिया कलापों को समन्वित करना है। परामर्श सत्रों की संख्या, तिथि, आदि का निर्धारण करना, समय सारणी का निर्माण करना आदि कार्य करना समन्वयक के प्रमुख दायित्व हैं।

20. दूरस्थ शिक्षा में बिना प्रशिक्षण के बहुआयामी जिम्मेदारियां नहीं निभाई जा सकती हे। सामान्य रूप से विश्वविद्यालय या डिग्री कालेज के शिक्षक छात्रों के बड़े समूह को सामूहिक रूप से सम्बोधित करते हैं किन्तु दूरस्थ शिक्षक उससे भिन्न हैं उसे प्रत्येक छात्र को व्यक्तिगत रूप से सम्बोधित करना होता है।

21) इसी सम्बन्ध में Staff Training & Research Institute in Distance Education (STRIDE), की स्थापना की गयी है।

3.9 कुछ उपयोगी पुस्तके

- शर्मा, आर० ए० – डिस्टैन्स ऐजूकेशन, मेरठः ईगल बुक्स इन्टरनेशनल, 1995
- शर्मा, आर० ए०– शिक्षा तकनीकीः मेरठः इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस, 2002
- साहू, पी० के० – ओपन लर्निंग सिस्टमः न्यू देल्ही : उप्पल पब्लिकेशन्स, 1994
- साहू, पी० के० – ऐजूकेशनल टेक्नोलोजी इन डिस्टेनसः न्यू देल्हीः अरावती, 1999
- Singh, R.P. (1996). Distance Teacher Education
- Yashwantrao Chanuvan Maharashtra Open University: www.ycmou.com
- Cobb, P. (2001) Supporting the Improvement of Learning and Teaching in Social and Institutional Context.
- Dahiya S.S. (2005) ICT-Enabled Teacher Educator. University News, 43, p.109-114, May 2-8

इकाई 4– दूरस्थ विद्यार्थी

संरचना

4.1 प्रस्तावना

4.2 उद्देश्य

4.3 दूरस्थ विद्यार्थी की प्रकृति

4.4 दूरस्थ विद्यार्थियों के प्रकार

- 4.4.1 वयस्क विद्यार्थी
- 4.4.2 युवा विद्यार्थी
- 4.4.3 विकलांग विद्यार्थी
- 4.4.4 महिला विद्यार्थी

4.5 दूरस्थ विद्यार्थियों की समस्यायें

4.6 दूरस्थ विद्यार्थी के स्व–अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक

4.7 सारांश

4.8 अभ्यास कार्य

4.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

4.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

4.1 प्रस्तावना

अब तक आप दूरस्थ शिक्षा की अवधारणा से परिचित हो चुके हैं तथा यह भी अच्छी तरह जान गये है कि यह परम्परागत शिक्षा प्रणाली से भिन्न है। परम्परागत शिक्षा प्रणाली की प्रमुख विशेषता यह है कि विद्यार्थी और शिक्षक लगातार सम्पर्क में रहकर अन्तःक्रिया करते हैं। दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के जैसा नाम से ही विदित है अध्यापक और विद्यार्थी के मध्य दूरी होती है जिसे विविध प्रकार से कम करने का प्रयास किया जाता है। दूरस्थ शिक्षा में 'सीखने' की अवधारणा परम्परागत शिक्षा से भिन्न होती है इसमें F2F (face to face) विधि का लगातार प्रयोग नही किया जाता है। परम्परागत शिक्षा प्रणाली में शिक्षक एवं छात्र के मध्य आमने सामने बैठ कर मौखिक संवाद होता है जबकि दूरस्थ शिक्षा में मुद्रित एवं अमुद्रित बहुमाध्यमो का प्रयोग संचार माध्यम के रूप में शिक्षक एवं छात्र के बीच अन्तर्क्रिया के लिए किया जाता है। संचार माध्यम शिक्षक और शिक्षार्थी के मध्य सम्पर्क करने में अच्छी भूमिका निभा रहे हैं। यहाँ पर हम शिक्षक की प्रकृति को समझने की चेष्टा करेंगे।

4.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आप इस योग्य हो जायेंगे कि

- दूरस्थ विद्यार्थी की प्रकृति से परिचित हो सकेंगे।
- दूरस्थ विद्यार्थी के प्रकारों को जान जायेंगे।
- दूरस्थ विद्यार्थी की समस्याओं से अवगत हो सकेंगे।
- दूरस्थ विद्यार्थी के स्व–अधिगम को प्रभावित करने वाले कारकों को जान जायेंगे।

दूरस्थ शिक्षा के क्रिया कलापों को भली भाँति समझने के लिये उसके सम्पूर्ण घटकों को समझना अनिवार्य है। दूरस्थ शिक्षा में दूरस्थ शिक्षक और दूरस्थ शिक्षार्थी की भूमिका पारम्परिक शिक्षक और शिक्षार्थी की भूमिका से भिन्न होती है। छात्र सहायता सेवायें शिक्षण प्रक्रिया को सरल और सहज बनाने में मदद करती है। दूरस्थ शिक्षा की मूल्यांकन प्रक्रिया भी अलग होती है जिसमें अधिन्यास जो एक प्रकार का गृहकार्य होता है उस पर बहुत बल दिया जाता है। दूरस्थ शिक्षा के अन्तर्गत लचीली प्रवेश विधि, विद्यार्थी छात्र सेवायें, परामर्श सत्र, क्रेडिट पद्धति, लचीली मूल्यांकन पद्धति इत्यादि आती है।

वास्तव में दूरस्थ तथा मुक्त शिक्षा में विद्यार्थी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के केन्द्र में होते हैं,, अर्थात् दूरस्थ शिक्षा पूर्ण रूप से विद्यार्थी की आवश्यकताओं और रूचियों के अनुकूल निर्मित की जाती है और मुक्त विश्वविद्यालय व दूरस्थ शिक्षा की अन्य समस्यायें स्वाध्याय के लिये उपयुक्त वातावरण का निर्माण करते हैं।

4.3 दूरस्थ विद्यार्थियों प्रकृति

दूरस्थ शिक्षा का सर्वाधिक महत्व उसके लचीलेपन में दिखायी देता है जो सभी उम्र के अध्येताओं की शैक्षिक आवश्यकताओं के अनुकूल ढल जाती है। इस लचीलेपन को व्यवहारिक तरीकों के रूप में समझना और उपयोग में लाना चाहिये। शैक्षिक योजनाकारों के समक्ष दूरस्थ विद्यार्थियों के बीच विभिन्न आयु वर्गों के कारण गम्भीर शैक्षिक समस्याये इसलिये उत्पन्न हो जाती हैं क्योंकि आयु सम्बन्धी भिन्नताओं के अतिरिक्त उनके सीखने की विधियों में भी काफी अन्तर होता है। विषयवस्तु/पाठ्यक्रम के चयन, पूर्ण करने की क्षमता, मूल्यांकन योजना इत्यादि को भी आयु प्रभावित करती है। अधिक उम्र के विद्यार्थी परीक्षा के लेखन कार्य में कठिनाई अनुभव करते हैं जबकि कम उम्र के छात्र परिपक्व छात्र की तुलना में परीक्षा में सहजता से लेखन कार्य करते हैं। आयु भेद के कारण छात्र सहायता सेवाओं का आयेजन भी प्रभावित होता है।

दूरस्थ विद्यार्थी को समझने के लिये लैंगिक असमानताओं की उपेक्षा कर दी जाती है। वास्तव में ग्रामीण क्षेत्रों, झोपड़ पटटी, जनजातीय क्षेत्रों में यह असमानता अधिक दिखायी देती है। इससे विदित होता है कि नीति निर्धारक लोगों ने इस असमानता पर पर्याप्त ध्यान नही दिया है। उपेक्षित वर्ग की महिलाओं को अनेक सुविधाओं और भेद–भाव से ग्रस्त रहना पड़ता है। अतः दूरस्थ शिक्षा संस्थाओं को उनकी शैक्षिक आवश्यकताओं को अधिक ध्यान देते हुए पूरा करना चाहिये। भारत जैसे देश में वर्ग और जाति में बहुत असमानता पायी जाती है। जाति प्रथा और विभिन्न वर्गों ने शिक्षा के लोकतन्त्रीकरण में अवरोध उत्पन्न किया है। साथ – साथ ग्रामीण और सामाजिक रूप से पिछड़े लोगों के पास शिक्षा प्राप्त करने के लिये पर्याप्त धन नही होता और न ही शैक्षिक वातावरण घरों में रहता है। यदि इन परिवारों और समुदाय के सदस्यों को आवश्यक आर्थिक सहायता प्राप्त हो जाये तो वे आसानी से अच्छी शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं इस संदर्भ में शैक्षिक निर्देशन के लिये आवश्यक आत्म विश्वास आवश्यक है।

यहाँ पर आपके लिये यह भी जानना आवश्यक है कि शहरी विद्यार्थी को सभी सूचनायें यथाशीघ्र मिल जाती है जबकि ग्रामीण विद्यार्थी प्रायः सूचना के अभाव में दूरस्थ शिक्षा सम्बन्धी सेवाओं का लाभ नही उठा पाता है। दूरस्थ शिक्षा का लाभ उठाने के लिये विद्यार्थियों में भाषायी कुशलतायें अत्यधिक महत्वपूर्ण होती हैं भारत वर्ष में उच्चस्तर पर कुछ विषय अंग्रेजी के माध्यम से पढ़ाये जाते हैं।

आमतौर से दूरस्थ शिक्षार्थी में विश्वास एवं सहजता का अभाव होता है। युवाओं को दूरस्थ शिक्षा में समाजीकरण तथा विद्यालय परिसर में प्राप्त होने वाली प्रसन्नता की कमी का अनुभव करते हैं। प्रायः महिलाये, युवा गृहणियाँ, बेरोजगार युवक, दूरस्थ शिक्षा के प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी मामूली सी असुविधा होते ही पढ़ाई छोड़ देते हैं।

दूरस्थ संस्था का कोई भी प्रारम्भिक नकारात्मक अनुभव विद्यार्थी के मन में दूरस्थ शिक्षा के प्रति नकरात्मक दृष्टिकोण विकसित कर देता है। आवश्यकता इस बात की है दूरस्थ शिक्षार्थी अपनी सभी समस्याओं का समाधान स्वयं खोज सके और इस पद्धति में उसका विश्वास और सुदृढ़ हो सके। वास्तव में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में अध्ययनरत विद्यार्थियों की परिस्थितियाँ परम्परागत शिक्षा प्रणाली से भिन्न होती है। वस्तुतः दूरस्थ प्रणाली का सम्पूर्ण आधार उसके विद्यार्थियों के अधिक परिपक्व, अधिक अभिप्रेरित, अधिक सक्रिय होने मे निहित होता है। दूरस्थ शिक्षार्थी की संक्षेप में विशेषतायें निम्न हैः–

(1) दूरस्थ विद्यार्थी स्वप्रेरित और स्व निर्देशित होते हैं।

(2) अपने अनुभवों का प्रयोग अपने अध्ययन में करते हैं।

(3) उनके लक्ष्य स्पष्ट और व्यवहारिक होते हैं।

(4) अधिगम योजनाये सुस्पष्ट होती हैं।

(5) व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये शिक्षा के लचीलेपन से लाभ उठाते हैं।

(6) दूरस्थ शिक्षार्थी एकाकीपन का अनुभव करते हैं।

बोध प्रश्न

1. दूरस्थ शिक्षा के लचीलेपन से क्या अभिप्राय है ?

.....

.....

.....

2. दूरस्थ और परम्परागत विद्यार्थियों की परिस्थितियाँ कैसे भिन्न होती हैं ?

.....

.....

.....

3. दूरस्थ शिक्षार्थी की विशेषताएं संक्षेप में बताइए –

.....

.....

.....

4.4 दूरस्थ विद्यार्थियों के प्रकार :

दूरस्थ शिक्षा को पूर्ण रूप से समझने के लिये दूरस्थ शिक्षार्थियों की प्रकृति, विशेषताओं तथा अधिगम शैलियों को समझना आवश्यक है। दूरस्थ अध्येता प्रायः स्वतन्त्र होते हैं उन्हें पता रहता है कि उन्हें पाठ्यक्रम पूरा करने के लिये स्वयं बहुत मेहनत करनी होगी। वे कार्यक्रम के चयन से लेकर परामर्श मूल्यांकन, आदि में आने वाली समस्याओं को स्वतः सुलझाते हैं। वयस्क दूरस्थ अध्येता अपनी शिक्षा तथा व्यवसाय के बारे में सुविचारित निर्णय लेने में सक्षम होते हैं। उन्हें पता होता है कि इस कार्यक्रम का चुनाव क्यों किया, इससे उन्हें क्या फायदा है, स्वाध्याय मे उनका विश्वास होता है। पूर्व ज्ञान इस नवीन ज्ञान को अर्जित करने में उनकी सहायता करता है। दूरस्थ शिक्षा में युवा, प्रौढ़, महिलाये, विकलांग सभी अध्ययन करते हैं अतः दूरस्थ विद्यार्थियों के बारे में पर्याप्त जानकारी आवश्यक है तभी मुक्त विश्वविद्यालय सफलता प्राप्त कर सकते हैं। दूरस्थ अध्येताओं को निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है।

- वयस्क विद्यार्थी
- यूवा विद्यार्थी
- विकलांग विद्यार्थी
- महिला विद्यार्थी

बोध प्रश्न

4. दूरस्थ विद्यार्थी कैसे होते हैं ?

.....

.....

.....

5. दूरस्थ विद्यार्थियों का वर्गीकरण बताइए –

.....

.....

.....

4.4.1 वयस्क विद्यार्थी :

अक्सर ज्ञान प्राप्ति की लालसा, आगे बढ़ने की प्रतिबद्धता, स्व अध्ययन की क्षमता, आत्म विश्वास, व्यवसाय के साथ वयस्क अध्येता को अध्ययन करने के लिये प्रेरित करता है। दूरस्थ शिक्षा तभी सफल होती है। यदि दूरस्थ संस्था व वयस्क विद्यार्थी के मनोविज्ञान से परिचित हो और अपनी सहायता सेवाये उनके अनुकूल बना सके। दूरस्थ शिक्षा की सम्पूर्ण संरचना इस प्रकार की होनी चाहिये जहाँ वयस्क विद्यार्थी अधिक से अधिक लाभ उठा सके। दूरस्थ शिक्षक भी दूरस्थ विद्यार्थियों की प्रकृति को जानकर अपने शिक्षण कार्य को सरल बना सकते हैं। वयस्क शिक्षार्थियों को अनेक कार्य करने होते है जिनमें से एक शिक्षा प्राप्त करना भी होता है। वयस्क शब्द एक सापेक्ष शब्द है इसकी व्याख्या सिर्फ विशिष्ट संदर्भ में ही की जा सकती है। ये सभी वयस्क 18 वर्ष से 70 – 80 वर्ष तक के होते हैं परन्तु सामान्य रूप से अधिकांश 30 से 50 वर्ष की आयु के होते हैं। इस वय वर्ग में आयु, शैक्षिक पृष्ठभूमि अध्ययन, अधिगम कौशल आदि में पर्याप्त भिन्नता पायी जाती है। काम काजी प्रौढ़ अध्येताओं के लिये नियमित अध्ययन कर पाना सम्भव नहीं है। वे अवकाश काल में, यात्रा करते समय पढ़ाई का कार्य करते हैं। उनके लिये पढ़ाई एवं कार्य में संतुलन करना चुनौतीपूर्ण कार्य होता है वे उचित संतुलन द्वारा अपनी सफलता सुनिश्चित करते हैं। इनकी विशेषताये निम्न होती है–

1. ये परिपक्व और स्वतः अध्ययन के लिये प्रेरित रहते है।
2. इनकी प्रतिबद्धताये विविध कार्यो के लिये होती है।
3. इनको शिक्षा संस्था में एकाकीपन महसूस होता है, अतः ये संस्था से अधिक

संवेगात्मक सहयोग की अपेक्षा करते है।

4. इनकी आयु सामान्य शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियो से अधिक होती है, ये 25 – 30 वर्ष से लेकर 60–65 वर्ष तक के होते हैं।
5. इनके सीखने का तरीका अन्य विद्यार्थियों से अलग होता है। सामान्य रूप से तकनीकी विषयों को समझने में इन्हें अधिक देर लगती है पर सामान्य विषय ये जल्दी ग्रहण करते हैं।
6. वयस्क विद्यार्थियों का व्यवहार युवा विद्यार्थी के व्यवहार से अधिक परिपक्व होता है। वे संस्था से भी सहृदयतापूर्ण व्यवहार की आशा करते है।
7. वयस्क विद्यार्थियों की ग्रहण करने की क्षमता युवा विद्यार्थियों से कम होती है अतः परीक्षा में वे कठिनाई का अनुभव करते हैं।
8. वयस्क विद्यार्थियों को भाषा पर अधिक अधिकार होता है यह उनके परीक्षा में दिये गये उत्तरों में भी दिखायी देती है।

बोध प्रश्न

6. वयस्क विद्यार्थी किसे कहते हैं ?

.....

.....

.....

7. दूरस्थ विद्यार्थी पारम्परिक विद्यार्थी से किस प्रकार भिन्न होता है ?

.....

.....

.....

8. दूरस्थ विद्यार्थी कितने प्रकार के होते हैं?

.....

.....

.....

9. दूरस्थ वयस्क विद्यार्थी किन अर्थो में अन्य विद्यार्थियों से अलग होते हैं?

.....

.....

.....

4.4.2. युवा विद्यार्थी

इसके अन्तर्गत वे सभी विद्यार्थी लड़के–लड़कियां आते हैं जो सामान्य रूप से पारम्परिक विश्वविद्यालय में प्रवेश लेने के इच्छुक होते हैं पर विविध कारणों जैसे – मनपसंद कोर्स में प्रवेश न मिलने के कारण, दूरी के कारण, अन्य कार्य करते हुए पढ़ना चाहने आदि के कारण पारम्परिक विश्वविद्यालयों में प्रवेश नही ले पाते। दूरस्थ विद्यार्थी के रूप में इनकी विशेषतायें निम्न होती हैं।

1) प्रवेश की प्रक्रिया से वे संतुष्ट नही होते हैं।

2) वे अधिन्याप्त कार्य अति शीघ्र कर लेते हैं।

3) विद्यार्थी सहायता सेवाओं से प्रायः असंतुष्ट होते हैं।

4) परामर्श सत्रों में आने के लिये उत्सुक नहीं होते हैं।

5) अध्ययन के लिये स्व–प्रेरणा का अभाव रहता है।

6) लेखन क्षमता तथा तकनीकी ज्ञान अन्य प्रकार के दूरस्थ विद्यार्थियों की तुलना में अधिक होता है।

बोध प्रश्न

10. कौन से युवा विद्यार्थी दूरस्थ संस्थानों में प्रवेश लेते हैं ?

.....

.....

.....

11. युवा विद्यार्थी की प्रमुख विशेषताएं बताइए ?

.....

.....

.....

4.4.3 विकलांग विद्यार्थी :

विभिन्न प्रकार की अपंगता वाले विद्यार्थियों को शिक्षा देने पर मुक्त शिक्षा संस्थायें विशेष ध्यान देती हैं। ब्रिटेन, जर्मनी, हॉगकांग, चीन, संयुक्त राज्य अमेरिका के मुक्त विश्वविद्यालयों में अनेकों अपंग छात्र नामांकित हैं। इग्नू ने अध्ययन शुल्क में विकलांगो को छूट दी है तथा उनके लिये विशेष अध्ययन केन्द्र भी बनायें गये हैं। इस सम्बन्ध में कोई स्पष्ट नीति नही बनायी गई है परन्तु मुक्त विश्वविद्यालय विशिष्ट माध्यमों द्वारा विकलांगों को शिक्षा देना अपनी जिम्मेदारी समझ रहे हैं। इनकी विशेषतायें निम्न हैं –

1) परामर्श सत्रों में उपस्थित होने में मुश्किल आती है।

2) परीक्षा, प्रवेश, अधिन्यास कार्य से अन्य लोगों तथा संस्था से विशेष सहायता की अपेक्षा रहती है।

3) विद्यार्थी सहायता सेवाओं का भरपूर लाभ नहीं उठा पाते।

4) विकलांगता के कारण उनकी मानसिकता व संवेदनशीलता अन्य विद्यार्थियों से अलग होती है।

यह महसूस किया जा रहा है कि भारतवर्ष में दूरस्थ शिक्षा संस्थानों तथा मुक्त विश्वविद्यालयों द्वारा विकलांग व्यक्तियों की शिक्षा का प्रबन्ध प्रभावी ढ़ग से किया जाये। दूर शिक्षा के कार्यक्रम के निर्माण तथा उसके क्रियान्वयन के समय शारीरिक अपंगताओं जैसे गतिहीनता, दृष्टि एवं श्रवण दोष, मनसिक मन्दता, भिन्न प्रकार की अधिगम अक्षमताओं (Learning disabilities) जैसे स्वालीनता, वाचन दोष इत्यादि पर गम्भीरता पूर्वक ध्यन दिया जाना चाहिये।

बोध प्रश्न

12. इग्नू ने अध्ययन में विकलांगों को क्या छूट दी है ?

.....

.....

.....

13. क्या इस सम्बन्ध में कोई नीति बनी है ?

.....

.....

.....

4.4.4 महिला विद्यार्थी

महिला विद्यार्थी से तात्पर्य उन सभी महिलाओं से है जो सामजिक, आर्थिक, शैक्षिक कारणों से उच्च अध्ययन से वंचित रह जाती हैं। अक्सर लैंगिक असमानता भी उनकी पढ़ाई में अवरोध उत्पन्न करती है। सामान्य रूप से ये महिलायें ग्रामीण होती है या नगर की मलिन, पिछड़ी बस्तियों में निवास करती है। जनजातीय क्षेत्रों में रहने वाली महिलायें भी इन्ही के अन्तर्गत आती हैं। ये अशिक्षित जनसंख्या का बहुत बड़ा भाग होती हैं। लैंगिग असमानता की समस्याओं के कारण भी बहुत सी महिलाये, लड़कियां उच्च शिक्षा से वंचित रह जाती हैं। यद्यपि समाज में आज भी महिलाओं की शिक्षा के प्रति पूर्वाग्रह विद्यमान है। नगरीय संस्कृति में पली भली लड़कियां अत्यन्त

प्रगतिशील दिखायी देती हैं तथापि उपेक्षित महिलाओं की संख्या अत्यधिक है वे समाज में फैले लैंगिग भेदभाव की शिकार हैं दूर शिक्षा संस्थाओं को विकसित और कार्यान्वित करते समय दूरस्थ महिला विद्यार्थियों की समस्या को ध्यान में रखना चाहिये। घर परिवार प्रायः महिलाओं की उच्च शिक्षा को उपेक्षा की दृष्टि से देखता है और उसे प्राप्त करने में तरह तरह के अवरोध उत्पन्न करता हैं। महिला दूरस्थ विद्यार्थियों की विशेषतायें निम्न हैं–

(1) वे अध्ययन के प्रति अत्यन्त निष्ठावान होती हैं यद्यपि समयाभाव के कारण वे इच्छानुसार अध्ययन नही कर पाती।

(2) सामाजिक और घरेलू कारणों से परामर्श सत्रों में उनकी उपस्थिति प्रायः कम होती है।

(3) मुक्त शिक्षा के विविध कार्यो हेतु वे पुरूषों की सहायता लेती हैं।

(4) वे दौड़ भाग के कार्यों से बचना चाहती हैं।

बोध प्रश्न

14. महिला विद्यार्थियों की पढ़ाई में अक्सर क्या अवरोध उत्पन्न होता है ?

.....

.....

.....

15. महिलाएं एवं लड़कियां उच्च शिक्षा से वंचित रह जाती है ?

.....

.....

.....

16. महिला विद्यार्थी किन चीजों से बचना चाहती है ?

.....

.....

.....

4.5 दूरस्थ विद्यार्थी की समस्यायें

दूरस्थ शिक्षा को प्रभावी बनाने के लिये आवश्यक है कि दूरस्थ शिक्षा के नीति निर्धारक, अध्यापक, प्रशासक, परामर्शदाता आदि दूरस्थ विद्यार्थियों की समस्याओं से भली –भाँति परिचित हो सकें। विद्यार्थियों की शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये, एवं उनकी समस्याओं को दूर करने के लिये लचीली, व्यवहारिक प्रणाली की

आवश्यकता है। निश्चय ही ऐसी प्रणाली का निर्माण और क्रियान्वयन का कार्य बहुत चुनौतीपूर्ण है। दूरस्थ विद्यार्थी की प्रमुख समस्याये निम्न हैं–

(1) व्यवसाय, परिवार और अध्ययन के मध्य समन्वयन बिठाना।

(2) मुक्त विश्वविद्यालय व अध्ययन केन्द्र से दूरी।

(3) अध्ययन के लिये समय का अभाव।

(4) अकेलापन तथा साथियों के मध्य अर्न्तक्रिया का अभाव।

(5) परामर्श सत्रों में उपस्थित होने में असमर्थता

(6) ICT के प्रयोग में कुशलता का अभाव।

(7) संसाधनों की कमी।

(8) स्व–अध्ययन सामग्री की कठिन भाष एवं कठिन अनुवाद से विषय वस्तु ग्रहण करने में मुश्किलें आती है।

(9) कुछ कार्यक्रम सिर्फ अंग्रेजी भाषा में उपलब्ध हैं जिनमें विद्यार्थियों को मुश्किलें आती हैं।

(10) कम्प्यूटर के ज्ञान का अभाव होने के कारण विद्यार्थी Website से जानकारी लेने में कठिनाई अनुभव करते हैं जिनके कारण विद्यार्थियों की समस्यायें बढ़ती हैं।

(11) 'स्व अध्ययन सामग्री का अध्ययन करने के लिये स्वप्रेरणा का अभाव है। अध्ययन के लिये समय निकाल पाने का प्रत्यक्ष सम्बन्ध अभिप्रेरणा से जुड़ा होता है। बहुत से लोग अत्यन्त व्यस्तता के बाद भी बहुत कुछ पढ़ लेने का समय निकाल लेते हैं।

(12) बहुत से दूरस्थ विद्यार्थी अपने लिये अनुपयुक्त पाठ्यक्रम का चयन कर लेते हैं जिसमें उनकी रूचि नही होती।

(13) प्रायः अत्यन्त विस्तृत पाठ्यक्रम दूरस्थ विद्यार्थियों को बोझिल प्रतीत होता है।

सार रूप में, विद्यार्थियों में आवश्यक अध्ययन कौशलों की कमी होती है। विद्यार्थी विभिन्न प्रकार के होते हैं। उनमें से कुछ की अध्ययन उपागम क्षमतायें सीमित होती हैं। विद्यार्थियों की आयु, शैक्षिक पृष्ठभुमि अभिरूचि, अध्ययन या अधिगम कौशल आदि में पर्याप्त भिन्नता पाई जाती है। दूरस्थ विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं को हल करने के लिये दूरस्थ शिक्षकों, परामर्शदाताओं, समन्वयको, शिक्षण संस्थाओं के प्रशासको को पहल करनी होगी। अनेक दूरस्थ शिक्षार्थियों की अपनी व्यक्तिगत समस्यायें होती हैं। कुछ समस्यायें जहाँ वे व्यवसाय करते हैं वहाँ से जनित होती हैं। काम–काजी लोगों को प्रायः सुबह और शाम की कक्षाओं में आना चाहते हैं। अनेक दूरस्थ विद्यार्थी 'स्व–अध्ययन सामग्री' का कैसे अध्ययन करें, अधिन्यास कैसे लिखें आदि समझ नही पाते हैं। इसके लिये समय समय पर परामर्श सत्र आयोजित किये

जाते हैं।

अब तक आप समझ गये होंगे कि दूरस्थ विद्यार्थियों की विविध समस्याये हैं और उनकी शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये समस्याओं का निराकरण जटिल कार्य है वास्तव में 'निजी अध्ययन' और दूर मुक्त अधिगम के बीच बहुत अन्तर है। यहाँ पर उन कारकों की चर्चा करेंगे जिनके दूरस्थ विद्यार्थी की सीखने की प्रक्रिया तीव्र गति से आगे बढ़ सकती है और वह अपने उद्देश्य को प्राप्त कर सकता है।

बोध प्रश्न

17. कम्प्यूटर का ज्ञान अधिगम को कैसे प्रभावित करता है ?

.....

.....

.....

18. दूरस्थ विद्यार्थी की प्रमुख समस्याएं क्या हैं ?

.....

.....

.....

4.6 दूरस्थ विद्यार्थी के स्व–अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक

दूरस्थ शिक्षा से जुड़े लोगों को दूरस्थ पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेने के लिये निश्चित रूप से अभिप्रेरणा देनी होगी। जब छात्र अध्ययन के लिये नामांकित हो जाता है तो उसे पाठ्यक्रम पूरा करने तक स्व–अधिगम के लिये प्रेरित करते रहना चाहिये अन्यथा वह पाठ्यक्रम बीच में ही छोड़ सकता है। लचीली व्यवस्था छात्र की सहायता के लिये दूरस्थ शिक्षा में उपलब्ध रहती है परन्तु छात्र को समय–समय पर प्रेरित करना चाहिए कि वह अपना पाठ्यक्रम कम से कम समय में पूरा कर लें। दूरस्थ शिक्षा के विद्यार्थी 18 वर्ष से 70–80 वर्ष तक के होते हैं परन्तु सामान्य रूप से अधिकांश विद्यार्थी 30 से 50 वर्ष की आयु के होते हैं। दूरस्थ शिक्षा के विद्यार्थियायें में आयु, शैक्षिक पृष्ठभूमि अध्ययन, अधिगम कौशल आदि मे पर्याप्त भिन्नता पायी जाती है। काम काजी प्रौढ़ अध्येताओं के लिये नियमित अध्ययन कर पाना सम्भव नही है। वे अवकाश काल में, यात्रा करते समय पढ़ाई का कार्य करते हैं। उनके लिये पढ़ाई एवं कार्य में सन्तुलन करना चुनौतीपूर्ण कार्य होता है। वे उचित संतुलन द्वारा अपनी सफलता सुनिश्चित करते हैं।

दूरस्थ विद्यार्थी के स्व–अधिगम को प्रभावित करने वाले निम्न कारक चिन्हित किये गये हैं–

1) विद्यार्थी को इस बात के लिये आश्वस्त करें कि पाठ्यक्रम तथा उसमें निहित सामग्री जिसे वह सीखने जा रहा है अत्यन्त लाभदायक और रूचिकर है।

2) विद्यार्थियों की आवश्यकताओं एवं क्षमताओं के आकलन में उनकी सहायता करें।

3) विद्यार्थियों को स्व अध्ययन योजनायें बनाने के लिये प्रेरित करें।

4) ICT के प्रयोग द्वारा ज्ञान के सुदृढ़ीकरण की उपयोगिता बतायें तथा ICT का उपयोग करने के लिये छात्र को प्रेरित कर प्रतिपुष्टि लें।

5) अध्ययन सामग्री में नई सूचनायें ढूढने और अन्य प्राप्य संसाधनों का पता लगाने के लिये कहें।

6) सीखने के लिये अभिवृत्ति विकसित करने में सहायता करें।

7) सामूहिक क्रियाकलापों को प्रोत्साहित करें।

बोध प्रश्न

19. स्व–अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक क्या हैं ?

.....

.....

.....

20. स्व अधिगम के लिए दूरस्थ विद्यार्थी को प्रेरित करना क्यों अनिवार्य है ?

.....

.....

.....

4.7 सारांश

दूरस्थ शिक्षा में दूरस्थ शिक्षक और शिक्षार्थी की भूमिका पारम्परिक शिक्षक और शिक्षार्थी की भूमिका से भिन्न होती है। सहायता सेवायें शिक्षण प्रक्रिया को सरल और सहज बनाने में मदद करती है। सम्पूर्ण शिक्षण प्रक्रिया में दूरस्थ विद्यार्थी शिक्षण के केन्द्र में होता है। दूरस्थ शिक्षा पूर्णरूप से विद्यार्थी की आवश्यकताओं और रूचियों के अनुकूल निर्मित की जाती है।

दूरस्थ शिक्षा को पूर्ण रूप से समझने के लिये दूरस्थ विद्यार्थियों की प्रवृत्ति, विशेषताओं तथा अधिगम शैलियों को समझना आवश्यक है। दूरस्थ विद्यार्थियों को निम्न रूप से वर्गीकृत किया जा सकता है–

- **वयस्क विद्यार्थी**
- **युवा विद्यार्थी**

– विकलांग विद्यार्थी

– महिला विद्यार्थी

दूरस्थ विद्यार्थी को विविध समस्याओं का सामना करना पड़ता है। विद्यार्थियों की शैक्षिक आवश्यकंताओं को पूरा करने के लिये उनकी समस्याओं को दूर करने के लिये लचीली, व्यवहारिक प्रणाली की आवश्यकता है जिसका निर्माण और क्रियान्वयन का कार्य बहुत चुनौतीपूर्ण है। दूरस्थ विद्यार्थी के स्व अधिगम को प्रभावित करने वाले बहुत से कारक है जिसमें 'अभिप्रेरणा' एक प्रमुख कारक हैं। जब छात्र नामांकित हो जाता है तो उसे पाठ्यक्रम पूरा करने तक स्वअधिगम के लिये प्रेरित करते रहना चाहिये। दूरस्थ विद्यार्थी के लिये यह समझना आवश्यक है कि जो पाठ्य सामग्री उसे दी गई है वह अत्यन्त लाभदायक है।

4.8 अभ्यास कार्य

1. दूरस्थ विद्यार्थी की विशेषतायें बताईये।
2. दूरस्थ शिक्षा में वयस्क विद्यार्थी से क्या अभिप्राय है?
3. "विकलांग विद्यार्थी को उच्च शिक्षा प्रदान करना दूरस्थ शिक्षा की जिम्मेदारी है," स्पष्ट कीजिये।
4. दूरस्थ विद्यार्थी की प्रमुख समस्यायें क्या हैं।
5. महिला विद्यार्थियों को दूरस्थ शिक्षा प्राप्त करने में क्या विशिष्ट समस्याये आती है?
6. दूरस्थ विद्यार्थी के स्व अधिगम को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक बताइये।

4.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. दूरस्थ शिक्षा का सर्वाधिक महत्व उसके लचीलेपन में दिखायी देता है जो सभी उम्र के अध्येताओं की शैक्षिक आवश्यकताओं के अनुकूल ढल जाती है। इस लचीलेपन को निश्चित व्यवहारिक तरीकों के रूप में समझना और उपयोग में लाना चाहिए। शैक्षिक योजनाकारों के समक्ष दूर विद्यार्थियों के बीच विभिन्न आयु वर्गो के कारण गम्भीर शैक्षिक समस्याएं इसलिए उत्पन्न हो जाती हैं क्योंकि आयु सम्बन्धी भिन्नताओं के अतिरिक्त उनके सीखने की विधियों में भी अन्तर होता है।
2. वास्तव में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में अध्ययनरत विद्यार्थियों की परिस्थितियाँ परम्परागत शिक्षा प्रणाली से भिन्न होती है। वस्तुतः दूरस्थ प्रणाली का सम्पूर्ण आधार उसके विद्यार्थियों के अधिक परिपक्व, अधिक अभिप्रेरित, अधिक सक्रिय होने में निहित होता है।
3. दूरस्थ शिक्षार्थी की संक्षेप में विशेषताएं निम्न हैं –
   1. दूरस्थ विद्यार्थी स्वप्रेरित और स्व–निर्देशित होते हैं।

2. अपने अनुभवों का प्रयोग अपने अध्ययन में करते हैं।
3. उनके लक्ष्य स्पष्ट और व्यवहारिक होते हैं।
4. अधिगम योजनाएं सुस्पष्ट होती हैं।
5. व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए शिक्षा के लचीलेपन से लाभ उठाते हैं।
6. दूरस्थ शिक्षार्थी एकाकीपन का अनुभव करते हैं।

4. दूरस्थ अध्येता स्वतंत्र होते हैं उन्हें पता रहता है कि उन्हें कोर्स पूरा करने के लिए स्वयं बहुत मेहनत करनी होगी। वे कार्यक्रम के चयन से लेकर परामर्श, मूल्यांकन आदि में आने वाली समस्याओं को स्वतः सुलझाते हैं। वयस्क दूरस्थ अध्येता अपनी शिक्षा तथा व्यवसाय के बारे में सुविचारित निर्णय लेने में सक्षम होते हैं।

5. दूरस्थ अध्येताओं को निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है –
   - वयस्क विद्यार्थी
   - युवा विद्यार्थी
   - विकलांग विद्यार्थी
   - महिला विद्यार्थी

6. वयस्क शिक्षार्थियों को अनेक कार्य करने होते हैं जिनमें से एक शिक्षा प्राप्त करना भी होता है। वयस्क शब्द एक सापेक्ष शब्द है इसकी व्याख्या सिर्फ विशिष्ट संदर्भ में ही की जा सकती है। ये सभी वयस्क 18 वर्ष से 70–80 वर्ष तक के होते हैं परन्तु सामान्य रूप से अधिकांश 30 से 50 वर्ष की आयु के होते हैं। इस वय वर्ग में आयु, शैक्षिक पृष्ठभूमि अध्ययन, अधिगम कौशल आदि में पर्याप्त भिन्नता पायी जाती है। कामकाजी प्रौढ़ अध्येताओं के लिए नियमित अध्ययन कर पाना सम्भव नहीं है। वे प्रायः अवकाश काल में, यात्रा करते समय पढ़ाई का कार्य करते हैं। उनके लिए पढ़ाई एवं कार्य में संतुलन करना चुनौतीपूर्ण कार्य होता है।

7. ये परिपक्व और स्वतः अध्ययन के लिए प्रेरित रहते हैं।
   1. इनकी प्रतिबद्धताएं विविध कार्यो के लिए होती है।
   2. इनको शिक्षा संस्था में एकाकीपन महसूस होता है अतः ये संस्था से अधिक संवेगात्मक सहयोग की अपेक्षा करते हैं।
   3. इनकी आयु सामान्य शिक्षा प्राप्त कमरने वाले विद्यार्थियों से अधिक होती है ये 25–30 वर्ष से लेकर 60–65 वर्ष तक के होते हैं।

8. वयस्क विद्यार्थियों की ग्रहण करने की क्षमता युवा विद्यार्थियों से कम होती है अतः परीक्षा में वे कठिनाई का अनुभव करते हैं।

9. वयस्क विद्यार्थियों को भाषा पर अधिक अधिकार होता है यह उनके परीक्षा में

दिये गये उत्तरों में भी दिखायी देती है।

10. इसके अन्तर्गत वे सभी विद्यार्थी लड़के लड़कियों आते हैं जो सामान्य रूप से पारम्परिक विश्वविद्यालय में प्रवेश लेने के इच्छुक होते हैं पर विविध कारणों से जैसे– मनपसन्द कोर्स में प्रवेश न मिलने के कारण, दूरी के कारण, अन्य कार्य करते हुए पढ़ना चाहने के कारणों से पारम्परिक विश्वविद्यालयों में प्रवेश नहीं ले पाते।

11. दूरस्थ विद्यार्थी के रूप में इनकी विशेषताएं निम्न होती हैं –
    1. प्रवेश की प्रक्रिया से वे संतुष्ट नहीं होते हैं।
    2. वे अधिन्यास कार्य अतिशीघ्र कर लेते है।
    3. विद्यार्थी सहायता सेवाओं से असंतुष्ट होते है।
    4. परामर्श सत्रों में आने के लिए उत्सुक नहीं होते हैं।
    5. अध्ययन के लिए स्वप्रेरणा का अभाव रहता है।
    6. लेखन क्षमता तथा तकनीकी ज्ञान अन्य प्रकार के दूरस्थ विद्यार्थियों की तुलना में अधिक होता है।

12. इग्नू ने अध्ययन शुल्क में विकलांगों को छूट दी है ।

13. इस सम्बन्ध में कोई नीति नहीं बनायी गयी है।

14. अक्सर लैंगिक असमानता भी उनकी पढ़ाई में अवरोध उत्पन्न करती है।

15. लैंगिंग असमानता की समस्याओं के कारण भी बहुत सी महिलाएं, लड़कियां, उच्च शिक्षा से वंचित रह जाती हैं।

16. महिला विद्यार्थी दौड़–भाग के कार्यो से बचना चाहती है।

17. दूरस्थ विद्यार्थी की प्रमुख समस्याएं निम्न हैं –
    1. व्यवसाय, परिवार और अध्ययन के मध्य समन्वयन बिठाना।
    2. मुक्त विश्वविद्यालय व अध्ययन केन्द्र से दूरी ।
    3. अध्ययन के लिए समय का अभाव ।
    4. अकेलापन तथा साथियों के मध्य अर्न्तक्रिया का अभाव ।
    5. परामर्श सत्रों में उपस्थिति होने में असमर्थता।
    6. ICT के प्रयोग में कुशलता का अभाव ।
    7. संसाधनों की कमी ।
    8. स्व–अधिगम सामग्री की कठिन भाषा एवं जटिल अनुवाद से विषय वस्तु ग्रहण करने में मुश्किलें आती हैं।

18. कम्प्यूटर के ज्ञान का अभाव होने के कारण विद्यार्थी Website से जानकारी लेने में कठिनाई अनुभव करते हैं जिनके कारण विद्यार्थियों की समस्याएं बढ़ती हैं।

19. दूरस्थ शिक्षा से जुड़े लोगों को दूरस्थ पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेने के लिए निश्चित

रूप से अभिप्रेरणा देनी होगी। जब छात्र अध्ययन के लिए नामांकित हो जाता है तो उसे पाठ्यक्रम पूरा करने तक स्व अधिगम के लिए प्रेरित करते रहना चाहिए। अन्यथा वह पाठ्यक्रम बीच में ही छोड़ देता है।

20. दूरस्थ विद्यार्थी के स्व अधिगम को प्रभावित करने वाले निम्न कारक चिन्हित कि गये हैं–

1. विद्यार्थी को इस बात के लिए आश्वस्त करें कि पाठ्यक्रम तथा उसमें निहित सामग्री जिसे वह सीखने जा रहा है अत्यन्त लाभदायक और रूचिकर है।
2. विद्यार्थियों की आवश्यकताओं एवं क्षमताओं के आकलन में उनकी सहायता करें।
3. विद्यार्थियों को स्व अध्ययन योजनाएं बनाने के लिए प्रेरित करें ।
4. ICT के प्रयोग द्वारा ज्ञान के सुदृढ़ीकरण की उपयोगिता बतायें तथा ICT का उपयोग करने के लिए छात्र को प्रेरित कर प्रतिपुष्टि लें ।
5. अध्ययन सामग्री में नई सूचनाएं ढूंढ़ने और अन्य प्राप्य संसाधनों का पता लगाने के लिए कहें ।
6. सीखने के लिए अभिवृत्ति विकसित करने में सहायता करें ।
7. सामूहिक क्रियाकलापों को प्रोत्साहित करें ।

4.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें :

- गुप्ता एस0 पी0 – शिक्षा का ताना–बानाः इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन, 2000
- शर्मा, आर ए0 – दूरवर्ती शिक्षाः मेरठ सूर्या पब्लिशिंग 1996
- साहू, पी0 के0 – ओपन लर्निंग सिस्टमः न्यू देल्ही : उप्पल पब्लिकेशन्स, 1994
- George, J. and Cowan, J.(1999):A Handhook of Techniques for Formative Evaluation Mapping the Student's Learning Experience.
- Holmberg, B.(1989): Theory and Practice of Distance Education, Routledger, London.
- Keegan, D. (1985): The Foundation of Distance Education, Croom Helm, London.
- Lewis, R. (1981): How to Write Self-study Material, Council for Educatinal Technology, London.
- Peters, O. (1998): Learning and Teaching in Distance Education: Analyses and Interpretations forlm and Internatinonal Perspective, Kogan Page, ondon.

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त
विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

UGFODL
मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा

खण्ड

2

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में छात्र सहायता सेवायें

इकाई-5 7
स्व-अधिगम सामग्री

इकाई-6 22
परामर्श सेवायें

इकाई-7 39
अधिन्यास

इकाई-8 50
सूचना एवं सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी

प्रथम–1 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की अवधारणा एवं ऐतिहासिक परिपेक्ष्य

इकाई–1 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का स्वरूप एवं आवश्यकता
इकाई–2 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का विकास
इकाई–3 दूरस्थ शिक्षक
इकाई–4 दूरस्थ विद्यार्थी

द्वितीय–2 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में छात्र सहायता सेवाएं

इकाई–5 स्व अध्ययन सामग्री
इकाई–6 परामर्श सेवायें
इकाई–7 अधिन्यास
इकाई–8 सूचना एवं सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी

तृतीय–3 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की संगठनात्मक संरचना

इकाई–9 राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
इकाई–10 राज्य मुक्त विश्वविद्यालय
इकाई–11 राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान
इकाई–12 दूरस्थ शिक्षा परिषद्

चतुर्थ–4 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा मे मूल्यांकन एवं चुनौतियां

इकाई–13 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की समस्यायें
इकाई–14 दूरस्थ शिक्षा में प्रशिक्षण
इकाई–15 दूरस्थ शिक्षा में मूल्यांकन
इकाई–16 दूरस्थ शिक्षा में अनुसंधान

खण्ड– 2 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में छात्र सहायता सेवायें

खण्ड परिचय

दूरस्थ शिक्षा का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग स्व अध्ययन सामग्री है जिसका अध्ययन विद्यार्थी स्व प्रेरित होकर करता है। यह सामग्री परम्परागत शिक्षण में प्रयुक्त सामग्री से भिन्न होती है। इसमे संवाद की शैली का प्रयोग किया जाता है जिससे शिक्षार्थी को शिक्षक की कमी का अनुभव न हो।

इकाई –5 में स्व अध्ययन सामग्री के निर्माण हेतु कुछ सिद्धान्तों का वर्णन भी किया गया है। इस इकाई के अन्तिम भाग में स्व अध्ययन सामग्री के निर्माण की प्रक्रिया पर भी विस्तार से चर्चा की गई है। इसके लेखन हेतु एक विशिष्ट प्रारूप विकसित किया गया है। लेखन के उपरान्त सामग्री का सम्पादन किया जाता है जिसे उस क्षेत्र का विशेषज्ञ सम्पन्न कराता है। सम्पादक की भूमिका, कार्य और उत्तरदायित्व अध्ययन सामग्री के निर्माण में अत्यन्त महत्वपूर्ण है। स्व अधिगम सामग्री की सम्पूर्ण रचना छात्र द्वारा स्वयं सीखने के सिद्धान्त पर आधारित है। इस पाठ में स्व अधिगम सम्बन्धी कौशलों की भी चर्चा की गई है अर्थात कब, कहाँ कैसे सीखें जैसे प्रश्नों के उत्तर देने का भी प्रयास किया गया है। दूरस्थ शिक्षा की सफलता और प्रभाव मुक्त संस्थान द्वारा आयोजित छात्र सहायता सेवाओं पर बहुत कुछ निर्भर करता है।

इकाई–6 में 'परामर्श सेवाओं' के बारे में विस्तार से चर्चा की गई है साथ ही परामर्शदाता की भूमिका, कार्य और अपेक्षित गुणों की भी विवेचना की गई है। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का 'शैक्षणिक परामर्श' एक आवश्यक अंग है। दूरस्थ शिक्षा की सफलता सिर्फ स्व अध्ययन सामग्री पर निर्भर नहीं करती वरन परामर्शदाता द्वारा दी गई सेवाओं पर भी निर्भर करती हैं। दूरस्थ शिक्षण में शिक्षण संस्था और विद्यार्थी के बीच बहुत भौगोलिक दूरी होती है। स्व अध्ययन सामग्री में भी जटिलतायें होती हैं। संस्था के प्रवेश नियमों, परीक्षा, मूल्यांकन के तरीकों, पाठ्यक्रम के चयन आदि में विद्यार्थी के सम्मुख अनेक समस्याये आती हैं। प्रथम सत्र में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की कार्यप्रणाली से छात्र को भली भांति अवगत कराना परामर्शदाता का उत्तरदायित्व है। प्रयास यह रहे कि दो / तीन सत्रों में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की कार्यशैली भली भांति छात्र को समझ में आ जाये और धीरे – धीरे विषय वस्तु के सम्बन्ध में द्विमार्गीय बातचीत प्रारम्भ की जाये। विचार विमर्श में छात्र सक्रिय सहभागिता लें इस बात का प्रयास करना चाहिये।एक अच्छे परामर्शदाता में कुछ गुणों का होना आवश्यक है। परामर्शदाता को एक अच्छा श्रोता, सम्प्रेषण कला में निपुण, जानकार होना आवश्यक है। परामर्श की प्रक्रिया के तीन प्रमुख अंग है। लक्ष्य एवं प्रयोजन एवं परामर्श सत्रों में विचारों का आदान – प्रदान महत्वपूर्ण तत्व है। परामर्शदाता में इतनी क्षमता होनी चाहिये कि वह छात्र के मनोभावों को समझ सके। परामर्श की प्रक्रिया में छात्र और परामर्शदाता को विभिन्न अनुभवों से गुजरना होता है।

परामर्श सत्र की सफलता परामर्शदाता और छात्र के आपसी सम्बन्धों पर निर्भर करती है।

इकाई–7 में अध्ययन और मूल्यांकन में सहायक दूरस्थ एवं मुक्त शिक्षा के प्रमुख घटक अधिन्यास (Assignment) पर चर्चा की गई है। दूरस्थ शिक्षा में मूल्यांकन एक सतत प्रक्रिया है और अधिन्यास उसका अभिन्न अंग है। दूरस्थ शिक्षा की प्रक्रिया में छात्र सहायता सेवाओं का विशेष महत्व है। छात्र के लिये कार्य प्रणाली की प्रभावशीलता को जानने प्रमुख साधन मूल्यांकन ही होता है मूल्यांकन में पाठ्यक्रम के उद्देश्यों एवं लक्ष्यों को ध्यान मे रखा जाता है। दूरवर्ती शिक्षण के अन्तर्गत दूरवर्ती शिक्षक को उत्तरों को मूल्यांकित करते समय विषय वस्तु की प्रासंगिकता के साथ – साथ उत्तर के संगठनात्मक पक्ष पर भी समुचित ढ़ग से विचार करने की आवश्यकता होती है। मूल्यांकन कर्ता को इन बिन्दुओं पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है। यह शिक्षक और छात्र के मध्य संप्रेषण का साधन है। शिक्षक द्वारा लिखी गई टिप्पणियां उन्हें आगे का कार्य अच्छे ढ़ग से और समय पर करने में सहायता देती है। शिक्षक की टिप्पणियां यदि रचनात्मक हो और समय पर मिले तो यह शिक्षण को सुदृढ़ करने के साथ साथ छात्रों को प्रोत्साहित भी करती है। शैक्षिक सम्प्रेषण के स्तर पर दूरवर्ती शिक्षक को शिक्षार्थियों के उत्तर पत्रकों को ध्यान पूर्वक पढ़ना होता है इन उत्तरों पर उपयुक्त टिप्पणियां लिखनी होती है तथा मूल्यांकित भी करनी होती है। टिप्पणियों के माध्यम से विद्यार्थी का मार्गदर्शन भी करना होता है।

इकाई–8 में सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीक के बारे में बताया गया है। शिक्षण प्रक्रिया में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के माध्यमों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इन माध्यमों की सहायता से विषय सामग्री को शिक्षार्थी तक प्रभावी ढ़ग से पहुँचाया जा सकता है। औपचारिक शिक्षा में प्रमुख रूप से प्रत्यक्ष अर्थात आमने सामने के (Face to Face) शिक्षण का प्रयोग किया जाता है जबकि दूरस्थ शिक्षा में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का प्रयोग किया जाता है। सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीक की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया और शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति की दृष्टि से महत्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाने में तकनीकी माध्यमों का अत्यन्त उपयोग है। यद्यपि माध्यमों को मूलरूप से मुद्रित तथा अमुद्रित दो वर्गों में बॉटा जा सकता है, विशेषज्ञों ने माध्यमों के वर्गीकरण प्रस्तावित किया है। दूरस्थ शिक्षा का प्रत्येक विशेषज्ञ माध्यमों को समन्वित करने का प्रयास करता है। शिक्षा नियोजन में यह निर्णय लिया जाता है, कि किस प्रकार के माध्यम की व्यवस्था की जानी चाहिये। विविध माध्यम शिक्षा के अलग कार्यों के लिये उपयोगी होते हैं। कम्प्यूटर को शिक्षा तकनीकी प्रथम या हार्डवेयर आयाम में ही सम्मिलित किया जाता है । यह स्वतः अनुदेशनात्मक पद्धति का एक उपकरण है जिसका प्रयोग व्यक्तिगत अनुदेशन के लिये किया जाता है।

दूर शिक्षा में तकनीकी माध्यमों का उपयोग एक आवश्यक अंग है। दूर शिक्षा का विकास स्वयं ही विभिन्न माध्यमों के कारण हुआ है। दूर शिक्षा में कुछ माध्यम अच्छी अन्तः क्रिया का अवसर प्रदान करते हैं जो प्रभावी अधिगम के लिए आवश्यक है।

इकाई 5 – स्व अध्ययन सामग्री

5.1 प्रस्तावना

5.2 उद्देश्य

5.3 स्व–अधिगम सामग्री का स्वरूप

5.4 स्व–अधिगम सामग्री की विशेषतायें

5.5 स्व–अधिगम सामग्री निर्माण के सिद्धान्त

5.6 स्व–अधिगम सामग्री के निर्माण की प्रक्रिया

5.6.1 स्व–अधिगम सामग्री का लेखन

5.6.2 स्व–अधिगम सामग्री का सम्पादन

5.6.3 स्व–अधिगम सामग्री का मुद्रण

5.7 स्व–अधिगम सम्बन्धी कौशल

5.8 सारांश

5.9 अभ्यास कार्य

5.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

5.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

5.1 प्रस्तावना

अब तक हमने दूरस्थ एवं मुक्त शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की है । अब तक आप जान गये हैं कि पारम्परिक शिक्षा से दूरस्थ एवं मुक्त शिक्षा कई प्रकार से भिन्न है। इस इकाई में दूरस्थ शिक्षा में विद्यार्थी सहायता सेवाओं पर विस्तार से चर्चा करेंगे। दूरस्थ शिक्षा में शिक्षक और विद्यार्थी के मध्य दूरी तथा अन्य समस्याओं को दूर करने के लिये विद्यार्थी सहायता सेवाओं की वृहद संरचना तैयार की गई है। विद्यार्थी सहायता सेवा अति व्यवस्थित ढग से दूरस्थ छात्रों की विभिन्न प्रकार से सहायता करती है। जिनसे उन्हें सम्पूर्ण शैक्षिक सत्र में शिक्षक और संस्था के करीब न होने की अनुभूति कम हो। छात्र सहायता सेवा के अर्न्तगत दूरस्थ शिक्षा एवं मुक्त अधिगम प्रणाली में बहुमाध्यम व्यवस्था का उपयोग करके शिक्षार्थी एवं अनुदेशक के बीच द्विमार्गी अर्न्तक्रिया कराई जाती है जो अधिगम के रूप में फलीभूत होती है। इस दृष्टि से दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में अधिगम को शिक्षा प्रक्रिया का सर्वाधिक महत्वपूर्ण, सार्थक तथा परम आवश्यक प्रकरण स्वीकार किया जाता है। यदि छात्रों में वांछित अधिगम न हो तो

शिक्षा प्रक्रिया के समस्त प्रयास निष्फल माने जायेंगे। 'अनुदेशन' किसी क्रिया का परिणाम न होकर स्वयं में एक गत्यात्मक प्रक्रिया है। अनुदेशन लक्ष्य केन्द्रित होता है जो व्यक्ति को अपने वातारण के साथ समायोजन करने में सहायता प्रदान करता है। अनुदेशन में तीन पक्ष यथा ज्ञानात्मक (Cognitive), भावात्मक (Affective) तथा मनोचालक (Psychomotor) सम्मिलित रहते हैं। अनुदेशन के दौरान शिक्षक सक्रिय रहता है तथा अनुदेशन की गुणवत्ता अनुदेशक की क्षमता, तैयारी तथा प्रेरणा देने की क्षमता पर भी निर्भर करती है। अनुदेशन की सहायता करने के लिए स्व–अध्ययन सामग्री का सशक्त होना अत्यन्त आवश्यक है। इस इकाई में स्व–अध्ययन सामग्री के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की गई है।

5.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप इस योग्य हो जाएंगे कि:

- विद्यार्थी सहायता सेवा का तात्पर्य समझ सकेंगे।
- स्व अध्ययन सामग्री के स्वरूप से परिचित हो सकेंगे।
- स्व अध्ययन सामग्री की प्रमुख विशेषतायें जान सकेंगे।
- स्व अध्ययन सामग्री के निर्माण के प्रमुख सिद्धान्तों को जान सकेंगे।
- स्व अध्ययन सामग्री के निर्माण की प्रक्रिया को भली भाँति समझ जायेंगे।

5.3 स्व–अधिगम सामग्री का स्वरूप

दूरस्थ शिक्षा में प्रयुक्त अध्ययन सामग्री को व्यापक रूप से स्व अधिगम सामग्री अर्थात् Self Learning material (SLM) या स्व अनुदेशन सामग्री Self Instructional Material (SIM) के नाम से जाना जाता है। जैसा इसके नाम से अभिप्राय है कि स्व–अधिगम सामग्री, अर्थात स्वतः अध्ययन हेतु बनायी गई सामग्री जिसके द्वारा विद्यार्थी अभिप्रेरित हो कर स्वतन्त्र रूप से सीखता है। इस प्रकार दूरस्थ शिक्षा में स्व–अधिगम सामग्री, प्रभावी प्रेरणादायक कक्षा अध्यापक की भूमिका भी निभाती है।

स्व अध्ययन सामग्री का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थी को सीखने में सहायता प्रदान करना है। इसका कार्य छात्र की रूचि सीखने में जागृत करना है। इसकी रचना इस प्रकार की जाती है कि वह एक प्रभावी अध्यापक के कार्यों का भी निर्वहन कर सके। इस शिक्षा में विद्यार्थी को सीखने के लिये स्वयं प्रेरित होना होता है तथा स्वतः अपना मूल्यांकन भी करना होता है। स्व अधिगम सामग्री विद्यार्थी का मार्गदर्शन करती रहती है।

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में दूरस्थ शिक्षक एवं दूरस्थ विद्यार्थी के मध्य शैक्षणिक संवाद, द्विमार्गी सम्प्रेषण विविध सहायक माध्यमों द्वारा सम्पन्न होता है। अतः प्रभावशाली

अधिगम हेतु द्विमार्गी सम्प्रेषण को समझने की आवश्यकता होती है। यह भी समझना आवश्यक है कि स्व अध्ययन सामग्री इस सम्प्रेषण का अत्यन्त सशक्त माध्यम है। स्व अध्ययन सामग्री का उद्देश्य सीखने की क्रिया को प्रभावशाली और सरल बनाना है। दूरस्थ शिक्षा में उद्देश्यों की प्राप्ति का प्रमुख साधन पाठ्यक्रम ही होता है। परम्परागत शिक्षा में पाठ्यक्रम का अभिप्राय विषय एवं स्तर के शैक्षिक कार्यक्रम से लिया जाता है परन्तु दूरस्थ शिक्षा में पाठ्यक्रम का अर्थ अधिक व्यापक होता है इसके अन्तर्गत शिक्षण अधिगम सामग्री के साथ साथ अध्ययन के अन्य सभी तत्वों को भी सम्मिलित किया जाता है परम्परागत औपचारिक शिक्षा में अधिगम का कुछ अंश तो नियोजित अर्थात पूर्व निर्धारित होता है तथा कुछ अंश अनियोजित तथा आकस्मिक रूप से घटित होता हैं।

परन्तु दूरस्थ शिक्षा में पाठ्यक्रम सुनियोजित, छात्रों की आवश्यकताओ, इच्छाओं, आकांक्षाओं एवं जिज्ञासाओं से पूर्ण होता है। दूरस्थ शिक्षा के पाठों को दूरस्थ शिक्षा के विद्वान तथा विषय के विशेषज्ञ विद्वानों द्वारा लिखाया जाता है। ये अधिगम सामग्री छात्र को सीखने के लिये प्रेरित करने के साथ साथ छात्रों का मार्गदर्शन भी करती है।

स्व–अधिगम सामग्री द्वारा छात्र स्वयं अध्ययन करता एवं सीखता है अतः इसका संगठन इतना सशक्त और आकर्षक होना चाहिये जिससे शिक्षार्थियों में अध्ययन के प्रति अभिरूचि एवं अभिप्रेरणा बनाये रखा जा सके तथा अधिगम को पुनर्बलन मिल सके । स्व–अधिगम में विषय वस्तु के चयन में विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती हैं। विषयवस्तु के चयन के उपरान्त, विषय वस्तु का संगठन, भाषा का स्तर उसकी स्पष्टता तथा पाठ सामग्री का प्रारूप तथा प्रस्तुतीकरण आदि द्वारा अधिगम सामग्री को आकर्षक बनाया जाता है। परम्परागत शिक्षा की अपेक्षा दूरस्थ स्व अधिगम सामग्री का आकर्षक, पठनीय होना अनिवार्य है। वास्तव में स्व अध्ययन सामग्री विद्यार्थियों को ज्ञान, कौशल और अभिवृत्ति के अर्जन के योग्य बनाती है। इसका प्रमुख कार्य विद्यार्थियों को अभिप्रेरित करना, प्रश्न करना, मूल्यांकन करना आदि है।

बोध प्रश्न

1) स्व–अधिगम सामग्री का मुख्य उद्देश्य क्या है ?

.....

.....

.....

2) दूरस्थ शिक्षक एवं विद्यार्थी के मध्य संवाद कैसे प्रारम्भ होता है ?

.....

.....

.....

3) स्व अधिगम सामग्री कैसी होनी चाहिए ?

.....

.....

.....

5.4 स्व–अधिगम सामग्री की प्रमुख विशेषतायें

(1) दूरस्थ शिक्षा में स्व अधिगम सामग्री में पाठ्यक्रम के सभी पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की जाती है। इसमें अधिगम के तीन पक्षों – ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक कार्य सम्मलित किया जाता है। पाठ्यक्रम में अधिगम के उद्देश्यों को मात्र निर्धारित ही नही किया जाता वरन् उनका स्पष्टीकरण भी किया जाता है। दूसरे शब्दों में स्व अधिगम सामग्री में उद्देश्य इतने स्पष्ट होने चाहिये कि विद्यार्थी उन्हें सरलता से समझ सके और उन्हे प्राप्त करने के लिये अग्रसर हो।

(2) परम्परागत शिक्षा में शिक्षक विद्यार्थी आमने सामने बैठकर संवाद करता है किन्तु दूरस्थ शिक्षा में अनुदेशनात्मक सामग्री को ही इस कार्य को पूर्ण करना होता है। इसके लिये आवश्यक है कि अंतः क्रियात्मक (Interaction method) माध्यम के रूप में अध्ययन सामग्री लिखी गई हो। सामग्री के प्रस्तुतीकरण में संवाद या वार्तालाप शैली का पुट होना चाहिये। इसके लिये लेखक को पाठ सामग्री के विभिन्न स्तरों पर प्रश्नों एवं क्रियाओं, स्मरणीय बिन्दुओं, विचारणीय बिन्दुओं को समाहित करना होता है।

- स्व–अधिगम सामग्री का प्रारम्भ शिक्षार्थियों को सम्बोधित करते हुए किया जाता है। इसके लिये व्यक्तिवाचक सर्वनाम 'आप' या 'तुम' का प्रयोग किया जता है। इससे शिक्षार्थी पाठ्य सामग्री से अपने को जुड़ा महसूस करता है और सीखने के लिये प्रेरित होता है।
- स्व–अध्ययन सामग्री ऐसी हो जहां विद्यार्थी अधिगम प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग ले सके। अर्थात इकाईयों में दिये गये क्रिया कलाप इस प्रकार हो कि छात्र विषय वस्तु का एकाग्र चित्त हो कर अध्ययन करे तथा चिन्तन मनन करके क्रियात्मक अभ्यास करे।
- सम्पर्क कार्यक्रमों एवं परामर्श सत्रों में स्व–अध्ययन सामग्री से सम्बन्धित समस्याओं को भी दूर करने का प्रयास किया जाता है।
- दूरस्थ शिक्षा में स्व अध्ययन सामग्री (SLM) के अन्तर्गत ही संकेत एवं निर्देशन स्थान स्थान पर दिये रहते हैं जिससे आवश्यक कौशलों (Skills) के विकास में सहायता मिलती है।
- परम्परागत शिक्षण की भांति यहां अध्ययन करने वाले सभी विद्यार्थी लगभग समान आयु या समान शैक्षिक पृष्ठभूमि के नहीं होते। दूरस्थ विद्यार्थी में उम्र, योग्यता, अनुभव आकांक्षाओं के स्तर में पर्याप्त भिन्नता पायी जाती है। ये विभिन्न क्षेत्रों से जुडे होते है। अतः स्व अध्ययन सामग्री की रचना करते समय यह ध्यान रखना चाहिये।

- स्व अधिगम सामग्री का उद्देश्य सिर्फ ज्ञान देना नही होता है वरन् उसका ठीक ढंग से उपयोग करना भी होता है।

स्पष्ट है कि दूरस्थ शिक्षा पाठ्यक्रमों के लिये प्रयोग में आने वाली स्व अधिगम सामग्री में सम्प्रेषण निहित होता है। विद्यार्थी को शिक्षक की कमी अनुभव न हो इसके प्रयास किये जाते है। इन्हें शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं एवं सुविधाओं के अनुरूप बनाया जाता है। स्व–अधिगम सामग्री सम्वाद ;क्पंसवहनमद्ध की शैली में लिखी जाती है। सामग्री के प्रस्तुतीकरण में संवाद या वार्तालाप शैली का पुट होता है। इसके लिये लेखक को पाठ सामग्री के विभिन्न स्तरों पर प्रश्नों एवं क्रियाओं, स्मरणीय बिन्दुओं, विचारणीय बिन्दुओं को समाहित करना होता है। स्व–अधिगम सामग्री में का प्रारम्भ शिक्षार्थियों को सम्बोधित करते हुए किया जाता है इसके लिये व्यक्तिवाचक सर्वनाम 'आप' या 'तुम' का प्रयोग किया जाता है। सम्पर्क कार्यक्रमों एवं परामर्श सत्रों में स्व अध्ययन सामग्री से सम्बन्धित समस्याओं को भी दूर करने का प्रयास किया जाता है। दूरस्थ शिक्षा में स्व अध्ययन सामग्री (SLM) के अन्तर्गत ही संकेत एवं निर्देशन स्थान – स्थान पर दिये रहते हैं। जिससे आवश्यक कौशलों (Skills) के विकास में सहायता मिलती है। परम्परागत शिक्षण की भांति यहा अध्ययन करने वाले सभी विद्यार्थी लगभग समान आयु, समान शैक्षिक पृष्ठ भूमि के नहीं होते। दूरस्थ विद्यार्थी में उम्र, योग्यता अनुभव का अन्तर होता हैं। अतः स्व अध्ययन सामग्री का निर्माण अत्यन्त सावधानी से करना चाहिए।

बोध प्रश्न

4. स्व–अधिगम सामग्री से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

5. स्व–अधिगम सामग्री की प्रमुख विशेषतायें बताइये?

.....

.....

.....

6. स्व–अधिगम सामग्री में क्या निहित होता है ?

.....

.....

.....

5.5 स्व–अधिगम सामग्री निर्माण के सिद्धान्त :

स्व अध्ययन सामग्री का निर्माण करते समय निम्न सिद्धान्तों का अनुपालन आवश्यक है तभी प्रभावी एस. एल. एम. (SLM) की रचना की जा सकती है–

- **शैक्षिक आवश्यकताओं की पहचानः** जिस उद्देय की प्राप्ति के लिये पाठ्यक्रम लेखन का कार्य किया जा रहा है उन उद्देश्यों की गहरी जानकारी लेखक को अवश्य होनी चाहिये।
- **स्व व्याख्यात्मक अधिगम सामग्रीः** स्व अधिगम सामग्री की विषयवस्तु इस प्रकार की होनी चाहिये जो इस प्रकार लिखी हो जिसे विद्यार्थी बिना किसी वाह्य सहायता के स्वयं समझ सके। विषयवस्तु, प्रस्तुतीकरण और भाषा की दृष्टि से व्यवस्थित हो, सरल और प्रभावी होनी चाहिये।
- **स्व अभिप्रेरणा दायकः** सीखने की प्रक्रिया बिना प्रेरणा के प्रभावी ढ़ंग से सम्पन्न नही होती है। विषय वस्तु ऐसी हो जो छात्र में जिज्ञासा उत्पन्न कर सके और उसमें सीखने की चाह उत्पन्न कर दे।
- **स्व मूल्यांकितः** स्व अध्ययन सामग्री में स्थान स्थान पर स्व मूल्यांकन हेतु प्रश्न और अभ्यास कार्य दिये होने चाहिये जिससे छात्र उसने कितना सीखा है इसका पता लगा सके। विद्यार्थी के लिये यह भी जानना जरूरी है कि क्या वे ठीक दिशा में प्रगति कर रहे हैं अथवा नही। परिणाम का ज्ञान विद्यार्थियों को आगे सीखने के लिये सकारात्मक प्रेरणा प्रदान करता है।
- **स्व निर्देशितः** अधिगम सामग्री इस प्रकार की होनी चाहिये विद्यार्थी ज्ञान और सूचना के साथ साथ आवश्यक कौशलों को भी विकसित कर सके।

बोध प्रश्न

7. स्व मूल्यांकन क्या है ?

.....

.....

.....

8. स्व व्याख्यात्यात्मक अधिगम सामग्री से आप क्या समझते हैं ?

.....

.....

.....

5.6 स्व–अधिगम सामग्री के निर्माण की प्रक्रिया

स्व अध्ययन सामग्री का निर्माण जो लेखक करता है उससे आशा की जाती है कि वह स्व अध्ययन सामग्री लिखने की कला में निपुण होगा। उसे लेखन में संवाद की शैली को अपनाना चाहिये तथा यह समझना चाहिये कि यहां का विद्यार्थी विभिन्न आयु, बौद्धिक स्तर और अलग – अलग सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि से आता है। अतः स्व–अधिगम सामग्री की विषयवस्तु इस प्रकार की हो जिसे विभिन्न वर्ग के लोग सरलता से ग्रहण कर सके।

स्व अध्ययन सामग्री को विकसित करते समय शैक्षिक आवश्यकताओं का आकलन आवश्यक है। इसके साथ – साथ जिस पाठ्यक्रम के लिये अध्ययन सामग्री लिखी जा रही है उन उद्देश्यो की प्राप्ति में पाठ्यक्रम कहां तक सहायक है। पाठ्यक्रम के द्वारा हम किन कौशलों की प्राप्ति छात्र में चाहते हैं। लेखक को सम्बन्धित विषयवस्तु को जानना तथा समझना और सुव्यवस्थित करना आवश्यक है। स्व अध्ययन सामग्री तैयार करने की प्रक्रिया के तीन मुख्य घटक हैं–

(1) स्व अध्ययन सामग्री का लेखन

(2) स्व अध्ययन सामग्री का सम्पादन

(3) स्व अध्ययन सामग्री का मुद्रण

बोध प्रश्न

9. स्व–अधिगम सामग्री का लेखक कैसा होना चाहिए ?

.....

.....

.....

10. स्व–अधिगम सामग्री को विकसित करते समय क्या आकलन आवश्यक है ?

.....

.....

.....

5.6.1 स्व अध्ययन सामग्री का लेखन

अध्ययन सामग्री का लेखन कार्य करते समय उसकी गुणवत्ता पर ध्यान केन्द्रित करना होगा। शिक्षार्थी को सक्रिय रखने वाली सामग्री स्व अध्ययन सामग्री का आधार है। इसके अन्तर्गत पारिभाषिक शब्दावली, फुटनोट, अनुभाग, शीर्षक, उपशीर्षक रेखाचित्र

उदाहरण एवं व्याख्या आदि प्रमुख है। निम्न प्रमुख बिन्दुओं को अध्ययन सामग्री लिखने के प्रारूप के लिये सामान्य रूप से प्रयुक्त किया जाता है।

इकाई का शीर्षक

संरचना

प्रस्तावना

उद्देश्य

विषय सामग्री

बोध प्रश्न

स्मरणीय बिन्दु

विचारणीय बिन्दु

सारांश

अभ्यास कार्य

जांच सूची

सन्दर्भ ग्रन्थ

आइये अब हम जाने कि कुछ इकाईयों से मिलकर एक ब्लाक बनता है एवं कुछ ब्लाकों से मिलकर एक प्रश्न पत्र का पाठ्यक्रम बनता है। सामान्य रूप से प्रत्येक पाठ्यक्रम में 4 ब्लाक तथा प्रत्येक ब्लाक में चार – चार इकाईयां होती है। प्रत्येक इकाई की रचना ऊपर बताये गये प्रारूप के अनुरूप होती है। अब हम प्रारूप के एक एक बिन्दु पर विचार करेंगे।

शीर्षक : स्व अध्ययन सामग्री का शीर्षक, विद्यार्थियों को स्पष्ट बता देता है कि इकाई की विषय वस्तु क्या है। शीर्षक सरल हो, स्पष्ट हो और आत्माभिव्यक्तिशील होना चाहिये।

इकाई की संरचना : स्व–अधिगम सामग्री की विभिन्न इकाईयों की संरचना सामान्य रूप से निम्न बिन्दुओं के अन्तर्गत की जाती है।

प्रस्तावना : इसमें विषयवस्तु का सामान्य परिचय प्राप्त होता है इसमें छात्र विषयवस्तु की उपयोगिता एवं महत्व आदि से परिचित हो जाता है। इसमें शिक्षार्थी के पूर्व ज्ञान तथा पाठ्यवस्तु के बीच के नये ज्ञान के बीच सम्बन्ध स्थापित होता है। इसके द्वारा शिक्षार्थियों को सामान्य जानकारी प्राप्त होती है। इससे शिक्षार्थी में ज्ञान प्राप्त करने में सहायता मिलती और उसका दृष्टिकोण व्यापक होता है।

उद्देश्य : इसके अन्तर्गत शिक्षार्थी को विषय वस्तु का सही ढंग से अध्ययन करने के उपरान्त सम्भावित उद्देश्यों की प्राप्ति के बारे में जानकारी मिलेगी। उद्देश्यों की जानकारी होने से शिक्षार्थी में विषयसामग्री के प्रति उचित दृष्टिकोण विकसित होता है तथा वह अध्ययन हेतु भी सही दिशा में आगे बढ़ता है।

विषयसामग्री : इकाई के मुख्य भाग में मूल विषय वस्तु को क्रमबद्ध एवं सुव्यवस्थित ढ़ंग से प्रस्तुत किया जता है। मुख्य विषयवस्तु को कई अनुभागों में विभक्त किया जाता है। प्रत्येक अनुभाग के अपने उद्देश्य तथा बोध प्रश्न आदि होते हैं। विद्यार्थी अपने उत्तरों की जांच भी इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से कर सकता है। इकाई को अनेक उपभागों में विभक्त करके प्रस्तुत करने से शिक्षार्थी को अध्ययन में बहुत सुविधा होती है चूंकि शिक्षार्थी पूरी इकाई को एक बार में नही पढ़ता अतः छोटे छोटे भागों में पढ़ने से सुविधा होती है। छोटे छोटे भागों को समझना, अभ्यास कार्य, गृहकार्य करना, मूल्यांकन करना शिक्षार्थी के लिये सरल होता है। इससे उसे थकान का अनुभव भी नही होता।

स्व–अधिगम सामग्री की रचना इस प्रकार की जाती है कि दूरस्थ विद्यार्थी की औपचारिक कक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थी की तरह अधिगम अनुभवों को ग्रहण कर सकता है। दूरस्थ शिक्षा के सभी पाठ्यक्रम नियोजित एवं विस्तृत रूप से लिखे जाते हैं अधिगम सामग्री को लिखते समय लेखक को ध्यान देने वाली बातें निम्न हैं–

- सीखने के उद्देश्य सरल, स्पष्ट एवं व्यापक हों।
- पाठ सामग्री अंतः क्रियात्मक प्रवृत्ति एवं लय से युक्त होनी चाहिये। पाठ सामग्री से विभिन्न स्तरों पर प्रश्नो एंव क्रियाओं को समाविष्ट करना होता है।

बोध प्रश्न : प्रस्तुत विषयवस्तु के बीच बीच में तालिका बना कर बोध प्रश्न लिखे जाते हैं ये प्रश्न लिखी गई अध्ययन सामग्री के आधार पर बनते हैं। विद्यार्थी से यह अपेक्षा की जाती है कि यदि उसने सही ढंग से अध्ययन किया है तो वह बोध प्रश्नों का उत्तर देने में समर्थ होगा।

स्मरणीय बिन्दु : विषयवस्तु के बीच में तालिका बना कर मुख्य बिन्दुओं को छोटे – छोटे वाक्यों मे प्रस्तुत किया जाता है जिससे पाठक को वह शीघ्र ही समरण हो जाये।

विचारणीय बिन्दु : कुछ महत्वपूर्ण मुद्दों को पाठक के सोचने एवें, विचार करने के लिये विषयवस्तु के बीच बीच में डाला जाता है और अपेक्षा की जाती है पाठक इन पर विचार करेगा।

सारांश : इकाई के अंत में सारांश में सभी प्रमुख बिन्दुओं को शामिल किया जाता है इससे विद्यार्थी को मुख्य बिन्दुओं को दोहराने में सहायता मिलती है इसमें सम्पूर्ण इकाई की सभी प्रमुख बातों एवं क्रियाओं को सम्मिलित किया जाता है।

अभ्यास कार्य : इकाई के अन्त में इस प्रकार के अभ्यास कार्य दिये रहते हैं जिससे पता चलता है कि पाठ्य विषय का उसने कितना व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त किया है। उसे स्वयं पता चल जाता है कि विषय सामग्री को उसने कितनी अच्छी तरह सीखा और समझा।

जांच सूची : इससे पूरी इकाई में दिये गये बोध प्रश्नों के उत्तर दिये रहते हैं। छात्र अपने उत्तरों की जांच यहां कर सकता हैं।

संदर्भ ग्रन्थ : इकाई के अन्त में संदर्भ ग्रन्थों की सूची भी दी रहती है। पाठ के लेखन में लेखक ने जिन पुस्तकों, पत्रिकाओं की सहायता ली उनका पूरा विवरण इकाई के अंत में दिया रहता है।

बोध प्रश्नों, सारांश आदि के द्वारा विषय वस्तु बार बार दोहरायी जाती है। इससे विषय को समझने तथा आगे बढ़ने का तरीका स्वतः प्राप्त होता जाता है शिक्षार्थी को विषय वस्तु पढ़ने से पूर्व ही उद्देश्यों के बारे में जानकारी रहती है। विषय वस्तु इस प्रकार व्यवस्थित रहती है कि पूर्व ज्ञान से दिये गये ज्ञान को जोड़ा जाता है। स्थान स्थान पर स्मरणीय बिन्दु, विचारणीय बिन्दु द्वारा कुछ महत्वपूर्ण बाते दोहरायी जाती है। दूरस्थ विद्यार्थी की रूचि पाठ्य वस्तु पढ़ने में बनाये रखने के लिये विशेष प्रयास किये जाते हैं। प्रत्येक इकाई के अन्त में सन्दर्भ ग्रन्थों का उल्लेख भी अनिवार्य रूप से किया जाता है।

बोध प्रश्न

11 स्व–अध्ययन सामग्री में विषयवस्तु कैसे बार–बार दोहरायी जाती है ?

.....

.....

.....

12. सन्दर्भ ग्रन्थ क्या होते हैं ?

.....

.....

.....

5.6.2 स्व अधिगम सामग्री का सम्पादन

स्व–अधिगम सामग्री के सम्पादन का कार्य विषय विशेषज्ञों को दिया जाता है। विषय विशेषज्ञ विषयवस्तु को आवश्यकतानुसार संशोधित, व परिवर्तित करता है। सम्पादन के अन्तर्गत निम्न प्रमुख कार्य करने होते है–

(1) सम्पादक पाठ्य सामग्री की जांच शैक्षिक प्रभावशीलता की दृष्टि से करता है।

(2) सम्पादक भाषा तथा दूरस्थ शिक्षा के सम्बन्ध में लेखन शैली की शुद्धता और उपयुक्तता की

जांच करता है।

(3) वह मुद्रण के लिये प्रारूप (Formating) सम्बन्धी निर्णय भी लेता है। जैसे नया पैरा कहां से प्रारम्भ होगा। आवश्यक सुधार के पश्चात पुनः पाण्डुलिपि को पढ़ना आवश्यक है जिससे छोटी छोटी गलतियों, विराम चिन्हों छोड़े गये स्थान आदि को सुधारा जा सके। पाण्डुलिपि की टाइप कापी तैयार करवाना भी सम्पादक का कार्य होता है।

- मुद्रण तकनीकी के विकास ने मुद्रण के अनेक साधन भी विकसित किये हैं। सम्पादक शैक्षणिक के साथ साथ प्रशासनिक अधिकारी भी होता है। अतः अपनी आवश्यकताओं एवं संसाधनों के अनुसार उसे मुद्रण के तरीके के बारे में भी निर्णय लेना होता है।
- स्वतः अनुदेशनात्मक सामग्री का आवरण पृष्ठ, इकाई का प्रारूप, कागज की गुणवत्ता आदि बिन्दुओं पर भी सम्पादक को ध्यान देना होता है। इस सम्बन्ध में मुद्रक (Printer) को निर्देश देना भी सम्पादक का कार्य होता है।
- प्रूफ रीडिंग करवाने का कार्य भी सम्पादक का है। प्रूफ रीडिंग में कुछ मानक संकेतों का प्रयोग किया जाता है अतः प्रूफ रीडर को इन्हीं संकेतो का प्रयोग करना चाहिये। मुद्रक को संशोधित सामग्री वापस कर आवश्यक निर्देश देना होता है।
- आवरण पृष्ठ तथा पाठ्य सामग्री की विषयवस्तु को पुस्तिका का रूप देना भी सम्पादक का उत्तरदायित्व है।

इस प्रकार सम्पादक का कार्य अत्यन्त व्यापक और विस्तृत है। उसका कार्य लेखन से प्राप्त पाण्डुलिपि के संशोधन से लेकर पाठ्यवस्तु को पुस्तिका का रूप देने तक होता है। दूरवर्ती शिक्षण सामग्री का पर्याप्त अनुभव होने वाले सम्पादक को नया पाठ्यक्रम प्रारम्भ करने हेतु पाठ सामग्री का निर्माण अथवा नई दूरस्थ संस्था के लिये पाठ्यक्रम तैयार करने में कोई विशेष कठिनाई नही होती। सम्पादक को भी दूरस्थ शिक्षण सामग्री के लेखन का पर्याप्त अनुभव होना आवश्यक है। दूरस्थ शिक्षा की पाठ्यसामग्री के लेखन और सम्पादन की शैली परम्परागत शिक्षण के पाठ्यक्रमों के लेखन और सम्पादन से भिन्न है।

5.6.3 स्व–अधिगम सामग्री का मुद्रण

सम्पादक द्वारा पाण्डुलिपि की टाइप कापी बनवाना आवश्यक होता हे इसे भी

सम्पादन प्रक्रिया का अनिवार्य अंग माना जाता है। इस प्रक्रिया को Copy Editing के नाम से जाना जाता है। पाण्डुलिपि (Manuscript) की तैयारी के समय छूटे अनेक आवश्यक संशोधनों को टाइप के समय पूरा किया जाता है। सामान्य रूप से टाइप की दो प्रतियां तैयार की जाती है। एक कापी सम्पादक के पास होती है तथा दूसरी मुद्रक के। किन्तु मुद्रक के पास भेजने से पूर्व टाइप कापी की सावधानी पूर्वक जाँच आवश्यक होती है। यह जाँच मुख्य रूप से शीर्षकों, उपशीर्षकों, इकाई के विभिन्न भागों एवं उपभागों को समुचित ढ़ंग से टाइप द्वारा प्रस्तुत करने, वर्तनी की अशुद्धियों को दूर करने, विराम चिन्हों को शुद्ध करने, पैराग्राफों के बीच समान दूरी छोड़ने, आकड़े एवं रेखाचित्रों को सही ढ़ंग से टाइप करने, तकनीकी शब्दों को सही ढ़ंग से प्रस्तुत करने की दृष्टि से की जाती है।

स्व अनुदेशनात्मक सामग्री को प्रस्तुत करने का ढ़ंग, आवरण पृष्ठ, कागज की गुणवत्ता आदि के विषय में आवश्यक निर्देश देने होते हैं। इस प्रकार स्व अध्ययन सामग्री के निर्माण की प्रक्रिया लेखन से प्रारम्भ हो कर मुद्रण पर समाप्त होती है।

5.7 स्व–अधिगम सम्बन्धी कौशल :

यदि दूरस्थ विद्यार्थी को स्व अध्ययन सामग्री द्वारा अध्ययन करने का कौशल ज्ञात है तो वह स्व अध्ययन सामग्री का अधिकतम लाभ उठा सकता है। इन कौशलों का ज्ञान होने से विद्यार्थी कम समय में अधिक लाभ उठा सकता है। दूरस्थ विद्यार्थी को यह ज्ञात होना चाहिए कि –

- अध्ययन कब करें
- अध्ययन कहाँ करें
- अध्ययन कैसे करें

अध्ययन कब करें :

दूरस्थ विद्यार्थी को उपलब्ध समय को क्रमबद्ध ढ़ंग से नियोजित करना चाहिये। विद्यार्थी के लिये यह समझना आवश्यक है कि नियमित एवं व्यवस्थित अध्ययन से विषयवस्तु को ग्रहण एवं धारण करना सरल हो जाता है। वयस्क विद्यार्थियों के पास अनेक पारिवारिक एवं सामाजिक उत्तरदायित्व भी होते हैं। इन उत्तरदायित्वों के साथ उन्हें अध्ययन के प्रति अपनी प्राथमिकताये तय करनी होती हैं। अतः किसी न किसी प्रकार समय निर्धारित कर नियमित अध्ययन दूरस्थ विद्यार्थी के लिये आवश्यक है।

अध्ययन कहाँ करें :

दूरस्थ विद्यार्थी को अधिगम के लिये अत्यन्त अनुकूल एवं आदर्श स्थान मिलना

बहुत मुश्किल है अतः उसे रास्ते में, ऑफिस में या अन्य स्थानो पर अपनी अध्ययन सामग्री साथ रखनी चाहिये जिससे वह समय मिलने पर उसका सदुपयोग करके नियमित अध्ययन कर शीघ्रातिशीघ्र पाठ्यक्रम पूरा कर सकें।

अध्ययन कैसे करें :

वैयक्तिक भिन्नता, पूर्व ज्ञान के कारण दूरस्थ विद्यार्थी की भी अलग – अलग सीखने की क्षमतायें होती हैं परन्तु मुख्य रूप से दूरस्थ विद्यार्थी को पहले सम्पूर्ण पाठयक्रम के विभिन्न खण्डों, इकाईयों आदि से परिचित होना चाहिये। अतः सम्पूर्ण पाठ्यसामग्री को पहले सरसरी निगाह से पढ़ें। पुनः सभी खण्डों की इकाईयों के प्रस्तावना, उद्देश्य एवं सारांश के अध्ययन से यह ज्ञात करें कि इसमें विद्यार्थी से क्या अपेक्षाये हैं किन बिन्दुओं पर अधिक ध्यान देना है कहाँ कम। बोध प्रश्नों, अभ्यास कार्यों को साथ – साथ करते चलें इससे परीक्षा में बहुत सुविधा हो जाती है। मानचित्र, चार्ट डायग्राम आदि का अध्ययन ध्यान पूर्वक करें। मुख्य प्रकरणें, उदाहरणों को दोहरा लें। प्रश्नों के उत्तर कापी पर लिखें तो विशेष रूप से वयस्क विद्यार्थी जिनकी कापी में निर्धारित समय में प्रश्नों के उत्तर लिखने की आदत छूट गई है। उनके लिये यह अभ्यास लाभदायक है।

5.8 सारांश

आशा है इस इकाई को पढ़ने के उपरान्त आप स्व अध्ययन सामग्री के स्वरूप एवं दूरस्थ शिक्षा में उसकी अहम् भूमिका से परिचित हो गये होंगे। दूरस्थ शिक्षा का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग स्व अध्ययन सामग्री है जिसका अध्ययन विद्यार्थी स्व प्रेरित होकर करता है। आप स्व अध्ययन सामग्री की विशेषताओं को जानकर समझ गये होंगे कि यह सामग्री परम्परागत शिक्षण में प्रयुक्त सामग्री से भिन्न होती है। इसमे संवाद की शैली का प्रयोग किया जाता है जिससे शिक्षार्थी को शिक्षक की कमी का अनुभव न हो।

इस इकाई में स्व अध्ययन सामग्री के निर्माण हेतु कुछ सिद्धान्तों का वर्णन भी किया गया है। इस इकाई के अन्तिम भाग में स्व अध्ययन सामग्री के निर्माण की प्रक्रिया पर भी विस्तार से चर्चा की गई है। इसके लेखन हेतु एक विशिष्ट प्रारूप विकसित किया गया है। लेखन के उपरान्त सामग्री का सम्पादन किया जाता है जिसे उस क्षेत्र का विशेषज्ञ सम्पन्न कराता है। सम्पादक की भूमिका, कार्य और उत्तरदायित्व अध्ययन सामग्री के निर्माण में अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

स्व अधिगम सामग्री की सम्पूर्ण रचना छात्र द्वारा स्वयं सीखने के सिद्धान्त पर आधारित है। इस पाठ में स्व अधिगम सम्बन्धी कौशलों की भी चर्चा की गई है अर्थात कब, कहाँ कैसे सीखें जैसे प्रश्नों के उत्तर देने का भी प्रयास किया गया है।

5.9 अभ्यास कार्य :

- स्व–अधिगम सामग्री से आप क्या समझते हैं?
- स्व–अधिगम सामग्री के निर्माण की प्रक्रिया बताइये।
- स्व–अधिगम सामग्री के लेखन में प्रयुक्त प्रारूप के प्रमुख बिन्दु बताइये।
- स्व अधिगम कौशल से आप क्या समझते हैं?

5.10 बोध प्रश्नों के उत्तर :

1. स्व अध्ययन सामग्री का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थी को सीखने में सहायता प्रदान करना है।
2. मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में दूरस्थ शिक्षक एवं दूरस्थ विद्यार्थी के मध्य शैक्षणिक संवाद, द्विमार्गी सम्प्रेषण के विविध सहायक माध्यमों द्वारा सम्पन्न होता है।
3. परम्परागत शिक्षा की अपेक्षा दूरस्थ स्व अधिगम सामग्री का आकर्षक, पठनीय होना अनिवार्य है।
4. अंतः क्रियात्मक (Interaction method) माध्यम के रूप में अध्ययन सामग्री लिखी गई हानी चाहिये।
5. दूरवर्ती शिक्षा में स्व अधिगम सामग्री में पाठ्यक्रम के सभी पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की जाती है। इसमें अधिगम के तीन पक्षों – ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक कार्य सम्मिलित किया जाता है।
6. दूरस्थ शिक्षा पाठ्यक्रमों के लिये प्रयोग में आने वाली स्व अधिगम सामग्री में सम्प्रेषण निहित होता है।
7. स्व अध्ययन सामग्री में स्थान स्थान पर स्व मूल्यांकन हेतु प्रश्न और अभ्यास कार्य दिये होने चाहिये जिससे छात्र उसने कितना सीखा है इसका पता लगा सके।
8. स्व अधिगम सामग्री की विषय वस्तु इस प्रकार की होनी चाहिये जो इस प्रकार लिखी हो जिसे विद्यार्थी बिना किसी वाह्य सहायता के स्वयं समझ सके। विषय वस्तु, प्रस्तुतीकरण और भाषा की दृष्टि से व्यवस्थित हो, सरल और प्रभावी होनी चाहिये।
9. अध्ययन सामग्री लिखने की कला में निपुण होगा।
10. स्व अध्ययन सामग्री को विकसित करते समय शैक्षिक आवश्यकताओं का आकलन आवश्यक है।

11. बोध प्रश्नों, सारांश आदि के द्वारा विषय वस्तु बार बार दोहरायी जाती है। इससे विषय को समझने तथा आगे बढ़ने का तरीका स्वतः प्राप्त होता जाता है ।

12. इकाई के अन्त में संदर्भ ग्रन्थों की सूची भी दी रहती है। पाठ के लेखन में लेखक ने जिन पुस्तकों, पत्रिकाओं की सहायता ली उनका पूरा विवरण इकाई के अंत में दिया रहता है।

5.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- साहू, पी0 के0 – ओपन लर्निंग सिस्टमः न्यू देल्ही : उप्पल पब्लिकेशन्स, 1994
- साहू, पी0 के0 – ऐजूकेशनल टेक्नोलोजी इन डिस्टेनसः न्यू देल्हीः अरावती, 1999
- George, J. and Cowan, J.(1999):A Handhook of Techniques for Formative Evaluation Mapping the Student's Learning Experience, Kogan Page, London.
- Holmberg, B.(1989): Theory and Practice of Distance Education, Routledger, London.
- Keegan, D. (1985): The Foundations of Distance Education, Croom Helm, London.
- Lewis, R. (1981): How to Write Self-study Material, Council for Educatinal Technology, London.

इकाई – 6 परामर्श सेवायें/(Counselling Services)

6.1 प्रस्तावना

6.2 उद्देश्य

6.3 परामर्श का स्वरूप

6.4 परामर्श की आवश्यकता

6.5 परामर्श के प्रकार

6.6 परामर्श के स्तर

6.7 परामर्शदाता के गुण

68 परामर्शदाता के प्रमुख कार्य एवं उत्तरदायित्व

6.9 सारांश

6.10 अभ्यास कार्य

6.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

6.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

6.1 प्रस्तावना

अब तक आप समझ गये हैं कि दूरस्थ शिक्षा में छात्र सहायता सेवाओं का बहुत महत्व है। दूरस्थ शिक्षा प्राप्त करना और दूरस्थ शिक्षा प्रदान करना दोनो ही चुनौतीपूर्ण कार्य है। दूरस्थ शिक्षा की सफलता और प्रभाव मुक्त संस्थान द्वारा आयोजित छात्र सहायता सेवाओं पर बहुत कुछ निर्भर करता है। दूरस्थ विद्यार्थियों के सामने अनेक प्रकार की कठिनाइयाँ एवं समस्याये आती हैं। कई बार उन्हें लगता है क्या करे और क्या न करें। विद्यार्थियों की समस्याओं को जानने और समझने के लिये, उनका निराकरण करने तथा उन्हें अध्ययन के लिये प्रेरित करने के लिये दूरस्थ एवं मुक्त विश्वविद्यालयों में परामर्श सेवाओं का आयोजन किया जाता है। इसका प्रमुख उद्देश्य शिक्षार्थियों को व्यक्तिगत स्तर पर परामर्श और अनुदेशन प्रदान करना होता है।

परामर्श सत्रों के माध्यम से शिक्षक शिक्षार्थी के मध्य प्रत्यक्ष सम्प्रेषण से सीखने की गति तीव्र हो जाती है। 'परामर्श' लेने का तात्पर्य यह है कि अपने से अधिक अनुभवी व्यक्ति को अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं के निराकरण के लिये विचार विमर्श करना। परामर्श सत्रों में छात्र को अपने साथ अन्य छात्रों से सम्पर्क का भी अवसर उपलब्ध होता है।

इसके लिये शिक्षार्थी निश्चित तिथि एवं समय पर दूरस्थ संस्थान या उसके अध्ययन केन्द्र पर पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार आता है तथा दूरस्थ शिक्षक भी कार्यक्रम अनुसार वहाँ उपस्थित होता है। इस तरह प्रत्यक्ष अन्तःक्रिया के माध्यम से परामर्श अधिक सुचारू रूप से सम्पन्न होता है। तकनीक के बढ़ते प्रयोग से दूरस्थ शिक्षक अपने विद्यार्थी फोन के माध्यम से भी अन्तःक्रिया करते हैं। अतः वर्तमान शताब्दी में 'फोन' भी परामर्श सेवाओं के एक माध्यम के रूप मे उभर रहा है तथापि दूरस्थ शिक्षा में सुव्यवस्थित ढ़ंग से ‘2‘ ;थ्बम जव थ्बमद्ध सत्र में भी परामर्श देने की व्यवस्था की गई है।

वास्तव में दूरस्थ विद्यार्थी क्योकि अकेला होता है अतः उसे समय–समय पर परामर्श तथा सहायता की आवश्यकता होती है। परामर्श सेवाओं की सहायता से यह अपेक्षा की जाती है कि दूरस्थ विद्यार्थी सरलता और प्रभावशीलता से अध्ययन करता हुआ आगे बढ़ सकता है।

6.2 उद्देश्य

इस इकाई में 'परामर्श सेवाओं' के बारे में विस्तार से चर्चा की गई है साथ ही परामर्शदाता की भूमिका, कार्य और अपेक्षित गुणों की भी विवेचना की गई है। इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आप इस योग्य हो जायेंगे कि :

- परामर्श सेवाओं के स्वरूप एवं आवश्यकता से परिचित हो सकेंगे।
- परामर्श सेवाओं के विविध रूपों को जान सकेंगे।
- परामर्शदाता की भूमिका और कार्यों से अवगत हो सकेंगे।
- अच्छे परामर्शदाता के गुणों का वर्णन कर सकेंगे।
- परामर्श सत्र का आयोजन कैसे करना चाहिये इसे समझ सकेंगे।

6.3 परामर्श का स्वरूप

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का 'शैक्षणिक परामर्श' एक आवश्यक अंग है। दूरस्थ शिक्षा की सफलता सिर्फ स्व–अध्ययन सामग्री पर निर्भर नहीं करती है वरन परामर्शदाता द्वारा दी गई सेवाओं पर भी निर्भर करती हैं। वास्तव में स्व अध्ययन सामग्री का निर्माता, शिक्षार्थियों के प्रत्यक्ष सम्पर्क में नही होता। अधिन्यास पर टिप्पणी लिखने वाला मूल्यांकन कर्ता भी छात्रों के सम्पर्क में नहीं होता। जो छात्रों के साथ सीधे क्रिया प्रतिक्रिया करता है उसकी शंकाओं का समाधान करता है वह परामर्शदाता होता है। परामर्श के लिये 'उपबोधन' शब्द का भी प्रयोग प्रचलित है। परामर्श या उपबोधन छात्र हित की सेवा है जिससे छात्रों की विविध समस्याओं का

निदान किया जा सके। इस सहायता के विविध रूप हो सकते हैं जैसे सामान्य जानकारी देना (informing), सलाह देना (Advising), परामर्श देना (Counselling) । सूचना देने और परामर्श देने में मूलभूत अन्तर यह है कि सूचना देने के लिये उच्च स्तर की सूचना दक्षता की आवश्यकता है जबकि परामर्श देने के लिये उच्च स्तर की वैयक्तिक दक्षताओं की आवश्यकता होती है। सूचना देने का आधार ज्ञान है जबकि परामर्श विद्यार्थी केन्द्रित होता है और सलाह देने के क्रिया सूचना देने और उपबोधन के मध्य की क्रिया है। आम तौर पर दूरस्थ विद्यार्थी अनेक प्रश्न पूछता है उनके उत्तर दूर अध्यापक की क्षमता और दक्षता पर निर्भर करते हैं। परामर्शदाता या उपबोधक में शिक्षार्थी को सलाह देने की योग्यता होनी चाहिये। परामर्श पूर्णतः विद्यार्थी केन्द्रित होता है। परामर्श की प्रक्रिया पूर्णतः संवाद पर आधारित होती है। एक अच्छे परामर्शदाता को अच्छा श्रोता और वक्ता दोनो होना चाहिये तभी परामर्श की प्रक्रिया सुचारू रूप से सम्पन्न होती है।

परामर्श दूरस्थ शिक्षा में प्रवेश लेने वाले अभ्यर्थियों के लिये आयोजित किया जाता है। छात्र और दूरस्थ शिक्षक के मध्य संवाद के रूप में, प्रश्न उत्तर के माध्यम से यह प्रक्रिया चलती रहती है। परामर्श सेवा से तात्पर्य है 'विद्यार्थी की आवश्यकता, परिस्थिति क्षमता के अनुकूल परामर्शदाता द्वारा व्यवहारिक सुझाव देना है'। परामर्श एक द्विमार्गी प्रक्रिया है यह व्यक्तिगत भी हो सकती है और सामूहिक भी। व्यक्तिगत परामर्श से तात्पर्य सिर्फ एक विद्यार्थी को परामर्श देने से है जबकि सामूहिक परामर्श से तात्पर्य पूरे समूह की सामान्य समस्याओं हेतु सामान्य सुझाव देने से है।

बोध प्रश्न

1. परामर्श के स्वरूप की व्याख्या कीजिए ?

.....

.....

.....

2 परामर्श की उपयोगिता बताइये?

.....

.....

.....

3. 'परामर्श सेवा' से क्या तात्पर्य है?

.....

.....

.....

6.4 परामर्श सेवाओं की आवश्यकता

आशा है 'परामर्श' के स्वरूप को आप भली भांति जान गये हैं। अब हम दूरस्थ शिक्षा में परामर्श सेवाओं की आवश्यकता की चर्चा करेंगे। दूरस्थ विद्यार्थी की प्राथमिकतायें किसी अन्य कार्य के लिये होती है। यह उसकी दूसरी पसन्द (Second choice) या दूसरा कार्य (Second work) होता है। परम्परागत संस्था का विद्यार्थी नियमित रूप से अपने शिक्षक के सम्पर्क में होता है। अपनी समस्याओं का समाधान शिक्षक और सहयोगी छात्रो की मदद से आसानी से कर लेता है जबकि दूरस्थ विद्यार्थी का शिक्षक और सहयोगी छात्रों से मिलना बहुत कम हो पाता है। अतः छात्रों को स्व अध्ययन हेतु प्रेरित करने, व्यवस्था सम्बन्धी समस्याओं के निदान के लिये, व्यक्तिगत परेशानियों में सलाह देने हेतु परामर्श सेवाओं की नितान्त अवश्यकता होती है।

दूरस्थ शिक्षण में शिक्षण संस्था और विद्यार्थी के बीच बहुत भौगोलिक दूरी होती है। स्व अध्ययन सामग्री में भी जटिलतायें होती हैं। संस्था के प्रवेश नियमों, परीक्षा, मूल्यांकन के तरीकों, पाठ्यक्रम के चयन आदि में विद्यार्थी के सम्मुख अनेक समस्याये आती हैं। इन समस्याओं के निदान के लिये उसे परामर्श सत्रों की बहुत आवश्यकता होती है। वास्तव में प्रत्येक दूरस्थ विद्यार्थी को उपबोधन की आवश्यकता नही होती। बहुत से दूरस्थ विद्यार्थी अधिक आयु के और परिपक्व होते हैं उन्हें निर्णय लेने हेतु परामर्श की आवश्यकता नहीं होती है। उनमें आत्म विश्वास तथा निर्णय लेने की क्षमता होती है।

पर कुछ विद्यार्थी निर्णय नहीं ले पाते हैं तथा विभिन्न अवरोधों के कारण उनका अध्ययन प्रभावित होता है। प्रवेश से लेकर प्रमाणपत्र प्राप्त करने तक विद्यार्थी किससे मिलना है कब, क्यों कहाँ जैसी उलझनों में फंसा रहता है। उसके व्यक्तिगत कार्य भी, समय का अभाव भी अध्ययन में रूकावट डालते हैं। इन सबके लिये परामर्श की आवश्यकता होती है। परन्तु कुछ ऐसे भी छात्र होते हैं जो समझते हैं उनकी समस्या इतनी जटिल है कि इसका निदान सम्भव नही। एक कुशल परामर्शदाता छात्रों की समस्याओं का हल प्रस्तुत कर उसे स्वतः अध्ययन के लिये प्रेरित करता है।

परामर्श सत्रों को सम्पर्क कार्यक्रम/अनुवर्ग शिक्षण (contact programme/ tutiorials) के नाम से भी जाना जाता है। परन्तु पत्राचार और दूरस्थ संस्थाओं में परामर्श नाम अधिक लोकप्रिय है। परामर्श सत्रों की सफलता निम्न बातों पर निर्भर करती है।

(1) परामर्शदाता तथा विद्यार्थी के मध्य अन्तःक्रिया के लिये पर्याप्त समय सुनिश्चित हो।

(2) शिक्षक और शिक्षार्थी स्वतन्त्र रूप से अपने विचार व्यक्त कर सकें।

(3) परामर्शदाता के पास जिन समस्याओं के हल नही हैं उन्हें वह अन्य लोगों की सहायता से

हल करने का प्रयास करें।

सार रूप में अध्ययन के मध्य आ रही विभिन्न प्रकार की बाधाओं को दूर करने के लिए परामर्श आवश्यक है। कुछ शिक्षार्थी का बाधाओं को चुनौती के रूप में स्वीकार करते हैं जबकि कुछ अन्य हतोत्साहित हो जाते हैं। ऐसे समय में कुशल परामर्शदाता छात्रों में ऊर्जा का संचार कर उन्हें आगे बढ़ने के लिये प्रेरित करता है।

बोध प्रश्न

4. 'परामर्श' की क्या आवश्यकता है?

.....

.....

.....

5. परामर्श के लिये प्रयोग होने वाले अन्य शब्द बताइये?

.....

.....

.....

6.5 परामर्श के प्रकार

जैसा आप जानते हैं दूरस्थ एवं मुक्त शिक्षा में अधिगम स्व अध्ययन सामग्री के साथ व्यक्तिगत अन्तर्क्रिया एवं सहपाठियों के साथ भी ज्ञान एवं जानकारियों के बांटने से भी होती है। वास्तव में परामर्श का मूल द्विमार्गी अन्तर्क्रिया है। यद्यपि दूरस्थ एवं मुक्त शिक्षा का छात्र बन्धनों से मुक्त एवं स्वप्रेरित, स्वतन्त्र एवं एकाकी, होता है तथापि उसे भी परामर्श की आवश्यकता कठिनाइयों के संदर्भ में एवं अभिप्रेरण के लिये होती है। परामर्श देने के विभिन्न साधन हैं जिनमें सर्वाधिक लोकप्रिय F2F परामर्श प्रक्रिया है इसके अतरिक्त टेलीफोन, रेडियों, टीवी, इण्टरनेट जैसे जनसंचार साधनों का प्रयोग भी बहुधा किया जाता है। इसी के आधार पर परामर्श सेवाओं को वर्गीकृत किया जाता है।

(1) प्रत्यक्ष परामर्श (F2F Counselling)

प्रत्यक्ष परामर्श का उद्देश्य परामर्शदाता का छात्र के साथ आमने–सामने बैठकर सुदृढ़ सम्बन्ध स्थापित करना है। प्रत्यक्ष सम्पर्क परामर्श सत्रों का आयोजन प्रायः

अवकाश के दिनों पर किया जाता है। शैक्षणिक कार्यक्रम की प्रकृति और स्वरूप के अनुसार परामर्श सत्रों का आयोजन किया जाता है। ऐसे परामर्श सत्रों को अध्ययन केन्द्र पर छात्रों की सुविधा को ध्यान में रखकर आयोजित करना चाहिये। दूरस्थ शिक्षा में परामर्श सत्र पारम्परिक शिक्षण से पर्याप्त भिन्न होता है जहाँ शिक्षक स्वयं द्वारा निश्चित किसी पाठ की पूर्व तैयारी के साथ कक्षा में आता है परामर्श सत्र छात्र केन्द्रित होता है एवं परामर्शदाता छात्रों के किसी भी प्रकार के प्रश्न, जिज्ञासा, तथा समस्या का समाधान करने के लिए उत्तरदायी होता है।

परन्तु परामर्शदाता अक्सर परामर्श देने के स्थान पर सामान्य शिक्षण कार्य परामर्श सत्रों में करते हैं। छात्र भी मूक श्रोता की तरह परामर्शदाता रूपी शिक्षक की बातें सुनता है। वास्तव में परामर्श सत्र अध्ययन कौशलों के विकास, और छात्रों की समस्याओं के निदान के लिये आयोजित किये जाते हैं। यदि परामर्श सत्रों में सीधे शिक्षण कार्य किये जायें तो मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की नींव डगमगाती प्रतीत होती है। प्रत्यक्ष परामर्श सत्र इस मूलभूत आवधारणा पर आधारित होता है कि छात्र स्व अध्ययन सामग्री का अध्ययन कर परामर्श सत्र में आयेगा और कोर्स सम्बन्धी शैक्षणिक और गैर शैक्षणिक कठिनाइयों का निदान परामर्शदाता की सहायता से कर सकेगा।

यद्यपि कभी – कभी परामर्शदाता इस पूरी प्रक्रिया से भली भांति परिचित होता है तथापि छात्रों की अपेक्षाओं को वह पूरा करने में अपने को असमर्थ पाता है। इसके लिये आवश्यक है कि सत्र को अधिक से अधिक अन्तःक्रियात्मक (Interactive) बनाया जाये जहाँ छात्र और परामर्शदाता दोनो ही परामर्श सत्र में प्रतिभागिता करें।

प्रथम सत्र में मुक्त एवं दूरस्थ की कार्यप्रणाली से छात्र को भली भांति अवगत कराना परामर्शदाता का उत्तरदायित्व है। प्रयास यह रहे कि दो / तीन सत्रों में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की कार्यशैली भली भांति छात्र को समझ में आ जाये और धीरे – धीरे विषय वस्तु के सम्बन्ध में द्विमार्गीय बातचीत प्रारम्भ की जाये। विचार विमर्श में छात्र सक्रिय सहभागिता लें इस बात का प्रयास करना चाहिये। परामर्शदाता को सामूहिक समस्याओं की चर्चा पर अधिक समय देना चाहिये किन्तु वैयक्तिक समस्याओं को भी नजर अन्दाज न करें। कुछ समस्याओं का निराकरण विचार विमर्श से हो जाता है। परामर्शदाता की भूमिका प्रेरणादायक होनी चाहिये। पूरे सत्र में छात्र एवं अध्यापक के मध्य अर्न्तःक्रिया आवश्यक हैं। शैक्षणिक के साथ गैर शैक्षणिक समस्याओं का निराकरण भी अत्यन्त आवश्यक है।

(2) टेलीफोन से परामर्श (Counselling through Phone)

टाज के समय में टेलीफोन द्वारा परामर्श बहुत ही उपयोगी और लोकप्रिय हो रहा है। मोबाइल फोन सभी के पास, सभी समय उपलब्ध होता है, अतः इसके द्वारा छात्र

और परामर्शदाता के मध्य सम्पर्क बहुत आसानी से हो जाता है और बहुत प्रभावी होता है। विभिन्न जानकारियों, शंकाओं के निवारण के लिये छात्र को लगातार किसी से विचार विमर्श, परामर्श की आवश्यकता होती है।

यह आवश्यक नही कि छात्र ही परामर्श हेतु सम्पर्क करे यदि छात्र प्रत्यक्ष परामर्श सत्रों में लगातार अनुपस्थिति है तो परामर्शदाता को भी ऐसे छात्रों से सम्पर्क फोन पर कर यह जानने का प्रयास करना चाहिये कि वे क्यों परामर्श सत्रों में अनुपस्थित हैं। यदि अध्ययन केन्द्र समूह में परामर्श देने हेतु Audio Conferencing की व्यवस्था कर सकें तो और भी अच्छा है। विदेशों में उच्च तकनीक के विकास के कारण फोन पर परामर्श सत्र सफल हो रहे हैं।

(3) रेडियों, टी.वी. के प्रसारण द्वारा परामर्श (Counselling through Radio and TV),

यद्यपि यह विधा प्रचलित नही है तथापि रेड़ियों, टी. वी. के माध्यम से समूह को परामर्श देना, उनकी समस्याओं का निराकरण करना सम्भव है। यद्यपि इसमें परामर्शदाता और छात्र के मध्य अन्तःक्रिया कराना इसके द्वारा सम्भव नही है परन्तु ये जनसंचार के साधन के रूप में बहुत पसन्द किये जाते हैं अतः यदि इनका उपयोग परामर्श हेतु किया जाये तो सम्भवतः यह अत्यन्त प्रभावी संसाधन सिद्ध होगा। अत्यन्त उच्च तकनीकी संस्थानों द्वारा teleconferencing प्रारम्भ की गई है वह भी इसी का एक रूप है।

(4) ई मेल द्वारा परामर्श (Counselling through email)

ई मेल द्वारा परामर्श देने की परम्परा को अभी तक औपचारिक रूप से प्रारम्भ नही किया गया है। वर्तमान समय में अधिकाशं छात्र और अध्यापक इण्टरनेट का प्रयोग प्रतिदिन करते हैं। अतः परामर्श देने के लिये इसमें भी अपार सम्भावनायें विद्यमान हैं।

(5) चैट परामर्श (Counselling through email and Internet chat)

इण्टरनेट के माध्यम से छात्र और अध्यापक के मध्य सम्पर्क कार्यक्रम चलाना सस्ता सरल और प्रभावी होगा। यद्यपि इसके लिये कम्प्यूटर, इण्टरनेट की आवश्यकता होगी और सुदूर ग्रामीण अंचलों में शायद बहुत उपयोगी सिद्ध न हो तथापि इसका प्रयोग दिनो दिन बढ़ता जा रहा है। शहर और गॉव के विद्यार्थी इसका प्रयोग सीख रहे हैं। अतः निकट भविष्य में यह परामर्श के सशक्त माध्यम के रूप में उभरेगा। Video Conferencing जैसी विधाओं का प्रारम्भ उच्च तकनीकी संस्थाओं में प्रारम्भ हो चुका है।

यद्यपि प्रत्यक्ष परामर्श सत्र को ही अधिकृत रूप से परामर्श सत्र के रूप में प्रयुक्त किया जाता है परन्त छात्र मोबाइल फोन की सहायता से शैक्षणिक, गैरशैक्षणिक कार्यों में विश्वविद्यालय या मुक्त संस्थान के अध्किारियों, कर्मचारियों शिक्षकों परामर्शदाताओं की सहायता लेते रहते हैं अब आपको स्पष्ट हो गया होगा कि परामर्श देने के विविध प्रकार है और जन संचार साधनों के बढ़ते प्रयोग ने परामर्श देने के नये – नये तरीके विकसित किये है।

बोध प्रश्न

6. प्रत्यक्ष परामर्श किसे कहते हैं?

.....

.....

.....

7 टेलीफोन द्वारा परामर्श कितने उपयोगी है?

.....

.....

.....

8. परामर्श सेवा हेतु इण्टरनेट की भूमिका बताइये?

.....

.....

.....

6.6 परामर्श के स्तर

आपके लिये यह जानना बहुत जरूरी है कि परामर्श देने का उचित समय क्या है अर्थात शिक्षार्थी की आवश्यकताओं के अनुकूल परामर्श देने के समय का निर्धारण करना चाहिये। निम्न स्तरों पर परामर्श की अत्यन्त आवश्यकता होती है।

(1) प्रवेश पूर्व का स्तर

(2) प्रवेश का समय

(3) कार्यक्रम के दौरान

(4) परीक्षा के समय

(5) पाठ्यक्रम समाप्त होने के उपरान्त

(1) प्रवेश पूर्व का स्तर

प्रवेश लेने से पूर्व छात्र दुविधा में होता है और स्पष्ट रूप से नहीं समझ पाता कि क्या करना उचित है और उसके लिये क्या भविष्य के लिये फायदेमन्द साबित होगा। इस स्तर पर छात्र सूचना, सलाह, परामर्श सभी कुछ चाहता है। वह प्रवेश लेने की प्रक्रिया फार्म प्राप्त करने, फीस शिक्षण प्रक्रिया सभी के बारे में जानकारी चाहता है। विशेष रूप से निम्न प्रकार की जानकारियॉ इस स्तर पर विद्यार्थी चाहता है।

- संस्थान में कौन – कौन से कार्यक्रम चल रहे है?
- मेरे लिये किस पाठ्यक्रम को चुनना अच्छा होगा?
- अनुदेशन प्रक्रिया, फीस, अवधि, कार्यक्रम एवं संस्था की मान्यता आदि के बारे में जानकारी लेना चाहता है।
- क्या फीस देने के बाद प्रवेश न ले तो वापिस हो जायेगी? अथवा क्या देर से फीस देने का प्रावधान है?

इसके लिये आवश्यक है कि परामर्श वही दे जो पूरी तरह से सारी बातों को जानता हो। इस परामर्श के पश्चात विद्यार्थी को कार्य करने को सीधा रास्ता समझ में आ जाता है।

प्रवेश के समय

इस स्तर पर विद्यार्थी चयनित पाठ्यक्रम के विभिन्न प्रश्न पत्रों, अधिन्यास सम्बन्धी जानकारी, अध्ययन केन्द्र सम्बन्धी जानकारी के लिये परामर्शदाता को सम्पर्क करता है। प्रयोगात्मक परीक्षाओं, प्रोजेक्ट कार्य जैसी विविध जानकारियों की दूरस्थ विद्यार्थी को आवश्यकता होती है। इस समय Brochures, Guides, Hand books बहुत उपयोगी सिद्ध होती हैं। संस्था द्वारा विकसित इस प्रकार की पुस्तिकायें छात्र के लिये बहुत लाभदायक सिद्ध होती हैं।

कार्यक्रम के दौरान परामर्श

कार्यक्रम के दौरान परामर्श सत्र नितान्त रूप से शैक्षणिक होते हैं। स्व अध्ययन सामग्री, अधिन्यास से सम्बन्धित समस्याओं का निवारण इन सत्रों में होता है। मैं इस पूरी सामग्री का अध्ययन इतने कम समय में कैसे कर पाऊँगा या मुझे अभी अध्ययन सामग्री मिली नहीं है जैसी समसयाओं का निदान भी परामर्शदाता को करना होता है। छात्र को अध्ययन के लिये प्रेरित करना परामर्शदाता का कर्तव्य है।

परामर्शदाता को सदैव याद रखना चाहिये कि इसमें से बहुत से विद्यार्थी लम्बे समय के अन्तराल के बाद अध्ययन के लिये आये हैं। इसलिये उन्हें पर्याप्त सहायता की आवश्यकता होती है। कभी – कभी कुछ गैर शैक्षणिक कार्य के बारे में भी छात्र पूछता है जैसे तिथि निकल गई, अधिन्यास कैसे जमा होगा, अधिन्यास में कैसे लिखें

कि अंक अच्छे मिलें। अधिन्यास क्या वापस मिलेगा, उस पर टिप्पणी नहीं दी गई है आदि। सार रूप में निम्न प्रकार की सहायता की छात्र को आवश्यकता होती है।

- लाइब्रेरी की सुविधा।
- कम्प्यूटर कोर्स में कम्प्यूटर की सुविधा
- विज्ञान के पाठ्यक्रमों के लिये प्रयोगशाला
- अधिन्यास के लेखन एवं मूल्यांकन के सम्बन्ध में।
- पुराने प्रश्न पत्रों सम्बन्धी जानकारी।
- मार्कशीट, pass प्रतिशत, प्रमाण पत्र परीक्षा पास करने के न्यूनतम अंक जैसी विविध जानकारियाँ।

इस दौरान अक्सर विद्यार्थी थक जाता है बोर हो जाता है सोचता है मैंने बेकार ही यह कोर्स प्रारम्भ कर दिया। ऐसे समय से छात्र को विशेष परामर्श की आवश्यकता होती है।

परीक्षा के समय

परीक्षा के समय तिथि और समय के अतिरिक्त तैयारी कैसे करें, महत्वपूर्ण पाठ, महत्वपूर्ण बिन्दु जैसे विषय पर भी छात्र परामर्शदाता से जानना और समझना चाहते हैं। विशेष रूप से जो विद्यार्थी काफी अन्तराल के पश्चात पढ़ाई करते हैं उनका लिखने का अभ्यास छूट चुका होता है। वे कैसे तैयारी करें जैसी अनेक समस्याओं हेतु छात्र शिक्षक रूपी परामर्शदाता से विचार विमर्श करना चाहता है। मार्कशीट प्रमाणपत्र कब मिलेगा जैसी जानकारी भी वह चाहता है। मूल रूप से इस स्तर पर दूरस्थ विद्यार्थी को निम्न क्षेत्रों में सलाह की जरूरत होती है।

1. परीक्षा तिथियाँ
2. परीक्षा की तैयारी
3. परिणाम की घोषणा

परीक्षा पाठ्यक्रम समाप्त होने के उपरान्त

इस स्तर पर दूरस्थ विद्यार्थी परीक्षा दे चुका होता है जिसके लिये वह नामांकित होता हैं अब उसकी जरूरत व्यवसाय से सम्बन्धित होती है। परामर्शदाता की भूमिका परीक्षा के बाद समाप्त नही हो जाती वरन निम्न क्षेत्रों में उसकी सलाह की आवश्यकता विद्यार्थी को रहती है।

- मार्कशीट, प्रमाण पत्र, दीक्षान्त समारोह सम्बन्धित
- सम्बन्धित व्यवसाय सम्बन्धी जानकारी

6.7 परामर्शदाता के गुण

अब तक आपको स्पष्ट हो चुका होगा कि 'परामर्श' छात्र सहायता सेवाओं का अभिन्न अंग है। एक अच्छे परामर्शदाता में कुछ गुणों का होना आवश्यक है। परामर्शदाता को एक अच्छा श्रोता, सम्प्रेषण कला में निपुण, जानकार होना आवश्यक है। परामर्शदाता ऐसा होना चाहिये कि छात्र उसके पास आने में घबड़ाये व डरे नही और निःसंकोच भाव से अपनी बात कह सके। कभी कभी अत्यधिक कार्य भार से परामर्शदाता शीघ्र क्रोधित हो जाते हैं या एक ही प्रश्न का जवाब बार बार देते देते वे थक जाते हैं। परामर्शदाता से अपेक्षा की जाती है कि वह सहनशील, जागरूक, जानकार छात्र हित में कार्य करने वाला होगा। परामर्शदाता में निम्न गुणों, कौशलों का होना आवश्यक है। तभी वह अच्छा परामर्शदाता हो सकता है।

1. **सुनने की क्षमता** (Capacity of listening)

परामर्शदाता को एक अच्छा श्रोता होना चाहिये। छात्रों की बात धैर्य पूर्वक सुनने की क्षमता परामर्शदाता में होनी चाहिये। वास्तव में बुद्धिमता पूर्ण सुनने की कला का होना परामर्श दाता में अति आवश्यक है। सिर्फ निष्क्रिय हो कर सुनना उचित नहीं वरन् सक्रियता और बुद्धिमत्तापूर्ण ढंग से सुनना आवश्यक है। उसमें उन बातों को भी समझने की क्षमता होनी चाहिये जो कहीं नहीं गई हो उसे सुनना समझना अत्यन्त बुद्धिमत्तापूर्ण कार्य है।

परामर्शदाता को छात्रों के सम्मुख मूक एवं निष्क्रिय श्रोता की भांति भी नहीं होना चाहिये। परामर्शदाता को छात्रों के सम्मुख अपनी प्रतिक्रिया जाहिर करते हुए मुक्त प्रश्न भी पूछने चाहिये जिससे छात्र अपनी बातें निसंकोच कह सके।

2. **जानकार** (Informative)

कभी – कभी छात्र ऐसे प्रश्न पूछता है जिसके अनेक उत्तर होते हैं। परामर्शदाता के रूप में विभिन्न सम्भावित उत्तर देते हुए छात्र विशेष के लिये उपयुक्त रास्ता बताना आवश्यक है। अक्सर छात्र विभिन्न जानकारियॉ चाहते है अतः संस्थान या विश्वविद्यालय से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार की जानकारियॉ रखना आवश्यक है। प्रत्येक छात्र की आवश्यकतायें अलग अलग होती हैं। परामर्शदाता को यह सोचना है कि विशिष्ट छात्र की आवश्यकतायें क्या हैं। इस प्रकार सलाह देना पूर्ण रूप से छात्र पर निर्भर करता है। उसकी समस्याओं को समझना परामर्शदाता के लिये जरूरी है। समस्याएं शैक्षणिक तथा गैर शैक्षणिक दोनो प्रकार की होती है।

3. **सलाह देने की योग्यता** (Ability of advising)

छात्र को कई प्रकार की समस्याएं होती हैं जबकि सलाह देना छात्र की विशिष्ट

आवश्यकता के अनुसार होता है बार विभिन्न स्थितियों में 'क्या किया जाये' और 'क्या न किया जाये' सम्बन्धी निर्णय लेते समय छात्र के सहयोग की आवश्यकता पड़ती है ऐसे समय में उसे अनुभवी सहायता देने वाले परामर्शदाता की जरूरत होती है। वास्तव में यह एक छात्र के सहयोग हेतु एक सेवा है। जिससे उनकी समस्याओं आदि का निदान किया जा सके। इस सहायता के विभिन्न रूप है जैसे जानकारी देना, सहयोग देना, सलाह देना आदि। जानकारी देने और सलाह देने में अन्तर यह है कि इसमें विशिष्ट दक्षता की आवश्यकता होती है। सूचना देना जानकारी है।

4. अच्छा स्वभाव (Good Nature)

यह परामर्शदाता की योग्यता और कुशलता पर निर्भर करता है। सम्प्रेषण के अतिरिक्त धैर्य, स्नेह, अपनत्व आदि भी परामर्शदाता के आवश्यक गुण हैं। इनके अभाव में परामर्शदाता अच्छा नही कहा जा सकता है। क्रोधी, अधैर्यवान व्यक्ति अच्छा पामर्शदाता नही बन सकता। छात्र को यह एहसास होना चाहिये कि वह एक महत्वपूर्ण व्यक्ति परामर्शदाता है। परामर्शदाता को छात्र की बातों में रूचि लेनी चाहिये। व्यक्ति कभी – कभी थकान, अधिक कार्य के कारण बहुत अच्छा नही महसूस करता तथापि उसे छात्र का स्वागत करने की आदत बना लेनी चाहिये। शैक्षिक परामर्शदाता को यह नहीं प्रदर्शित करना चाहिये कि वह बोर हो रहा है। छात्र की भावनाओं को समझना और ईमानदारी और मन से उत्तर देना कुशल परामर्शदाता की विशेषता होती है।

बोध प्रश्न

12. परामर्शदाता के गुण 'सुनने की क्षमता' की व्याख्या कीजिये?

.....

.....

.....

13. आप जानकार (informative) परामर्शदाता किसे कहेंगे

.....

.....

.....

14. 'अच्छा स्वभाव' से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

6.8 परामर्शदाता के प्रमुख कार्य एवं उत्तरदायित्व

परामर्शदाता के प्रमुख कार्य निम्न होते हैं–

- छात्र के स्व–अध्ययन सामग्री सम्बन्धित प्रश्नों एवं सन्देहों आदि का निवारण करना है।
- अधिन्यास सम्बन्धी विविध शंकाओं का निवारण भी परामर्शदाता का कार्य है।
- प्रवेश, परीक्षा, मूल्यांकन आदि के सम्बन्ध में परामर्श देना भी परामर्शदाता का उत्तरदायित्व है।
- स्व–अधिगम के लिये छात्र को प्रेरित करना भी परामर्शदाता का प्रमुख कार्य है।

वास्तव में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में परामर्श सेवाओं (counseling services) की अत्यन्त महत्वपूर्ण तथा प्रभावशाली भूमिका रहती है। वास्तव में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में प्रवेश पाने के इच्छुक व प्रवेश पा चुके छात्रों को दूरस्थ शिक्षा परामर्शदाता समय समय पर परामर्श देकर लाभान्वित करते रहते हैं। परामर्श के लिये यह आवश्यक है कि छात्र परामर्श में भाग लेने का इच्छुक है। परामर्शदाता को प्रभावशाली ढ़ंग से कार्य करने के लिये उसका प्रशिक्षित, अनुभवी व कार्य के प्रति रूझान रखने वाला होना आवश्यक है। परामर्श इस प्रकार का होना चाहिये जिससे व्यक्ति की तात्कालिक एवं भविष्य सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके।

परामर्श की प्रक्रिया के तीन प्रमुख अंग हैं। लक्ष्य एवं प्रयोजन एवं परामर्श सत्रों में विचारों का आदान – प्रदान महत्वपूर्ण तत्व है। परामर्शदाता में इतनी क्षमता होनी चाहिये कि वह छात्र के मनोभावों को समझ सके। परामर्श की प्रक्रिया में छात्र और परामर्शदाता को विभिन्न अनुभवों से गुजरना होता है। छात्र परामर्शदाता की एक छवि अपने मन में निर्मित कर लेता है। परामर्शदाता का लक्ष्य छात्र के साथ अच्छे सम्बन्ध बनाना होता है। अच्छे सम्बन्ध होने पर ही छात्र परामर्श को ग्रहण करता है। सत्र के अन्त में परामर्शदाता को छात्र को संकेत करना चाहिये कि वह छात्र के पुनः आने में रूचि रखता है। परामर्श का कार्य तभी सफल कहा जा सकता है जब परामर्शदाता छात्र को अपने विचारों की अभिव्यक्ति को समुचित अवसर प्रदान करता है। परामर्श सत्र की सफलता परामर्शदाता और छात्र के आपसी सम्बन्धों पर निर्भर करती है।

बोध प्रश्न

15. परामर्श प्रक्रिया के प्रमुख अंग बताइये?

.....

.....

.....

16. परामर्शदाता के प्रमुख उत्तरदायित्व एवं कार्य बताइये?

.....

.....

.....

6.9 सारांश

अब तक आप समझ गये हैं कि दूरस्थ शिक्षा में छात्र सहायता सेवाओं का बहुत महत्व है। दूरस्थ शिक्षा प्राप्त करना और दूरस्थ शिक्षा प्रदान करना दोनो ही चुनौतीपूर्ण कार्य है। दूरस्थ शिक्षा की सफलता और प्रभाव मुक्त संस्थान द्वारा आयोजित छात्र सहायता सेवाओं पर बहुत कुछ निर्भर करता है। इस इकाई में 'परामर्श सेवाओं' के बारे में विस्तार से चर्चा की गई है साथ ही परामर्शदाता की भूमिका, कार्य और अपेक्षित गुणों की भी विवेचना की गई है। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का 'शैक्षणिक परामर्श' एक आवश्यक अंग है। दूरस्थ शिक्षा की सफलता सिर्फ स्व अध्ययन सामग्री पर निर्भर नहीं करती वरन परामर्शदाता द्वारा दी गई सेवाओं पर भी निर्भर करती हैं। दूरस्थ शिक्षण में शिक्षण संस्था और विद्यार्थी के बीच बहुत भौगोलिक दूरी होती है। स्व अध्ययन सामग्री में भी जटिलतायें होती हैं। संस्था के प्रवेश नियमों, परीक्षा, मूल्यांकन के तरीकों, पाठ्यक्रम के चयन आदि में विद्यार्थी के सम्मुख अनेक समस्याये आती हैं। प्रथम सत्र में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की कार्यप्रणाली से छात्र को भली भांति अवगत कराना परामर्शदाता का उत्तरदायित्व है। प्रयास यह रहे कि दो / तीन सत्रों में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की कार्यशैली भली भांति छात्र को समझ में आ जाये और धीरे – धीरे विषय वस्तु के सम्बन्ध में द्विमार्गीय बातचीत प्रारम्भ की जाये। विचार विमर्श में छात्र सक्रिय सहभागिता लें इस बात का प्रयास करना चाहिये। आपके लिये यह जानना बहुत जरूरी है कि परामर्श देने का उचित समय क्या है अर्थात शिक्षार्थी की आवश्यकताओं के अनुकूल परामर्श देने के समय का निर्धारण करना चाहिये। एक अच्छे परामर्शदाता में कुछ गुणों का होना आवश्यक है। परामर्शदाता को एक अच्छा श्रोता, सम्प्रेषण कला में निपुण, जानकार होना आवश्यक है। परामर्श की प्रक्रिया के तीन प्रमुख अंग है। लक्ष्य एवं प्रयोजन एवं परामर्श सत्रों में विचारों का आदान -- प्रदान महत्वपूर्ण तत्व है। परामर्शदाता में इतनी क्षमता होनी चाहिये कि वह छात्र के मनोभावों को समझ

सके। परामर्श की प्रक्रिया में छात्र और परामर्शदाता को विभिन्न अनुभवों से गुजरना होता है। छात्र परामर्शदाता की एक छवि अपने मन में निर्मित कर लेता है। परामर्श का कार्य तभी सफल कहा जा सकता है जब परामर्शदाता छात्र को अपने विचारों की अभिव्यक्ति को समुचित अवसर प्रदान करता है। परामर्श सत्र की सफलता परामर्शदाता और छात्र के आपसी सम्बन्धों पर निर्भर करती है।

6.11 अभ्यास कार्य

प्रश्नः 1 परामर्श के स्वरूप की विवेचना कीजिये?

प्रश्नः 2 परामर्श के प्रकार बताइये?

प्रश्नः 3 परामर्शदाता के लिये आवश्यक कौशलों की व्याख्या कीजिये?

प्रश्नः 4 परामर्शदाता के प्रमुख कार्य एवं उत्तरदायित्व बताइये?

6.12 बोध प्रश्नों के उत्तर :

1. परामर्श या उपबोधन छात्र हित की सेवा है जिससे छात्रों की विविध समस्याओं का निदान किया जा सके।
2. आम तौर पर दूरस्थ विद्यार्थी अनेक प्रश्न पूछता है जिनके उत्तर दूरस्थ अध्यापक की क्षमता और दक्षता पर निर्भर करते हैं।
3. परामर्श सेवा से तात्पर्य है परामर्शदाता द्वारा 'विद्यार्थी की आवश्यकता, परिस्थिति व क्षमता के अनुकूल व्यवहारिक सुझाव देना है।
4. दूरस्थं शिक्षण में शिक्षण संस्था और विद्यार्थी के बीच बहुत भौगोलिक दूरी होती है। स्व अध्ययन सामग्री में भी जटिलतायें होती हैं। संस्था के प्रवेश नियमों, परीक्षा, मूल्यांकन के तरीकों, पाठ्यक्रम के चयन आदि में विद्यार्थी के सम्मुख अनेक समस्याये आती हैं। इन समस्याओं के निदान के लिये उसे परामर्श सत्रों की बहुत आवश्यकता होती है।
5. परामर्श सत्रों को सम्पर्क कार्यक्रम/अनुवर्ग शिक्षण (Contact programme/ tutiorials) के नाम से भी जाना जाता है।
6. प्रत्यक्ष परामर्श का उद्देश्य परामर्शदाता का छात्र के साथ सुदृढ़ सम्बन्ध स्थापित करना है। प्रत्यक्ष सम्पर्क परामर्श सत्रों का आयोजन प्रायः अवकाश के दिनों पर किया जाता है।
7. टेलीफोन द्वारा परामर्श बहुत ही उपयोगी और लोकप्रिय हो रहा है। मोबाइल

फोन सभी के पास, सभी समय उपलब्ध होता है अतः इसके द्वारा छात्र और परामर्शदाता के मध्य सम्पर्क बहुत आसानी से हो जाता है और बहुत प्रभावी होता है।

8. ई मेल द्वारा परामर्श देने की परम्परा को अभी तक औपचारिक रूप से प्रारम्भ नही किया गया है। वर्तमान समय में अधिकाशं छात्र और अध्यापक इण्टरनेट को प्रयोग प्रतिदिन करते हैं। अतः परामर्श देने के लिये इसमें भी अपार सम्भावनायें विद्यमान हैं।

9. कार्यक्रम के दौरान परामर्श सत्र नितान्त रूप से शैक्षणिक होते हैं। स्व अध्ययन सामग्री, अधिन्यास से सम्बन्धित समस्याओं का निवारण इन सत्रों में होता है।

10. निम्न स्तरों पर परामर्श की अत्यन्त आवश्यकता होती है।

(1) प्रवेश पूर्व का स्तर

(2) प्रवेश का समय

(3) कार्यक्रम के दौरान

(4) परीक्षा के समय

(5) पाठ्यक्रम समाप्त होने के उपरान्त

11. परामर्शदाता की भूमिका परीक्षा के बाद समाप्त नही हो जाती वर्न निम्न क्षेत्रों में उसकी सलाह की आवश्यकता विद्यार्थी को रहती है।

– मार्कशीट, प्रमाण पत्र, दीक्षान्त समारोह सम्बन्धित

– सम्बन्धित व्यवसाय सम्बन्धी जानकारी

12. परामर्शदाता को एक अच्छा श्रोता होना चाहिये। छात्रों की बात धैर्य पूर्वक सुनने की क्षमता परामर्शदाता में होनी चाहिये।

13. कभी – कभी छात्र ऐसे प्रश्न पूछता है जिसके अनेक उत्तर होते हैं। परामर्शदाता के रूप में विभिन्न सम्भावित उत्तर देते हुए छात्र विशेष के लिये उपयुक्त रास्ता बताना आवश्यक है।

14. यह परामर्शदाता की योग्यता और कुशलता पर निर्भर करता है। सम्प्रेषण के अतिरिक्त धैर्य, स्नेह, अपनत्व आदि भी परामर्शदाता के आवश्यक गुण हैं।

15. परामर्शदाता के प्रमुख कार्य निम्न होते हैं–

- छात्र के स्व अध्ययन सामग्री सम्बन्धित प्रश्नों एवं सन्देहों आदि का निवारण करना है।
- अधिन्यास सम्बन्धी विविध शंकाओं का निवारण भी परामर्शदाता का कार्य

है।

- प्रवेश, परीक्षा, मूल्यांकन आदि के सम्बन्ध में परामर्श देना भी परामर्शदाता का उत्तरदायित्व है।

16. परामर्शदाता में इतनी क्षमता होनी चाहिये कि वह छात्र के मनोभावों को समझ सके। परामर्श की प्रक्रिया में छात्र और परामर्शदाता को विभिन्न अनुभवों से गुजरना होता है। छात्र परामर्शदाता की एक छवि अपने मन में निर्मित कर लेता है। परामर्शदाता का लक्ष्य छात्र के साथ अच्छे सम्बन्ध बनाना होता है।

6.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें :

- कीगन, डी0 – फाउन्डेशन्स ऑफ डिस्टेन्स एजूकेशनः लन्दन : रूटलेज, 1990
- गुप्ता एस0 पी0 – शिक्षा का ताना–बानाः इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन, 2000
- शर्मा, आर0 ए0 – डिस्टैन्स ऐजूकेशन, मेरठः ईगल बुक्स इन्टरनेशनल, 1995
- शर्मा, आर ए0 – दूरवर्ती शिक्षाः मेरठ सूर्या पब्लिशिंग 1996
- Bhushan, and Bhushan, (1999). Distance Teacher Education- Self Instructinal Material (Planning, Design and Development).New Delhi
- Chandhok, S. (1995). Role of Libraries in Distance Learning Universities: A Study of students' problem
- Cookson, P. S (2002). Access and Equity in Distance Education: Research and Development and Quality Concerns

इकाई – 7 अधिन्यास

7.1 प्रस्तावना

7.2 उद्देश्य

7.3 अधिन्यास का स्वरूप एवं निर्माण

7.4 अधिन्यासों का मूल्यांकन

7.5 अधिन्यसों के प्रकार

7.6 शिक्षक छात्र सम्प्रेषण

7.7 शिक्षक टिप्पणी के प्रकार

7.8 सारांश

7.9 अभ्यास कार्य

7.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

7.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

7.1 प्रस्तावना

छात्र सहायता सेवायें दूरस्थ शिक्षा का अनिवार्य अंग है। आज के युग में नवीन ज्ञान और कौशल को प्राप्त करना आवश्यक है अन्यथा व्यक्ति पीछे छूट जाता है। वास्तव में ज्ञान और कौशल सफलता की कुंजी है। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की आवश्यकता समाज की शैक्षिक जरूरतों के संदर्भ में की गई है।

पिछली इकाईयों में आपने छात्र सहायता सेवा के अन्तर्गत स्व अध्ययन सामग्री एवं परामर्श सत्रों पर पर्याप्त चर्चा की है। इस इकाई में अध्ययन और मूल्यांकन में सहायक दूरस्थ एवं मुक्त शिक्षा के प्रमुख घटक अधिन्यास ;ेपहदउमदजद्ध पर चर्चा करेंगे। दूरस्थ शिक्षा में मूल्यांकन एक सतत प्रक्रिया है और अधिन्यास उसका अभिन्न अंग है। अधिन्यास छात्र और शिक्षक दोनों के लिये महत्वपूर्ण है। दूर शिक्षा में अधिन्यास को विभिन्न नामों से जाना जाता है जैसे दत्त कार्य गृह कार्य आदि। वास्तव में शिक्षक एवं छात्र के मध्य शैक्षिक संवाद तथा संप्रेषण का माध्यम दत्त कार्य होता है यह सतत मूल्यांकन प्रक्रिया का अभिन्न अंग हैं जो अन्तिम आकलन में योगदान देता है यह सभी विद्यार्थियों को अनिवार्य रूप से करना होता है। दूरवर्ती शिक्षा में शिक्षक शिक्षार्थी का आमने सामने का सम्पर्क बहुत कम होता है किन्तु सफल शिक्षण हेतु शिक्षक एवं शिक्षार्थी को एक दूसरे को समझना एवं जानना अति आवश्यक है। अधिन्यास इस कार्य में मदद करता है। छात्र सहायता सेवाये दो प्रकार की होती है।

शैक्षणिक एवं गैर शैक्षणिक। शैक्षिक छात्र सहायता सवेवाओं के अन्तर्गत अधिन्यास एवं स्व अध्ययन सामग्री एवं परामर्श सत्र आदि में आते हैं। गैर शैक्षिक छात्र सहायता सेवाओं के अन्तर्गत दूरस्थ शिक्षा में संचार माध्यमों एवं प्रौद्योगिकी का उपयोग तथा अन्य सहायता सेवायें आती हैं।

अधिगम लक्ष्यों की प्राप्ति विभिन्न उपागमों द्वारा की जा सकती है। यह अनुभव किया जा रहा है कि ज्ञान एक द्विगामी प्रक्रिया है। ऐसा अनुभव किया गया कि शिक्षक एवं शिक्षार्थी के मध्य अन्तः क्रिया आवश्यक है जो अधिन्यास के माध्यम से भी होती है।

7.2 उद्देश्य

इस इकाई में अध्ययन के उपरान्त आय इस योग्य हो जायेंगे कि

- दूरस्थ एवं मुक्त शिक्षा में अधिन्यास की आवश्यकता से परिचित हो सकेंगे।
- अधिन्यास के स्वरूप की व्याख्या कर सकेंगे।
- अधिन्यास के प्रकारों को जान सकेंगे।
- अधिन्यास के निर्माण की प्रक्रिया से परिचित हो सकेंगे।
- शिक्षक टिप्पणी के प्रकारों को जान सकेंगे।
- शिक्षक टिप्पणियों के महत्व को समझ जायेंगे।

7.3 अधिन्यास का स्वरूप एवं निर्माण

दूरस्थ शिक्षा की प्रक्रिया में छात्र सहायता सेवाओं का विशेष महत्व है। छात्र के लिये कार्य प्रणाली की प्रभावशीलता को जानने प्रमुख साधन मूल्यांकन ही होता है। मूल्यांकन में पाठ्यक्रम के उद्देश्यों एवं लक्ष्यों को ध्यान मे रखा जाता है। मूल्यांकन से यह ज्ञान होता है कि शैक्षिक प्रक्रिया कितने प्रभावशाली ढ़ग से आगे बढ़ रही है तथा शैक्षिक उद्देश्यो की प्राप्ति किस सीमा तक हो रही है। मूल्यांकन कार्यक्रम की समीक्षा करने तथा अधिगम की प्रगति को जानने में भी सहायता होता है शैक्षिक कार्यक्रमों में मूल्यांकन की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है।

दूरवर्ती शिक्षा परम्परागत शिक्षा की भाँति अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रणाली है। दूसरी प्रणालियों की भाँति दूरवर्ती शिक्षा में भी मूल्यांकन का अपना महत्व है। मूल्यांकन का प्रत्यय समय के साथ परवर्तित होता जाता है। मूल्यांकन की नवीन अवधारणा परम्परागत परीक्षा की धारणा से भिन्न हैं इस नवीन धरणा के अनुसार शिक्षा के अन्तर्गत मूल्यांकन द्वारा सिर्फ छात्र की उपलब्धियों का मापन करना पर्याप्त नही होता अपितु शिक्षण प्रक्रिया, शिक्षण विधियों, सहायता सामग्री आदि सभी तत्वों की

उपयुक्तता एव सार्थकता का मूल्यांकन करना आवश्यक होता है।

दूरवर्ती शिक्षा में अनुदेशन सामग्री सामन्य तथा मुक्त होती है तथा इसका निर्माण अनुभवी विषय विशेषज्ञों द्वारा किया जाता हैं। इस प्रणाली के अन्तर्गत पंजीकृत शिक्षार्थी अधिक परिपक्व होते हैं तथा अपनी योग्यता में वृद्धि करना चाहते हैं, अतः वे स्वतः अभिप्रेरित होते हैं इसलिये उनमें स्वतः मूल्यांकन के द्वारा अधिगम के उद्देश्यों की प्राप्ति की इच्छा भी होती है। अतः स्व अध्ययन सामग्री के अन्त में अभ्यास प्रश्नों द्वारा वे स्वयं की जाँच कर सकते हैं। दूरस्थ शिक्षा के विभिन्न कार्यक्रमों में कुछ पाठों का सम्प्रेषण रेडियों तथा दूरदर्शन द्वारा भी किया जाता है।

इस प्रणाली में शिक्षार्थियों को कुछ गृहकार्य भी दिया जाता है जिसे सामान्य रूप से अधिन्यास ;ेपहदउमदजद्ध के नाम से जाना जाता है अधिन्यास पूरा करके छात्र को निश्चित तिथि तक संस्था में जमा कर देना होता है। संस्था उन अधिन्यासों को मूल्यांकित करा के उन्हें छात्रों को उपलब्ध करा देती। अधिन्यासों को मूल्यांकित करते समय उपयुक्त टिप्पणी आवश्यक है। इससे छात्र को यह स्पष्ट हो जाता है कि वह अध्ययन सही दिशा में कर रहा है या नही। छात्रों को पृष्ठपोषण प्रदान करने की यह विधि बहुत उपयोगी है इससे छात्रों को कुछ निर्देश, परामर्श एवं सुझाव भी प्राप्त हो जाते हैं किन्त यह तभी सम्भव है जब मूल्यांकन कार्य गम्भीरता से किया जाये तथा टिप्पणियाँ लिखने में पर्याप्त सावधानी रखी जाये। टिप्पणियो को अत्यन्त सतर्कता पूवर्क लिखना चाहिये।

अधिन्यास के माध्यम से शिक्षक एवं शिक्षार्थी के मध्य द्विमार्गी संवाद स्थापित होता है। दूरस्थ शिक्षा में शिक्षार्थी को स्व अध्ययन पाठ्य सामग्री छोटी – छोटी इकाईयों में प्रस्तुत की जाती है जिससे शिक्षार्थी को अध्ययन में सुविधा रहती है। अधिन्यास स्व अध्ययन सामग्री के आधार पर निर्मित किया जाता है। अधिन्यास के द्वारा मूल्यांकन के अतिरिक्त छात्र की अधिगम सम्बन्धी कठिनाइयाँ भी दूर की जाती है। दूरस्थ शिक्षार्थी इसके द्वारा पढ़ने के लिये लगातार अभिप्रेरित रहता है दूरवर्ती विद्यार्थी इसके द्वारा अधिगम सम्बन्धी कठिनाइयों को भी दूर करने में समर्थ होता है।

दूरस्थ शिक्षा की अवधारणा सतत एवं निरन्तर मूल्यांकन की प्रक्रिया पर आधारित है। अधिन्यास मूल्यांकन का महत्वपूर्ण अंग है। मूल्यांकन के अतिरिक्त अधि गम प्रक्रिया को मजबूत करने के लिये भी अधिन्यास आवश्यक है। इसके द्वारा छात्र और अध्यापक के मध्य संप्रेषण होता है, स्व अध्ययन सामग्री सम्बन्धित कठिनाइयां सामने आती हैं, तथा स्व–अध्ययन सामग्री के संरचनात्मक एवं वैचारिक स्वरूप का आकलन भी हो जाता है। वास्तव में यहीं से सीखने सिखाने की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है। अतः दूरवर्ती शिक्षक को शिक्षार्थी के उत्तरों को सम्बन्धित पाठ एवं शिक्षार्थी

दोनो की विशेषताओं को ध्यान में रख मूल्यांकित कर सकने में सक्षम होना चाहिये।

स्व अध्ययन सामग्री में इकाई के मध्य एवं अन्त में प्रश्नों के रूप में गृहकार्य दिये रहते है उसकी रचना लेखक द्वारा की जाती है। अतः अधिन्यास निर्माणकर्ता को यह समझने का प्रयास करना चाहिये कि शिक्षार्थी से किस प्रकार के गृह कार्य की अपेक्षा की गई है। अधिन्यास निर्माण कर्ता को विभिन्न ईकाइयों से प्रश्नों का निर्माण करना चाहिये। अधिन्यास निर्माण कर्ता को विषय वस्तु की प्रासंगिकता के साथ – साथ उसके संगठनात्मक पक्ष जैसे दीर्घ उत्तरीय, लघु उत्तरीय, अति लघुउत्तरीय, वस्तुनिष्ठ, प्रयोगात्मक कार्य पर आधारित अभ्यास कार्य पर भी ध्यान देना चाहिये।

बोध प्रश्न

1. अधिन्यास किसे कहते हैं ?

.....

.....

.....

2. दूरस्थ शिक्षा में अधिन्यास के स्वरूप का विश्लेषण कीजिये?

.....

.....

.....

3. दूरस्थ शिक्षा में अधिन्यास किस पर आधारित होता है ?

.....

.....

.....

7.4 अधिन्यासों का मूल्यांकन

दूरस्थ शिक्षण के अन्तर्गत दूरस्थ शिक्षक को उत्तरों को मूल्यांकित करते समय विषय वस्तु की प्रासंगिकता के साथ – साथ उत्तर के संगठनात्मक पक्ष पर भी समुचित ढ़ग से विचार करने की आवश्यकता होती है। मूल्यांकनकर्ता को निम्न बिन्दुओं पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है।

– उत्तर का प्रारम्भ कैसे किया गया है।

– उत्तर का मध्य भाग कैसा है।

– उत्तर का अन्त कैसे प्रभावशाली ढ़ग से किया गया है।

अधिन्यास द्वारा शिक्षार्थियों को पृष्ठ पोषण प्रदान करने की यह बहुत उपयोगी प्रविधि है। अधिन्यासों को मूल्यांकित कर उपयुक्त टिप्पणी के साथ छात्र को देना दूरस्थ शिक्षा का अभिन्न अंग है। यद्यपि इस कार्य में आजकल कुछ लापरवाही होने लगी है। अधिन्यासों के माध्यम से छात्र अनिवार्य रूप से सम्पूर्ण स्व अध्ययन सामग्री का अध्ययन करता है। टिप्पणियो द्वारा वह अपने कार्य में सुधार लाने का प्रयास करता है। सुझावों एवं निर्देशन से उसे आगे बढ़ने के लिये सही दिशा मिलती है। लेकिन यह तभी सम्भव होता है। जब छात्रों को पर्याप्त मात्रा में सुधारात्मक टिप्पणियॉ मिलें। यह आवश्यक है कि मूल्यांकन कार्य सही ढ़ग से किया जाये तथा छात्रों को उपयोगी टिप्पणियाँ दी जाये। जब एक शिक्षार्थी अपनी मूल्यांकित अधिन्यास पुस्तिका टिप्पणी सहित प्राप्त करता है तो उसकी बहुत सी प्रतिक्रियायें भी होती है जैसे वह मूल्यांकन से संतुष्ट भी हो सकता है असंतुष्ट भी। अन्य विद्यार्थियों से अपनी तुलना भी करता है। अधिन्यासों के मूल्यांकन के द्वारा छात्र अपनी कमियों को दूर करता है, इसके माध्यम से विद्यार्थियां का अकेलापन (Isolation) दूर आता है। इसके माध्यम से छात्रों की विभिन्न समस्यायें भी दूर हो जाती हैं।

बोध प्रश्न

4. अधिन्यासों का मूल्यांकन करते समय ध्यान देने योग्य प्रमुख बात क्या हैं ?

.....

.....

.....

5. दूरस्थ विद्यार्थी को मूल्यांकित अधिन्यास से क्या लाभ है ?

.....

.....

.....

7.5 अधिन्यास के प्रकार

अब तक आपको स्पष्ट हो चुका है कि अधिन्यास शिक्षक और छात्र के मध्य संप्रेषण का साधन है। शिक्षक द्वारा लिखी गई टिप्पणियां उन्हे आगे का कार्य अच्छे ढ़ग से और समय पर करने में सहायता देती है। शिक्षक की टिप्पणियां यदि रचनात्मक हो और समय पर मिले तो यह शिक्षण को सुदृढ़ करने के साथ साथ छात्रों को प्रोत्साहित भी करती है। शिक्षक और अध्यापक के मध्य अधिगम सम्बन्धी यह संवाद सीखने में सहायक होता है और उसकी गति बढ़ाता है। समय समय पर अधिन्यास कार्य तथा उसके (फीडबैक) पृष्ठ पोषक से शिक्षक और छात्र के मध्य सम्बन्ध सुदृढ़ होता है।

सकारात्मक फीडबैक छात्रों को सीखने में सहयोग प्रदान करती है और प्रोत्साहित भी करती है। इसके द्वारा छात्रों को मनोवैज्ञानिक रूप से बल भी मिलता है ।

अधिन्यास कार्य को दो भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है –

1) शिक्षक द्वारा मूल्यांकित

2) कम्प्यूटर द्वारा मूल्यांकित

शिक्षक द्वारा मूल्यांकित

अधिकांश अधिन्यासों का मूल्यांकन शिक्षकों द्वारा किया जाता है। सामान्य रूप से लेखक,/ परामर्शदाता/ संकाय सदस्य गृहकार्य का मूल्यांकन करते हैं। कुछ पाठ्यक्रमों में अधिन्यास प्रश्न पत्र के स्थान पर परियोजना कार्य आवंटित किया जाता है। छात्र इन्हें किसी विशेषज्ञ के निर्देशन में पूरा कर विश्वविद्यालय को मूल्यांकित करने के लिये जमा कर देता है। मूल्यांकरनकर्ता उन पर टिप्पणियां लिख छात्रों को प्रतिपुष्टि प्रदान करते हैं।

कम्प्यूटर द्वारा मूल्यांकित

कम्प्यूटर द्वारा भी कुछ अधिन्यास मूल्याकित कराये जा सकते हैं, परन्तु इसका उपयोग विशेष रूप से वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के लिये किया जाता है। जब छात्र को दिये गये विकल्पों में से किसी एक को चुनना होता है। कम्प्यूटर द्वारा कई दक्षताओं एवं कुशलताओं की जॉच नही हो पाती । कम्प्यूटर आकलन में विषय परक प्रश्नों का उपयोग नहीं हो सकता। कम्प्यूटर द्वारा मूल्यांकन में कम समय लगता है। इसके विपरीत शिक्षक आकलन में समय व धन अधिक व्यय होता है। दूरस्थ शिक्षा में कम्प्यूटर द्वारा मूल्यांकन अधिक लोकप्रिय नहीं है। इसकी सबसे बड़ी कमी यह है कि इसमें शिक्षक द्वारा प्रदत्त टिप्पणी नहीं होती जिसका दूरस्थ शिक्षा में बहुत उपयोग है।

बोध प्रश्न

6. क्या कम्प्यूटर से अधिन्यास मूल्यांकित कराये जा सकते हैं?

.....

.....

.....

7. अधिन्यास कार्य में फीड बैक की उपयोगिता बताइए ।

.....

.....

.....

8. अधिन्यास को किन दो रूपों में वर्गीकृत किया गया है?

.....

.....

.....

7.6 शिक्षक छात्र सम्प्रेषण

अब तक आप जान गये होंगे कि दूरस्थ शिक्षा के अन्तर्गत शिक्षक टिप्पणी बहुत महत्वपूर्ण होती है इसके द्वारा शिक्षकों एवं छात्रों के मध्य सम्पर्क सरलता से हो जाता है। शिक्षक टिप्पणियां विषय वस्तु के अतिरिक्त सम्प्रेषण की भी वाहक होती है जो अधिगम का सुदृढ़ीकरण करती है। ये टिप्पणियां दो स्तर पर शिक्षक एवं शिक्षार्थी के मध्य सम्प्रेषण का कार्य करती हैं।

(1) शिक्षक सम्प्रेषण (Academic Communication)

(2) छात्र सम्प्रेषण (Personal Communication)

(1) शिक्षक सम्प्रेषण (Academic Communication)

शैक्षिक सम्प्रेषण के स्तर पर दूरस्थ शिक्षक को शिक्षार्थियों के उत्तर पत्रकों को ध्यन पूर्वक पढ़ना होता है इन उत्तरों पर उपयुक्त टिप्पणियां लिखनी होती है तथा मूल्यांकित भी करनी होती है। टिप्पणियों के माध्यम से विद्यार्थी को मार्गदर्शन भी करना होता है। आकलन के आधार पर मूल्यांकन कर्ता को अपनी आख्या देनी होती है जिससे विद्यार्थी की उपलब्धि भविष्य में और बेहतर हो सके। इस प्रकार की अन्तःक्रिया के माध्यम से शिक्षक व शिक्षार्थी की पृथकता की समस्या दूर होती है साथ ही छात्रों को अभिप्रेरित करने में भी सहायता होती है।

(2) छात्र सम्प्रेषण (Personal Communication)

अधिन्यास के मूल्यांकन से सम्बन्धित सम्प्रेषण का एक स्तर और है वह है छात्र द्वारा प्रारम्भ किया गया सम्प्रेषण। अधिन्यास में प्राप्त अंकों एवं टिप्पणियों के आधार पर यह सम्प्रेषण छात्र द्वारा प्रारम्भ किया जाता है। वह अक्सर टेलीफोन आदि के माध्यम से सम्पर्क भी करता है।

कभी कभी अधिन्यास में दिये गये प्रश्नों के उत्तर उसे स्व अध्ययन सामग्री में प्राप्त नही हो पाते तो वह इधर उधर भटकता है ओर दूरस्थ शिक्षक/परामर्शदाता से भी वह इस सम्बन्ध में सम्पर्क करता है। इस प्रकार छात्र सम्प्रेषण की शुरूवात शिक्षार्थी की तरफ से होती है।

7.7 शिक्षक टिप्पणी

दूरवर्ती शिक्षा प्रणाली में शिक्षक टिप्पणियों का विशेष महत्व होता है। ये टिप्पणियाँ शिक्षार्थी के लिये मार्गदर्शन का कार्य करने के साथ साथ विषय वस्तु के रूप में भी उपयोगी होती हैं। अतः ये टिप्पणियाँ लिखने में शिक्षक को बहुत अधिक सावधानी से कार्य करना होता है। टिप्पणियाँ जितनी अधिक विचारपूर्ण, संक्षिप्त एवं

शैक्षणिक उद्देश्यों से युक्त होगी शिक्षार्थी उनसे उतना ही अधिक लाभान्वित हो सकेगा। दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के अधिकांश अध्यापक क्योंकि परम्परागत शिक्षा से सम्बन्ध रखने वाले होते है। इन शिक्षकों को अलग से कोई प्रशिक्षण भी नही दिया जाता है अतः उन्हें अत्यन्त सावधानी पूर्वक टिप्पणियां लिखनी चाहिये। सामान्य रूप से टिप्पणियों को विभिन्न प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है।

सकरात्मक टिप्पणियाँ

सकरात्मक टिप्पणियों से तात्पर्य अध्यापक द्वारा दी गई उन टिप्पणियों से है जिससे यह पता चलता है कि उसके द्वारा लिखा गया उत्तर ठीक एवं उपयुक्त है अथवा बहुत अच्छा और उत्कृष्ट, यह अच्छा प्रयास है अथवा साधारण, सकरात्मक टिप्पणियां छात्र को और अधिक अच्छा करने के लिये प्रेरित करती हैं इससे छात्र बार बार अधिक अच्छा करने के लिये उत्साहित होता है दूरवर्ती शिक्षक को इस प्रकार की टिप्पणियाँ लिखने पर अधिक ध्यान देना चाहिये।

रचनात्मक टिप्पणी

ये टिप्पणियाँ इस प्रकार के सुझाव प्रस्तुत करती हैं जिससे उत्तर को और अधिक अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया जा सके। ये टिप्पणियों शिक्षक शिक्षार्थी अन्तःक्रिया को प्रभावी बनाने में बहुत अधिक योगदान करती हैं जैसे आप इन बिन्दुओं पर और चर्चा कर सकते हैं, आपको इस बिन्दु पर और अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

नकरात्मक टिप्पणियाँ

दूरस्थ शिक्षण में इस प्रकार की टिप्पणियाँ लिखने को हतोत्साहित करना कहा जाता है। नकरात्मक टिप्पणियों से तात्पर्य ऐसी टिप्पणियों से है जिसमें ऐसे शब्दों का प्रयोग किया जाता है जो शिक्षार्थी में कुंठा और हीन भावना उत्पन्न करते हैं। ऐसी टिप्पणियाँ किसी उद्देश्य की पूर्ति नही करती जैसे आपने नकल की है, आपका भाषा ज्ञान निम्न स्तर का है, लगता है आपने बिल्कुल पढ़ा नही है आदि।

कभी – कभी नकरात्मक टिप्पणियां विषय वस्तु की प्रासंगिकता, व्याख्या, विश्लेषण आदि की कमियों की ओर भी संकेत करती है। कमियां बताना ठीक है पर उसके लिये प्रयुक्त भाषा उचित होनी चाहिये। प्रायः कमियां बताते बताते भाषा कडुवी एवं व्यंग्यात्मक हो जाती हैं। अतः इन कमियों की ओर ध्यान केन्द्रित करना उचित है सिर्फ भाषा प्रभावी होनी चाहिये।

निरर्थक/भ्रमात्मक टिप्पणियाँ

कभी – कभी दूरस्थ शिक्षक या मूल्यांकन कर्ता कुछ ऐसी टिप्पणियां दे देते हैं जो निरर्थक या भ्रमात्मक होती है और उसका अर्थ स्पष्ट नही होता है। शिक्षार्थी यह

नहीं समझ पाता है कि शिक्षक क्या कहना चाहता हैं उत्तर उसे ठीक लगा या नहीं जैसे दोबारा उत्तर लिखिये, विद्यार्थी यह नही समझ पाता कि इसमें क्या कमियाँ हैं, दोबारा वही गलतियाँ वह फिर करता है।

अशाब्दिक टिप्पणी

दूरस्थ शिक्षकों एवं मूल्यांकनकर्ताओं द्वारा कभी -- कभी संकेतों, निशानों चिन्हों के द्वारा ऐसी टिप्पणियाँ दी जाती हैं जिससे विद्यार्थी यह नही समझ पाता कि इस चिन्ह से उसका क्या तात्पर्य है जैसे प्रश्न चिन्ह (?), सीधी रेखा –, तिरछी रेखा, गोल घेरा। विद्यार्थी स्पष्ट रूप से यह नही समझ पाता कि परीक्षक इन चिन्हों के माध्यम से क्या कहना चाहता है।

बोध प्रश्न

9. शिक्षक टिप्पणियों की उपयोगिता बताइये?

.....

.....

.....

10. नकरात्मक टिप्पणियों की प्रासंगिकता समझाइये ?

.....

.....

.....

11. रचनात्मक टिप्पणियों को किसे कहेंगे ?

.....

.....

.....

12. अशाब्दिक टिप्पणी आप किसे कहेंगे ?

.....

.....

.....

7.8 सारांश

इस इकाई में अध्ययन और मूल्यांकन में सहायक दूरस्थ एवं मुक्त शिक्षा के प्रमुख घटक अधिन्यास (Assignment) पर चर्चा की गई है। दूरस्थ शिक्षा में मूल्यांकन एक सतत प्रक्रिया है और अधिन्यास उसका अभिन्न अंग है। दूरस्थ शिक्षा की प्रक्रिया में छात्र सहायता सेवाओं का विशेष महत्व है। छात्र के लिये कार्य प्रणाली की

प्रभावशीलता को जानने प्रमुख साधन मूल्यांकन ही होता है मूल्यांकन में पाठ्यक्रम के उद्देश्यों एवं लक्ष्यों को ध्यान मे रखा जाता है। मूल्यांकन से यह ज्ञान होता है कि शैक्षिक प्रक्रिया कितने प्रभावशाली ढ़ग से आगे बढ़ रही है तथा शैक्षिक उद्देश्यो की प्राप्ति किस सीमा तक हो रही। अधिन्यास कार्यक्रम की समीक्षा करने तथा अधिगम की प्रगति को जानने में भी सहायता होता है शैक्षिक कार्यक्रमों में अधिन्यास की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है।

दूरवर्ती शिक्षण के अन्तर्गत दूरवर्ती शिक्षक को उत्तरों को मूल्यांकित करते समय विषय वस्तु की प्रासंगिकता के साथ – साथ उत्तर के संगठनात्मक पक्ष पर भी समुचित ढ़ग से विचार करने की आवश्यकता होती है। मूल्यांकन कर्ता को इन बिन्दुओं पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है। यह शिक्षक और छात्र के मध्य संप्रेषण का साधन है। शिक्षक द्वारा लिखी गई टिप्पणियां उन्हें आगे का कार्य अच्छे ढ़ग से और समय पर करने में सहायता देती है। शिक्षक की टिप्पणियां यदि रचनात्मक हो और समय पर मिले तो यह शिक्षण को सुदृढ़ करने के साथ साथ छात्रों को प्रोत्साहित भी करती है। शैक्षिक सम्प्रेषण के स्तर पर दूरवर्ती शिक्षक को शिक्षार्थियों के उत्तर पत्रकों को ध्यान पूर्वक पढना होता है इन उत्तरों पर उपयुक्त टिप्पणियां लिखनी होती है तथा मूल्यांकित भी करनी होती है। टिप्पणियों के माध्यम से विद्यार्थी का मार्गदर्शन भी करना होता है।

7.9 अभ्यास कार्य

प्रश्नः 1 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में अधिन्यास की भूमिका की व्याख्या कीजिये?

प्रश्नः 2 अधिन्यास निर्माण करते समय किन किन बातों पर ध्यान देना चाहिये?

प्रश्नः 3 मूल्यांकित अधिन्यास छात्रों को वापिस क्यों देना चाहिये?

प्रश्नः 4 शिक्षक टिप्पणियों की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालते हुए उसके विभिन्न प्रकारों का वर्णन कीजिये ?

7.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. गृह कार्य को अधिन्यास कहते हैं ।
2. अधिन्यास के माध्यम से शिक्षक एवं शिक्षार्थी के मध्य द्विमार्गी संवाद स्थापित होता है।
3. अधिन्यास सतत एवं निरन्तर मूल्यांकन की प्रक्रिया पर आधारित होता है।
4. मूल्यांकन करते समय छात्र को टिप्पणियों अवश्य दें ।
5. इससे वह अपने को मूल्यांकित कर पाता है ।

6. सिर्फ वस्तुनिष्ठ प्रश्नों वाले अधिन्यास इसके द्वारा मूल्यांकित करांये जा सकते हैं।

7. फीड बैक से स्वमूल्यांकन के साथ शिक्षक छात्र के मध्य सम्बन्ध सुदृढ़ होता है।

8. शिक्षक तथा कम्प्यूटर द्वारा मूल्यांकित अधिन्यास ।

9. इससे विद्यार्थी अपनी कमियां अच्छाइयाँ जानकर प्रगति कर सकता है ।

10. नकारात्मक टिप्पणियाँ बहुत आवश्यक होने पर ही दी जानी चाहिए।

11. रचनात्मक टिप्पणियाँ सुझाव प्रस्तुत करती है।

12. ये संकेतों, निशानों या चिन्हों द्वारा दी जाती हैं।

7.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- शर्मा, आर ए0 – दूरवर्ती शिक्षाः मेरठ सूर्या पब्लिशिंग 1996
- शर्मा, आर0 ए0– शिक्षा तकनीकीः मेरठः इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस, 2002
- साहू, पी0 के0 – ओपन लर्निंग सिस्टमः न्यू देल्ही : उप्पल पब्लिकेशन्स, 1994
- साहू, पी0 के0 – ऐजूकेशनल टेक्नोलोजी इन डिस्टेनसः न्यू देल्हीः अरावती, 1999
- Bates, A.W. (1984). The Role of Technology in Distance Education. London
- Bhushan, and Bhushan, (1999). Distance Teacher Education-Self Instructinal Material (Planning, Design and Development).New Delhi
- Chandhok, S. (1995). Role of Libraries in Distance Learning Universities: A Study of students' problem
- Cookson, P. S (2002). Access and Equity in Distance Education: Research and Development and Quality Concerns
- Delors, J. (1998). Learning – The Treasure Within. Paris: UNESCO
- Dr. B. R. Ambedkar Open University; www.braou.ac.in

इकाई 8 सूचना एवं सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी

(Information & Communication Technology)

8.1 प्रस्तावना

8.2 उद्देश्य

8.3 दूरस्थ शिक्षा में सूचना एवं सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी का विकास एवं स्वरूप

8.4 दूरस्थ शिक्षा में सूचना एवं सम्प्रेषण प्रोद्योगिकी की आवश्यकता

8.5 सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीक के प्रकार

8.6 माध्यमों का वर्गीकरण

8.7 माध्यमों का उपयोग

8.8 संसाधन आधारित अधिगम

8.9 कम्प्यूटर आधारित अनुदेशन

8.10 सारांश

8.11 अभ्यास कार्य

8.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

8.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें

8.1 प्रस्तावना

प्रारम्भ में दूरस्थ शिक्षा में वैयक्तिक एवं स्वतन्त्र अध्ययन पर सर्वाधिक बल दिया जाता था। सम्पूर्ण शिक्षा प्रक्रिया में मुद्रित सामग्री केन्द्र बिन्दु होती थी। प्रौद्योगिकी एवं वैश्वीकरण के कारण इस क्षेत्र में परिवर्तन आना स्वाभाविक था। धीरे धीरे अधिगम का स्वरूप विस्तृत होने लगा और अधिगम प्रक्रिया कक्षा के बाहर गृह कार्यस्थल आदि में भी प्रारम्भ हो गई। सूचना एवं सम्प्रषण प्रौद्योगिकी ने जाति, संस्कृति देश की सारी सीमाओं को लॉघते हुए शिक्षा का द्रुतगति से विकास किया। ज्ञान के विस्फोट ने भी शिक्षा की आवश्यकता को जीवनोपर्यन्त बना दिया। परम्परागत कक्षाओं की F2F शिक्षण ,प्रत्यक्ष शिक्षणद्ध का स्थान सूचना एवं प्रौद्योगिकी द्वारा जीवन पर्यन्त शिक्षा ले रही है। लचीली दूरस्थ शिक्षा पद्धति परम्परागत शिक्षण का स्थान लेती प्रतीत हो रही है। आज कम्प्यूटर इण्टरनेट, ई मेल, चैट जैसे संसाधनों ने सूचना एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में क्रान्ति ला दो है। दूरस्थ शिक्षा की सफलता में संचार माध्यमों का स्थान केन्द्रीय होता है। दूरस्थ एवं मुक्त शिक्षा में संचार माध्यमों द्वारा शिक्षक एवं शिक्षार्थी के मध्य अर्न्तक्रिया होती है। यद्यपि दूरस्थ शिक्षा में मुद्रित सामग्री प्रमुख होती है तथापि जन

संचार साधनों के प्रयोग ने दूरस्थ शिक्षा को प्रभावी, सहज और सुलभ बना दिया है। दूरस्थ शिक्षण में छात्र सहायता सेवाओं के अन्तर्गत सूचना एवं सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी (Information and Communication Technology) की अत्यन्त अहम भूमिका है सूचना एवं सम्प्रषण प्रौद्योगिकी से तात्पर्य उन वैज्ञानिक संसाधनों से है जिसे सूचना का आदान प्रदान अत्यन्त द्रुतगति से किया जा सकता है। दूरस्थ शिक्षा में अध्यापक और अध्येता के मध्य दूरी होती है। सूचना एवं प्रौद्योगिकी इस दूरी को कम कर देता है।

8.2 उद्देश्य

इस इकाई में अध्ययन के उपरान्त आप इस योग्य हो जाएंगे कि:

- दूर शिक्षा में सूचना एक सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी की व्याख्या कर सकेंगे।
- दूर शिक्षा में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी की आवश्यकता की विवेचना कर सकेंगे।
- सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रकारों को जान सकेंगे।
- दूर शिक्षा में सुचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के उपयोग को समझ सकेंगे।

8.3 दूरस्थ शिक्षा में सूचना एवं सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी का विकास एवं स्वरूप

यदि सूचना एवं सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी का इतिहास खोजने की चेष्टा करें तो इसका उद्भव 'पत्राचार' के रूप में दिखायी देता है जिसमें मुद्रित सामग्री डाक द्वारा भेजी जाती है। इसे सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीक की प्रथम पीढ़ी (First Generation) के रूप में भी जाना जाता है। द्वितीय पीढ़ी (Second genoration) को मल्टी मीडिया मॉडल के रूप में भी समझा जा सकता है जिसमें श्रव्य एवं दृश्य साधनों के अन्तर्गत मुद्रित पाठ्य सामग्री, आडियों वीडियों टेप, कम्प्यूटर आधारित अधिगम, अर्न्तक्रियात्मक वीडियो आदि आते हैं। इस प्रकार पत्राचार से मल्टीमीडिया मॉडल की ओर अनेक दूरस्थ संस्थान बढ़े हैं। वर्तमान विभिन्न दूरस्थ संसाधनों सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी की तृतीय पीढ़ी में प्रवेश कर चुके हैं जिसे टेली लर्निंग मॉडल भी कहते हैं। इसके अन्तर्गत आडियों, टेली कान्फरेसिंग, वीडिया काफरेसिंग, रेडियो तथा दूरदर्शन द्वारा प्रसारण आदि आते हैं।

आज हम सूचना एंव संचार प्रौद्योगिकी की चतुर्थ पीढ़ी में प्रवेश कर रहे हैं, इसके अन्तर्गत इण्टरनेट के प्रयोग की सर्वाधिक महत्ता है ओर इसके द्वारा विविध

शिक्षा अधिगम सामग्री तक छात्र की पहुँच और इण्टरनेट, चैट आदि के माध्यम से अर्न्तःक्रिया को बढ़ावा दिया जाता है।

सूचना एवं सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी की पीढ़ियाँ

प्रथम पीढ़ी

मुद्रित सामग्री

द्वितीय पीढ़ी

मुद्रित सामग्री

ऑडिया टेप

वीडियो टेप

तृतीय पीढ़ी

मुद्रित सामग्री

कम्प्यूटर आधारित अधिगम

अर्न्तःक्रियात्मक ऑडियो वीडियो

चतुर्थ पीढ़ी

मुद्रित सामग्री

वर्ल्ड वाइड वेब (www)

चैट/ई मेल, अन्तः क्रियात्मक ऑडियो/वीडियो, मोबाइल

दूरस्थ शिक्षण बहु माध्यम आधारित शिक्षण प्रक्रिया है जिसमें मुद्रित स्व अध्ययन सामग्री प्रमुख होती है किन्तु साथ साथ छात्र सहायता हेतु आधुनिक सूचना एवं सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी का प्रयोग धीरे धीरे बढ़ता जा रहा है। दूरस्थ एवं मुक्त शिक्षा में F2F प्रत्यक्ष शिक्षण का प्रयोग नही किया जाता वरन् परामर्श सत्रों के रूप में छात्र से शैक्षणिक एवं गैर शैक्षणिक विषयों पर संवाद किया जाता है।

छात्रों की समस्याओं को जानने और समझने का प्रयास किया जाता है आधुनिक सूचना एवं सम्प्रषेण माध्यमों द्वारा छात्रों को शिक्षण में सहायता प्रदान की जाती है तथा उसकी अन्य समस्याओं का भी समाधान किया जाता है।

सूचना एवं सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी (Information and Comnmunication Technology) शब्द की यदि व्याख्या की जाये तो इससे तकनीक का प्रयोग सूचना के आदान प्रदान एवं सम्प्रेषण में ध्वनित होता है। इसके अन्तर्गत बहुतायत से प्रयुक्त

होने वाले साधन हैं– समाचार पत्र, दूरदर्षन, इण्टरनेट का प्रयोग सूचना के प्रवाह के लिये किया जाता है तथा सम्प्रेषण के लिये मोबाइल फोन, ई मेल, चैट आदि प्रयोग किये जाने वाले साधन हैं वस्तुतः सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीक को संक्षेप में ICT कहा जाता है।

कीगन (2003) के अनुसार तकनीकी माध्यम शिक्षक एवं शिक्षार्थी के मध्य अर्न्तक्रिया द्वारा पाठ्य विषय को समझने में योगदान देते हैं। दूरस्थ शिक्षा एक द्विमार्गी प्रक्रिया है जो अनुदेशन के लिये इसमें प्रयुक्त होती है। दूरस्थ एवं मुक्त शिक्षा में निर्धारित स्थानों पर परामर्श सत्रों की व्यवस्था की जाती है किन्तु मात्र परामर्श सत्रों से शिक्षण प्रभावी ढ़ग से सम्पन्न नही हो पाता अतः इस रिक्तता की पूर्ति के लिये बहु माध्यमों का प्रयोग आवश्यक है।

8.4 सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीक की आवश्यकता

शिक्षण प्रक्रिया में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के माध्यमों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इन माध्यमों की सहायता से विषय सामग्री को शिक्षार्थी तक प्रभावी ढ़ग से पहुँचाया जा सकता है। औपचारिक शिक्षा में प्रमुख रूप से प्रत्यक्ष अर्थात आमने सामने के (Face to Face) शिक्षण का प्रयोग किया जाता है जबकि दूरस्थ शिक्षा में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का प्रयोग किया जाता है। दूरवर्ती शिक्षा में शिक्षक एवं शिक्षार्थी आमने सामने नही होते अतः प्रत्यक्ष शिक्षण सम्भव नही होता किन्तु शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनाने के लिये कुछ सहायक साधनों जैसे दृश्य श्रव्य सामग्री मीडिया, इण्टरनेट, वेब साइट आदि को भी प्रयुक्त किया जाता है। दूरवर्ती शिक्षण अधिगम प्रक्रिया मूलतः बहु माध्यम वाली प्रक्रिया है। पूर्व में अधिकांश दूर शिक्षण संस्थानों द्वारा प्रमुख रूप से मुद्रित सामग्री द्वारा अनुदेशन को ही माध्यम के रूप में अपनाया जाता है। किन्तु अब धीरे धीरे अमुद्रित अनुदेशनात्मक माध्यमों का प्रयोग बढ़ता जा रहा है। आधुनिक सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी ने विगत कई दशकों में विकास प्रक्रिया के विभिन्न स्तरों को पार किया है अर्थात समय एवं दूरी की बाधाओं को एक साथ समाप्त कर दिया है। इसके माध्यम से दूर दराज में रहने वाले लोगों को शिक्षा प्राप्त करने के सुअवसर उपलब्ध हो रहे हैं।

सूचना एंव संचार प्रौद्योगिकी द्वारा ज्ञान का आदान प्रदान सरल होता है और इसीलिये यह दूर शिक्षा में अधिकतर प्रयुक्त होती है। यह माध्यम कम खर्चीला होता है तथा अब परम्परागत शिक्षा पद्धति में भी इसे प्रयुक्त किया जा रहा है। ये माध्यम छात्रों में उत्सुकता तथा अभिप्रेरणा को जागृत करते है तथा अधिगम हेतु वातावरण प्रदान करते है। जिससे विद्यार्थी अधिगम प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग ले सकते हैं।

विभिन्न दूर शिक्षा संस्थान अपनी आवश्यकताओं, लक्ष्य समूहों, संसाधनों एवं पाठ्यक्रम की अर्न्तवस्तु के अनुसार विभिन्न सूचना प्रौद्योगिकी को एक साथ संयुक्त रूप में प्रयोग में लाते हैं।

वर्तमान समय में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी ने जीवन के समस्त क्षेत्रों में क्रान्ति मचा दी है। मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सूचना तथा सम्प्रेषण तकनीकी के नूतन प्रयोग किये हैं। शिक्षा और विशेष रूप से दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में सूचना तकनीक ने इसे सर्वव्यापी और सर्व सुलभ बना दिया है। समाचार पत्र, दूरदर्शन, फोन, कम्प्यूटर, टेली कान्फ्रेंसिंग, ई मेंल, इन्टरनेट जैसे माध्यमों का प्रयोग ज्ञान वर्द्धन के अतिरिक्त अध्यापक छात्र सम्पर्क, परामर्श समस्या के निदान के लिये बहुतायत से किया जा रहा है। मोबाइल फोन ने इसे और सरल ओर कम खर्चीला बना दिया है। दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी का महत्वपूर्ण स्थान है । बदलते समय एवं परिवेश में सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग के बिना दूरस्थ शिक्षा की संकल्पना भी नही की जा सकती। बहु माध्यमों का प्रयोग दूरस्थ शिक्षा में आवश्यक है क्योंकि इसके द्वारा ज्ञान एवं सूचना का आदान प्रदान द्रुतगति से किया जाता है तथा अर्न्तक्रिया प्रभावी ढ़ग से सम्पन्न होती है। मोबाइल, इण्टरनेट, ऑन लाइन सेवाओं जैसी विशेषताओं ने दूरस्थ शिक्षा को सुदूर क्षेत्रों में फेलाने में अमूल्य योगदान दिया है।

दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र की प्रमुख चुनौतियाँ हैं पहुंच (Access), गुणवत्ता (Quality) लागत (Cost) तथा उपयोगिता (Relevance) । इन चुनौतियों का सामना करने के लिये सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकों का प्रयोग अनिवार्य है। दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में लचीलापन होने के कारण ICT का प्रयोग अपरिहार्य है। दूरस्थ एवं मुक्त शिक्षा में सामान्य रूप से वे छात्र अध्ययन हेतु आते है। जो विभिन्न कारणों से औपचारिक शिक्षा में प्रवेश नहीं ले पाते। दूरस्थ छात्र अपने ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि हेतु, व्यवसाय में प्रगति एवं उन्नति हेतु, दूरस्थ शिक्षा मे प्रवेश लेता है। दूरस्थ छात्रों की अधिगम आवश्यकताओं को पारम्परिक शिक्षण की भाँति पूर्ण नही किया जा सकता है अतः स्व अध्ययन सामग्री के अतिरिक्त ICT की सहायता आवश्यक होती है।

सूचना का प्रवाह इस युग में तीव्र गति से हो रहा है लोगों तक इसे पहुँचाने के लिये नवीन माध्यमों की तलाश तीव्र गति से हो रही है। इस क्षेत्र में इण्टरनेट तथा वेब आधारित तकनीक ने सूचना को तत्काल लोगों तक पहुँचाने का कार्य किया है। यह माध्यम सामाजिक और अन्तःक्रिया के अवसर प्रदान करता है। इण्टरनेट बहुत ही सशक्त माध्यम के रूप में उभर रहा है। भारत जैसे विकासशील देश में धीरे धीरे इसका प्रयोग बढ़ता जा रहा है।

बोध प्रश्न

1 सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीक की कितनी पीढ़ियाँ हैं?

.....

.....

.....

2 वर्ल्ड वाइड वेब से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

3 WWW क्या है ?

.....

.....

.....

4 कम्प्यूटर आधारित अधिगम किसे कहेगे ?

.....

.....

.....

5 दूरस्थ षिक्षा की प्रमुख चुनौतियाँ क्या–क्या हैं ?

.....

.....

.....

8.5 सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीक के प्रकार

अब तक आपको स्पष्ट हो गया होगा सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीक की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया और शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति की दृष्टि से महत्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाने में तकनीकी माध्यमों का अत्यन्त उपयोग है। माध्यमों का उपयोग कक्षा शिक्षण तथा दूरस्थ शिक्षा दोनों में किया जाता है। इसका पाठ्यवस्तु के प्रस्तुतीकरण और पाठ्यवस्तु के सम्प्रेषण में प्रयोग किया जाता है। माध्यमों के उपयोग से दूरी का कोई अर्थ नही रह जाता है। माध्यमों से सूचना का आदान प्रदान छात्रों के घर तक पहुँचाया जा सकता है। प्रत्यक्ष शिक्षण में पाठ्यवस्तु के प्रभावशाली प्रस्तुतीकरण हेतु समुचित शिक्षण विधियों का प्रयोग करते हैं। दूरस्थ शिक्षा में माध्यम बहुत उपयोगी सिद्ध होते है, जबकि कक्षा शिक्षण में मल्टीमीडिया का उपयोग कम होता है। विभिन्न माध्यमों में विभिन्न प्रकार के ज्ञान को व्यक्त करने के प्रतीकों

पद्धतियों में भिन्नता होती हैं। सोलोमन (1979) के अनुसार तीन प्रकार की पद्धतियां है– अंकीय, सादृश्य मूलक, और अनुसंकेतक। अंकीय पद्धति मूलपाठ पर आधारित होती है, तथा तार्किक दृष्टि से पुस्तकों, कम्प्यूटरों/संगणकों से सम्बंधित होती है। सादृश्य मूलक पद्धति अधिक अभिव्यक्तिपरक होती है, ओर गत्यात्मक कार्यकलापों के सम्पादन का प्रतिनिधित्व करती है जैसे टेलीविजन, दूरदर्शन आदि। अनुसंकेतक पद्धति चित्रों रंगों और चिन्हों पर आधारित होती है। जिनके द्वारा ज्ञान को चिन्हित किया जाता है। दूरस्थ शिक्षा में अध्येता को वही ज्ञान प्रदत्त करने के लिये जो परम्परागत प्रणाली के अध्येता को प्राप्त होता है, हम ऐसे मिश्रित माध्यमों का प्रयोग करते हैं जो सभी प्रतीक पद्धतियों का प्रतिनिधित्व करते है।

दूर शिक्षा का प्रत्येक विशेषज्ञ माध्यमों को समन्वित करने का प्रयास करता है। शिक्षा नियोजन में यह निर्णय लिया जाता है कि किस प्रकार के माध्यम की व्यवस्था की जानी चाहिये। विविध माध्यम शिक्षा के अलग कार्यों के लिये उपयोगी होते है। दूरस्थ शिक्षा में प्रयुक्त किये जाने वाले माध्यमों को दो वर्गों में विभाजित कर सकते हैं।

– **मुद्रित अनुदेशनात्मक माध्यम।**

– **अमुद्रित अनुदेशनात्मक माध्यम।**

1– **मुद्रित अनुदेशनात्मक माध्यम**– यह साधन मितव्ययी एवं सरल है। यह परम्परागत तथा दूरस्थ दोनों शिक्षण की दृष्टि से महत्वपूर्ण होता है।

2– **अमुद्रित माध्यम**– दूरस्थ शिक्षा में अमुद्रित माध्यम को अधिक लोकप्रिय बनाने का पूरा प्रयास किया जा रहा है। तकनीकी माध्यमों का जन साधारण के लिये महत्व अधिक हो गया है। इसकी प्रमुख विशेषतायें निम्न है–

- दूरस्थ–शिक्षण में आमने–सामने शिक्षण की अपेक्षा ICT का उपयोग आवश्यक हो गया है, क्योंकि इनमें विविधता पाई जाती है। साथ साथ मुद्रित–माध्यम के द्वारा सभी उद्देश्यों की प्राप्ति नहीं की जा सकती है।
- कुछ विशिष्ट अमुद्रित माध्यम दूरस्थ–छात्रों के अधिगम हेतु अधिक प्रभावशाली होते हैं। श्रव्य टेप, कम्प्यूटर अभ्यास तथा कौशल विकास के लिये अधिक उपयोगी होती है। चल–चित्र तथा अन्य तकनीकी माध्यम वैज्ञानिक विषय के शिक्षण में उपयेागी है। इसके द्वारा पाठ्य वस्तु को समझने में भी सहायता मिलती हैं, श्रव्य सामग्री द्वारा सामाजिक विषयों की शिक्षा प्रभावी ढंग से की जा सकती है। छात्रों को चल–चित्रों की सहायता से अभिप्रेरित भी किया जाता है।
- तकनीकी माध्यमों से छात्रों को मनोवैज्ञानिक रूप में अभिप्रेरित किया जाता

है जिससे अधिगम क्रिया प्रभावशाली होती है। अधिगम सम्बंधी क्रियायें –ध्यान केन्द्रित करना, अभिप्रेरित करना, तार्किक क्षमताओं को विकसित करने को बढ़ावा मिलता है। अमुद्रित माध्यम, मुद्रित माध्यम से अधिक प्रभावशाली पाये गये हैं।

- अमुद्रित माध्यमों द्वारा अध्ययन के प्रति लगन उत्पन्न होती है, और सीखने में छात्र को सुगमता होती है। परम्परागत पुस्तकों से छात्रों में लगातार पढ़ने की तत्परता नहीं होती है, और उन्हें कोई पुनर्बलन भी नहीं मिलता है। तकनीकी माध्यमों से छात्रों में तत्परता और अध्ययन के प्रति लगातार लगन उत्पन्न होती है।
- तकनीकी अमुद्रित माध्यमों द्वारा अनुदेशन के प्रस्तुतीकरण तथा सम्प्रेषण के प्रति छात्रों की एकाग्रता में वृद्धि होती है। कक्षा–शिक्षण की अपेक्षा दूरदर्शन और अनुदेशन के प्रति एकाग्रता अधिक होती है।
- सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीक द्वारा अनुदेशन के स्वरूप के प्रस्तुतीकरण में उद्देश्यों को भली–भांति परिभाषित किया जाता है, इसके द्वारा समुचित वातावरण उत्पन्न किया जाता है, जिससे उद्देश्यों की प्राप्ति की जाती है। परम्परागत अनुदेशन सामग्री तथा पाठ्य–पुस्तकों में उद्देश्यों को परिभाषित किया जाता है, परन्तु समुचित वातावरण उत्पन्न नहीं किया जाता, जिससे उद्देश्यों की प्राप्ति की जा सके। तकनीकी माध्यमों की सहायता से समुचित वातावरण उत्पन्न किया जाता है, जिससे छात्रों की एकाग्रता में वृद्धि होती है, और उसमें वे अधिक क्रियाशील रहते हैं।
- अमुद्रित माध्यम अपेक्षाकृत लचीला अधिक होता है, जिसमें छात्रों की आवश्यकताओं, अभिरूचियों को भी महत्व दिया जाता है। इसके अन्तर्गत व्यक्तिगत अनुदेशन सामग्री की भी रचना की जाने लगी है। विविध प्रकार के माध्यमों द्वारा इस प्रणाली को लचीला बनाया जाता है, और छात्रों को उनके अनुरूप सीखने का अवसर दिया जाता है।
- अमुद्रित अनुदेशन सामग्री द्वारा प्रत्येक छात्र को अपने अनुसार सीखने का अवसर दिया जाता है, यह सुविधा परम्परागत पुस्तकों में तथा कक्षा–शिक्षण में नहीं होती है। व्यक्तिगत अनुदेशन सामग्री में एक समूह की विशेषताओं के अनुसार सीखने की व्याख्या की जाती है।
- विशिष्ट छात्रो हेतु विशिष्ट अनुदेशन सामग्री की रचना की जाती है। छात्रों की इसके अन्तर्गत समुचित माध्यम तथा समुचित अनुदेशन सामग्री का चयन किया जाता है।

- कुछ माध्यमों में ऐसी व्यवस्था की जाती है, कि छात्र अधिगम के साथ अपने सीखने की अनुक्रियाओं की जॉच भी साथ–साथ करता है, जिससे उन्हें पुनर्बलन भी मिलता है। साथ ही उनकी गलतियों के लिये सुधारात्मक अनुदेशन सामग्री भी दी जाती है।
- इसके द्वारा छात्रों को अपने सीखने की गति से सीखने का अवसर दिया जाता है। छात्रों को सीखने में पूरी स्वतंत्रता दी जाती है।
- अमुद्रित माध्यमों के शिक्षकों की भूमिका कम हो जाती है। इस लिए दूरस्थ शिक्षा में सहायक प्रणाली के अन्तर्गत व्यक्ति सम्पर्क कार्यक्रमों का अयोजन किया जाता है। छात्र शिक्षकों से सम्पर्क करके अपनी कठिनाईयों का निवारण तथा स्पष्टीकरण भी करते हैं। माध्यमों के द्वारा शिक्षक अधिगम परिस्थितियों की व्यवस्था की जाती है। शिक्षक छात्रों की कठिनाइयों का निदान करके उनकी समस्यओं हेतु परामर्श तथा निर्देशन की भी व्यवस्था करता है।

बोध प्रश्न–

5 मुद्रित अनुदेशनात्मक की दूर शिक्षा में व्याख्या कैसे की जाती है?

.....

.....

.....

6. सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीक का उपयोग क्यों आवश्यक है ?

.....

.....

.....

7. दूर शिक्षा में अनुदेशन पद्धति किस पर आधारित होता है?

.....

.....

.....

8.6 माध्यमों का वर्गीकरण

यद्यपि माध्यमों को मूलरूप से मुद्रित तथा अमुद्रित दो वर्गों में बॉटा जा सकता

है, विशेषज्ञों ने माध्यमों के वर्गीकरण प्रस्तावित किया है। इस भाग में हम माध्यमों के वर्गीकरण की चर्चा करेंगे जिससे दूरस्थ शिक्षा के अध्यापकों और अध्येताओं के लिये माध्यमों की तैयार सूची प्राप्त की जा सके। सन् 1974 में रोमिस जोवस्की ने सूचना के आदान–प्रदान के लिये प्रयुक्त ज्ञानेन्द्रियों के उपयोग के आधार पर अपने वर्गीकरण का सिद्धान्त प्रतिपादित किया। इस वर्गीकरण को बिल्कुल अपर्याप्त समझा गया क्योंकि इसमें केवल एक ही कसौटी का उपयोग किया गया था।

दूसरी ओर अन्य विद्वानों ने माध्यमों को दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया है, अर्थात् बड़े माध्यम तथा छोटे माध्यम, जो कीमत तथा नवाचार पर आधारित है। उनके अनुसार टी.वी. ध्वनि चलचित्र तथा कम्प्यूटर बड़े माध्यम हैं तथा पारदर्शी चित्र, स्लाइड आदि छोटे माध्यमों को निरूपित करते हैं। स्पार्क (1988) ने पद्धति और माध्यम में किसी प्रकार का अन्तर किये बिना, निम्नांकित सूची प्रस्तुत की है–

1993 में विद्वानों ने माध्यमों के वर्गीकरण की एक अत्यन्त व्यापक विधि प्रस्तावित की। उनके अनुसार सभी माध्यमों को चार श्रेणियों में रखा जा सकता है। हम नीचे इन चारो श्रेणियों में से प्रत्येक को संक्षिप्त में स्पष्ट करेंगे ।

यह, वे माध्यम है जो अध्यापक तथा विद्यार्थी को अधिगम लक्ष्य पर सहमत होने, एक–दूसरे की अवधारणा को ग्रहण करने, और परस्पर प्रतिपुष्टि प्रदान करने योग्य बनाते है। विमर्शी माध्यमों के उदाहरण है– श्रव्य वार्तालाप, वीडियो वार्तालाप, कम्प्यूटर वार्तालाप, कम्प्यूटर साधित ई–मेल अथवा डाक–सूची द्वारा सहयोगात्मक कार्य।

वे माध्यम जो अध्यापकों को उनके तथा विद्यार्थियों की अवधारणा के बीच संबंध उत्पन्न होने पर वार्तालाप के केन्द्र– बिन्दु को परिवर्तित करने की सुविधा देते हैं। अनुकूली माध्यों के उदाहरण– शैक्षणिक कार्यक्रम, शैक्षणिक अनुरूपण, बुद्धिमतापूर्ण शैक्षणिक पद्धतियां आदि है।

वे माध्यम है जो विद्यार्थी को कार्य/लक्ष्य की प्राप्ति हेतु कार्य की सुविधा देते हैं, और अध्यापक को प्रतिपुष्टि की सुविधा देते हैं ताकि विद्यार्थी के कार्य के परिणामस्वरूप कुछ परिवर्तन घटित हो सके। इसके उदाहरण है– अनुरूपण, माइक्रो वर्ल्डस तथा प्रतिरूपण।

वे माध्यम है जो अध्यापक को विद्यार्थियों के प्रत्येक स्तर पर विषय–लक्ष्यों के कार्यों से सम्बंधित प्रतिपुष्टि को विषय–लक्ष्यों से सम्बंधित करने में सहायता देते है।

बोध प्रश्न–

8. माध्यमों का प्रगुख वर्गीकरण को बताइये ?

.....

.....

.....

9. अन्तः क्रियात्मक माध्यम किसे कहते है ?

.....

.....

.....

10. किसने ज्ञानेन्द्रियों के उपयोग के आधार पर वर्गीकरण किया है ?

.....

.....

.....

8.7 माध्यमों का उपयोग

दूरस्थ शिक्षा का प्रत्येक विशेषज्ञ माध्यमों को समन्वित करने का प्रयास करता है। शिक्षा नियोजन में यह निर्णय लिया जाता है, कि किस प्रकार के माध्यम की व्यवस्था की जानी चाहिये। विविध माध्यम शिक्षा के अलग कार्यों के लिये उपयोगी होते हैं। दूरस्थ छात्र का शिक्षक से पारस्परिक सम्बंध नहीं हो पाता है, इसलिये दोनों प्रकार के माध्यम मुद्रित तथा अमुद्रित प्रयोग किये जाते हैं, जो व्यक्तिगत सम्पर्क की कमी को पूरा करते हैं, इसके अतिरिक्त उन माध्यम का भी प्रयोग किया जाता है, जो पाठ्यवस्तु की बोधगम्यता में सहायक होता है। दूरस्थ शिक्षा व्यावहारिक रूप में विभिन्न माध्यमों पर आधारित होती है। विभिन्न माध्यम में कई–कई माध्यमों को सम्मिलित किया जाता है। इसमें निर्देशन तथा परामर्श सेवाओं को भी प्रयुक्त किया जाता है। शिक्षण में आवश्यकताओं, उद्देश्यों, साधनों, पाठ्यवस्तु सामग्री की दृष्टि से अनेक माध्यमों को सम्मिलित किया जाता है। मिश्रित माध्यमों की प्रमुख विशेषतायें अधोलिखित है –

1. समन्वित माध्यमों से शिक्षण कीं विविधता की पूर्ति होती है।
2. मुद्रित तथा अमुद्रित माध्यम उद्देश्यों की दृष्टि से एक–दूसरे के पूरक होते हैं।
3. विभिन्न माध्यम एक–दूसरे के सहायक होते हैं। सहायक प्रणाली दूरस्थ–शिक्षा

में महत्वपूर्ण होती है। सहायक माध्यमों को भी प्रयुक्त किया जाता है।

4. माध्यम स्वतंत्र होते हैं, किसी एक माध्यम की पृथक रूप में भी प्रयुक्त करते है। पत्राचार शिक्षा में मुद्रित माध्यम ही प्रयुक्त होता है।

– समन्वित माध्यम उपागम के सम्बंध में निर्णय पाठ्यक्रम स्तर भी किया जाता है, यदि माध्यमों के समन्वय को गणित के शब्दों में कहना चाहें तो कह सकते हैं, कि 80 प्रतिशत मुद्रित और 20 प्रतिशत अमुद्रित माध्यम प्रयुक्त होता है। पाठ के विकास तथा शिक्षण में दोनों ही समन्वित रूप में क्रियाशील होने चाहिये। समन्वित माध्यम को छात्र पसन्द करते हैं, तथा ऐसा अनुभव करते हैं कि अमुद्रित माध्यम शिक्षण की विशिष्ट विधि है, जिसे वे गम्भीरता से लेते हैं। दूरदर्शन पाठ्यवस्तु के सम्प्रेषण का माध्यम है, वे अप्रत्यक्ष रूप से भी देखते हैं। अमुद्रित माध्यमों पर आधारित गृहकार्य तथा परीक्षा भी दी जाती है, इसके साथ दूरस्थ छात्र सरलता से समायोजन कर लेते हैं, उन्हें अलग से समय नहीं देना पड़ता है।

– इस प्रकार के माध्यमों के उपयोग हेतु पाठ्यक्रम निर्माण के समय ही निर्णय लिया जाता है कि सम्पूर्ण सूचनाओं का प्रसारण मुद्रित तथा अमुद्रित माध्यमों द्वारा ही किया जायेगा। इस प्रकार पूरक माध्यमों का उपयोग विज्ञान तथा तकनीकी विषयों के शिक्षण हेतु किया जाता है, क्योंकि इसकी पाठ्यवस्तु सैद्धान्तिक तथा प्रयोगात्मक भी होती है। सैद्धान्तिक पाठ्यवस्तु मुद्रित तथा प्रयोगात्मक अमुद्रित माध्यमों द्वारा प्रसारित की जाती है।

– इस आयाम का मुख्य लक्ष्य छात्रों के अनुभवों को अधिक बोधगम्य बनाना है। स्वामित्व माध्यम में शत–प्रतिशत मुद्रित माध्यम होता है, जिससे छात्रों को तथ्यों की सूचना प्रदान की जाती है, यदि इसी सूचना को अन्य माध्यमों से भी प्रसारित की जाये। प्रौढ़ शिक्षा के नियमों तथा जनसंख्या के नियमों को दूरदर्शन पर विशिष्ट उदाहरण से समझा जाता है।

– इस का अर्थ यह है कि मुद्रित माध्यम का प्रयोग दूरस्थ शिक्षण से नहीं किया जाता है, अपितु शत–प्रतिशत अमुद्रित माध्यम का प्रयोग करते हैं। इसमें छात्र सुनकर, देखकर अपने नोट बनाता है। यह उपागम ऐसे समूह के लिये अधिक उपयोगी होता है जो शिक्षित कम होते हैं, अथवा अध्ययन की आदत नहीं होती है। पाठ्यवस्तु की प्रकृति के अनुकूल पूर्ण रूप में प्रयोगात्मक प्रशिक्षण ही दिया जाता है। दूरदर्शन पर कृषि कार्यक्रम, महिलाओं जैसे– नये–नये पकवान तथा क्राफ्ट के कार्यक्रम दिये जाते हैं, इनमें मुद्रित माध्यम का उपयोग नहीं किया जाता है।

बोध प्रश्न –

11. समन्वित माध्यम क्या है?

.....

.....

.....

12. पूरक माध्यमों का प्रयोग किन विषयों में किया जाता है?

.....

.....

.....

13. पत्राचार शिक्षा में किस माध्यम का प्रयोग किया जाता है?

.....

.....

.....

8.8 संसाधन आधारित अधिगम (Resources based learning)

अब तक आप समझ गये होंगे सूचना एवें सम्प्रेषण तकनीक से तात्पर्य उन माध्यमों से है जो सूचना और सम्प्रेषण के आदान प्रदान में सहायता करते हैं। ऐसे माध्यमों का प्रयोग हम अपने प्रतिदिन के जीवन में करते रहते हैं। जैसे समाचार पत्र, मैगजीन, दूरदर्शन, रेडियों, मोबाइल, कम्प्यूटर, इण्टरनेट ऑडियो वीडियो सी.डी आदि हमारी दिनचर्या का हिस्सा बन चुके हैं। इन्ही का प्रयोग शिखा की गुणवत्ता को बढ़ाने में किया जा रहा है। दूरस्थ एवं मुक्त शिक्षा में इसको प्रयोग दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। क्योंकि इससे द्रुतगति से सूचना शैक्षिक गति विधियों, क्रियाओं, ज्ञान आदि का प्रवाह होता है। आज का युग तकनीक का युग है आज कम्प्यूटर को मल्टीमीडिया के रूप प्रयुक्त किया जा रहा है इसे विद्यार्थी की प्राथमिक आवश्यकताओं के रूप में समझा जा सकाता है।

दूरस्थ शिक्षा पद्यति संसाधन आधारित अधिगम (Resource Based Learing) की ओर आगे बढ़ रही है जहाँ विद्यार्थी का उत्तरदायित्व है कि वह विविध संसाधनों से आवश्यक सूचनाओं को एकत्र करे। सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीक ने सीखने के लिये बहुत से संसाधन उपलब्ध करा दिये हैं। मल्टीमीडिया Text, Graphics, Audio, Video जैसे अनेक रूप में जानकारी को उपलब्ध कराता है।

दूरस्थ शिक्षा में शिक्षण प्रौद्योगिकी

दूर संचार आधारित	कम्प्यूटर आधारित	डाक आधारित
ई मेल चैट, ऑडियों वीडियो	कम्प्यूटर आधारित शिक्षण	मुद्रण
वीडियो सभा	कम्प्यूटर आधारित अधिगम	श्रव्य टेप
सजीव अन्तः क्रियात्मक दूरदर्शन	कम्प्यूटर आधारित अधिगम	स्लाइड
कम्प्यूटर वार्तालाप	अन्तः क्रियात्मक	चलचित्र, वीडियो टेप

प्रमुख संसाधन,

शैक्षिक दूरदर्शन

सम्प्रेषण तथा प्रसारण का एक प्रमुख साधन दूरदर्शन, है। यह एक बहुत शक्तिशाली माध्यम के रूप में विकसित हो रहा है। इसने एक बड़े उद्योग का स्तर तेजी से प्राप्त कर लिया है। संसार तथा जीवन में एक महत्वपूर्ण क्रांति आई है। तकनीकी की दृष्टि से यह श्रव्य एवं दृश्य दोनों से युक्त है। यह अपने साधनों में व्यक्तियों के लिये वास्तविक सम्प्रेषण का प्रभावशाली साधन है। अपने कार्यक्रमों के द्वारा यह प्रसारण एवं मनोरंजन का अधिसंख्य लोगों के लिये एक प्रभावकारी साधन है।

शिक्षा दूरदर्शन, राष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा तैयार किये गये विभिन्न विषयों के पाठ्यक्रम को सीखने के लिये प्रस्तुत किया जाता है। शिक्षा के बड़े स्तर की सभी बाधओं को दूर करने का यह एक प्रभावशाली साधन है।

इसके द्वारा औपचारिक एवं अनौपचारिक दोनों प्रकार की शिक्षा का विकास सम्भव है। शिक्षा दूरदर्शन के द्वारा सम्पूर्ण संसार को एक कक्षा का स्वरूप प्रदान किया जा सकता है एवं कक्षा को घर के स्वरूप मे बदला जा सकता है।

दूरदर्शन का भारतवर्ष में प्रयोग आज से कई दशक पूर्व दिल्ली में हुआ। कुछ समय तक दूरदर्शन का क्षेत्र सीमित रहा। दूसरे शब्दो में इसके विस्तार की सेवा को कम महत्व दिया गया, लेकिन दिल्ली दूरदर्शन के प्रसार क्षेत्र एवं समय में बढ़ोत्तरी हुई। लगभग तेरह वर्षों के बाद बम्बई में दूसरा दूरदर्शन केन्द्र खोला गया। चार और दूरदर्शन केन्द्र (1972 और 1975) के मध्य श्रीनगर, (26 जनवरी 1973) कलकत्ता, (अगस्त 9, 1975), मद्रास (अगस्त 15,1975) और लखनऊ (नवम्बर 27, 1975) खोले गये।

दूरदर्शन के इतिहास में भारतवर्ष में एक नया योगदान उस समय हुआ, जब 1 अगस्त (1975) को सेटेलाइट इन्सट्रक्सनल दूरदर्शन प्रयोगशाला ने अपना एक वर्षीय उपग्रह छोड़ा। एक अमेरिका के उपग्रह का प्रयोग बाहरी तौर पर ग्रामीणों के सामाजिक एवं आर्थिक विकास के लिये किया गया। लेकिन उपग्रह (एस आई टी ई) के द्वारा

उत्पन्न उत्सुकता को और अधिक समय तक नहीं रोका जा सका। इसी अन्तराल में रंगीन दूरदर्शन का अविर्भाव अगस्त (1982) में हुआ।

भारतवर्ष में अधोलिखित शिक्षा दूरदर्शन की परियोजना का आरम्भ हुआ—

1. माध्यमिक स्कूल दूरदर्शन परियोजना।
2. दिल्ली कृषि दूरदर्शन परियोजना (कृषि दर्शन)।
3. सेटेलाइट इन्सट्रक्सनल दूरदर्शन प्रयोग (साइट)।
4. पोस्ट–साइट परियोजना।
5. इण्डियन नेशनल सेटेलाइट (इन्सैट)।
6. हायर एजुकेशन दूरदर्शन परियोजना (यू0जी0सी0)

शैक्षिक दूरदर्शन के लाभ –

- शिक्षा संगठन में शिक्षा दूरदर्शन सामाजिक समानता प्राप्त करने के लिये उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक होता है। नगरीय क्षेत्रों में जो लोग निम्न जीवन स्तर बिताने के लिये बाध्य हैं, उनके लिये यह एक प्रभावशाली साधन के रूप में प्रयुक्त होता है। दूरदर्शन अनुदेशनात्मक सामग्री के प्रस्तुतीकरण के लिये इसका प्रयोग किया जाता है।
- दूरदर्शन के कार्यक्रमों को सुव्यवस्थित एवं कक्षागत अनुदेशन की तुलना में समुचित ढंग से प्रस्तुत किया जा सकता है। इसके द्वारा शिक्षा की पारम्परिक व्यवस्था से प्रभावशाली प्रदर्शन किया जा सकता है।
- छात्र अपने व्यक्तिगत प्रयासों से दूरदर्शन द्वारा अच्छा सीख सकता है। यदि दूरदर्शन की उपयोगिता को बढ़ा दिया जाये तो शिक्षक की आवश्यकता को कम किया जा सकता है।
- शिक्षा दूरदर्शन द्वारा पाठ्यक्रम एवं नवीन अनुदेशनात्मक प्राविधियों को विकसित किया जा सकता है। सामाजिक आवश्यकता एवं शिक्षा के विस्तार के पाठ्यक्रम में निरन्तर संशोधन किया जा सकता है। यह अन्य विधियों के साथ भी विकसित किया जा सकता है।
- शिक्षा दूरदर्शन के द्वारा शिक्षा की समानता एवं समान अवसर को अधिक सहयोग मिला है। नगरों में जिस प्रकार की शिक्षा की व्यवस्था है उसे देश के दूरवर्ती भागों में फैले हुये छात्रों को शिक्षा दूरदर्शन द्वारा अध्ययन में प्रदान की जा सकती है। एक प्रभावशाली शिक्षक का सभी छात्रों को अध्ययन में लाभ मिल सकता है। शिक्षा दूरदर्शन के द्वारा अमीर एवं गरीब के मध्य समानता लाई जा सकती है। सभी को शिक्षा के समान अवसर

प्रदान किये जा सकते हैं।

- शिक्षा दूरदर्शन को लम्बे पैमाने पर लिया जाता है, तो इससे व्यय में कमी की जा सकती है। इसके द्वारा देश के प्रत्येक भाग में कम व्यय पर शिक्षा प्रदान की जाती है। इसके द्वारा अध्ययन के स्तर तथा अनुदेशन की गुणवत्ता को यथावत रखा जा सकता है।
- शिक्षा दूरदर्शन का प्रयोग सेवारत अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिये उपयोग में लाया जा सकता है। एन0सी0आर0टी0 ने शिक्षकों को अपनी शिक्षण विधियों एवं कौशलों में विकास के लिये प्रत्येक सप्ताह में कुछ कार्यक्रमों का आयोजन करता है।
- दूरवर्ती शिक्षा के प्रारूप को प्रभावशाली ढंग से क्रियान्वित करने के लिये शिक्षा दूरदर्शन तार्किक रूप से अधिक सरल है शिक्षा– दूरदर्शन के शिक्षण द्वारा नियोजन की समस्या, दूरवर्ती अधिगम एवं अन्य प्रकार की कठिनाइयों को कम किया जा सकता है।
- दूरदर्शन के द्वारा दृश्य एवं श्रव्य क्रियाओं का लाभ लिया जा सकता है। इसमें रेडियो एवं अन्य साधनों से लाभकारी साधन उपलब्ध होते हैं।
- शिक्षा दूरदर्शन के द्वारा शिक्षा के अन्य रूपों में गुणात्मक सुधार ला सकते है। दूरदर्शन के कार्यक्रमों में छात्र अधिक रूचि लेते है, अध्ययन हेतु प्रेरणा मिलती है।

शिक्षा दूरदर्शन की सीमायें :

- दूरदर्शन वास्तविक रूप से एक मार्गीय–सम्प्रेषण का संचार व्यक्त करता है, इसमें अन्तः प्रक्रिया नहीं होती है। इसके द्वारा दूरवर्ती–छात्र के तात्कालिक प्रश्नो का उत्तर तथा कठिनाइयों के समाधान की व्यवस्था नहीं होती है। इसको शिक्षक–प्रशिक्षक यह कहते हैं कि इसमें शिक्षार्थी केवल सूचना संग्रहकर्ता का काम करता है। इसके द्वारा छात्र के शैक्षिक स्वरूप में सक्रियता का अभाव होता है और छात्रों की इच्छा शक्ति का दमन होता है।
- छात्र अपनी गति से अध्ययन करके सीखता है। शिक्षा दूरदर्शन के प्रसारण के समय छात्र को पूर्ण रूप से एकाग्रचित होकर ग्रहण करना पड़ता है। दूरदर्शन का शिक्षक एक सामान्य छात्र जिस गति से सीख सकता है उसके अनुसार शिक्षक कार्य सम्पादित करता है। इसमें वैयक्तिक विभिन्नता का कोई स्थान नहीं होता है। यदि छात्र कुछ लिखना भी चाहे वह भी सम्भव नहीं होता है।
- विद्यालयों में समुचित ढंग से कार्यक्रम की व्यवस्था नहीं होती है।

- दूरदर्शन के द्वारा शिक्षण एक अत्यन्त ही मंहगा कार्य है। कई प्रकार की मशीनरियों से युक्त दूरदर्शन कार्यक्रम अत्यन्त ही मंहगा पड़ता है।
- शिक्षा दूरदर्शन के कार्यक्रमों को तैयार करने में अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। मुख्य कारण यं है कि विभिन्न प्रकार की विषय वस्तुओं का प्रचलन है, विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण की विधियां है। इन सभी का किस प्रकार एकीकरण किया जाय यह एक समस्या होती है।

बोध प्रश्न

14. शैक्षिक दूरदर्शन की उपयोगिया बताइये?

.....

.....

.....

15. इनसेट का पूरा नाम क्या है?

.....

.....

.....

16. दूरदर्शन की किसी परियोजना का नाम बताइये?

.....

.....

.....

8.7 शिक्षण मशीन

शिक्षण मशीन अनुदेशनात्मक पद्धति के लिए एक उपकरण है जिसकी सहायता से व्यक्ति को व्यक्तिगत रुप से सीखनें के लिए सुविधा प्रदान की जाती है। इसकी सहायता से छात्रों की अध्ययन गति में वृद्धि की जाती है। शिक्षण मशीने कई प्रकार की होती है।

शिक्षण मशीनों की विशेषताये

1. शिक्षण मशीनें समस्या समाधान में सहायक होती हैं।
2. बाह्य अनुक्रिया करने के लिये शिक्षण मशीन अवसर प्रदान करती है जिससे छात्र समस्या समाधान के लिये प्रयास करता है। उत्तर की अभिव्यक्ति के लिये वह लिखता है अथवा बटन दबाता है।

3. शिक्षण मशीन से छात्र को यह सूचना मिल जाती है कि उसकी अनुक्रिया सही है या गलत। कभी–कभी शिक्षण मशीनें सही अथवा गलत अनुक्रिया को स्पष्टीकरण भी करती हैं। इससे छात्रों को पुनर्बलन मिलता है तथा नवीन ज्ञान प्राप्त होता है।

4. शिक्षण मशीन का प्रयोग अभिक्रमित अनुदेशनों के प्रस्तुतीकरण के लिये किया जाता है जिससे सही अनुक्रिया की नकल न कर सके।

5. शिक्षण मशीन छात्र की अनुक्रियाओं का उल्लेख तैयार करती है। इस आलेख से यह ज्ञात हो जाता है कि छात्र ने कितना पढ़ा है और उसने कितनी सही अथवा गलत अनुक्रियायें की हैं।

6. शिक्षण मशीन छात्रों के लिये बाह्य अनुक्रिया के अवसर प्रदान करती है, जो स्वतः अनुदेशन को अध्ययन के लिये महत्वपूर्ण माना जाता है।

7. जिस पाठ्यवस्तु को शिक्षण मशीन से प्रस्तुत किया जाता है, उसका निर्माण पृथक रूप से किया जाता है, और मूल्यांकन के बाद उसे शिक्षण मशीन को दिया जाता है।

8. शिक्षण मशीन का क्रमशः कई प्रकार के अनुदेशनों का प्रस्तुतीकरण किया जाता है।

शिक्षण मशीनों का उपयोग

1. शिक्षण मशीनों का शिक्षण के क्षेत्र में वास्तविक उपयोग है। शिक्षण मशीन एक अनुवर्ग शिक्षण का कार्य करती है और व्यक्तिगत भिन्नताओं के अनुसार छात्रों की अधिगम के लिये अवसर प्रदान करती है।

2. इनकी सहायता से छात्रों में अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन द्वारा शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति की जाती है।

3. अधिकांश विषयों को पाठ्यवस्तु का शिक्षण मशीनों द्वारा सुगमता से बोध कराया जाता है।

4. शिक्षण मशीनों के प्रयोग से शिक्षक का कार्य सरल हो जाता है।

5. शिक्षण मशीनों के द्वारा छात्रों की निष्पत्तियों का मूल्यांकन भी किया जाता है।

6. शिक्षण मशीनों के प्रस्तुतीकरण से छात्र सही अनुक्रिया की नकल नहीं कर पाता है।

वास्तव में शिक्षण मशीनों का विकास अनुसंधान के एक उपकरण के रूप में हुआ है। पुनर्बलन के सिद्धान्तों की प्रकृति तथा अनुदेशन के प्रतिमान सम्बंधी मौलिक

शोध कार्यों में शिक्षण मशीनों का शोध उपकरण के रूप में प्रयोग किया जाता है पुनर्बलन के स्वरूपों तथा मानव अधिगम की प्रभावशीलता के परीक्षण के लिये शिक्षण मशीनों द्वारा ही प्रदत्त का संकलन किया जाता है।

बोध प्रश्न

17. शिक्षण मशीन क्या है?

.....

.....

.....

18. शिक्षण मशीन छात्र कार्य का मूल्यांकन कैसे करती है?

.....

.....

.....

19. शिक्षण मशीन का प्रयोग क्यों होता है?

.....

.....

.....

8.9 कम्प्यूटर आधारित अनुदेशन

कम्प्यूटर को शिक्षा तकनीकी प्रथम या हार्डवेयर आयाम में ही सम्मिलित किया जाता है । यह स्वतः अनुदेशनात्मक पद्धति का एक उपकरण है जिसका प्रयोग व्यक्तिगत अनुदेशन के लिये किया जाता है। कम्प्यूटर ने व्यापार, उद्योग तथा शासन प्रणाली को अधिक प्रभावित किया है, परन्तु इसका प्रभाव विद्यालय तथा शिक्षा प्रणाली पर भी स्पष्ट दिखायी देता है। शिक्षण के क्षेत्र में अनुदेशन पद्धति, शोध कार्यों तथा परीक्षा प्रणाली को कम्पयूटर ने अधिक प्रभावित किया है।

यद्यपि अन्य शिक्षण मशीनों में पाठ्य वस्तु को छोटे पदों में क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत किया जाता है परन्तु इन मशीनों हेतु कोई निर्णय नहीं लेना पड़ता जबकि कम्प्यूटर को पूर्व व्यवहारों के आधार पर अनुकूल अनुदेशनों का चयन करना पड़ता है। यह निर्णय कम्पयूटर द्वारा ही किया जाता है। इसलिये इसे विद्युत मस्तिष्क की संज्ञा दी गयी है।

क. कार्डों पर सूचनाओं को संचित करता है, चुम्बकीय टेप तथा टेप पर भी सूचनाओं को संचित करता है।

ख. अभिक्रमित अनुदेशनों को भी संचित रखता है।

ग. संचित सूचनाओं में से अपेक्षित प्रदत्तों का चयन करता है।

घ. विद्युत टंकन मशीन की सहायता से सूचनाओं का बाह्य सम्प्रेषण करता है।

कम्प्यूटर की यह क्षमतायें प्रभावशाली अनुदेशनात्मक प्रणाली की आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। छात्रों की व्यक्तिगत भिन्नताओं के अनुसार कई प्रकार के अभिक्रमित अनुदेशनों कम्प्यूटर रखा जाता है और एक कम्प्यूटर से बत्तीस छात्र एक ही समय में अपनी–अपनी आवश्यकतानुसार बत्तीस भिन्न प्रकार के अनुदेशन का अध्ययन कर सकते है। उसमें शिक्षक के स्थान पर कम्प्यूटर का अनुदेश के प्रस्तुतीकरण के लिये प्रयोग किया गया है। स्टोलुरों तथा डेविज ने कम्प्यूटर की शिक्षण प्रक्रिया को दो पक्षों में विभाजित किया है–

पूर्व अनुवर्ग शिक्षण पक्ष

अनुवर्ग शिक्षण पक्ष ।

पहले पक्ष में कम्प्यूटर अनुदेशन के विशिष्ट उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिये विशिष्ट छात्र का चयन करता है। यह चयन छात्र के पूर्व व्यवहार के आधार पर किया जाता है। दूसरे पक्ष में कम्प्यूटर अनुदेशन का प्रस्तुतीकरण करता है और अनुदेशन के बाद छात्रों की निष्पत्तियों का मापन करता है।

कम्प्यूटर की उपयोगिता–

व्यक्तिगत अनुदेशन के लिये इसका प्रयोग किया जाता है। एक कम्पयूटर पर एक समय में कई प्रकार के छात्र एक पाठ्यवस्तु के कई अनुदेशनों का अध्ययन करते हैं। इस प्रकार कम्प्यूटर अनुदेशन की व्यवस्था करता है। शिक्षक अपने कक्षा–शिक्षण में अनुदेशन के समुचित रूप में चयन के लिये कम्पयूटर की सहायता ले सकता है। प्रस्तुतीकरण के साथ–साथ इसके द्वारा छात्रों की अनुक्रियाओं का भी अवलोकन किया जाता है। कम्प्यूटर शिक्षण के उद्देश्यों, छात्रों के पूर्व ज्ञान तथा प्रस्तुतीकरण के सम्बंध में निर्णय लेता है।

कम्पयूटर का प्रयोग अनुदेशन के प्रस्तुतीकरण की अपेक्षा शोध कार्यों में अधिक किया जाता है। भारतीय परिस्थितियों में भी कम्पयूटर का प्रयोग शोध कार्यों में किया जाने लगा है, परन्तु यहां पर इसका प्रयोग अनुदेशन के लिये समभव नहीं हो पाया हैं। प्रदत्तों के संकलन के पश्चात प्रदत्तों के विश्लेषण के लिये कम्प्यूटर का प्रयोग किया जाता है। इसके द्वारा विशला प्रदत्तों को विश्लेषण छः घन्टों में हो जाता है। कंम्प्यूटर द्वारा प्राप्त परिणाम शुद्ध होते हैं।

बोध प्रश्न

20. कम्प्यूटर कैसा साधन है?

.....

.....

.....

21. कम्प्यूटर का प्रयोग किन क्षेत्रों में किया जाता है।

.....

.....

.....

8.10 सारांश

प्रारम्भ में दूरस्थ शिक्षा में वैयक्तिक एवं स्वतन्त्र अध्ययन पर सर्वाधिक बल दिया जाता था। सम्पूर्ण शिक्षा प्रक्रिया में मुद्रित सामग्री केन्द्र बिन्दु होती थी। प्रौद्योगिकी एवं वैश्वीकरण के कारण इस क्षेत्र में परिवर्तन आना स्वाभाविक था। यदि सूचना एवं सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी का इतिहास खोजने की चेष्टा करें तो इसका उद्‌भव 'पत्राचार' के रूप में दिखायी देता है जिसमें मुद्रित सामग्री डाक द्वारा भेजी जाती है। इसे सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीक की प्रथम पीढ़ी (First Generation) के रूप में भी जाना जाता है। शिक्षण प्रक्रिया में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के माध्यमों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इन माध्यमों की सहायता से विषय सामग्री को शिक्षार्थी तक प्रभावी ढ़ग से पहुँचाया जा सकता है। औपचारिक शिक्षा में प्रमुख रूप से प्रत्यक्ष अर्थात आमने सामने के (Face to Face) शिक्षण का प्रयोग किया जाता है जबकि दूरस्थ शिक्षा में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का प्रयोग किया जाता है। सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीक की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया और शिक्षा के उद्‌देश्यों की प्राप्ति की दृष्टि से महत्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाने में तकनीकी माध्यमों का अत्यन्त उपयोग है। यद्यपि माध्यमों को मूलरूप से मुद्रित तथा अमुद्रित दो वर्गों में बॉटा जा सकता है, विशेषज्ञों ने माध्यमों के वर्गीकरण प्रस्तावित किया है। दूरस्थ शिक्षा का प्रत्येक विशेषज्ञ माध्यमों को समन्वित करने का प्रयास करता है। शिक्षा नियोजन में यह निर्णय लिया जाता है, कि किस प्रकार के माध्यम की व्यवस्था की जानी चाहिये। विविध माध्यम शिक्षा के अलग कार्यों के लिये उपयोगी होते हैं। कम्प्यूटर को शिक्षा तकनीकी प्रथम या हार्डवेयर आयाम में ही सम्मिलित किया जाता है । यह स्वतः अनुदेशनात्मक पद्धति का एक उपकरण है जिसका प्रयोग व्यक्तिगत

अनुदेशन के लिये किया जाता है।

दूरस्थ शिक्षा में तकनीकी माध्यमों का उपयोग एक आवश्यक अंग है। दूर शिक्षा का विकास स्वयं ही विभिन्न माध्यमों के कारण हुआ है। दूर शिक्षा में कुछ माध्यम अच्छी अन्त: क्रिया का अवसर प्रदान करते हैं जो प्रभावी अधिगम के लिए आवश्यक है।

8.11 अभ्यास कार्य

1. दूरस्थ शिक्षा में सूचना एवं सम्प्रेषण माध्यनों की भूमिका पर प्रकाश डालिए?
2. सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीक के प्रकारों का उल्लेख कीजिये?
3. कुछ सशक्त अमुद्रित माध्यमों की विशेषताओं एवं उपयोगिता का वर्णन करो?
4. संसाधन आधारित अधिगम से आप क्या समझाते है?
5. कम्प्यूटर आधारित अनुदेशन की व्याख्या कीजिये ?

8.12 बोध प्रश्नों के उत्तर :

1. ICT की चार पीढ़ियाँ हैं।
2. इसे World Wide Web कहते हैं।
3. कम्प्यूटर की सहायता से शिक्षा देने को कम्प्यूटर आधारित अधिगम कहेंगे।
4. टी0वी0, मोबाइल, इण्टरनेट, मोबाइल आदि ।
5. यह साधन मितव्ययी एवं सरल है।
6. इसमें विविधता पायी जाती है।
7. छात्रों के सीखने की गति पर निर्भर करती है।
8. मुद्रित तथा अमुद्रित साधन ।
9. जिसके द्वारा शिक्षक शिक्षार्थी में क्रिया–प्रतिक्रिया हो सके।
10. रोमिस जोवस्की ने यह वर्गीकरण प्रस्तुत किया है।
11. मुद्रित तथा अमुद्रित के मिश्रण को समन्वित माध्यम कहेंगे।
12. इसका उपयोग विज्ञान तथा तकनीकी विषयों में किया जाता है।
13. मुदित माध्यम का प्रयोग पत्राचार शिक्षा में किया जाता है।
14. दूरदर्शन सम्प्रेषण तथा प्रसारण का प्रमुख साधन है।

15. इण्डियन एजूकेशन दूरदर्शन परियोजना ।

16. हायर एजूकेशन दूरदर्शन परियोजना

17. शिक्षण मशीन समस्या समाधान में सहायक होती है।

18. उसे यह पता चल जाता है कि उसका उत्तर सही है या गलत ।

19. शिक्षण मशीन व्यक्तिगत भिन्नताओं के अनुसार छात्रों को अधिगम के अवसर प्रदान करती है।

20. व्यक्तिगत अनुदेशन के लिए इसका प्रयोग किया जाता है।

21. कम्प्यूटर का प्रयोग शोध कार्यो में अधिक किया जाता है।

8.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- गुप्ता एस0 पी0 – शिक्षा का ताना–बानाः इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन, 2000
- शर्मा, आर0 ए0 – डिस्टैन्स ऐजूकेशन, मेरठः ईगल बुक्स इन्टरनेशनल, 1995
- शर्मा, आर ए0 – दूरवर्ती शिक्षाः मेरठ सूर्या पब्लिशिंग 1996
- Singh, R.P. (1996). Distance Teacher Education
- Yashwantrao Chanuvan Maharashtra Open University: www.ycmou.com
- Cobb, P. (2001) Supporting the Improvement of Learning and Teaching in Social and Institutional Context.
- Dahiya S.S. (2005) ICT-Enabled Teacher Educator. University News, 43, p.109-114, May 2-8
- Sansanwal D.N.(2005) Information Technology and Higher Education. University News
- UNESCO (1998) Teacher and Teaching in a Changing World Education Report

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त
विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

UGFODL
मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा

खण्ड

3

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की संगठनात्मक संरचना

इकाई-9 5
राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

इकाई-10 20
राज्य मुक्त विश्वविद्यालय

इकाई-11 35
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान

इकाई-12 52
दूरस्थ शिक्षा परिषद्

प्रथम–1 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की अवधारणा एवं ऐतिहासिक परिपेक्ष्य

इकाई–1 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का स्वरूप एवं आवश्यकता
इकाई–2 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का विकास
इकाई–3 दूरस्थ शिक्षक
इकाई–4 दूरस्थ विद्यार्थी

द्वितीय–2 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में छात्र सहायता सेवायें

इकाई–5 स्व अध्ययन सामग्री
इकाई–6 परामर्श सेवायें
इकाई–7 अधिन्यास
इकाई–8 सूचना एवं सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी

तृतीय–3 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की संगठनात्मक संरचना

इकाई–9 राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
इकाई–10 राज्य मुक्त विश्वविद्यालय
इकाई–11 राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान
इकाई–12 दूरस्थ शिक्षा परिषद्

चतुर्थ–4 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा मे मूल्यांकन एवं चुनौतियां

इकाई–13 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की समस्यायें
इकाई–14 **दूरस्थ शिक्षा में प्रशिक्षण**
इकाई–15 दूरस्थ शिक्षा में मूल्यांकन
इकाई–16 दूरस्थ शिक्षा में अनुसंधान

खण्ड-3 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की संगठनात्मक संरचना

खण्ड परिचय

राष्ट्रीय विकास में शिक्षा के महत्व को देखते हुए भारत में शिक्षा के सार्वणनीकरण हेतु अनेक प्रकार के प्रयास किये गये किन्तु देखा गया कि औपचारिक शिक्षा-प्रणाली हमारी राष्ट्रीय आवश्यकता को पूर्ण करने में सफल नहीं हो पा रही थी। उच्च शिक्षा की बढ़ती हुई माँग को पूरा करने के लिये दूरस्थ एवं मुक्त विश्व विद्यालयों एवं संस्थानों का जन्म हुआ। इकाई 9 में राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के बारे में विस्तार से बताया गया है। इसकी प्रमुख विशेषतायें हैं- इसके प्रवेश नियम लचीले हैं, इसमें क्रेडिट पद्धति का अनुसरण किया जाता है। दूर शिक्षा के शिक्षार्थियों की सुविधा के लिये इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा पूरे देश में प्रशिक्षण एवं अध्ययन केन्द्रों का जाल फैलाया गया है। वर्तमान समय में पूरे प्रदेश में क्षेत्रीय तथा अध्ययन केन्द्रों को जाल फैला है। मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा अपनायी जाने वाली परीक्षा प्रणाली परम्परागत शिक्षा प्रणाली से भिन्न होती है।

इकाई - 10 में राज्य मुक्त विश्वविद्यालयों की कार्यप्रणाली के सम्बन्ध में बताया गया है। इनके माध्यम से राज्य के विकास में शिक्षा के महत्व को देखते हुए भारत में शिक्षा के सार्वजनिक हेतु अनेक प्रकार के प्रयास किये गये हैं। इस समय 14 प्रदेशों की राज्य सरकार द्वारा मुक्त विश्वविद्यालय स्थापित किये जा चुके हैं।

इकाई-11 में राष्ट्रीय मुक्त विद्यालीय संस्थान के बारे में चर्चा की गयी है। यह संस्थान माध्यमिक एवं बेसिक शिक्षा को मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से प्रदान करने हेतु एक संसाधक के रूप में कार्य करता है। इसका कार्यक्षेत्र अत्यन्त वृहद है।

इकाई-12 दूरस्थ शिक्षा की प्रमुख संस्था दूरस्थ शिक्षा परिषद के सम्बन्ध में है। इसके अधिकार एवं कार्य वृहद हैं। यह दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के सर्वोच्च निकाय के रूप में कार्य करती है इसकी स्थापना दूरस्थ शिक्षा के उन्नयन एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों के समन्वय हेतु हुई है।

इकाई 9 राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

9.1 प्रस्तावना

9.2 उद्देश्य

9.3 राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के लक्ष्य

9.4 राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय का संगठनात्मक स्वरूप

9.5 राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की प्रमुख विशेषताएं

9.6 राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के शैक्षिक कार्यक्रम

9.7 राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय एंव अध्ययन केन्द्र

9.8 राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की मूल्यांकन पद्धति

9.9 सारांश

9.10 अभ्यास कार्य

9.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

9.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

9.1 प्रस्तावना

राष्ट्रीय विकास में शिक्षा के महत्व को देखते हुए भारत में शिक्षा के सार्वजनीकरण हेतु अनेक प्रकार के प्रयास किये गये किन्तु देखा गया कि औपचारिक शिक्षा प्रणाली हमारी राष्ट्रीय आवश्यकता को पूर्ण करने में सफल नही हो पा रही थीं उच्च शिक्षा की बढ़ती हुई माँग को पूरा करने के लिये दूरस्थ एवं मुक्त विश्वविद्यालयों एवं संस्थानों का जन्म हुआ। भारत की जनसंख्या जिस गति से बढ़ रही है उसके सापेक्ष शिक्षा संस्थानों में वृद्धि नही हुई। उच्च शिक्षा के लिए आवेदकों की संख्या निरन्तर बढ़नी जा रही थी। उच्च शिक्षा की बढ़ती माँग ने राष्ट्रीय स्तर पर मुक्त विश्वविद्यालय की संकल्प को जन्म दिया। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा एक गैर परम्परागत उपागम के रूप में सामने आया है। ज्ञान और जनसंख्या के विस्फोट तथा संसाधनो की कमी ने उच्च शिक्षा की मांग को लोकप्रिय बना दिया। सन् 1962 में दिल्ली विश्वविद्यालय ने पत्राचार पाठ्यक्रम के रूप में दूरस्थ शिक्षा का प्रारम्भ किया। सन् 1982 में भारत में प्रथम मुक्त विश्वविद्यालय आन्ध्र प्रदेश में खोला गया। राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम मुक्त विश्वविद्यालय सन् 1985 में खोला गया जिसका नाम इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय रखा गया। यह एक राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय है जिसे संक्षेपाक्षरों में इग्नू (IGNOU) के रूप में जाना जाता है। भारत में रहने वाला कोई भी व्यक्ति इसका छात्र हो सकता है। इस विश्वविद्यालय

की स्थापना सम्पूर्ण देश के व्यक्तियों को उच्च शिक्षा प्रदान करने की दृष्टि से की गई है।

9.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आप

- राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के लक्ष्यों को जान सकेंगे।
- इग्नू के कार्यक्षेत्र को समझ जायेंगे।
- इग्नू के संगठनात्मक स्वरूप को जान जायेंगे।
- इग्नू के शैक्षिक कार्यक्रम से परिचित हो सकेंगे।
- इग्नू के क्षेत्रीय एवं अध्ययन केन्द्रों से परिचित हो सकेंगे।
- इग्नू की मूल्यांकन पद्धति से अवगत हो जायेगे।

9.3 राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के लक्ष्य

इस विश्वविद्यालय के प्रमुख लक्ष्य निम्न है –

- यह विश्वविद्यालय मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था के लिये उपयुक्त विभिन्न साधनों के माध्यम से शिक्षा तथा ज्ञान उपलब्ध कराना ।
- समाज के अपवंचित वर्ग को शिक्षा प्रदान करना।
- देश में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली को समन्वित रूप से प्रोत्साहित एवं सहायता देना।
- देश के प्राकृतिक व मानवीय संसाधनों को मजबूत करना।
- विभिन्न साधनों द्वारा ज्ञान तथा अधिगम में वृद्धि करना तथा उसका प्रसार करना।
- आधुनिक सम्प्रेषण तकनीकी के प्रयोग द्वारा जनसंख्या के बड़े भाग को उच्च शिक्षा प्रदान करना।
- देश की वर्तमान शैक्षिक व्यवस्था के अन्तर्गत दूरस्थ प्रणाली को प्रोत्साहित करना।
- परम्परागत प्रणाली के पूरक के रूप में शिक्षा का विकास करना।
- इस प्रणाली के कार्यक्रमों द्वारा मानवीय व्यक्तित्व के समन्वित विकास हेतु योगदान देना।
- शिक्षा को विद्यार्थियों के द्वार तक पहुँचाकर उच्च शिक्षा का लोकतंत्रीकरण करना,

- उच्च शिक्षा पाने के इच्छुक सभी विद्यार्थियों को उच्चकोटि की शिखा सुलभ कराने की व्यवस्था करना।
- तकनीकी एवं व्यवसायमूलक पाठ्यक्रमों द्वारा आवश्यकता पर आधारित शैक्षिक कार्यक्रम प्रारम्भ करना।
- भारत में दूरस्थ शिक्षा को प्रोत्साहित एवं विकसित करना।

बोध प्रश्न

1. मुक्त विष्वविद्यालय से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

2. इग्नू का पूरा नाम स्पष्ट कीजिये?

.....

.....

.....

3. राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के प्रमुख लक्ष्य बताइये?

.....

.....

.....

9.4 राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय का संगठनात्मक स्वरूप

इग्नू की स्थापना अन्य केन्द्रीय विश्वविद्यालयों के समान संसद द्वारा पारित एक अधिनियम के द्वारा हुई है। भारत के राष्ट्रपति इस विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता होते हैं। विश्वविद्यालय को कार्य की सुविधा की दृष्टि में निम्न इकाईयों में बाँटा गया है–

1. प्रबंध बोर्ड
2. विद्या परिषद
3. नियोजन समिति
4. दूरस्थ शिक्षा समिति
5. अध्ययन विद्यापीठ
6. वित्त समिति

उनके अतिरिक्त इस विश्वविद्यालय के प्रमुख अधिकारी निम्नवत् है–

1. कुलपति
2. सम–कुलपति
3. निदेशक
4. कुलसचिव
5. वित्त अधिकारी

इनके अतिरिक्त देश के प्रतिष्ठित शैक्षिक तथा प्रशासनिक व्यक्तियों को इस विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागो के विविध प्रकार के क्रिया–कलापों के समुचित संचालन के लिये राष्ट्रीय स्तर पर सम्मिलित किया जाता है। विश्वविद्यालय के कार्य संचालन की सम्पूर्ण व्यवस्था इसके विभिन्न संवैधानिक निकायों तथा अधिकारियों के द्वारा की जाती है। आगे इन निकायों तथा अधिकारियों के कर्तव्य व अधिकार प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

- राष्ट्रीय मुक्त विश्व विद्यालय का प्रमुख कार्यकारी निकाय इसका प्रबंध बोर्ड है। इस विश्वविद्यालय के अधिनियमों/परिनियमों में इस प्रबंध बोर्ड को विश्वविद्यालय की आय–व्यय तथा सम्पत्ति के प्रबंध तथा प्रशासन एवं विश्वविद्यालय की सम्पन्न प्रशासनिक गतिविधियों के संचालन का अधिकार दिया गया। यह निकाय इस मुक्त विश्वविद्यालय के कार्य नियोजन व संचालन एवं संगठन में निर्णायक भूमिका अदा करता है।
- इग्नू की विद्या परिषद् इस विश्वविद्यालय की सर्वोच्च शैक्षणिक निकाय के रूप में कार्यरत है। वह विश्वविद्यालय की शैक्षणिक नीतियों के निर्धारण तथा उनका अनुपालन कराने का महत्वपूर्ण कार्य करती है। यह परिषद् अध्ययन सामग्री, अध्ययन विधियों, मूल्यांकन विधियों, शोध शैक्षिक मानकों के उन्नयन के सम्बंध में दिशा निर्देश प्रदान करती है। यह विद्या परिषद् विश्वविद्यालय में शोध कार्यों के निर्देशन की व्याख्या का सुनिश्चित भी करती है।
- इग्नू की नियोजन समिति का मुख्य दायित्व विश्वविद्यालय द्वारा चलाये जाने वाले उपयुक्त कार्यक्रमों एंव शैक्षणिक क्रिया–कलापों का विन्यास करना एवं तदनुसार कार्य योजनायें तैयार करना है।
- इग्नू विभिन्न विषयों के अध्ययन में तालमेल बैठाने के लिये संकायों के स्थान पर अध्ययन विद्यापीठों के माध्यम से कार्य करती है। प्रत्येक विद्याशाखा एक निदेशक के अधीन रहती है। इग्नू के शैक्षणिक कार्यक्रमों के निर्माण के लिये उत्तरदायी मूल शैक्षणिक इकाईयॉ वस्तुतः अध्ययन विद्यापीठ है। वर्तमान में

इस विश्वविद्यालय में कुल विद्यापीठं है– कम्प्यूटर तथा सूचना विज्ञान विद्याशाखा, सतत् शिक्षा विद्याशाखा, स्वास्थ्य विज्ञान विद्याशाखा शिक्षा विद्याशाखा, अभियांत्रिकी व तकनीकी विद्याशाखा, मानविकी विद्याशाखा, प्रबंध अध्ययन विद्यापीठ, विज्ञान विद्यापीठ, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, कृषि विद्यापीठ है। कृषि विद्यापीठ को दसवें विद्यापीठ के रूप में शीघ्र ही सम्मिलित किये जाने की आशा है। प्रत्येक विद्यापीठ में कुछ विषय निर्धारित है जिनके सम्बंध को विविध प्रकार के शैक्षिक क्रियाकलापों का नियोजन व क्रियान्वयन करना होता है। अध्ययन के प्रत्येक विद्यापीठ का अपना एक बोर्ड होता है जो उस विद्यापीठ के विकास, अनुसंधान कार्य तथा शैक्षणिक क्रियाकलापों पर नजर रखता है।

- इग्नू की वित्त समिति का प्रमुख कार्य विश्वविद्यालय के सभी वित्तीय प्रकरणों पर परामर्श देना तथा व्यय की सीमाओं का निर्धारण करना होता है। यह समिति विश्वविद्यालय की आय तथा संसाधनों को दृष्टिगत रखते हुये विश्वविद्यालय के आवृत्तिक तथा अन–आवृत्तिक व्यय की अधिकतम सीमाओं को निर्धारित करती है।

- इग्नू को देश में उच्च शिक्षा प्रणाली की सर्वोच्च निकाय के रूप में कार्य करने का उत्तरदायित्व दिया गया है। इग्नू अपने इस उत्तरदायित्व को दूरस्थ शिक्षा परिषद् के माध्यम से सम्पादित करता है। कुछ समय पूर्व दूरस्थ शिक्षा परिषद स्वतन्त्र निकाय के रूप में कार्य कर रहा है।

- इग्नू का कार्यकारी प्रमुख इसका कुलपति होता है। कुलपति विश्वविद्यालय एक पूर्णकालिक वेतनभोगी अधिकारी होता है। वह प्रबंध बोर्ड, विद्वत परिषद्, नियोजन बोर्ड, वित्त समिति तथा दूरस्थ शिक्षा परिषद् का पदेन अध्यक्ष होता है। विश्वविद्यालय के समस्त क्रियाकलापों का संचालन एवं नियंत्रण भी कुलपति ही प्रत्यक्षतः करता है एवं विश्वविद्यालय के विभिन्न निकायों के निर्णय को कार्यरूप देने के लिये भी कुलपति ही उत्तरादायी होता है।

- इग्नू के अध्यादेशों के अनुसार कुलपति द्वारा समय–समय पर निर्दिष्ट प्रकरणों के अनुरूप सम–कुलपति विश्वविद्यालय के कुलपति का सहयोग करता है एवं कुलपति द्वारा सौंपे गये उन अधिकारों का प्रयोग एवं उन कर्तव्यों का निर्वहन भी करता है जो उसे कुलपति द्वारा सौंपे गये हों।

- प्रत्येक विद्यापीठ एक निदेशक के अधीन रहता है। निदेशकों पर अपने–अपने विद्यापीठों के कर्मचारियों तथा विश्वविद्यालय के विभिन्न शैक्षिक, प्रशासनिक तथा सेवा शाखाओं के साथ तालमेल बनाते हुये शैक्षिक कार्यक्रमों की योजना तैयार करने, उनका पर्यवेक्षण करने तथा उन्हें विकसित और आयोजित करने

का दायित्व होता है।

- कुलसचिव को विश्वविद्यालय के अभिलेखों को संरक्षित रखने, विभिन्न समितियों व निकायों के निर्णयों को संसूचित करने तथा विश्वविद्यालय के विभिन्न निकायों को वांछित सूचना उपलब्ध कराने का सर्वाधिक महत्वपूर्ण दायित्व सौंपा गया है।

बोध प्रश्न

4. विद्या परिषद के प्रमुख कार्य बताइये ?

.....

.....

.....

5. प्रबन्ध बोर्ड के दायित्व क्या है ?

.....

.....

.....

6. वित्त समिति के उत्तरदायित्व बताइये ?

.....

.....

.....

7. इग्नू में कुलपति के प्रमुख कार्य बताइये ?

.....

.....

.....

8. विद्यापीठों के निदेषकों की प्रमुख भूमिका बताइये ?

.....

.....

.....

9. कुलसचिव के प्रमुख दायित्वों की विवेचना कीजिये ?

.....

.....

.....

9.5 राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की प्रमुख विशेषतायें

मुक्त विश्वविद्यालयों की स्थापना, ढांचा एवं संगठन नियमित एवं परम्परागत विश्वविद्यालयों से भिन्न होता है। राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के रूप में इग्नू की निम्नलिखित विशेषतायें है–

- यह अपने पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु परम्परागत नियमों को पालन नहीं करता है। इसके व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अनुभव सम्बंधी अर्हता लचीली रखी गयी है।
- इग्नू का कार्यक्षेत्र अत्यधिक व्यापक है। यह सम्पूर्ण राष्ट्र के अध्येताओं को अपने विविध पाठ्यक्रमों के चयन हेतु आवश्यक सुविधायें देता है।
- इग्नू अपने विद्यार्थियों को स्वगति से स्वनिर्णय तथा स्वप्रेरण सहित स्वअध्ययन हेतु प्रेरित करता है। इसमें अध्येताओं को समय सीमा में आबद्ध नहीं किया जाता है।
- इग्नू के विविध पाठ्यक्रम सम्पूर्ण राष्ट्र के अध्येताओं की आवश्यकताओं को देखकर बनाये गये हैं। इसमें विविध सैद्धान्तिक व्यावहारिक तथा प्रायोगिक पाठ्यक्रम सम्मिलित किये गये हैं। पाठ्यक्रमों को अध्येताओं की सुविधाओं एवं योग्यताओं को ध्यान में रखकर प्रारूपित किया गया है।
- इग्नू के शैक्षिक कार्यक्रम लागत प्रभावी है। आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुये व्यक्ति जो पारम्परिक शिक्षा का व्यय भार वहन नहीं कर सकते वे अल्प शुल्क देकर इस विश्वविद्यालय के शैक्षिक कार्यक्रमों का लाभ उठाकर अपनी उच्च शिक्षा जारी रख सकते हैं।

बोध प्रश्न

10. दूरस्थ शिक्षा में लचीलेपन से क्या तात्पर्य हैं?

.....

.....

.....

11. व्यापकता का क्या अर्थ है?

.....

.....

.....

12. लागत प्रभावी कार्यक्रम की विवेचना कीजिये?

.....

.....

.....

9.6 राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के शैक्षणिक कार्यक्रम

पाठ्यक्रम

(i) **आधारभूत पाठ्यक्रम** (Foundation Courses)– इसमें भाषाओं अंग्रेजी, तेलुगू, हिन्दी के अतरिक्त विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम आते है।

(ii) **सामान्य पाठ्यक्रम** (Core Courses) इसके अन्तर्गत विभिन्न विषयों के सामान्य पाठ्यक्रमों आते है।

(iii) **विशिष्ट अथवा व्यावहारिक पाठ्यक्रम** (Specialization or Applied Courses) इसमें पाठ्यक्रम के साथ –साथ विशिष्ट अध्ययन का पाठ्यक्रम भी पूरा करना होता है।

इस शैक्षिक कार्यक्रम की विशेषता यह है कि इसमें सामान्य पाठ्यक्रमों हेतु ऐच्छिक विषयों को चुनने में शिक्षार्थी को पूरी स्वतंत्रता होती है तथा वह अपनी आवश्यकता एवं रूचि के अनुसार विषयों का चयन कर सकता है।

स्व अध्ययन सामग्री का निर्माण

- इस विश्वविद्यालय में पाठ्यक्रमों का निर्माण विषय विशेषज्ञ समितियों द्वारा किया जाता है।
- पाठ सामग्री का निर्माण एक टीम द्वारा किया जाता है जिसमें विषय से सम्बन्धित सम्पादक, कई पाठ लेखक, एक भाषा सम्पादक तथा एक समन्वयक होता है।
- मुद्रक का कार्य बाहरी व्यावसायिक मुद्रकों से करवाया जाता है किन्तु बाद में विश्वविद्यालय की अपनी निजी मुद्रण व्यवस्था की योजना है।

क्रेडिट पद्धति (Credit System)

- इस विश्वविद्यालय के अधिकांश पूर्व स्नातक कार्यक्रमों के लिए ' क्रेडिट पद्धति' का अनुसरण किया जाता है। इस पद्धति में प्रत्येक क्रेडिट के अन्तर्गत सभी शिक्षण गतिविधियों के लिए 30 घंटे का समय निर्धारित होता है। इन गति विधियों में मुद्रित सामग्री को पढ़ना और समझना, श्रव्य–दृश्य कार्यक्रमों को देखना–सुनना, परामर्श सत्रों में भाग लेना, टेली काफ्रेंसिंग में भाग लेना तथा सत्रीय कार्यो के उत्तर देना आदि सम्मिलित होते है। क्रेडिट पद्धति से शिक्षार्थियों को यह समझना सरल होता है कि किसी पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए उन्हें कितना प्रयास करना है। किसी शैक्षिक कार्यक्रम

(डिग्री, डिप्लोमा अथवा सर्टीफिकेट) का पूरा होना उसके पाठ्यक्रम से सम्बन्धित सत्रीय कार्य तथा सत्रांत अर्थात् वार्षिक परीक्षा को शिक्षार्थी द्वारा सफलता पूर्वक सम्पन्न करने पर निर्भर करता है।

- दूरवर्ती शिक्षा प्रणाली में शिक्षार्थी को प्रत्येक पाठ्यक्रम के सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्यक दोनों प्रकार के कार्यक्रमों के लिए स्व–शिक्षण पद्धति में लिखी गई मुद्रित अध्ययन सामग्री प्रेषित की जाती है। यह सामग्री 3–5 इकाइयों की पुस्तिका के खण्ड के रूप में प्रेषित की जाती है। एक क्रेडिट हेतु सामान्यता एक खण्ड का प्रावधान होता है।
- मुद्रित शिक्षण सामग्री के अतिरिक्त पाठों को रेडियों से भी एक निर्धारित समय पर प्रसारित किया जाता है तथा इन पाठों के वीडियो कैसेट भी तैयार किये जाते हैं जिनका लाभ शिक्षार्थी अध्ययन केन्द्रों पर उठा सकते हैं।

प्रवेश प्रक्रिया

- दूरस्थ शिक्षा एवं मुक्त अधिगम प्रणाली की परम्पराओं एवं विशेषताओं के अनुरूप ही इग्नू के विभिनन कार्यक्रमों में प्रवेश योग्यताओं, अध्ययन गति, अध्ययन समय तथा अध्ययन अवधि में पर्याप्त लचीलापन पाया जाता है।
- इग्नू ने भी प्रवेश की न्यूनतम अर्हताओं में इस प्रकार की शिथिलता देकर हजारों, लाखों शिक्षार्थियों को उच्च्य शिक्षा प्राप्ति के अपने स्वप्न को साकार करने के अवसर उलब्ध कराये हैं तथा आगे भी करा रहा है।
- इस विश्वविद्यालय के विभिन्न शैक्षणिक पाठ्यक्रमों में प्रवेश सम्बंधी विज्ञापन देश के प्रमुख राष्ट्रीय तथा क्षेत्रीय समाचार पत्रों में सामान्यतः अप्रैल एवं नवम्बर माह में प्रकाशित किये जाते हैं।
- प्रवेशार्थियों द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों में प्रवेश हेतु प्रस्तुत किये गये प्रवेश आवेदन–पत्रों को प्रक्रमित करके प्रवेश को अंतिम रूप दिया जाता है एवं तत्पश्चात् छात्रों को उनकी नामांकन संख्या से अवगत कराते हुये अध्ययन सामग्री प्रेषित करना प्रारम्भ कर दिया जाता है। अन्य विश्वविद्यालयों के छात्र कुछ निर्धारित शर्तों के अधीन अपने नियमित पाठ्यक्रमों के साथ–साथ इग्नू के पाठ्यक्रमों में भी प्रवेश ले सकते हैं।

अनुदेशन प्रणाली

- इग्नू के द्वारा शिक्षार्थियों को अनुदेशन प्रदान करने हेतु बहुंसचार माध्यमों अपनाया जाता है। बहुसंचार माध्यमों के अन्तर्गत मुख्यतः स्व–अध्ययन सामग्री, मुद्रण, ध्वनि तथा दृश्य सामग्री, रेडियो तथा दूरदर्शन प्रसार, परामर्श सत्र, आमने–सामने शिक्षण, दूरस्थ संगोष्ठी एवं अन्तःक्रियाशील रेडियो व

दूरदर्शन परामर्श आदि विविध विधायें सम्मिलित रहती हैं।

- विज्ञान, कम्प्यूटर, अभियांत्रिकी तथा तकनीकी सम्बंधी पाठ्यक्रमों में छात्रों के लिये अध्ययन केन्द्रों पर प्रयोगात्मक कक्षाओं एवं प्रोजेक्ट कार्य की व्यवस्था भी की जाती है।

स्पष्ट है कि इग्नू में परम्परागत विश्वविद्यालयों से भिन्न अध्ययन–अध्यापन तरीके अपनाये जाते हैं। इग्नू वास्तव में बहुसंचार माध्यमों का उपयोग करता है जिसमें प्रमुखतः निम्न विधायें सम्मिलित रहती है।

1. स्व–शिक्षण मुद्रित सामग्री।
2. श्रव्य–दृश्य सामग्री।
3. परामर्श सत्र/ सम्पर्क कार्यक्रम।
4. टेलीकांफ्रेंसिंग।
5. प्रायोगिक व प्रोजेक्ट कार्य।
6. प्रयोगात्मक हैण्डबुक/मेनुवल
7. अन्तः क्रियात्मक रेडियो व दूरदर्शन उपबोधन के रूप में ज्ञानवाणी तथा ज्ञान दर्शन।

बोध प्रश्न

13 इग्नू द्वारा संचालित तीन स्तरीय पाठ्यक्रम की व्याख्या कीजिये?

.....

.....

.....

14. स्व अधिगम सामग्री के निर्माण कौन करता है ?

.....

.....

.....

15. एक प्रवेश प्रक्रिया के क्या लचीलापन है ?

.....

.....

.....

16. इग्नू की अनुदेशन प्रणाली में मुख्य रूप से क्या अपनाया जाता है ?

.....

.....

.....

17. क्रेडिट सिस्टम किसे कहते हैं?

.....

.....

.....

18. सहायक श्रव्य दृश्य सामग्री का प्रयोग क्यों किया जाता है?

.....

.....

.....

9.7 राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय एवं अध्ययन केन्द्र

दूरस्थ शिक्षा के शिक्षार्थियों की सुविधा के लिए इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा पूरे देश में अध्ययन एवं प्रशिक्षण केन्द्रों का जाल फेलाया गया है। वर्तमान समय में पूरे देश में क्षेत्रीय केन्द्र तथा इन क्षेत्रीय केन्द्रों के अन्तर्गत बहुत अध्ययन केन्द्र चल रहे हैं। क्षेत्रीय केन्द्रो का संचालन क्षेत्रीय निदेशकों द्वारा किया जाता है। इग्नू के शिक्षार्थी अध्ययन केन्द्रों की विस्तृत जानकारी क्षेत्रीय केन्द्रों से अथवा विश्वविद्यालय की विवरणिका से प्राप्त कर सकते हैं।

अध्ययन केन्द्र सामान्यतया किसी शिक्षण संस्था में बनाया जाता है। प्रत्येक अध्ययन केन्द्र में एक अंशकालिक समन्वयक की नियुक्ति की जाती है जो आमतौर पर उसी शिक्षण संस्था का प्राध्यापक/अधिकारी होता है। इन अध्ययन केन्द्रो पर एक पुस्तकालय एवं श्रव्य–दुश्य माध्यमों की भी व्यवस्था की जाती है। विभिन्न विषयों से सम्बन्धित विशेषज्ञों को अंशकालिक काउन्सलर के रूप में भी नियुक्त किया जाता है। अध्ययन केन्द्र का प्रबन्ध क्षेत्रीय निदेशक एंव विश्वविद्यालय के माध्यम से समन्वयक द्वारा किया जाता है। ये अध्ययन केन्द्र दूरवर्ती शिक्षार्थियों को व्यक्तिगत तौर पर सहायता प्रदान करते हैं अध्ययन केन्द्रों पर शिक्षार्थी शैक्षिक परामर्शदाताओं तथा उसी पाठ्यक्रम के अन्य शिक्षार्थियों से सम्पर्क करते हैं, पुस्तकालय में पुस्तकें पढ़तें हैं, श्रव्य – दृश्य कैसेट सुनते/देखते हैं तथा प्रशासनिक समस्याओं एवं शिक्षा सम्बन्धी विषयों पर समन्वयक से परामर्श करते हैं। इस अध्ययन केन्द्रों द्वारा परामर्श सत्रों के माध्यम से सम्पर्क कार्यक्रम भी आयोजित किये जाते हैं। इन कार्यक्रमों की अवधि पाठ्यक्रम के क्रेडिट पर निर्भर करती हैं। इन सम्पर्क कार्यक्रमों में शिक्षार्थियों की कठिनाइयों का निराकरण विषय विशेषज्ञों एवं परामर्शदाताओं द्वारा किया जाता है तथा पाठ्य सामग्री का वितरण सुनिश्चित किया जाता है।

प्रशासनिक व्यक्तियों को इस विश्वविद्यालय के विभिन्न संभागों तथा विद्यापीठों के विविध प्रकार के क्रिया–कलापों के समुचित संचालन के लिये राष्ट्रीय स्तर पर सम्मिलित किये जाते हैं। विश्वविद्यालय के कार्य संचालन की सम्पूर्ण व्यवस्था इसके विभिन्न संवैधानिक निकायों तथा अधिकारियों के द्वारा की जाती है। मुक्त विश्वविद्यालयों की स्थापना, ढांचा एवं संगठन नियमित एवं परम्परागत विश्वविद्यालयों से भिन्न होती है। राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के रूप में इग्नू की प्रमुख विशेषतायें है – यह अपने पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु अधिक परम्परागत नियमों को पालन नहीं करता है। इसके व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अनुभव सम्बंधी अर्हता रखी गयी है। क्रेडिट पद्धति (Credit System) इस विश्वविद्यालय के अधिकांश पूर्व स्नातक कार्यक्रमों के लिए ' क्रेडिट पद्धति' का अनुसरण किया जाता है। इस पद्धति में प्रत्येक क्रेडिट के अन्तर्गत सभी शिक्षण गतिविधियों के लिए 30 घंटे का समय निर्धारित होता है। दूर शिक्षा के शिक्षार्थियों की सुविधा के लिए इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा पूरे देश में अध्ययन एवं प्रशिक्षण केन्द्रों का जाल फेलाया गया है। वर्तमान समय में पूरे देश में क्षेत्रीय केन्द्र तथा इन क्षेत्रीय केन्द्रों के अन्तर्गत लगभग बहुत अध्ययन केन्द्र चल रहे हैं। मुक्त विश्वविद्यालय के द्वारा अपनायी जाने वाली परीक्षा प्रणाली का स्वरूप परम्परागत विश्वविद्यालयों द्वारा ली जाने वाली परीक्षाओं के काफी समान होता है। परन्तु दूरस्थ शिक्षा प्रणाली की मूलभूत विशेषताओं के कारण उसमें कुछ अंतर आ जाते हैं। जिसके कारण प्रायः मुक्त विश्वविद्यालयों की मूल्यांकन प्रणाली को परम्परागत विश्वविद्यालयों की मूल्यांकन प्रणाली से भिन्न समझा जाता है।

9.10 अभ्यास कार्य

(1) राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना के उद्देश्यों की व्याख्या कीजिये ?

(2) इग्नू के संगठनात्मक स्वरूप की समझाइये ?

(3) राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिये ?

(4) निम्न पर टिप्पणियाँ लिखियें।

– क्षेत्रीय केन्द्र

– अध्ययन केन्द्र

– मूल्यांकन पद्धति

9.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. प्रवेश, पाठ्यक्रम, परीक्षा आदि में लचीलापन मुक्त विश्वविद्यालय में होता है।
2. इन्दिरा गॉधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय।
3. परम्परागत प्रणाली के पूरक के रूप में शिक्षा का विकास करना ।
4. विद्या परिषद का प्रमुख कार्य शैक्षिक कार्यक्रमों की योजना तैयार करना है।
5. प्रबन्ध बोर्ड का कार्य प्रशासनिक गतिविधियों का संचालन है।

6. वित्तीय प्रकरणों पर परामर्श देना तथा व्यय की सीमाओं का निर्धारण है।
7. विश्वविद्यालय के समस्त क्रियाकलाप का संचालन एवं नियंत्रण कुलपति करता है।
8. विद्यापीठों के निदेशकों को अपनी अपनी विद्यापीठों के शैक्षिक कार्यक्रम की योजना तैयार करनी होती है।
9. विश्वविद्यालय के विभिन्न निकायों को वांछित सूचना उपलब्ध करानी होती है।
10. परम्परागत नियमों का पालन न करना ही इसका लचीलापन है।
11. व्यापकता से तात्पर्य विविध पाठ्यक्रमों की सुविधा से है।
12. लागत प्रभावी से तात्पर्य कम शुल्क में प्रभावी पाठ्यक्रम उपलब्ध कराने से है
13. तीन स्तरीय पाठ्यक्रम से तात्पर्य आधारभूत पाठ्यक्रम, सामान्य पाठ्यक्रम एवं विशिष्ट व व्यवहारिक पाठ्यक्रम से है।
14. स्व अध्ययन सामग्री का निर्माण विशेषज्ञ करते हैं।
15. हाँ प्रवेश प्रक्रिया लचीली है।
16. अनुदेशन प्रणाली में बहु संचार माध्यमों को अपनाया जाता है।
17. एक क्रेडिट के अन्तर्गत सभी शिक्षण गतिविधियों के लिए 30 घण्टे का समय निर्धारित होता है।
18. श्रव्य दृश्य सामग्री का प्रयोग अनुदेशन को प्रभावी बनाने के लिए किया जाता है।

9.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- गुप्ता एस0 पी0 – शिक्षा का ताना–बानाः इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन, 2000
- शर्मा, आर0 ए0 – डिस्टैन्स ऐजूकेशन, मेरठः ईगल बुक्स इन्टरनेशनल, 1995
- शर्मा, आर ए0 – दूरवर्ती शिक्षाः मेरठ सूर्या पब्लिशिंग 1996
- Singh, R.P. (1996). Distance Teacher Education
- Yashwantrao Chanuvan Maharashtra Open University: www.ycmou.com
- Cobb, P. (2001) Supporting the Improvement of Learning and Teaching in Social and Institutional Context.
- Dahiya S.S. (2005) ICT-Enabled Teacher Educator. University News, 43, p.109-114, May 2-8
- Sansanwal D.N.(2005) Information Technology and Higher Education. University News
- UNESCO (1998) Teacher and Teaching in a Changing World Education Report

इकाई 10 राज्य मुक्त विश्वविद्यालय

10.1 प्रस्तावना

10.2 उद्देश्य

10.3 राज्य मुक्त विश्वविद्यालयों के लक्ष्य

10.4 राज्य मुक्त विश्वविद्यालय की विशेषताएं

10.5 राज्य मुक्त विश्वविद्यालयों के बारे में

10.6 राज्य मुक्त विश्वविद्यालयों की नियमावली

10.7 राज्य मुक्त विश्वविद्यालयों के कार्यक्रम की मान्यता एवं योगदान

10.8 सारांश

10.9 अभ्यास कार्य

10.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

10.11 कुछ उपयोगी पुस्तके

10.1 प्रस्तावना

पिछली इकाई में आप भारत के एक मात्र राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, इग्नू के विषय में विस्तार से आध्ययन कर चुके हैं। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की आवश्यकताओं को दृष्टि में रखकर प्रत्येक राज्य में एक–एक राज्य स्तर पर मुक्त विश्वविद्याय खोलने का प्रस्ताव रखा गया है। राज्य मुक्त विश्वविद्यालय विशेष रूप से विशिष्ट राज्य को व्यक्तियों के लिये होता है। प्रदेश में रहने वाला तथा किसी भी स्थान का कोई भी व्यक्ति इसका छात्र हो सकता है। क्योंकि यह एक मुक्त विश्वविद्यालय है, इसलिए इसमें अन्य बातो के अलावा प्रवेश लेने के नियम भी अपेक्षाकृत सरल व उदार है। इस विश्वविद्यालय की स्थापना अधिकाधिक व्यक्तियों को विभिन्न कारणों से परम्परागत विश्वविद्यालयों में अध्ययन करने का अवसर नही मिल पाता है। ऐसे व्यक्तियों को भी शिक्षा प्राप्ति के अवसर सुलभ कराना इस विश्वविद्यालय का मुख्य कार्य है। भारतीय उच्च शिक्षा के क्षेत्र में यह एक नया कदम है जो उच्च शिक्षा प्राप्ति की इच्छा रखने वाले व्यक्तियों को जीवन के किसी भी मोड़ पर आने पढ़ने का मौका देता है। राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (IGNOU) भारत में विश्वविद्यालयी शिक्षा के प्रसार के लिए एक प्रभावशाली तथा महत्वपूर्ण विकल्प प्रस्तुत करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 1986 में कहा गया है कि –

"मुक्त अधिगम प्रणाली को उच्च शिक्षा के अवसर विस्तारित करने के लिए,

शिक्षा के जनतान्त्रीकरण के एक साधन के लिए तथा इसे जीवन भर की प्रक्रिया बनाने के लिए प्रारम्भ किया गया है। मुक्त अधिगम प्रणाली का लचीलापन तथा नवचारिता, व्यावसायिक धारा में सम्मिलित हो गये सहित, हमारे देश के नागरिकों की विविधतापूर्ण माँगों के लिए विशेष रूप से उपयुक्त है।

इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए राज्य मुक्त विश्वविद्यालयों को सुदृढ़ किया जा रहा। आज इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय वस्तुतः आज एक ऐसा घरेलू नाम बन गया जिसमें देश का जन मानस अच्छी तरह से परिचित है। इस राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय का मुख्यालय दिल्ली के दक्षिण मे स्थित विशाल भूखण्ड पर स्थित है सम्पूर्ण राष्ट्र में फेले क्षेत्रीय केन्द्रों (Regional Centers) तथा अध्ययन केन्द्रों (Study Centers) के तंत्र (Network) के माध्यम से इस विश्वविद्यालय ने हजारों–लाखों लोगों के द्वार पर उच्च शिक्षा को पहुँचा दिया है। सर्वोत्तम दूरसंचार प्रणाली के माध्यम से यह विश्वविद्यालय दुर्गम क्षेत्रों के छात्रों तमक उच्च शिक्षा के अवसर उपलब्ध करा रहा है। गुणवत्ता तथा समानता इस विश्वविद्यालय के शैक्षिक प्रयासों के दो प्रमुख आधारभूत सिद्धान्त स्वकार किये जाते है। इसी प्रकार राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय का प्रमुख कार्य मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के विभिन्न प्रकार के साधनों के माध्यम से शिक्षा तथा ज्ञान प्रदान करना है। इनका प्रमुख कार्य समाज के उच्च शिक्षा से वंचित वर्गों को भ उच्च शिक्षा प्राप्ति के अवसर उपलब्ध कराता है दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में सर्वोच्च निकाय (Apex Body) के रूप में दूरस्थ शिक्षा परिषद (DEC) राज्य मुक्त विश्वविद्यालयों, पत्राचार संस्थानों तथा अन्य दूरस्थ शिक्षा प्रणालियों के उन्नयन में सहयोग, प्रोत्साहन तथा समन्वय प्रदान करने का महत्वपूर्ण कार्य करती है। निः संदेह राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (IGNOU) शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रीय एकीकरण को बढ़ाने एवं राष्ट्र के प्राकृतिक तथा मानवीय संसाधनों को सुदृढ़ता पहुँचाने के महत्वपूर्ण कार्य में संलग्न है।

10.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आप –

- राज्य मुक्त विश्वविद्यालयों के लक्ष्यों से परिचित हो जायेगी।
- राज्य मुक्त विश्वविद्यालयों के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

10.3 राज्य मुक्त विश्वविद्यालय के लक्ष्य

(i) मुक्त तथा दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था के अनुरूप विभिन्न साधनों के माध्यम से शिक्षा तथा ज्ञान उपलब्ध कराना।

(ii) न केवल आबादी के बड़े भागों को वरन् विशेष रूप सें समाज के वंचित वर्गों को उच्च शिक्षा प्रदान करेगा।

(iii) देश में मुक्त विश्वविद्यालयों तथा दूरस्थ शिक्षा प्रणालियों के स्तर का उन्नयन करने के लिए इन प्रणालियों के समन्वय को प्रोत्साहित करेगा एंव सहायता करेगा।

(iv) शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रीय समाकलन करेगा एवं प्राकृतिक तथा मनव संसाधनों को मज़बूत करेगा।

(v) देश के रोजगार तथा अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए प्राकृतिक तथा मानव संसाधनां के आधार पर उपाधियाँ, प्रमाणपत्रों तथा डिप्लोमा पाठ्यक्रमों का संयोजन करना।

(vi) देश की शैक्षिक प्रणाली में मुक्त विश्वविद्यलय तथा दूरस्थ शिखा की व्यवस्था को बढ़ावा देना और इस प्रकार की व्यवस्था में उच्च स्तर को सुनिश्चित करना।

(vii) तेजी से विकसित होने वाले बदलने वाले समाज में ज्ञान– प्राप्ति की इच्छा को बढ़ावा देना एवं ज्ञान व दक्षता को बढ़ाने के लगातार अवसर देना।

(viii) स्नातक तथा स्नाकोत्तर स्तरीय पाठ्यक्रमों की उचित व्यवस्था करना तथा अनुसंधान को बढ़ावा देना।

(ix) विश्वविद्यालयों की नीतियों तथा कार्यक्रमों के द्वारा राष्ट्रीय एकता को बढ़ाना और मनुष्य के व्यक्तित्व को विकास करना।

स्पष्ट है कि इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (IGNOU) के लक्ष्य अत्यंत विस्तृत हैं। यह विश्वविद्यालय जहाँ एक ओन उच्च शिक्षा प्राप्ति की राष्ट्रीय आकांक्षा को पूरा कर रहा है वही दूरसी ओर रोजगार के अवसर सुलभ कराकर राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था व विकास को गति देने में सहायता करता है तथा राष्ट्रीय एकता की भावना को सुदृढ़ करने का प्रयासकर रहा है। इस प्रकार यह विश्वविद्यालय संसाधनों की उपलब्धता के अभाव के कारण उच्च शिखा के अवसरों से वंचित आम जनता को उच्च शिक्षा सुविधायें उपलब्ण कराने का महान कार्य पूरा करता है। इस हेतु यह विश्वविद्यालय अध्ययन के विभिन्न क्षेत्रों में विगत अनेक वर्षों से स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तर के डिप्लोमा, प्रमाणपत्र व उपाधि कार्यक्रमों का आयोजन कर रहा है सत्र 2001–2002 से इस विश्वविद्यालय ने कुछ विषयों में शोध कार्य करने की सुविधायें भी छात्रों को उपलब्ध करा दी है।

बोध प्रश्न

1. राष्ट्रीय और राज्य मुक्त विश्वविद्यालय में प्रमुख अन्तर बताइये ?

   .....

   .....

   .....

2. राज्य मुक्त विश्वविद्यालयों का प्रमुख उद्देश्य बताइये ?

   .....

   .....

   .....

10.4 राज्य विश्वविद्यालय की विशेषतायें

यह स्पष्ट किया जा चुका है कि मुक्त विश्वविद्यालयों (Open Universities) की अवधारणा, आकार, कार्यक्षेत्र तथा कार्यप्रणाली परम्परागत विश्वविद्यालयों से पर्याप्त भिन्न होती है। ये विशेषतायें ही मुक्त विश्वविद्यालय को आपने कार्यक्रम लागत प्रभावी (Cost- Effective) ढंग से तथा गुणवत्ता सुनिश्चियन (Quality Control) के साथ–साथ संचालित करने में सहायक होती है। राज्य विश्वविद्यालय (SOU) की मुख्य विशेषतायें निम्नलिखित है--

- विश्वविद्यालय का विस्तार क्षेत्र सम्पूर्ण प्रदेश में होता है। प्रदेश के किसी भी भू–भाग में निवास करने वाले नागरिक इस विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों में प्रवेश ले सकते है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि राज्य मुक्त विश्वविद्यालय का कार्यक्षेत्र प्रायः पूरा प्रदेश होता है।
- यह विश्वविद्यालय अपने पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए योग्यता संबंधित परम्परागत नियमों का पालन नही करता है। जैसे स्नातक स्तरीय कार्यक्रम में ऐसे व्यक्ति भी प्रवेश ले सकते हैं जिन्होंने 10 + 2 स्तर की औपचारिक परीक्षा उत्तीर्ण नहीं की है। इन्टरमीडिएट परीक्षा उत्तीर्ण न कर पाने वाला बीस वर्ष से अधिक आयु का कोई भी व्यक्ति प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण करके इस विश्वविद्यालय के स्नातक पाठ्यक्रम में प्रवेश ले सकता है।
- दूर शिक्षा वस्तुतः छात्र केन्द्रित अध्ययन व्यवस्था से ही सम्भव है। इस विश्वविद्यालय में छात्र अपनी सुविधा तथा समय के अनुसार पाठ्य सामग्री का अध्ययन करने के लिए स्वतंत्र रहते हैं। छात्रों के ऊपर दैनिक समय सारिणी का कोई बन्धन नहीं रहता है। सभी छात्रों को एक ही गति से अध्ययन करने की आवश्यकता या बाध्यता भी नही होती है। प्रत्येक छात्र अपनी गति से अध्ययन कर सकता है।

- इस विश्वविद्यालय में प्रत्येक छात्र को पाठ्यक्रम के बहुत सारे विषयों में से विषय चुनने की स्वतंत्रता होती है। छात्रगण अपनी रूचि, योग्यता तथा अवश्यकता के अनुसार अपने अध्ययन हेतु विषयों का चयन कर सकते हैं।
- इस विश्वविद्यालय में प्रत्येक छात्र अपनी सुविधा के अनुसार शिक्षा प्राप्त करने के लिए किसी एक सम्पर्क स्थान का चयन कर सकता है। कठिनाइयों के निवारण, मार्गदर्शन तथा परीक्षा के लिए अध्ययन केन्द्र का निर्धारण छात्र स्वयं कर सकते हैं।
- इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के शैक्षिक कार्यक्रम लागत प्रभावी है। आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुए लोग जो पारम्परिक शिक्षा का व्यय भार वहन नही कर सकते हवे इस विश्वविद्यालय के शैक्षिक कार्यक्रमों का लाभ उठाकर अपनी उच्च शिक्षा जारी रख सकते हैं।
- इंड्रिया गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय ने अपने छात्रों को बहुआयामी (Multi-Dimensional) सहायता से उपलब्ध कराने के लिए एक प्रभावी तंत्र की व्यवस्था की जो छात्रों को तरह –तरह की शैक्षिक तथा व्यावसायिक सहायता प्रदान करता है। सम्पर्क कार्यक्रम, परामर्श एवं विचार विनिमय सत्रों में विषय विशषेज्ञ शिक्षार्थियों के मार्गदर्शन हेतु उपलब्ध रहते हैं।
- इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की एक अनोखी विशेषता इसके द्वारा प्रमापीय प्रणाली (Modular System) को अपनाया जाना है। प्रमापीय प्रणाली से तात्पर्य पाठ्यक्रम को ऐसी स्वतंत्र इकाईयों में विभक्त करना है जिनमें से प्रत्येक इकाई अपनी शैक्षिक क्रियाओं के द्वारा योग्यता का पूर्व निध ारित स्तर प्राप्त करने में सहायक है। दूसरे शब्दों में प्रमापों से तात्पर्य पूर्व निध ारित स्तर की योग्यता अर्जित करने के लिए निर्धारित शैक्षिक क्रियाकलापों के स्वतंत्र समूह से है। किसी पाठ्यक्रम के विभिन्न प्रमाप सम्पूर्ण पाठ्यक्रम का अंग होते हुए भी एक स्वतंत्र अस्तित्व रखता है। किसी शैक्षिक कार्यक्रम की प्रमापीय संरचना शिक्षार्थी को अपनी सुविधा, आवश्यकता, योग्यता तथा गति से अध्ययन करने की अनुमति प्रदान करना है।
- यह विश्वविद्यालय अपने छात्रों को पढ़ाने के लिए सम्प्रेषण तथा सूचना प्रदान करने की नवीनतम तकनीकों का प्रयोग करता है। रेडियो व टेलीविजन पर शैक्षिक प्रसारण, आडियो व वीडियो, टेपों का उपयोग, ई–मेल, कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर आदि की सहायता छात्रों को शिक्षा देने में ली जाती है।

उपरोक्त विवेचन के अवलोकन से स्पष्ट है कि इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय तथा लगभग सभी अन्य मुक्त विश्वविद्यालयों की कार्य प्रणाली तथा

व्यवस्था परम्परागत विश्वविद्यालयों से अनेक दृष्टि से भिन्न होती है।

बोध प्रश्न

3. राज्य मुक्त विश्व विद्यालयों का कार्य क्षेत्र क्या होता है?

.....

.....

.....

4. प्रवेश नियमों में लचीलेपन से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

5. छात्र सहायता सेवा से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

6. प्रमापीय कार्यकम Modular prog किसे कहते हैं?

.....

.....

.....

7. ICT के अन्तर्गत किन अपकरणों का प्रयोग होता हैं ?

.....

.....

.....

10.5 राज्य मुक्त विश्वविद्यालय के बारे में

1. डा0 वी0आर0 अम्बेडकर मुक्त विश्वविद्यालय, हैदराबाद

भारत के इस मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना सन् 1982 मे आन्ध्र प्रदेश सरकार के द्वारा मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम प्रणाली को बढ़ावा देने के लिये की गयी थी। इस विश्वविद्यालय का मुख्यलाय हैदराबाद में स्थित है। स्थापना के समय इसका नाम आन्ध्र प्रदेश मुक्त विश्वविद्यालय रखा गया था। जिसे बाद में परिवर्तित करके भारतीय संविधान के निर्माता डा0 भीमराव अम्बेडकर के सम्मान में डा0वी0आर0अम्बेडकर मुक्त विश्वविद्यालय कर दिया गया है। निर्देशन की बहु–संचार, विद्या जिसमें मुद्रित पाठों को डाक द्वारा भेजना, सम्पर्क शिक्षण व समुपदेशन कार्यक्रम, श्रव्य–दृश्व कार्यक्रम तथा

ग्रीष्म शाला आदि सम्मिलित है, के माध्यम से उच्च शिक्षा प्रदान करने की लचीली व कम लागत वाली दूरस्थ शिक्षा प्रणाली को देश में प्रारम्भ करने का श्रेय इसी मुक्त विश्वविद्यालय को जाता है। यह विश्वविद्यालय अनेक प्रकार के शैक्षिक कार्यक्रमों को अपने क्षेत्रीय एवं अध्ययन केन्द्रों के माध्यम से संचालित कर रहा है।

2. वर्धमान महावीर मुक्त विश्वविद्यालय कोटा

वर्धमान मुक्त विश्वविद्यालय के नाम से सम्बोधित किये जाने वाले कोटा मुक्त विश्वविद्यायल की स्थापना राजस्थान सरकार के द्वारा सन् 1987 में उच्च स्तर पर मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा को बढ़ावा देने के लिये की गयी थी। यद्यपि राजस्थान भारत का ऐसा दूसरा राज्य था जिसने अपने यहां राज्य मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना की, परन्तु यह भारत का तीसरा मुक्त विश्वविद्यालय था। भारत का दूसरा मुक्त विश्वविद्यालय सन् 1985 में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के रूप में केन्द्र सरकार के द्वारा नई दिल्ली में खोला जा चुका था। बाद में कोटा मुक्त विश्वविद्यालय का नाम बदलकर वर्धमान महावीर मुक्त विश्वविद्यालय कर दिया गया है। इस मुक्त विश्वविद्यालय का मुख्यालय राजस्थान के कोटा शहर में स्थित है।

3. नालन्दा मुक्त विश्वविद्यालय पटना

बिहार सरकार के द्वारा भी दूरस्थ शिक्षा एवं मुक्त अधिगम को प्रोत्साहित करने के लिये सन् 1987 में अपने राज्य में एक मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना की गयी जिसका नाम नालन्दा के उपर नालन्दा मुक्त विश्वविद्यालय रखा गया। यह मुक्त विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा मुक्त अधिगम शिक्षण प्रणाली के माध्यम से उपलब्ध करा रहा है।

4. यशवन्तराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विश्वविद्यालय, नासिक

वर्ष 1989 में महाराष्ट्र राज्य के द्वारा मुक्त विश्वविद्यालय खोला गया जिसका नाम प्रसिद्ध राजनेता श्री यशवन्तराव चव्हाण के नाम पर यशवन्तराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विश्वविद्याय रखा गया। इस मुक्त विश्वविद्यालय का मुख्यालय नासिक में बनाया गया है, तथा यह विश्वविद्यालय अपने विभिन्न क्षेत्रीय केन्द्रों तथा अध्ययन केन्द्रों के माध्यम से शैक्षिक कार्यक्रम चल रहा है।

5. मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल

राज्य में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के माध्यम से उच्च शिक्षा का प्रचार–प्रसार करने के लिए मध्य प्रदेश विधायिका के द्वारा मध्य प्रदेश में एक मुक्त विश्वविद्यालय की सीपना वर्ष 1991 में की गयी जिसका नाम इतिहास प्रसिद्ध राजा भोज की स्मृति में मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय रखा गया। इस मुक्त

विश्वविद्यालय का मुख्यालय मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल के रेड क्रास भवन में स्थित है। अपने क्षेत्रीय केन्द्रों तथा अध्ययन केन्द्रों के माध्यम से यह मुक्त विश्वविद्यालय शैक्षणिक कार्यक्रमों का आयोजन कर रहा है।

6. डॉ0 बाबा साहिब अम्बेडकर मुक्त विश्वविद्यालय, अहमदाबाद

डॉ0 बाबासाहिब अम्बेडकर मुक्त विश्वविद्यालय की सीपना वर्ष 1994 में गुजरात सरकार के द्वारा राज्य में उच्च शिक्षा स्तर पर दूरस्थ एवं मुक्त अधिगम प्रणाली को प्रवर्तित करने के लिये गुजरात राज्य के मुक्त विश्वविद्यालय के रूप में की गयी। इस विश्वविद्यलय का मुख्यालय अहमदाबाद में स्थित है। अपने क्षेत्रीय केन्द्रों तथा अध्ययन केन्द्रो के माध्यम से बाबा साहिब अम्बेडकर विश्वविद्यालय शिक्षार्थियों को दूर शिक्षा प्रणाली से शिक्षा प्रदान करने के लिये शैक्षिक कार्यक्रमों का संचालन कर रहा है।

7. कर्नाटक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय, मैसूर

राज्य स्तर पर दूरस्थ शिक्षा एवं मुक्त अधिगम प्रणाली का विकास करने के लिये कर्नाटक सरकार के द्वारा वर्ष 1996 में एक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय खोला गया जिसका नाम कर्नाटक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय रखा गया है। इस विश्वविद्यालय का मुख्यालय मैसूर में मानस गंगोत्री में स्थित है। यह विश्वविद्यालय मुक्त अधिगम व दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के माध्यम से कार्यक्रम संचालित कर रहा है। इस मुक्त विश्वविद्यालय के द्वारा अब तक कई क्षेत्रीय कार्यालय एवं अध्ययन केन्द्र खोले जा चुके हैं।

8. नेताजी सुभाष मुक्त विश्वविद्यालय, कोलकाता

पश्चिमी बंगाल सरकार के द्वारा अपने राज्य में दूरस्थ शिक्षा एवं मुक्त अधिगम प्रणाली को उच्च शिक्षा स्तर पर प्रवर्तित करने के लिये नेताजी सुभाष मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना वर्ष 1997 में राज्य मुक्त विश्वविद्यालय के रूप में की गयी। इस मुक्त विश्वविद्यालय का मुख्यालय पश्चिमी बंगाल की राजधानी कोलकाता में बनाया गया है एवं यह विश्वविद्यालय अपने लगभग अनेक अध्ययन केन्द्रों के माध्यम से शिक्षार्थियों के लिये उच्च शिक्षा स्तर के शैक्षिक कार्यक्रम संचालित कर रहा है।

9. उ0प्र0राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

उत्तर प्रदेश सरकार के द्वारा अपने राज्य में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणली को बढ़ावा देने के लिये वर्ष 1999 में एक मुक्त विश्वविद्यालय खोला गया जिसका नाम प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी राजनेता विचारक तथा हिन्दी के अनन्य पुजारी राजर्षि पुरूषोत्तम दास टण्डन के सम्मान में उ0प्र0राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय रखा गया है। इस विश्वविद्यालय का मुख्यालय प्रदेश की शैक्षिक राजधानी इलाहाबाद में स्थित है। इसने अपनी शैक्षिक यात्रा का श्रीगणेश 20 कार्यक्रमों को प्रारम्भ करके सत्र

1999–2000 में किया। इस विश्वविद्यालय के द्वारा सामान्य, व्यावसायिक व संव्यावसायिक प्रकृति के अनेक शैक्षिक कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। इस विश्वविद्यालय के द्वारा अब तक 250 से अधिक अध्ययन केन्द्र बनाये जा चुके हैं।

10. तमिलनाडु मुक्त विश्वविद्यालय, चेन्नई

तमिलनाडू मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना वर्ष 2002 में तमिलनाडु सरकार के द्वारा अपने राज्य में दूरस्थ शिक्षा व मुक्त अधिगम प्रणाली के माध्यम से उच्च शिक्षा की सुविधाओं को विस्तृत करने की दृष्टि से की गयी। इस विश्वविद्यालय का मुख्यालय चेन्नई में स्थित हैं एवं यह विश्वविद्यालय अपने अनेक अध्ययन केन्द्रो की सहायता से कार्यक्रम चला रहा है।

पं0 सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय, उत्तरांचल राज्य मुक्त विश्वविद्यालय, कृष्णाकान्त हैण्डिक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय गोहाटी तथा ग्लोबल ओपेन विश्वविद्यालय का कार्य प्रारम्भिक चरण में है।

भारत में स्थापित कुल चौदह मुक्त विश्वविद्यालयों के स्थापना क्रमवार नाम निम्नवत है–

1.	डॉ0 वी0आर0 अम्बेडकर मुक्त विश्वविद्यालय, हैदराबाद	1982
2.	वर्धमान महावीर मुक्त विश्वविद्यालय, कोटा	1987
3.	नालंदा मुक्त विश्वविद्यालय, पटना	1987
4.	यशवन्तराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विश्वविद्यालय, नासिक	1989
5.	मध्य प्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय, भोपाल	1992
6.	डा0 बाबासाहिब अम्बेडकर मुक्त विश्वविद्यालय, अहमदाबाद	1994
7.	कर्नाटक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय, मैसूर	1996
8.	नेताजी सुभाष मुक्त विश्वविद्यालय, कोलकता	1997
9.	उ0 प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद	1999
10.	तमिलनाडू मुक्त विश्वविद्यालय, चेन्नई	2003
11.	पं0सुन्दरलाल शर्मा मुक्त विश्वविद्यालय, बिलासपुर	2006
12.	उत्तरांचल राज्य मुक्त विश्वविद्यालय हल्द्वानी	2006
13.	कष्णकांत हैण्डीक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय, गुवाहाटी	2006
14.	ग्लोबल ओपेन विष्वविद्यालय	2008

बोध प्रश्न

8. प्रथम मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना भारतवर्ष में कब हुई?

.....

.....

.....

9. वर्धमान महावीर मुक्त विश्वविद्यालय कहाँ स्थित है?

.....

.....

.....

10. नालन्दा मुक्त विश्वविद्यालय का कार्य क्षेत्र क्या है?

.....

.....

.....

11. राजा भोज के नाम से मुक्त विश्वविद्यालय किस प्रदेश में स्थित है ?

.....

.....

.....

12. गुजरात सरकार ने किस नाम से अपने प्रदेश में मुक्त विश्वविद्यालय स्थापित किया गया है?

.....

.....

.....

13. छत्तीसगढ़ राज्य का मुक्त विश्वविद्यालय कहाँ स्थित है?

.....

.....

.....

10.6 राज्य मुक्त विश्वविद्यालय की नियमावली

राज्य मुक्त विश्वविद्यालयों के कुछ प्रमुख नियम इस प्रकार हैं :

- यह विश्वविद्यालय किसी भी व्यक्ति को किसी भी कार्यक्रम में प्रवेश की अनुमति प्रदान करता है बशर्ते वह,

  — कार्यक्रम हेतु निर्धारित आयु पूरी कर चुका हो,

– कार्यक्रम हेतु निर्धारित न्यूनतम योग्यता प्राप्त हो अथवा

– न्यूनतम योग्यता का औपचारिक प्रमाण–पत्र न रखने की स्थिति में विश्वविद्यालय की प्रारम्भिक अर्हक परीक्षा उत्तीर्ण कर चुका हो।

इस प्रकार किसी भी क्षेत्र में रहने वाला, किसी भी व्यवसाय में कार्यरत, किसी भी आयु का व्यक्ति अपनी सुविधा एवं आवश्यकतानुसार विश्वविद्यालय के कार्यक्रमों में कुछ न्यूनतम शर्तों के अनुसार प्रवेश ले सकता है।

- विश्वविद्यालय के विभिन्न कार्यक्रमों में भारत सरकार के नियमों के अनुसार अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जन जातियों, अन्य पिछड़े वर्गो, अर्द्ध सैनिक बल के कर्मियो के आश्रितों तथा शारीरिक रूप से विकलांग विद्यार्थियों के लिए सीटों के आरक्षण की सुविधा प्रदान करता है।
- आरक्षित श्रेणी के विद्यार्थियों को प्रारम्भ में सामान्य श्रेणी के विद्यार्थियों क समान ही शुल्क जमा करना पड़ता है किन्तु वे अपने राज्य के समाज कल्याण विभाग/ निदेशालय के माध्यम से शुल्क की प्रतिपूर्ति हेतु आवेदन पत्र इग्नू के सम्बन्धित क्षेत्रीय निदेशक को भेज सकते हैं। इसी प्रकार छात्रवृत्ति हेतु भी वे अपने राज्य के समाज कल्याण विभाग के माध्यम से आवेदन कर सकते हैं।
- शिक्षार्थी 6 महीने की अवधि वाले प्रमाण–पत्र के साथ–साथ किसी अन्य कार्यक्रम में भी पंजीकरण करा सकते हैं बशर्ते इससे उसके प्रारम्भिक अध्ययन में बाधा न पड़ती हो। इस स्थिति में किसी प्रकार की असुविधा के लिए शिक्षार्थी स्वयं उत्तरदायी होगा।
- इग्नू में प्रवेश पूर्णतः योग्यता के आधार पर होते हैं। केवल उन्हीं विद्यार्थियों को जो विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित पात्रता मानदण्ड पूरा करते है, प्रवेश दिया जायेगा। उन विद्यार्थियों को प्रवेश नही दिया जायेगा, यदि वे पात्रता मानदण्ड के अनुसार पात्र न हों। इसलिए विद्यार्थियों को किसी प्राइवेट व्यक्ति या संस्था द्वारा किये गये प्रवेश के झूठे वायदों पर विश्वास नही करना चाहिए।

बोध प्रश्न

14. क्या राज्य मुक्त विश्वविद्यालयों विद्यार्थियों के लिये आरक्षण व्यवस्था है?

.....

.....

15. क्या छात्र एक साथ दो कार्यक्रम में पंजीकरण करा सकते है?

.....

.....

16. क्या राज्य मुक्त विश्वविद्यालयों में छात्रवषत्ति की सुविधा है?

.....

.....

10.7 राज्य मुक्त विश्वविद्यालयों के कार्यक्रम की मान्यता एवं उच्च शिक्षा के विकास में योगदान

राज्य मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान किये जाने वाले सभी उपाधि /डिप्लोमा/प्रमाण–पत्र, एसोसिएशन ऑफ इन्डियन यूनिवर्सिटीज के सभी सदस्यों द्वारा मान्यता प्राप्त है। राज्य मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा सभी डिग्री/डिप्लोमा/प्रमाण–पत्र देश के सभी विश्वविद्यालय/सम विश्वविद्यालय /संस्थानों द्वारा प्रदान किये जाने वाले डिग्री/डिप्लोमा/प्रमाण–पत्र के समतुल्य है।

राज्य मुक्त विश्वविद्यालय का उद्देश्य परम्परागत शिक्षा पद्धति को सहयोग प्रदान करना है। जिससे उच्च शिक्षा से किसी भी कारण (आर्थिक, सामाजिक या पारिवारिक) से वंचित रहने वाले व्यक्तियों को आधुनिक शिक्षा तकनीकी का प्रयोग करके उच्च शिखा का लाभ पहुँचाया जा सकें। इन विश्वविद्यालय की भूमिका मात्र शिक्षा का विस्तार करना नहीं है बल्कि शिक्षा के स्तर को ऊँचा भी उठाना है। अतः यह विश्वविद्यालय अपने बहु–आयामी कार्यक्रमों के द्वारा उच्च शिक्षा के क्षेत्र में परिमाणात्मक विस्तार के साथ–साथ उसकी गुणवत्ता में भी वृद्धि कर रहा है। इस विश्वविद्यालय द्वारा स्वतः अनुदेशानात्मक सामग्री के निर्माण और प्रस्तुतीकरण हेतु उच्चकोटि के शिक्षकों एवं उच्च संचार तकनीकि का प्रयोग किया जा रहा है। यह विश्वविद्यालय देश के सभी भागों में चल रहे दूरशिक्षा संस्थानों के मध्य समन्वय स्थापित करने के साथ–साथ उनके लिए आदर्श प्रस्तुत करते हुए उनका नेतृत्व भी कर रहा है।

वर्तमान समय में इनकी शिक्षण सामग्री से केवल उसके अपने विद्यार्थी ही नहीं लाभान्वित हो रेहे हैं बल्कि दूसरे विश्वविद्यालयों के विद्यार्थी एवं इसके कार्यक्रमों में रूचि रखने वाले अन्य बहुत से लोग भी बिना प्रवेश के ही इसकी सामग्री से लाभ उठा रहे हैं। इस प्रकार यह विश्वविद्यालय सही अर्थों में मुक्त विश्वविद्यालय की भूमिका निभाते हुए उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान दे रहा है। राज्य भर में फैले हुए अध्ययन केन्द्र एवं देश से बाहर की इससे जुड़ी हुयी अनेक संस्थाएं तथा प्रतिवर्ष इसके कार्यक्रमों में प्रवेश ले रहे शिक्षार्थियो की संख्या से भी इसके योगदान का पता चलता है। वास्तव में यह कहना अत्योक्ति नही होगा कि जिन उद्देश्यों का लेकर इस विश्वविद्यालय की स्थापना की गई थी, उन्हें न केवल पूर्ण करने अपितु और अधिक व्यापकता प्रदान करने की ओर यह विश्वविद्यालय सतत् अग्रसर है।

बोध प्रश्न

17. राज्य मुक्त विश्वविद्यालयों के कार्यक्रमों को मान्यता कहाँ से प्राप्त होती है?

.....

.....

18. उच्च शिक्षा के विकास में राज्य मुक्त विश्वविद्यालयों के योगदान को बताइये?

.....

.....

10.8 सारांश

राज्य के विकास में शिक्षा के महत्व को देखते हुए भारत में शिक्षा के सार्वजनीकरण हेतु अनेक प्रकार के प्रयास किये गये किन्तु देखा गया कि औपचारिक शिक्षा प्रणाली हमारी राज्य की आवयकता को पूर्ण करने में सफल नहीं हो पा रही थी । उच्च शिक्षा की बढ़ती हुई माँग को पूरा करने के लिए दूरस्थ एवं मुक्त विश्वविद्यालयों एवं संस्थानों का जन्म हुआ। भारत की जनसंख्या जिस गति से बढ़ रही है उसके सापेक्ष में शिक्षा संस्थानों का विभिन्न राज्यों में पर्याप्त अभाव था। राज्य मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था के लिए उपयुक्त विभिन्न साधनों के माध्यम से शिक्षा तथा ज्ञान उपलब्ध कराता है। समाज़ के अपवंचित वर्ग को शिक्षा प्रदान करना। देश में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली को समन्वित रूप से प्रोत्साहित एवं सहायता देना इसका कार्य है। देश के प्राकृतिक व मानवीय संसाधनों को मजबूत करता है। इनके अतिरिक्त राज्य के उपलब्ध शैक्षिक तथा प्रशासनिक व्यक्तियों को इस विश्वविद्यालय के विभिन्न संभागों तथा विद्यापीठों के विविध प्रकार के क्रियाकलापों के समुचित संचालन के लिए राष्ट्रीय स्तर पर सम्मिलित किये जाते हैं। विश्वविद्यालय के कार्य संचालन की सम्पूर्ण व्यवस्था इसके विभिन्न संवैधानिक निकायों तथा अधिकारियों के द्वारा की जाती है। मुक्त विश्वविद्यालयों की स्थापना, ढांचा एवं संगठन नियमित एवं पम्परागत विश्वविद्यालयों से भिन्न होती है। इस समय 14 प्रदेशों की राज्य सरकार द्वारा मुक्त विश्वविद्यालय स्थापित किये जा चुके हैं। प्रत्येक राज्य में मुक्त विश्वविद्यालय उपलब्ध कराया जा सके इसके प्रयास किये जा रहे हैं। दूरस्थ शिक्षा के शिक्षार्थियों की सुविधा के लिए प्रत्येक राज्य में अध्ययन एवं प्रशिक्षण केन्द्रों का जाल फैलाया गया है। मुक्त विश्वविद्यालय के द्वारा अपनायी जाने वाली परीक्षा प्रणाली का स्वरूप परम्परागत विश्वविद्यालयों द्वारा ली जाने वाली परीक्षाओं के काफी समान होता है परन्तु दूरस्थ शिक्षा प्रणाली की मूलभूत विशेषताओं के कारण उसमें कुछ अन्तर आ जाते हैं। जिसके कारण प्रायः मुक्त विश्वविद्यालयों की मूल्यांकन प्रणाली को परम्परागत विश्वविद्यालयों की मूल्यांकन प्रणाली से भिन्न समझा जाता है।

10.9 अभ्यास कार्य

1. राज्य मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना के उद्देश्यों की व्याख्या कीजिए ?
2. राज्य मुक्त विश्वविद्यालय की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ?
3 राज्य मुक्त विश्वविद्यालयों का उच्च शिक्षा के विकास में योगदान बताइए ।

10.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. राष्ट्रीय विश्वविद्यालय का कार्यक्षेत्र सम्पूर्ण राष्ट्र है जबकि राज्य मुक्त विश्वविद्यालय का कार्य क्षेत्र उसका विशिष्ट राज्य होता है।
2. राज्य की उच्च शिक्षा को बढ़ावा देना ।
3. विशिष्ट राज्य ही उसका कार्य क्षेत्र होता है।
4. आयु का कोई बन्धन नहीं होता ।
5. छात्र की सहायता हेतु आयोजित सेवाएं ।
6. प्रमापीय प्रणाली (Modular System) का अर्थ पाठ्यक्रम की स्वतंत्र इकाईयों से है।
7. रेडियों, टेलीविजन, आडियो वीडियो, टेप आदि इसके अन्तर्गत आते हैं।
8. 1982 में प्रथम मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना हुई ।
9. यह विश्वविद्यालय कोटा में स्थित है।
10. इसका कार्यक्षेत्र बिहार है।
11. यह विश्वविद्यालय मध्य प्रदेश में स्थित है।
12. डॉ0 बाबा साहिब अम्बेडकर विश्वविद्यालय गुजरात में स्थापित किया गया है।
13. बिलासपुर में यह स्थित है।
14. हाँ राज्य मुक्त विश्वविद्यालयों में आरक्षण की व्यवस्था है।
15. प्रमाण पत्र के साथ अन्य कार्यक्रम में पंजीकरण करा सकते हैं।
16. छात्रवृत्ति हेतु राज्य के समाज कल्याण विभ्ज्ञाग के माध्यम से आवेदन कर सकते हैं।
17. राज्य मुक्त विश्वविद्यालयों के कार्यक्रम AIU तथा राज्य सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त है।
18. ये विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा के क्षेत्र में परिणामात्मक के साथ गुणवत्ता में भी वृद्धि कर रहा है।

10.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- गुप्ता एस0 पी0 – शिक्षा का ताना–बानाः इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन, 2000

- शर्मा, आर0 ए0 – डिस्टैन्स ऐजूकेशन, मेरठः ईगल बुक्स इन्टरनेशनल, 1995
- शर्मा, आर ए0 – दूरवर्ती शिक्षाः मेरठ सूर्या पब्लिशिंग 1996
- शर्मा, आर0 ए0– शिक्षा तकनीकीः मेरठः इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस, 2002
- साहू, पी0 के0 – ओपन लर्निंग सिस्टमः न्यू देल्ही : उप्पल पब्लिकेशन्स, 1994
- साहू, पी0 के0 – ऐजूकेशनल टेक्नोलोजी इन डिस्टेनसः न्यू देल्हीः अरावती, 1999
- Indira Gandhi National Open University: www.ignou.edu
- Kota Open University: www.koukota.com
- Madhukar N.S. (1998). Networking of Indian Open Universities: www.ouhk.edu.hk.

इकाई– 11 राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान (National Institute of Open Schooling (NIOS)

संरचना

11.1 प्रस्तावना

11.2 उद्देश्य

11.3 राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान की आवश्यकता

11.4 राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान का स्वरूप

11.5 राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान के प्रमुख कार्य

11.6 राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान की संरचना

11.7 राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान की विशेषताएं

11.8 राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान का संचालन

11.9 सारांश

11.10 अभ्यास कार्य

11.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

11.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

11.1 प्रस्तावना

प्राथमिक शिक्षा को राष्ट्र के विकास की नींच के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जाता है। भारत में प्राथमिक शिक्षा की अनिवार्यता को संविधान में ही स्वीकार कर लिया गया है। स्वतंत्रता के पश्चात् से ही शिक्षा के सार्वजनीकरण, सबके लिये शिक्षा, सम्पूर्ण साक्षरता एवं **सर्वशिक्षा अभियान प्रमुख लक्ष्यों के रूप में रखे गये इससे प्राथमिक शिक्षा** को जोर–**शोर से बल मिला पर इससे माध्यमिक शिक्षा** पर दबाव बढ़ा और नियमित शिक्षा माध्यम इस मांग को पूरा करने में असमर्थ रहे। अतः विद्यालयी शिक्षा को अपनी सुविधा से प्राप्त करने हेतु राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयों की संकल्पना आयी। सभी को गुणवत्तापरक **शिक्षा उपलब्ध हो, इसके लिए सरकारी और गैर सरकारी संस्थान प्रयासरत हैं। भारतीय संविधान में भी 14 वर्ष तक के बच्चों के लिए निःशुल्क और** अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा की बात कही गयी थी। शिक्षा को 'मूल अधिकार' का दर्जा मिले। देश को 50 वर्ष का समय लग गया अब सर्व शिक्षा अभियान दूसरे चरण में प्रवेश करने जा रहा है। माध्यमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण के प्रयास प्रारम्भ कर दिये गये हैं। परन्तु सभी को शिक्षा देने के लिए अभी भी पर्याप्त विद्यालय उपलब्ध नहीं हैं। इस

पृष्ठभूमि में केन्द्र सरकार के द्वारा मुक्त विद्यालय की स्थापना की गयी। विशेष रूप से उन वंचित वर्गों के बच्चों, बड़े लड़के, लड़कियों जिन्होंने शिक्षा प्रारम्भ नहीं की अन्यथा किसी कारण से बीच में छोड़ दी तथा वे बच्चे जो किसी न किसी कारण से नियमित विद्यालय नहीं जा पाते।

11.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात् आप इस योग्य हो जायेंगे कि –

1. मुक्त विद्यालयों की आवश्यकता की विवेचना कर सकेंगे।
2. राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान की अवधारणा को स्पष्ट कर सकेंगे।
3. राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान के कार्यों का वर्णन कर सकेंगे।

11.3 राष्ट्रीय मुक्त विद्यालीय संस्थान की आवश्यकता

शिक्षा के प्रति जागरूकता के कारण के साथ ही मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा विद्यालयी शिक्षा प्रारम्भ हुआ। नियंत्रित शिक्षा माध्यम ही सर्वाधिक लोकप्रिय रहा, परन्तु इसकी अपनी सीमायें हैं। दूरस्थ शिक्षा प्रणाली का विकास वस्तुतः विभिन्न प्रकार के शैक्षिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, तकनीकि तथा आर्थिक दबावों एवं शिक्षा की बढ़ती मांग व व्यावहारिक आवश्यकताओं की एक स्वाभाविक परिणति के रूप में हुआ है। समाज में शिक्षा की बढ़ती मांगों एवं आर्थिक एवं अन्य संरचनागत संसाधनों की कमी के कारण नई शिक्षण संस्थायें खोलने व पुरानी शिक्षा संस्थाओं में प्रवेश सामर्थ्य बढ़ाने की आवश्यकता ने किसी वैकल्पिक एवं अल्प लागत पर शिक्षा प्रदान करने की आवश्यकता रूपी चुनौती को शिक्षा विशेषज्ञों के समक्ष प्रस्तुत किया। तकनीकी विकास के फलस्वरूप विकसित हुई सूचना तथा सम्प्रेषण की नवीन व आधुनिक प्रविधियों ने इस चुनौतियों का समाधान करने के प्रयासों में महत्वपूर्ण सहायता की। संचार सम्प्रेषण तकनीकी के विस्तार नें मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम तंत्र को सुविधा देते हुये प्रचारित करने की सतह प्रदान की जो कि अधिक लचीली, अध्येतान्मुख, बहुआयामी उपागम एवं सृजनात्मकता से परिपूर्ण है। प्राथमिक तथा माध्यमिक शिक्षा स्तर पर मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था हेतु मुक्त विद्यालयों की विशिष्टतायें निम्न है ।

- शिक्षक केन्द्रित के स्थान पर छात्र केन्द्रित।
- मौखिक निर्देशन के स्थान पर तकनीकी आधारित सम्प्रेषण ।
- नियत समय के शिक्षण के स्थान पर कहीं भी अधिगम करने पर जोर।
- जो हम दे उसे पायें के स्थान पर छात्र आप जो पढ़ना चाहें वो उसको मिले।
- शिक्षा नियत अवधि पर होने वाली प्रक्रिया से जीवन पर्यन्त चलने वाली

प्रक्रिया।

- उन सभी विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करना जो कि अपने आर्थिक सामाजिक परिस्थितियों के कारण परम्परागत विद्यालयों में शिक्षा नहीं प्राप्त कर सके है, और उन लोगों को भी शिक्षा की सुविधा देना जो कि किन्हीं कारणवश विद्यालयी शिक्षा को पूरा करने में असमर्थ रहे हैं।
- विभिन्न क्षमताओं वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करना।
- अध्येताओं को विविध शैक्षिक कार्यक्रमों की सुविधा प्रदान करना।
- विद्यालय छोड़ चुके प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यार्थियों को शैक्षिक सुविधायें प्रदान करना जिससे कि वे बाकी शिक्षा को पूरी कर सकें।

भारत के भौतिक विविधताओं का प्रभाव अध्येता की आवश्यकताओं एवं दक्षताओं पर पड़ता है अतः मुक्त विद्यालय इसका एक बेहतर विकल्प है।

बोध प्रश्न–

1. मुक्त विद्यालयों की स्थापना क्यों हुई ?

.....

.....

.....

2. मुक्त विद्यालय शिक्षा के स्तर किससे सम्बंधित है?

.....

.....

.....

3. मुक्त विद्यालय का मुख्य उद्देश्य क्या है?

.....

.....

.....

4. मुक्त विद्यालय की मुख्य विशेषतायें बताइये?

.....

.....

.....

11.4 राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय संस्थान का स्वरूप

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय विविध आवश्यकताओं वाले अध्येताओं बच्चों के लिये खोला गया, जो नियमित स्कूलों में शिक्षा ग्रहण करने से वंचित रह जाते हैं। यह एक परियोजना के रूप में सन् 1979 में सेन्ट्रल बोर्ड ऑफ सेकेण्डरी एजुकेशन के द्वारा संचालित किया गया। इसकी सफलता को देखते हुये सन् 1986 में पूरे देश भर में विद्यालयी शिक्षा को मुक्त शिक्षा तंत्र के अन्तर्गत संचालित करने का निर्णय लिया गया। यह भी निर्णय किया गया कि राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय को अपने पाठ्यक्रम एवं परीक्षा तंत्र सहित सुदृढ़ किया जायेगा।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय (NOS) की नवम्बर 1989 में संस्थापना कर दी। 20 अक्टूबर सन् 1990 में प्रकाशित भारतीय राजपत्र के खण्ड तीन के आधार पर सेन्ट्रल बोर्ड आफ सेकेण्डरी एजुकेशन द्वारा संचालित परियोजना राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय में समाहित कर दिया गया और इसके साथ ही राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय को नामांकन परीक्षा एवं उपाधि प्रदान करने के अधिकार भी प्रदान किया गया। जुलाई 2002 में मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने इस संगठन के नाम को परिवर्तित कर दिया और इसे नेशनल इन्सटीट्यूट आफ ओपन स्कूलिंग (NIOS) का नाम दिया जिसका उद्देश्य डिग्री पूर्व स्तर तक औपचारिक शिक्षा के विकल्प के रूप में शिक्षा का प्रचार करना था।

बोध प्रश्न–

5. राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय संस्थान किस स्तर तक शिक्षा प्रदान करता है ?

.....

.....

.....

6. नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग की स्थापना कब हुई ?

.....

.....

.....

7. मुक्त विद्यालय का नाम कब परिवर्तित हुआ ?

.....

.....

.....

11.5 राष्ट्रीय मुक्त विद्यालीय संस्थान के प्रमुख कार्य

एन0आई0ओ0एस0 का कार्य ऐसे बच्चों को शैक्षिक सुविधा प्रदान करना है जो कि विविध पाठ्यक्रमों को मुक्त एवं दूरस्थ माध्यम से प्राप्त करना चाहते हैं–

- बच्चों को प्राथमिक स्तर की शिक्षा प्रदान करना ।
- 14 वर्ष के आयु के किशोरियों एवं किशोरों को माध्यमिक शिक्षा प्रदान करना।
- छात्रों को कक्षा तीन, पांच एवं आठ के स्तर हेतु मुक्त बेसिक शिक्षा की व्यवस्था करना।
- माध्यमिक स्तर के अध्येताओं के लिये व्यावसायिक एवं रोजगारपरक पाठ्यक्रम की व्यवस्था करना।
- अध्येताओं के लिये जीवनोपयोगी पाठ्यक्रमों की व्यवस्था करना।

यह शिक्षा कार्यक्रम ऐसे छात्रों को शिक्षा सतत प्राप्त करते रहने हेतु सुविधा देता है जो कि किन्ही कारणवश प्राथमिक शिक्षा की मुख्य धारा से नहीं जुड़े पाये हैं। नेशनल इन्सटीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग, ओपन बेसिक एजुकेशन कार्यक्रम को क्रियान्वित करने हेतु क्षेत्रीय कार्यालय एवं अध्ययन केन्द्रों से सहायता ले रहा है। वह संगठन इसके द्वारा प्रतिपादित पाठ्यक्रमों को अपनाने हेतु पाठ्य सामग्री एवं संसाधनों के अनुस्थापन पाठ्यक्रम हेतु जिला साक्षरता समितियों को सहायता देता है। बेसिक स्तर पर कक्षा-3 का स्तर A Level , कक्षा 5 का स्तर B Level , तथा कक्षा 8 का स्तर C Level कहलाता है।

माध्यमिक स्तर की शिक्षा हेतु एन0आई0ओ0एस0 विविध रोचक एवं लचीले विषयों एवं पाठ्यवस्तुओं के लचीलापन प्रदान करती हैं। यह सी0बी0एस0ई0 एवं राज्य मुक्त विश्वविद्यालय की भाँति क्रेडिट को अध्येताओं को प्रदान करती हैं। क्रेडिट अध्येताओं की आवश्यकता को ध्यान में रखकर दिये जाते है। अध्येताओं को स्वशिक्षण सामग्री, श्रव्य–दृश्य सामग्री व्यक्तिगत सम्पर्क कार्यक्रम एवं टयूटर अंकित प्रदत्त कार्यों के माध्यम से अधिगम की सुविधा दी जाती है। छमाही पत्रिका मुक्त अधिगम के माध्यम से भी अध्येताओं के ज्ञान को सुदृढ़ करने हेतु प्रदानं की जाती है। अधिगन सामग्री हिन्दी, अंग्रेजी एवं उर्दू भाषा में प्रदान की जाती है। वर्तमान में एन0आई0ओ0एस0 कुल 26 प्रकार के पाठ्यक्रम हिन्दी, अंग्रेजी एवं उर्दू, मराठी, तेलगू, गुजराती, मलयालम, भाषा, में संचालित करती है, तथा उच्च माध्यमिक स्तर पर 25 पाठ्यक्रम हिन्दी, अंग्रेजी एवं उर्दू माध्यम से प्रदान किये जाते हैं।

एन0आई0ओ0एस0 75 रोजगार परक शिक्षाप्रद पाठ्यक्रमो को विविध क्षेत्रों कृषि वाणिज्य, व्यापार, इंजीनियरिंग, तकनीकी, स्वास्थ्य, पैरामेडिकल, होम सांइस और प्रबंधन, शिक्षक प्रशिक्षण, कम्प्यूटर एवं आई0टी0 से सम्बंधित पाठ्यक्रम एवं जीवनोपयोगी

कार्यक्रमों को संचालित करता है। यह संगठन इन सभी रोजगार पाठयक्रमों के व्यावहारिक पक्ष क` जीवंत बनाने हेतु उद्योगों, आई0टी0 केन्द्रों एवं अस्पतालों के साथ समझौता करता है। नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क 2005 के संस्तुतियों के आधार पर नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग द्वारा मुक्त अधिगम हेतु पाठ्यक्रम की रूपरेखा तैयार की गयी है। यह संगठन माध्यमिक स्तर पर भी मुक्त अधिगम व्यवस्था को सुदृढ़ कर रहा है। नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग प्रथम पीढ़ी अध्येताओं के शारीरिक, मानसिक, एवं दृष्टिबाधित अध्येताओं तथा किसी अन्य कारणों से शिक्षा से वंचित वर्ग की आवश्यकताओं को विशेष ध्यान देता है।

बोध प्रश्न–

8. बेसिक ओपन स्कूलिंग किस स्तर की शिक्षा देता है?

.....

.....

.....

9. माध्यमिक स्तर पर नेशनल इन्सटीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग कितने पाठ्यक्रम संचालित करता है?

.....

.....

.....

10. माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर पर पाठ्यक्रम किन भाषाओं में संचालित है?

.....

.....

.....

11. नेशनल करीकुलम फ्रेम वर्क ने इसके लिए अपनी संस्तुतियां किस वर्ष में दी ?

.....

.....

.....

11.6 नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग की संरचना

नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग के बारे में आप विस्तार से अध्ययन कर चुके हैं। यह संस्था अपने पॉच विभागों के नेटवर्क तथा 17 क्षेत्रीय केन्द्रों तथा 2945 अध्ययन केन्द्रों के सहायता से भारत व बाहर के देशों में अपना कार्यक्रम संचालित करता है। इस समय 1.5 मिलियन से अधिक छात्र माध्यमिक स्तर की शिक्षा में नामांकित है जो कि इसे मुक्त विद्यालय व्यवस्था के रूप में संसार में सर्वोपरि खड़ा करती है।

यह कामनवेल्थ ऑफ लर्निंग (सी0ओ0एल0) एवं यूनेस्को दोनो मुक्त विद्यालयीकरण को भारत में बढ़ावा देने हेतु प्रमुख रूप से समन्वय करने वाले संगठन है। नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग अनेक देशों से मुक्त विद्यालयीकरण को बढ़ावा देने तथा अन्य सम्बंधित कार्यक्रमों को बढ़ावा देने हेतु अर्न्तक्रिया करता है। इस प्रकार के उद्देश्यों एवं प्रकार्यों के कारण विश्व में इन्टरनेशनल सेन्टर फार ट्रेनिंग इन ओपन स्कूलिंग खोलने की नींव पड़ी। यह केन्द्र विविध सर्टिफिकेट, एडवांस सर्टिफिकेट एवं डिप्लोम पाठ्यक्रमों को संचालित कर रहा है।

नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग के अन्तर्गत दी ओपन स्कूलिंग एसोसियेशन आफ दि कामनवेल्थ (OSAC) ने अपने को स्थापित होने के साथ अपना सचिवालय खोला। इस संगठन का कार्य, सदस्य देशों के मध्य समन्वय, सहयोग, बेहतर समझ उत्पन्न करने हेतु साधक के रूप में कार्य करना है। बाह्य देशों के मध्य ओसॉक मुक्त दूरस्थ शिक्षा के सन्दर्भ में विभिन्न चर्चा हेतु एक मंच प्रदान करता है, इसके अतिरिक्त ओसॉक **"जनरल ऑफ ओपन स्कूलिंग"** को प्रकाशित भी करता है।

नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग अपने सीमित भौतिक संसाधनों के साथ देश भर के शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सकता। अतः विभिन्न राज्यों के मुक्त विद्यालय शिक्षा व्यवस्था के मध्यं से एक जाल की स्थापना आवश्यक है और अब तक दस राज्यों आंध्रप्रदेश, हरियाणा, जम्मू एवं काश्मीर, कर्नाटक, केरल, मध्य प्रदेश, पंजाब, राजस्थान, तमिलनाडू, पश्चिमी बंगाल के मध्य यह सम्बंध स्थापित हो गया है। इसके अतिरिक्त आठ अन्य राज्य असोम, बिहार, छत्तीसगढ़, गुजरात, महाराष्ट्र, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड भी इस संगठन से जुड़ने के प्रक्रिया में है। नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग का मुख्य कार्य राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा को एक दिशा देना है। इसका मुख्य दायित्व माध्यमिक एवं रोजगार शिक्षा को उस वर्ग के अध्येताओं को पहुँचाना है जो कि किन्हीं कारणवश औपचारिक शिक्षा नहीं ले सके हैं। नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग विभिन्न अध्ययन केन्द्र एवं क्षेत्रीय केन्द्रों के सहायता से नामांकन में प्रतिवर्ष अत्यधिक वृद्धि हुई है।

नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग के अन्तर्गत नामांकन दर

सत्र	नामांकित विद्यालयों की संख्या	
	शैक्षिक पाठ्यक्रम	व्यावसायिक पाठ्यक्रम
2002–03	2,78,234	23010
2003–04	3,21,010	24233
2004–05	2,38,069	20985
2005–06	2,67,025	22879
2006–07	2,90,983	22166
कुल नामांकन	13,95,322	113273

माध्यमिक स्तर पर नामांकन – 54 %

उच्च माध्यमिक स्तर पर – 36 %

व्यावसायिक स्तर पर – 10 %

बोध प्रश्न

12. जनरल आफ ओपन स्कूलिंग कौन प्रकाशित करता है?

.....

.....

.....

13. यह संगठन कैसे कार्य करता है ?

.....

.....

.....

14. रोजगारपरक शिक्षा से आप क्या समझते है ?

.....

.....

.....

15. अध्ययन एवं क्षेत्रीय केन्द्रों का प्रमुख कार्य क्या है ?

.....

.....

.....

11.7 राष्ट्रीय मुक्त विद्यालीय संस्थान की विशेषताएं

- नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग अपने अधिगम प्रणाली में विभिन्न माध्यमों का समन्वय से संचालित करता है। यह विद्यार्थियों को मुद्रित सामग्री देने के साथ विभिन्न तकनीकी साधनों के माध्यम से भी अध्येताओं को शिक्षा देता है।

- राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय में छात्रों को स्वयं अध्ययन करना होता है। छात्र अपनी गति और सुविधा से अध्ययन कर सकते हैं। इसके लिए छात्रों को विभिन्न विषयों में विशेष रूप से तैयार मुद्रित अध्ययन सामग्री (Printed Study Material) प्रदान की जाती है। छात्रों को अन्य सहायक सामग्री जैसे–आडियो कैसेट, प्रयोग पुस्तिकाएं, शब्दावलियाँ तथा अध्ययन निर्देशिका भी आवश्यकता एवं उपलब्धता के आधार पर प्रदान की जाती है। राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय द्वारा छात्रों के अध्ययन केन्द्रों पर अपेक्षित संख्या में अध्ययन सामग्री भेज दी जाती है। छात्र यदि चाहे तो अपनी संस्था से अध्ययन सामग्री प्राप्त कर सकते हैं।

- यद्यपि छात्रों का नामांकन पाँच साल तक मान्य होगा परन्तु राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय द्वारा ऐसा प्रयास किया जाता है कि प्रवेश के प्रथम वर्ष में जल्द से जल्द छात्रों को अध्ययन सामग्री किस्तों पर उपलब्ध करा दी जाये। प्रवेश लेने पर छात्रों को तुरन्त "मुक्त विद्यालयी शिक्षाः इसका सर्वोत्तम उपयोग कैसे करें" नामक पुस्तक दी जाती है। यह पुस्तक छात्रों को मुक्त शिक्षा के क्षेत्र में इसकी विधि और तरीकों आदि से परिचित कराती है। इसके अन्तर्गत स्व–अध्ययन सामग्री का बेहतर प्रयोग कैसे करें, व्यक्तिगत सम्पर्क कार्यक्रम और परीक्षा की तैयारी से सम्बन्धित जानकारी आदि महत्वपूर्ण विषय शामिल हैं।

- उच्चतर माध्यमिक स्तर पर छात्र अध्ययन हेतु हिन्दी अथवा अंग्रेजी माध्यम का चुनाव कर सकते हैं। कुछ विषय उर्दू माध्यम में भी उपलब्ध हैं। उर्दू माध्यम में उर्दू भाषा, राजनीति विज्ञान वाणिज्य आशुलिपि, मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र, भूगोल, गृह विज्ञान, लेखाशास्त्र, जीव विज्ञान, भौतिकी, रसायन विज्ञान तथा गणित विषय उपलब्ध हैं। छात्र जिस माध्यम का चुनाव करते हैं। उसी माध्यम में उन्हें अध्ययन सामग्री प्रदान की जाती है। सामान्यतः माध्यम बदलने की अनुमति नहीं दी जा सकती है। माध्यमिक स्तर के पाठ्यक्रम अस्थायी रूप से उर्दू, तेलगू, गुजराती और मराठी माध्यम में भी उपलब्ध है। इन माध्यमों में प्रवेश के लिए इच्छुक छात्र निर्धारित अध्ययन केन्द्रों से सम्पर्क कर सकते हैं।

बोध प्रश्न

16. छात्र अपनी गति और सुविधा से अध्ययन करते हैं इसकी व्याख्या कीजिए ?

.....

.....

.....

17. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययन के क्या माध्यम हैं ?

.....

.....

.....

11.8 राष्ट्रीय मुक्त विद्यालीय संस्थान के पाठ्यक्रम

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय के पाठ्यक्रमों को दो वर्गों यथा–शैक्षणिक पाठ्यक्रम (Academic Courses) तथा व्यावसायिक पाठ्यक्रमों (Vocational Courses) में बाँटा जा सकता है। शैक्षणिक पाठ्यक्रम वर्ग में आधार पाठ्यक्रम, माध्यमिक शिक्षा पाठ्यक्रम तथा उच्चतर शिक्षा पाठ्यक्रम चलाए जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य पाठ्यक्रमों को प्रारम्भ करने की योजना है। राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय के पाठ्यक्रमों का संक्षिप्त विवरण अग्रांकित प्रस्तुत है :–

1. **आधार पाठ्यक्रम :**

आधार पाठ्यक्रम सैद्धान्तिक रूप से आठवीं कक्षा के समान है तथा यह विद्यार्थियों को माध्यमिक शिक्षा के लिए एक जरूरत के रूप में कार्य तथा आधार स्तर की क्षमता प्रदान करता है। इस पाठ्यक्रम के लिए कोई सार्वजनिक परीक्षा नहीं होती और न ही छात्रों को कोई अंक सूची (Mark-sheet) अथवा प्रमाण पत्र (Certificate) दिया जाता है। अनौपचारिक शिक्षा प्रणाली तथा औपचारिक प्राथमिक विद्यालयों से पढ़ाई बीच में छोड़ देने वाले विद्यार्थियों के अलावा इस कार्यक्रम के लक्ष्य समूह में देश के लगभग तीस लाख नवसाक्षर भी शामिल हैं।

2. **माध्यमिक शिक्षा पाठ्यक्रम :**

इस पाठ्यक्रम में बारह भाषायें – अंग्रेजी, हिन्दी, उर्दू, बंगला, तेलुगु, मराठी, गुजराती, कन्नड़, पंजाबी, नेपाली, असमिया और संस्कृत उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त आठ अन्य विषय – गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, अर्थशास्त्र,

व्यवसाय अध्ययन, गृह विज्ञान, टंकण (हिन्दी, अंग्रेजी और उर्दू) तथा वर्ड प्रोसेसिंग (अंग्रेजी) उपलब्ध हैं। छात्र को एक भाषा सहित कम से कम पाँच विषय लेना अनिवार्य रखा हैं। यह पाठ्यक्रम दसवीं कक्षा के समकक्ष है। इस पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण करके प्रमाण पत्र प्राप्त करने हेतु आवश्यक मानदण्ड आगे सारणी 25 में दर्शाये गये हैं।

3. उच्चतर माध्यमिक शिक्षा पाठ्यक्रम :

यह उन विद्यार्थियों के लिए है जो दसवीं स्तर तक की अथवा उसके समान परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके हैं और उच्चतर माध्यमिक (बारहवीं) प्रमाण पत्र प्राप्त करने के लिए शिक्षा जारी रखना चाहते हैं। इस पाठ्यक्रम अंग्रेजी, उर्दू, हिन्दी भाषाएं शामिल हैं तथा अन्य विषयों के अन्तर्गत गणित, भौतिकी विज्ञान, जीव विज्ञान, इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, वाणिज्य लेखाशास्त्र, मनोविज्ञान, गृहविज्ञान, आशुलिपि (अंग्रेजी तथा हिन्दी) और सचिवीय पद्धति (सेक्रेटेरियल प्रैक्टिस) शामिल है। छात्र को एक भाषा सहित कम से कम पाँच विषय लेना अनिवार्य हैं। इस पाठ्यक्रम की परीक्षा उत्तीर्ण करके प्रमाण पत्र प्राप्त करने के लिए आवश्यक मानदण्ड आगे सारिणी 25 में दिये गये हैं।

इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय (NOS) माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शैक्षणिक विषयों के साथ–साथ व्यावसायिक विषयों का चुनाव करने के लिए भी विद्यार्थियों को अनुमति देता है तथा अवसर प्रदान करता है।

4. व्यावसायिक शिक्षा पाठ्यक्रम :

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय (NIOS) के पाठ्यक्रम को सार्थक बनाने के लिए माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तरों पर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को स्वतंत्र रूप से अथवा अन्य शैक्षणिक विषयों के साथ रखा गया है। शैक्षणिक पाठ्यक्रमों के साथ दिये जाने वाले व्यावसायिक पाठ्यक्रमों (Vocational Courses) की सूची आगे सारणी 26 में दी गयी है। प्रत्यायित व्यावसायिक संस्थाओं (Accredited Vocational Institutions-AVIs) पर चलाये जा रहे पृथक रूप से लिए जाने वाले व्यावसायिक पाठ्यक्रमों का क्रेडिट स्थानान्तरण शैक्षणिक पाठ्यक्रम में हो सकता है।

5. जीवन समृद्धि पाठ्यक्रम :

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय (NOS) विभिन्न लक्ष्य समूहों के लाभार्थ जीवन समृद्धि पाठ्यक्रम भी चलाता है। जैसे (i) परिपूर्ण महिला, (ii) योग, (iii) भारतीय, संस्कृति, (iv) विरासत, तथा (v) जनस्वास्थ्य आदि । राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय

के द्वारा इसके अतिरिक्त कुछ और जीवन समृद्धि पाठ्यक्रमों को अन्तिम रूप दिया जा रहा है।

6. मुक्त बेसिक शिक्षा कार्यक्रम :

'सर्व शिक्षा अभियान' (Education for all) के अन्तर्गत देश में सभी बच्चों, युवाओं और वयस्कों को बेसिक शिक्षा प्रदान करने के लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार सतत रूप से प्रयत्नशील है। राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय (NOS) ने औपचारिक शिक्षा प्रणाली के समकक्ष मुक्त बेसिक शिक्षा (OBE) के रूप में एक वैकल्पिक शिक्षा कार्यक्रम आरम्भ किया है। मुक्त बेसिक शिक्षा कार्यक्रम वंचितों तथा शिक्षा पहुंचाने के लिए दूरस्थ शिक्षा प्रणाली की क्षमताओं की खोज और उपयोग कर रहा है। यह पाठ्यक्रम 14 वर्ष से कम तथा 14 वर्ष से अधिक आयु के विद्यार्थियों विशेषतः उन बच्चों को जो विद्यालय कभी नहीं गए, जिन्होंने विद्यालय बीच में ही छोड़ दिया और ऐसे वयस्कों को जो या तो निरक्षर हैं अथवा जिन्होंने राष्ट्रीय साक्षरता मिशन (National Literacy Mission - NLM) के सम्पूर्ण साक्षरता अभियानों (Total Literacy Campaign - TLC) और उत्तर साक्षरता कार्यक्रम (Post Literacy Programmes) द्वारा मूलभूत साक्षरता कौशल विकसित किया है, सतत् और विकासात्मक शिक्षा के अवसर प्रदान करता है।

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय अपनी मान्यता प्राप्त एजेंसियों के माध्यम से मुक्त बेसिक शिक्षा कार्यक्रम (Open Basic Education) चला रहा है। मान्यता प्राप्त संस्थाएं (Accredited Agencies) अपने संसाधनों से मुक्त बेसिक शिक्षा के कार्यक्रम स्वयं चला रही हैं। वे विद्यार्थियों को प्रवेश देती हैं, नामांकित करती हैं और ए (A), बी (B), तथा सी (C), स्तरों पर उनके लिए शिक्षण–अधिगम कार्यक्रमों का प्रबन्ध करती हैं। इन स्तरों की समतुल्यता के अनुसार होती है।

इसके लिए राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय प्रत्यायित संस्थाओं (Accredited Institutions-AIs) को (i) अंगीकरण/अनुकरण अथवा संदर्भ सामग्री के रूप में उपयोग के लिए अपनी अध्ययन सामग्री, (ii) व्यापक सीखने के परिणाम, (iii) प्राथमिक और उच्च प्राथमिक शिक्षा के विभिन्न स्तरों के लिए क्षमता आधारित और पाठ्यवस्तु सहित नमूना प्रश्न प्रदान करता है। राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय ब्लू प्रिन्ट (Blue Print) के रूप में प्रश्न पत्र तैयार करने के लिए दिशा–निर्देश भी प्रदान करता है, जिसे आधार बनाकर मुक्त बेसिक शिक्षा (OBE) से सम्बन्धित मान्यता प्राप्त एजेसियाँ अपने प्रश्नपत्र स्वयं तैयार करती हैं, विभिन्न स्तरों यथा ए, बी तथा सी स्तरों पर परीक्षाएं आयोजित करती

हैं और उत्तर पुस्तिकाओं की जाँच कराती है। राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय के नियमानुसार उत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थियों को सम्बन्धित मान्यता प्राप्त एजेसियों और राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय द्वारा संयुक्त रूप से ए, बी तथा सी स्तरों पर प्रमाण पत्र दिये जाते हैं। जो विद्यार्थी राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय से मुक्त बेसिक शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत अपने ज्ञान का मूल्यांकन कराना चाहते हैं वे अपने घर के पास स्थित राष्ट्रीय मुंक्त विद्यालय की मान्यता प्राप्त एजेंसी से सम्पर्क कर सकते हैं।

बोध प्रश्न

18. मुक्त बेसिक शिक्षा स्तर A किस कक्षा के समकक्ष है ?

.....

.....

.....

19. मुक्त बेसिक शिक्षा स्तर C किस कक्षा के समकक्ष है ?

.....

.....

.....

20. मान्यता प्राप्त संस्थाएं किसे कहते हैं ?

.....

.....

.....

11.9 राष्ट्रीय मुक्त विद्यालीय संस्थान का संचालन

यह संगठन जैसा कि इसके विविध पक्षों के विषय में जान चुके हैं, यह एक वृहद उद्देश्यों एवं लक्ष्यों को ध्यान में रखकर खोला गया है। इसके सभी कार्यक्रमों का संचालन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के विभिन्न लक्ष्यों एवं देश के शैक्षिक आवश्यकता को ध्यान में रखकर किया जाता है। नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग ने एक विस्तृत तंत्र स्थापित किया है, जिससे की विविध कार्यक्रमों का निर्माण विकास एवं संचालन हो सके।

- इसके लिये वह स्टेट ओपन स्कूलिंग कोआरडिनेशन कमेटी का सहयोग लेकर विभिन्न राज्यों की शैक्षिक आवश्यकताओं का पहचान करता है।
- क्षेत्रीय केन्द्रों के सलाहकार कमेटी को भी इस कार्य में सम्मिलित कर सहयोग

लिया जाता है।

- यह संगठन अपने विभागों के सलाहकार समितियों को भी विविध कार्यक्रमों के सगठन हेतु सहयोग लेता है।
- इसके अतिरिक्त शोध सलाहकार कमेटी और एकेडेमिक काउन्सिल भी विविध कार्यक्रमों के संचालन हेतु उपयुक्त दिशा निर्देशन देते हैं।
- यह सीखते हुये समाज के निर्माण हेतु मुक्त अधिगम तंत्र को प्रोत्साहन देना जो कि गुणात्मक शिक्षा देने में सहायक हो।
- यह संस्थान ज्ञान एवं प्रबुद्ध समाज की स्थापना एवं विकास हेतु बहुआयामी लचीला शिक्षा पद्धति प्रदान करता है।
- यह संस्थान देश में एक राष्ट्रीय संसाधन केन्द्र के रूप में कार्य करना जिससे कि विद्यालय शिक्षा स्तर पर मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम तंत्र एवं अध्येता केन्द्रित शिक्षा को बल मिले।
- यह नवीन तकनीकी के साथ व्यावसायिक सहयोग नेटवर्क का विकास करना।
- सभी के लिये जीवन पर्यन्त शिक्षा एवं कौशल विकास हेतु शिक्षा एवं प्रशिक्षण प्रदान करता है।
- अध्येताओं को व्यवसाय पाने के लिये कुशल बनाने के साथ आवश्यकता आधारित व्यावसायिक पाठ्यक्रमे का संचालन कर उद्यमी बनाता है।
- स्कूल स्तरीय मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा को सुदृढ़ बनाने हेतु क्रियात्मक आधारित अनुसंधान को लोकप्रिय आधार प्रदान करता है।
- मूल्यांकन तंत्र, सहयोग सेवाओं, स्वअधिगम सामग्री में गुणात्मकता को बनाये रखने हेतु सतत् प्रयासरत है ।
- देश के ऐसे समूहों को शिक्षा से जोड़ना जो कि अपवंचित है, जिनमें ग्रामीण युवा, शहरी गरीब, बालिकायें, स्त्रियां, अनुसूचित जातियां एवं अनुसूचित जन जातियां, अन्य पिछड़ा वर्ग, अल्पसंख्यक तथा सेवा मुक्त लोग इनमें प्रमुख है।
- राष्ट्रीय एवं वैयक्तिक समन्वित विकास हेतु प्रयास करता है ।
- राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा को प्रचारित कर इसे उपयोगी बनाता है।
- स्व–मूल्यांकन व स्व–विकास के प्रक्रिया को बढ़ाते हुये तंत्र का विकास करता है।

बोध प्रश्न–

21. कोआर्डिनेशन कमेटी के कार्य क्या है ?

.....

.....

.....

22. व्यावसायिक नेट वर्क से आप क्या समझते हैं ?

.....

.....

.....

23. स्व मूल्यांकन क्या है ?

.....

.....

.....

11.10 सारांश

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालीय संस्थान में माध्यमिक एवं बेसिक शिक्षा को मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से प्रदान करने हेतु एक संसाधक के रूप में कार्य करता है। इसका कार्यक्षेत्र वृहद है। सभी को शिक्षा उपलब्ध कराने के क्षेत्र में इसका महत्वपूर्ण योगदान है। प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर यह बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने में सहयोग प्रदान कर रहा है। इसका प्रारम्भ एक परियोजना के रूप में किया गया था। सन् 2002 में इसे National Institute of Open Schooling (NIOS) के नाम से जाना जाता है। यह संस्थान ऐसे छात्रों को शिक्षा प्रदान करने का अवसर प्रदान करते हैं जो किसी कारण वश शिक्षा की मुख्य धारा 26 प्रकार के पाठ्यक्रम विभिन्न भाषाओं के माध्यम से संचालित करता है।

यह संगठन 5 विभागों, क्षेत्रीय कार्यालयों एवं अध्ययन केन्द्रों के माध्यम से अपना कार्य संचालित करता है। कामन वेल्थ आफ लर्निंग एवं यूनेस्को दोनों ही भारत में मुक्त शिक्षा को बढ़ावा देने वाले संगठन हैं। NIOS विभिन्न राज्यों में अपने केन्द्रों द्वारा एक जाल सा बना रखा है।

11.11 अभ्यास कार्य

1. नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग की स्थापन क्यों की गयी। लक्ष्यो पर प्रकाश डालिये।
2. नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग के स्वरूप नामांकन, पाठ्यक्रम,

शिक्षण विधि व परीक्षा प्रणाली आदि की विस्तार से चर्चा कीजिये।

3- NIOS के बारे में लोगों से चर्चा करें और बतायें कि इसके पाठ्यक्रमों तथा परीक्षा पद्धति के सम्बन्ध में लोगों की कितनी जानकारी है ?

4- NIOS से परीक्षा देने के लिए किसी विद्यार्थी को क्या औपचारिकताएं पूरी करनी होगी।

11.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. समाज में शिक्षा की बढ़ती मांग के कारण मुक्त विद्यालयों की स्थापना हुई ।
2. मुक्त विद्यालय प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर से सम्बन्धित है ।
3. अल्प लागत पर शिक्षा प्रदान करना।
4. विद्यार्थियों को विविध शैक्षिक कार्यक्रम उपलब्ध कराना।
5. माध्यमिक स्तर तक यह शिक्षा प्रदान करता है।
6. 1989 में इसकी स्थापना हुई ।
7. जुलाई 2002 में इसका नाम परिवर्तित हुआ।
8. कक्षा 8 तक बेसिक ओपन स्कूलिंग शिक्षा प्रदान करता है।
9. NIOS कुल 26 प्रकार के पाठ्यक्रम संचालित करती है।
10. इसके पाठ्यक्रम विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में संचालित होते हैं।
11. 2005 की संस्तुतियों के आधार पर इसकी रूपरेखा तैयार की गयी ।
12. ओसॉक (जनरल ऑ ओपन स्कूलिंग) प्रकाशित करता है।
13. यह संगठन क्षेत्रीय तथा अध्ययन केन्द्रों की सहायता से कार्य करता है।
14. जिस शिक्षा द्वारा रोजगार उपलब्ध हो सके वह रोजगार परक शिक्षा है।
15. अध्ययन केन्द्र व क्षेत्रीय केन्द्र नामांकन वृद्धि और शैक्षिक गतिविधियों हेतु कार्य करते हैं।
16. प्रत्येक छात्र अपनी योग्यता, उपलब्ध समय के आधार पर आगे बढ़ता है।
17. अंग्रेजी या हिन्दी उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययन का माध्यम है।
18. कला तीन के समकक्ष ।
19. कक्षा 8 के समकक्ष
20. जिन्हें मुक्त विद्यालय की मान्यता की सूची में शामिल कर लिया जाता है, वे

अपने कार्यक्रम स्वयं चलाती हैं।

21. इसका कार्य शैक्षिक आवश्यकताओं की पहचान करना हैं।

22. व्यवसायिक पाठ्यक्रम चलाने हेतु नेटवर्क तैयार करना ।

23. अपना मूल्यांकन स्वयं करना ।

11.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- गुप्ता एस0 पी0 – शिक्षा का ताना–बानाः इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन, 2000
- शर्मा, आर0 ए0 – डिस्टैन्स ऐजूकेशन, मेरठः ईगल बुक्स इन्टरनेशनल, 1995
- शर्मा, आर ए0 – दूरवर्ती शिक्षाः मेरठ सूर्या पब्लिशिंग 1996
- साहू, पी0 के0 – ऐजूकेशनल टेक्नोलोजी इन डिस्टेनसः न्यू देल्हीः अरावती, 1999
- IGNOU (1997), IGNOU: A Profile, New Delhi, IGNOU

इकाई 12 दूरस्थ शिक्षा परिषद् (Distance Education Council)

संरचना

12.1 प्रस्तावना

12.2 उद्देश्य

12.3 दूरस्थ शिक्षा का स्वरूप

12.4 दूरस्थ शिक्षा परिषद् के कार्य

12.5 दूरस्थ शिक्षा परिषद् के लक्ष्य

12.6 दूर शिक्षा परिषद का महत्व

12.7 सारांश

12.8 अभ्यास कार्य

12.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

12.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

12.1 प्रस्तावना

दूरस्थ शिक्षा परिषद (DEC) ने राष्ट्रीय स्तर पर दूरस्थ व मुक्त शिक्षा के प्रचार प्रसार पर विशेष ध्यान देना प्रारम्भ किया। वास्तव में इसके समन्वयन एवं मानकों को बनाये रखने हेतु किसी उत्तरदायी संस्थान की आवश्यकता प्रतीत हुई थी, अतः 1991 में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के प्रबंधक बोर्ड ने एक उत्तरादायी संस्था की स्थापन को प्रारम्भ करने की स्वीकृति दे दी और यही परिषद् 'दूरस्थ शिक्षा परिषद' के रूप में प्रतिष्ठित हुआ। दूरस्थ शिक्षा परिषद् की स्थापना दूर शिक्षा के प्रचार–प्रसार के साथ अनुदान देने तथा गुणात्मकता को बनाने के लिये स्थापित की गयी। पूर्व की इकाई में आप राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के बारे में विस्तार से अध्ययन कर चुकें हैं। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के प्रचार–प्रसार का सर्वोच्च उत्तरदायित्व इग्नू को सौंपा गया। इग्नू के निर्देशन में अन्य मुक्त विश्वविद्यालयों की स्थापना व विकास का कार्य, दूरस्थ शिक्षा संस्थाओं को समन्वयन एवं प्रगति कार्य सम्पादित करना तय किया गया। इन समस्त कार्यो के प्रभावी संचालन हेतु 1992 में दूरस्थ शिक्षा परिषद (Distance Education Council- DEC) की स्थापना की गयी।

12.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात् आप इस योग्य हो जायेंगे कि–

- दूरस्थ शिक्षा परिषद् के स्वरूप को जान सकेंगे।

- दूरस्थ शिक्षा परिषद् के कार्यों एवं उद्देश्यों की विवेचना कर सकेंगे।
- दूरस्थ शिक्षा परिषद् के महत्व को समझ सकेंगे।

12.3 दूरस्थ शिक्षा परिषद् का स्वरूप

दूरस्थ शिक्षा परिषद्,नई दिल्ली में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के अन्तर्गत स्थापित एक संस्था है, जो कि देश भर में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की देख–रेख तथ प्रचार–प्रसार के लिये उत्तरदायी है। अभी कुछ समय पूर्व से यह एक स्वतन्त्र इकाई के रूप में कार्य कर रही है। आज न सिर्फ भारत वरन् विश्वभर में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा एक लोकप्रिय माध्यम के रूप में उभर रहा है। इसको परम्परागत शिक्षा के सहयोगी के रूप में देखा जा रहा है। दूरस्थ एवं मुक्त शिक्षा अंब एक नवाचार नहीं रह गया है इसके प्रसार के साथ अब इसको एक नयी दिशा दिये जाने की आवश्यकता है। दूरस्थ शिक्षा संस्थाओं को आश्रय देने के लिये इसके निरन्तर दिशा निर्देशन हेतु दूरस्थ शिक्षा परिषद् को अधिकृत किया गया है, इसको कुछ निश्चित उत्तरदायित्व एवं अधिकार प्रदान किये गये हैं। जिससे कि यह अपना कार्य उत्तरदायित्व पूर्ण ढंग से कर सके, यह नई दिल्ली में है।

दूरस्थ शिक्षा परिषद् के प्रमुख उत्तरदायित्व :

- राज्य सरकार एवं परम्परागत विश्वविद्यालयों को मुक्त विश्वविद्यालय एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थान खोलने हेतु प्रेरित करना।
- दूरस्थ एवं मुक्त शिक्षण संस्थानों को वित्तीय सहायता प्रदान करना।
- नामांकन, मूल्यांकन एवं उपाधि प्रदान करने हेतु मानकों विधियों एवं निर्देशों को निश्चित करना।
- मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षण संस्थानों को गुणात्मकता सुनिश्चित करने हेतु सतत् मूल्यांकन एवं निरीक्षण करना।
- तकनीकी विद्या को शिक्षा में प्रयोग हेतु प्राश्रय देना तथा तकनीकों को आपस में मिल–जुलकर प्रयोग करने हेतु प्रश्रय देना।
- स्व–शिक्षण सामग्री एवं बहु माध्यम शिक्षण सामग्री का विकास एवं निर्माण कर मुक्त शिक्षण संस्थानों में मिल जुलकर प्रयोग करने की सुविधा प्रदान करना।
- विभिन्न राज्य मुक्त विश्वविद्यालयों एवं पत्राचार शिक्षा संस्थाओं में मुक्त विश्वविद्यालयों द्वारा उत्पन्न छात्र सहायता सेवाओं को मिलजुलकर प्रयोग करने हेतु सुविधा प्रदान करना।
- मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में अनुसंधान एवं नवाचार को अभिप्रेरित करना।
- मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा तंत्र हेतु दक्षता के लिये प्रशिक्षण प्रदान करना।

बोध प्रश्न

1. दूरस्थ शिक्षा परिषद् की स्थापना किसके अन्तर्गत हुई ?

.....

.....

.....

2. दूरस्थ शिक्षा परिषद् के स्थापना के क्या कारण थे?

.....

.....

.....

3. दूरस्थ शिक्षा परिषद् किस विश्वविद्यालय में स्थित है?

.....

.....

.....

4. दूरस्थ शिक्षा परिषद कहाँ स्थित है ?

.....

.....

.....

12.4 दूरस्थ शिक्षा परिषद् के कार्य

दूरस्थ शिक्षा परिषद् का प्रमुख कार्य निम्न है –

- राज्य सरकार एवं विश्वविद्यालयों के परामर्श से मुक्त विश्वविद्यालयों एवं दूरस्थ शिक्षण संस्थानों का एक जाल निर्मित करना।
- दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों के संचालन हेतु उपयुक्त क्षेत्रों का चयन करना एवं सहयोग प्रदान करना जिससे कि वहां दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों का संचालन हो सके।
- विशेष समूह को चिन्हित कर उनके लिये आवश्यक कार्यक्रम के संचालन हेतु मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों को सहयोग प्रदान करना।
- विश्वविद्यालय स्तरीय शिक्षा में नवाचार सहित, लचीले अधिगम एवं शिक्षण विधियां, विविध पाठ्यक्रमों का समन्वयक नामांकन हेतु आवश्यक योग्यता, प्रवेश, आयु, परीक्षा संचालन हेतु विविध कार्यक्रम को सहयोग देना।
- दूरस्थ शिक्षा तकनीकी में विविध पाठ्यक्रम, कार्यक्रम एवं शोध हेतु आवश्यक मानक तय करना।
- दूरस्थ शिक्षण संस्थानों को प्रदान किये जाने वाली वित्तीय अनुदान को प्रबंधक बोर्ड को अग्रसारित करना।
- राष्ट्र में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा तंत्र के समन्वित प्रयास को प्रोत्साहित करना।

- विविध मुक्त विश्वविद्यालयों द्वारा विकसित स्व–शिक्षण सामग्री एवं छात्र सहयोग सेवाओं को समन्वित रूप से उपयोग हेतु सुविधा देना जिससे कि दुबारा कार्य करने में व्यर्थ समय व अर्थ बचे।
- मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षण संस्थाओं के विविध पाठ्यक्रमों में नामित विद्यार्थियों से ली जाने वाले शुल्क का निर्धारण करना।
- विविध मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षण संस्थाओं द्वारा संचालित कार्यक्रमों एवं पाठ्यक्रमों से सम्बंधित आवश्यक जानकारी करना।
- राज्य सरकारों एवं विश्वविद्यालयों को मुक्त शिक्षण संस्थान खोलने हेतु परामर्श देना।
- जाल के रूप में देश भर में कार्य कर रहे राष्ट्रीय मुक्त दूरस्थ शिक्षा संस्थानों के क्रियाकलापों के सतत् मूल्यांकन हेतु पुर्निरीक्षण कमेटी की नियुक्ति करना।
- विविध पाठ्यक्रमों एवं कार्यक्रमों के संचालन हेतु उनके ढांचे एवं कार्यविधि के प्रारूप का वृहद प्रस्तुतीकरण करना।
- दूरस्थ शिक्षा माध्यम द्वारा प्रदान किये जाने वाले विविध कार्यक्रमों के गुणात्मकता के मानक तय करना।

बोध प्रश्न

5. दूरस्थ शिक्षा परिषद किससे परामर्श लेता है ?

.....

.....

.....

6. दूरस्थ शिक्षा परिषद कार्यक्रमों का संचालन कैसे करता है ?

.....

.....

.....

7. दूरस्थ शिक्षा परिषद् सतत् मूल्यांकन हेतु क्या करता है?

.....

.....

.....

8. दूरस्थ शिक्षा परिषद् किस प्रकार विश्वविद्यालयी शिक्षा के लिये कार्य करता है?

.....

.....

.....

12.5 दूरस्थ शिक्षा परिषद् के लक्ष्य

दूरस्थ शिक्षा परिषद की स्थापना के कुछ लक्ष्य है इससे यह अपेक्षा की जाती है कि यह गुणात्मकता को बनाये रखने हेतु शैक्षिक दिशा निर्देश दे इसके साथ ही नवीन

तकनीकी एवं उपागमों के प्रयोग हेतु प्रोत्साहन दे। समन्वित नेटवर्किंग के तहत सभी तंत्र आपस में संसाधनों को मिलजुलकर उपयोग करें। इस परिषद् को यह अधिकार दिये गये हैं कि यह मुक्त विश्वविद्यालय एवं मुक्त शिक्षा प्रणाली का देश के शैक्षिक व्यवस्था में जो भी विकास एवं प्रोत्साहन की आवश्यकता हो प्रदान करे।

यह परिषद् शिक्षण के मानकों को तय करने, मूल्यांकन एवं शोध कार्यों को प्रोत्साहन देने, अधिक लचीलेपन, विविधता, व्यापकता गतिशीलता एवं शिक्षा में नवाचार को सम्मिलित करने का दायित्व संभाल रहा है। इग्नू के अनुच्छेद 16 के तहत स्थापित दूरस्थ शिक्षा परिषद् के लक्ष्य निम्न हैं :–

- दूरस्थ शिक्षा परिषद् को भारत में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा माध्यम से संचालित विविध पाठ्यक्रमों के प्रचार–प्रसार एवं गुणात्मकता हेतु उत्तरदायी बनायी गयी है। इसीलिये शिक्षा की गुणात्मकता को सुनिश्चित करने तथा डिग्री एवं डिप्लोमा जो कि दूरस्थ शिक्षा माध्यम से दिये जाते हैं। उनके स्तर के निर्धारण हेतु दूरस्थ शिक्षा परिषद् से अनुमति प्राप्त करना आवश्यक है।
- दूरस्थ शिक्षा में प्रयुक्त की जाने वाली स्व–शिक्षण सामग्री के निर्माण का आधार पुस्तकों से अलग होता है, यह व्याख्यात्मक होती है। स्व शिक्षण सामग्री में अप्रत्यक्ष रूप से कक्षा शिक्षण के दौरान शिक्षक छात्र की सम्पूर्ण प्रतिक्रिया सम्मिलित होती है, इसके अतिरिक्त इसके कुछ विशेष गुण भी देखे जाते हैं। स्व शिक्षण सामग्री कों–
- स्व निर्देशित होना चाहिये।
- स्व प्रेरित हो।
- स्व मूल्यांकन की सुविधा हो।
- स्व अधिगम के योग्य हो।
- स्वपूर्ण हो।
- स्व व्याख्यायित हो।
- दूरस्थ शिक्षा परिषद् स्व शिक्षण सामग्री में इन विशेष गुणों की अपेक्षा करके ही अनुमति प्रदान करता है। स्व शिक्षण सामग्री के निर्माण एवं प्रयोग के आवश्यक मानक को तय करने के साथ इनके समन्वित प्रयोग पर भी बल देता है। जिससे कि समय, श्रम एवं अर्थ की बचत हो।
- दूरस्थ एवं मुक्त शिक्षण संस्थाओं की भी कुछ संस्थागत केन्द्रों की आवश्यकतायें होती है, जिनके बिना इस विकेन्द्रीकृत शिक्षा व्यवस्था का संचालन कठिन होता है और दूरस्थ शिक्षा परिषद् दूरस्थ शिक्षा संस्थानों में इनकी उपलब्धि सुनिश्चित करता है। दूरस्थ शिक्षा संस्थानों में दो प्रकार के विभाग होते हैं, जो कि इनके विविध क्रियाकलापों का संचालन करते है। एक पूर्ण कालिक विभाग,

दो अंशकालिक विभाग। पूर्ण कालिक नियमित आधार पर मुख्य विभाग है, जो कि सभी प्रमुख कार्यों के संचालन एवं समन्वयन के लिये उत्तरदायी है। अंशकालिक संविदा आधार पर विशेषीकृत आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु नियुक्त स्टाफ। अंशकालिक कार्मिक स्वनिर्देशित सामग्री के विकास एवं प्रेषण तथा अन्य अकादमिक क्रियाकलापों के संचालन हेतु नियुक्त किये जाते हैं।

- किसी भी दूरस्थ शिक्षण संस्थानों में दूर अध्येता को कक्षा शिक्षण की कमी को दूर कर अधिगम हेतु स्वशिक्षण सामग्री प्रदान की जाती है। स्वशिक्षण सामग्री के निर्माण एवं विकास में इन तथ्यों को ध्यान रखा जाता है कि वह वास्तविक कक्षा शिक्षण की परिस्थितियों को प्रत्यक्ष करें इसका स्वरूप व्याख्यात्मक होता है और वह सम्पूर्ण पाठ्यवस्तु का संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत करती है, इसमें अधिगम हेतु आवश्यक दिशा निर्देश दिये जाते हैं। दूरस्थ शिक्षा परिषद यह सुनिश्चित करता है कि स्वशिक्षण सामग्री अधिक गुणवत्तापूर्ण हो और स्वशिक्षण सामग्री की पूरक के रूप में संचार सम्प्रेषण माध्यमों को प्रयोग किया जाता है।

- दूरस्थ शिक्षण संस्थानों से यह अपेक्षा की जाती है कि यह मुख्य केन्द्रों एवं सहायक सेवा केन्द्रों में कार्मिक वर्ग तथा विद्यार्थियों के लिये आवश्यक सहायता सेवाओं के साथ यह सुनिश्चित करें कि उनमें पर्याप्त भौतिक संसाधन उपलब्ध है। दूरस्थ शिक्षा परिषद् दूर शिक्षण संस्थानों को इसकी व्यवस्था हेतु आवश्यक अनुदान के साथ व्यवस्था करने में सहायता देता है। इसके अतिरिक्त वह इन सुविधाओं को विविध दूरस्थ शिक्षण संस्थानों को मिलजुलकर प्रयोग करने हेतु प्रेरित भी करता है।

- प्रत्येक दूरस्थ शिक्षा संस्थान में पूर्ण व्यवस्थित मुख्यालय में एक पुस्तकालय होना आवश्यक है जिसमें अच्छी पुस्तकों के साथ पत्रिकाएँ,, श्रव्य–दृश्य सामग्री तथा अन्य अधिगम से सम्बंधित सहायक सामग्री होनी आवश्यक है। ये सभी सुविधायें दूरस्थ शिक्षा से जुड़े कार्मिक वर्ग एवं दूर अध्येताओं के आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु समय–समय पर सम्बर्धित की जाती है। दूरस्थ शिक्षा परिषद् यह भी सुनिश्चित करता है कि सभी दूरस्थ शिक्षा संस्थानों में एक व्यवस्थित पुस्तकालय उपलब्ध हो।

- दूर शिक्षा परिषद् इस ओर भी जोर देता है कि अध्येताओं की बढ़ती भीड़ को संतुष्ट करने हेतु दूरस्थ शिक्षण संस्थाओं को कार्यक्रमों को कम्प्यूटरीकृत कर देना चाहिये और इसके लिये सशक्त एवं सबल दूरस्थ शिक्षण संस्थानों को अन्य आवश्यकता वाले शिक्षण संस्थानों का सहयोग करना चाहिये।

बोध प्रश्न

9. स्व अध्ययन सामग्री का प्रारूप सामान्य पुस्तकों से अलग क्यों होता है ?

.....

.....

.....

10. दूरस्थ शिक्षण संस्थानों मे कैसे केन्द्रों की आवश्यकता होती है?

.....

.....

.....

11. दूरस्थ शिक्षण संस्थानों में स्वशिक्षण सामग्री का क्या महत्व है?

.....

.....

.....

12. दूरस्थ शिक्षण संस्थानों में छात्र सहायता सेवा क्या है?

.....

.....

.....

12.6 दूरस्थ शिक्षा परिषद का महत्व

दूरस्थ शिक्षा एक ऐसी संस्था है जो कि दूरस्थ शिक्षा को बढ़ती मांग के अनुरूप प्रचार–प्रसार के साथ इसकी गुणवत्ता को भी सुनिश्चित करने के लिये कटिबद्ध है। यह एक ऐसी इकाई है जो दूरस्थ शिक्षण संस्थानों के भौतिक, मानवीय एवं वित्तीय संसाधन के मानक तय कर रही है। दूरस्थ शिक्षा परिषद ने जहां एक ओर दूरस्थ शिक्षा को प्रचारित करने का कार्य किया तो दूसरी ओर आवश्यक मानकों के साथ दूरस्थ शिक्षण को चलने के लिये भी दबाव बनाया है। सबसे बड़ी बात यह है कि इसके माध्यम से आज देश भर में फैले दूर शिक्षण संस्थानों को एक जाल का स्वरूप मिला और सभी एक दूसरों को प्रचार–प्रसार एवं गुणात्मकता को बनाये रखने हेतु आवश्यक सहयोग दे रहे हैं। इसने दूरस्थ शिक्षण संस्थानों में प्रवेश,अनुदेशन के माध्यम, परीक्षा कार्यक्रम, छात्र सहायता सेवाओं विविध शैक्षणिक कार्यक्रमों के सभी मानक एवं दिशा निर्देश तय किये हैं। दूरस्थ शिक्षा परिषद देश भर में मुक्त अधिगम के प्रचार–प्रचार एवं उपयोगिता के प्रति उत्तरादायी संस्था है, इससे यह आशा की जाती है कि यह नामांकन वृद्धि के साथ–साथ सेवाओं में विस्तार और प्रगति करने में सक्षम होगा।

बोध प्रश्न

13. दूरस्थ शिक्षा परिषद् (DEC) की स्थापना का महत्व समझाइए ?

.....

.....

14. इससे क्या आशा की जाती है ?

.....

.....

12.7 सारांश

दूरस्थ शिक्षा परिषद् मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में उत्तरादायी संस्था है। इसके अधिकार एवं कार्य वृहद हैं और यह इस प्रकार के अधिगम प्रणाली को लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इस विश्वविद्यालय को दिये गये कार्यो तथा अधिकारों में मुक्त विश्वविद्यालय के रूप में कार्य करने के साथ–साथ देश में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के सर्वोच्च निकाय के रूप में कार्य करते हुए देश के अन्य मुक्त विश्वविद्यालयों की स्थापना व विकास करने में मार्गदर्शन करने, दूरस्थ शिक्षा प्रणाली का उन्नयन व समन्वय करने, इस प्रणाली में शिक्षण, अधिगम तथा अनुसंधान के मानकों का संरक्षण करने तथा अन्य मुक्त विश्वविद्यालयों तथा शिक्षा संस्थाओं की सहायता प्रदान करना भी सम्मिलित है। इन कार्यो के समुचित निर्वहन के लिए वर्ष 1992 में दूरस्थ शिक्षा परिषद (Distance Education Council) को इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय अधिनियम (IGNOU Act) के अन्तर्गत एक संवैधानिक निकाय (Statutory Authority) के रूप में स्थापित किया गया है। इस दूरस्थ शिक्षा परिषद को दिये गये कार्यो में देश के अन्दर मुक्त विश्वविद्यालयों/दूरस्थ शिक्षा संस्थाओं का एक ऐसा जाल (Network) विकसित करना है जो कार्यक्रमों, सुविधाओं तथा सेवाओं में परस्पर सहभागिता को सुनिश्चित करता हो एवं मुक्त विश्वविद्यालय प्रणाली के समन्वयात्मक विकास (Co-ordinative Development) को सुनिश्चित करता है।

अपनी स्थापना के समय से ही दूरस्थ शिक्षा परिषद (Distance Education Council) देश में मुक्त विश्वविद्यालयों के जाल (Network of Open University) स्थापित करने तथा विकसित करने के उत्तरदायित्व की दिशा में कार्य करने के लिए प्रयासरत है। विगत कुछ वर्षो से दूरस्थ शिक्षा परिषद ने मुक्त शिक्षा तन्त्र (Open Education Network-OPENET) के विविध कार्यो पर भी ध्यान दिया है। इसके लिए (i) मुक्त विश्वविद्यालयों के कार्यक्रमों तथा पाठ्यक्रमों में परस्पर सहयोग को बढ़ावा देने, (ii) उन्हें यथावत् अपनाने अथवा आवश्यकतानुसार अनुकूलन करने अथवा अनुवाद के द्वारा सभी मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा उपयोग करने के लिए सभी विश्वविद्यालयों के सहयोग स्थापित करना, एवं (iii) कार्यक्रमों/पाठ्यक्रमों को विकसित करने, क्रेडिट पद्धतिं, ग्रेडिंग प्रणाली, अनुदेशन विधियों, सेवाओं आदि से जुड़ी प्रक्रियाओं का प्रमापीकरण करने जैसे प्रयास दूर शिक्षा परिषद (DEC) द्वारा किये जा रहे हैं।

12.8 अभ्यास के कार्य

1. दूरस्थ शिक्षा परिषद् के उद्देश्यों की विवेचना कीजिए।
2. दूरस्थ शिक्षा परिषद् के अधिकारों एवं कार्यों की विवेचना कीजिये।
3. दूरस्थ शिक्षा परिषद का महत्व बताइए ।

4. दूरस्थ शिक्षा परिषद की भूमिका मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की गुणवत्ता बनाये रखने में बताइए ?

12.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. इग्नू के अन्तर्गत इसकी स्थापना हुई ।
2. दूरस्थ शिक्षा की देखरेख तथा प्रचार–प्रसार के लिए इसकी स्थापना हुई ।
3. यह इग्नू में स्थित है।
4. यह नई दिल्ली में है।
5. यह नेटवर्किंग के लिए राज्य सरकार एवं विश्वविद्यालयों से परामर्श लेता है।
6. विशेष समूहों को चिन्हित कर यह शिक्षा संस्थाओं के सहयोग से कार्यक्रम संचालित करता है।
7. सतत मूल्यांकन हेतु पुनरीक्षण कमेटी नियुक्त करता है।
8. मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के लिए कार्य करता है।
9. क्योंकि इसमें छात्र अध्यापक के नियमित सम्पर्क में नहीं होता।
10. इसे कुछ संस्थागत केन्द्रों की आवश्यकता होती है।
11. यह सामग्री शिक्षक की कमी को दूर करती है।
12. छात्र की सहायता के लिए आयोजित सेवाएं छात्र सहायता सेवा कहलाती है।
13. यह मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए कटिबद्ध है।
14. इससे आशा की जाती है कि यह नामांकन वृद्धि के साथ सेवाओं में विस्तार एवं प्रगति भी करेगी ।

12.9 कुछ उपयोगी पुस्तके

- गुप्ता एस0 पी0 – शिक्षा का ताना–बानाः इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन, 2000
- शर्मा, आर ए0 – दूरवर्ती शिक्षाः मेरठ सूर्या पब्लिशिंग 1996
- शर्मा, आर0 ए0– शिक्षा तकनीकीः मेरठः इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस, 2002
- साहू, पी0 के0 – ओपन लर्निंग सिस्टमः न्यू देल्ही : उप्पल पब्लिकेशन्स, 1994
- Indira Gandhi National Open University: www.ignou.edu
- Kota Open University: www.koukota.com
- Madhukar N.S. (1998). Networking of Indian Open Universities: www.ouhk.edu.hk.

खण्ड

4

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में चुनौतियां

इकाई-13 5
मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की समस्यायें

इकाई-14 16
मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में प्रशिक्षण

इकाई-15 28
मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में मूल्याकन

इकाई-16 49
मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में अनुसंधान

प्रथम–1 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की अवधारणा एवं ऐतिहासिक परिपेक्ष्य

इकाई–1 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का स्वरूप एवं आवश्यकता

इकाई–2 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का विकास

इकाई–3 दूरस्थ शिक्षक

इकाई–4 दूरस्थ विद्यार्थी

द्वितीय–2 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में छात्र सहायता सेवायें

इकाई–5 स्व अध्ययन सामग्री

इकाई–6 परामर्श सेवायें

इकाई–7 अधिन्यास

इकाई–8 सूचना एवं सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी

तृतीय–3 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की संगठनात्मक संरचना

इकाई–9 राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

इकाई–10 राज्य मुक्त विश्वविद्यालय

इकाई–11 राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान

इकाई–12 दूरस्थ शिक्षा परिषद्

चतुर्थ–4 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा मे मूल्यांकन एवं चुनौतियां

इकाई–13 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की समस्यायें

इकाई–14 दूरस्थ शिक्षा में प्रशिक्षण

इकाई–15 दूरस्थ शिक्षा में मूल्यांकन

इकाई–16 दूरस्थ शिक्षा में अनुसंधान

खण्ड-4 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में चुनौतियाँ

खण्ड परिचय

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में अनेक चुनौतियाँ हैं और इन पर ध्यान दिये जाने की आवश्यकता है जिसमें कि इसकी संख्यात्मक वृद्धि से गुणात्मक भी बढ़े क्योंकि मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा भविष्य की शिक्षा व्यवस्था है।

इकाई-14 में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में प्रशिक्षण की आवश्यकता, स्वरूप और प्रक्रिया के सम्बन्ध में बताया गया है। दूरस्थ शिक्षा के सार्वजनीकरण का एक उद्देश्यपूर्ण प्रयास है। प्रशिक्षण से नवीन शिक्षण संस्थानों को प्रारम्भ करने में सहायता मिलती है। दूरस्थ प्रशिक्षण को नये संस्थानों की स्थापना में सहयोग करना चाहिये, कम लागत का ध्यान रखना चाहिये।

इकाई-15 शैक्षिक दूरस्थ छात्रों तथा मूल्यांकन करने के लिये प्रयुक्त, किये जाने वाले परीक्षणों एवं परीक्षा के सम्बन्ध में चर्चा की गई है। सामान्य रूप से दूरस्थ शिक्षा में मुक्त शिक्षा में मुक्त अधिगम के क्षेत्र में भी ठीक उन्हीं उपकरणों का प्रयोग किया जाता है। जो परम्परागत शिक्षा प्रणाली में प्रयुक्त किया जाता है। वास्तव में दूरस्थ शिक्षा में सतत् मूल्यांकन की प्रक्रिया, स्वमूल्यांकन, अधिन्यास द्वारा आन्तरिक मूल्यांकन एवं सत्रीय मूल्यांकन द्वारा चलती रहती है। मूल्यांकन का कार्य सिर्फ छात्र को सफ़ल/असफल घोषित करना नहीं है वरन् इससे परामर्श सेवाओं, स्व अध्ययन सामग्री छात्र सहायता सेवाओं में यथोचित परिवर्तन भी लाते हैं।

दूरस्थ शिक्षा में बहुत प्रकार के परीक्षणों का उपयोग किया जाता है जैसे अर्हता परीक्षण, निदानात्मक परीक्षण, उपलब्धि परीक्षण, वस्तुनिष्ठ परीक्षण। सर्वाधिक लोक प्रिय है। दूरस्थ शिक्षा में स्व-अध्ययन सामग्री द्वारा छात्र स्वयं का मूल्यांकन कर सकता है। अधिन्यास जो एक प्रकार का ग्रह-कार्य होता है उस पर अन्तिम परीक्षण का 20-30 प्रतिशथ अधिभार होता है।

इकाई - 16 में अनुसंधान की अवधारणा, प्रकृति एवं आवश्यकता को बताया गया है। इसके साथ यह भी देखा गया कि मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में अनुसंधान के कौन-कौन से क्षेत्र है और अनुसंधान इसमें गुणवत्ता एवं प्रभावकारिता कैसे सुनिश्चित करेगा। दूरस्थ शिक्षा में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा विकास की अवस्था में है जहाँ विकास की अपार सम्भावनायें हैं।

इकाई 13: मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की समस्यायें

संरचना

13.1 प्रस्तावना

13.2 उद्देश्य

13.3 दूरस्थ शिक्षा की प्रमुख समस्यायें

13.4 छात्र सम्बन्धी समस्यायें

13.5 दूरस्थ शिक्षक की समस्यायें

13.6 समन्वयक सम्बन्धी समस्यायें

13.7 दूरस्थ शिक्षा की अन्य समस्यायें

13.8 स्व–शिक्षा सामग्री के गुणात्मकता की समस्या

13.9 छात्र सहायता सेवाओं से सम्बन्धित समस्यायें

13.10 सारांश

13.11 अभ्यास कार्य

13.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

13.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें

13.1 प्रस्तावना

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा विश्व भर में भलीभाँति स्थापित हो चुकी है। विभिन्न इकाईयों में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के विभिन्न आयामों से आप भलीभाँति परिचित हो चुके हैं। देश ने अपने संवैधानिक उत्तरदायित्व को पूरा करने के लिए शिक्षा के सार्वजनीकरण के अनेक प्रयास किये। माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा को भी सर्व सुलभ बनाने का प्रयास किया । इसके लिए मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का प्रचार प्रसार किया गया। उच्च शिक्षा की माँग निरन्तर बढ़ती जा रही है। अनेक प्रयास के बाद भी बहुत सारे लोग उच्च शिक्षा से वंचित रह जा रहे हैं। वास्तव में परम्परागत संस्थाएं अपनी वर्तमान सीमित सुविधाओं के साथ छात्रों की उच्च शिक्षा के लिए बढ़ती माँग को पूरा करने में असमर्थ है अतः दूर शिक्षा विश्व की सर्वाधिक लोकप्रिय एवं औपचारिक शिक्षा व्यवस्था के विकल्प के रूप में विकसित हो रही है परन्तु इसकी अपनी अनेक समस्यायें है जिस पर विचार किया जाना आवश्यक है क्योंकि इन समस्याओं के कारण दूरस्थ शिक्षा की प्रभावशीलता एवं गुणात्मकता घटती है। इस इकाई में हम बिन्दुवार इन समस्याओं की चर्चा करेंगें।

13.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात आप इस योग्य हो जायेगें कि –

- मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की प्रमुख समस्याओं को जान जायेंगें।
- दूरस्थ शिक्षा की प्रमुख समस्याओं को सूचीबद्ध कर सकेंगें।

13.3 दूरस्थ शिक्षा की प्रमुख समस्यायें

दूरस्थ शिक्षा परम्परागत शिक्षा व्यवस्था से सम्पूर्ण रूप में भिन्न है। यह सम्पूर्ण व्यवस्था विविध जनसंचार माध्यम एवं प्रौद्योगिकी के उपयोग पर निर्भर है। इसी प्रकार से इस शिक्षा के उद्देश्य संगठन लक्ष्य स्वरूप, अध्यापक एवं अध्येता की प्रकृति एवं विशेषतायें भी औपचारिक शिक्षा से भिन्न होती है, और इसी प्रकार इसकी अपनी अलग समस्यायें भी होती है। इसकी प्रमुख समस्यायें निम्न है :–

- छात्र सम्बन्धी समस्यायें
- अध्यापकों की समस्यायें
- दूरस्थ शिक्षा के प्रति समाज का दृष्टिकोण
- जनसंचार माध्यमों के सुविधा की समस्या
- पृथकता की समस्या
- दूरस्थ शिक्षा की संगठन की समस्या
- छात्र सहयोग सेवाओं से सम्बन्धित समस्यायें
- गुणात्मकता की समस्या

आइए मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की कुछ प्रमुख समस्याओं पर विचार करें ।

13.4 छात्र सम्बन्धी समस्यायें

दूरस्थ शिक्षा भी छात्र केन्द्रित होती है। परन्तु औपचारिक शिक्षा से अलग दूरस्थ शिक्षा में अध्यापक एवं छात्र के मध्य अर्न्तक्रिया होती है। इन अध्येताओं की प्रकृति दूरस्थ शिक्षा के सामने अनेक समस्यायें उत्पन्न करती हैं जैसे :–

- दूरस्थ छात्र अधिकांशतः पूर्व में औपचारिक शिक्षा से जुड़े होने के कारण दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था के विषय में पूरी जानकारी नहीं रख पाते है।
- अध्येता दूरस्थ शिक्षा के विद्यार्थी होने के बाद भी वे दूरस्थ शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोंण नहीं रखते हैं।

- कई अध्ययनों से यह निष्कर्ष भी निकला है कि वे औपचारिक शिक्षा से मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा को कमतर मानते है।
- दूरस्थ अध्येता औपचारिक शिक्षा व्यवस्था की अधिक आदत होने के कारण स्व शिक्षण व स्व अधिगम पर अधिक विश्वास नहीं करते।
- दूरस्थ अध्येता मुख्यालय से दूर होने के कारण समस्त जानकारी समय से नही प्राप्त करने से दुविधा की स्थिति में रहते हैं।
- दूरस्थ छात्र अधिन्यास कार्यों को स्वंय अपने आप करने तथा अपनी गति से करने के कारण उदासीन रहते हैं उनमें ऊर्जा की कमी दिखायी देती है।
- दूरस्थ छात्र अधिकांशतः अध्ययन सम्बन्धों समस्या उत्पन्न होने के बाद भी परामर्श कक्षाओं में आना नहीं चाहते है।
- दूरस्थ छात्र स्वगति में अध्ययन करने के कारण अध्ययन में रूचि नही प्रदर्शित करते हैं।
- दूरस्थ अध्येता अपने अधिन्यास एवं कार्य, परियोजना कार्य इत्यादि को भी समय पर नही जमा करते है।

बोध प्रश्न –

1. दूरस्थ शिक्षा कैसी होती है ?

.....

.....

.....

2. दूरस्थ छात्र दूरस्थ शिक्षा के बारे में जानकारी क्यों नहीं रखते ?

.....

.....

.....

13.5 दूरस्थ शिक्षक सम्बन्धी समस्यायें

दूरस्थ शिक्षा की कई समस्यायें दूरस्थ शिक्षकों के कारण है जैसे कि :–

- दूरस्थ शिक्षक दूरस्थ शिक्षा के लक्ष्य, विशेषतायें प्रकृति एवं उद्देश्यों के प्रति सही जानकारी नही रखते हैं।
- अधिकांशतः दूरस्थ शिक्षकों में दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का अभाव पाया जाता है वे दूरस्थ अध्येता की प्रकृति से भी अनभिज्ञ रहते हैं।
- दूर शिक्षक इस शिक्षा व्यवस्था के प्रति पूर्ण लगाव का अनुभव नही कर पाते हैं

क्योंकि अध्येताओं की दूरी उन्हे शिक्षा से जुड़ाव नही उत्पन्न कर पाती है।

- अध्येताओं की दूरी होने के कारण इनकी आवश्यकताओं एवं उनकी समस्याओं के प्रति जागरूक रहना कठिन होता है।
- दूरस्थ अध्यापकों को पूरी तरह की प्रशिक्षण नही मिल पाने के कारण यह अध्येताओं को भी उचित जानकारी देने में असमर्थ हो जाते है।
- सीमित समय एवं संसाधनों के कारण ये दूर अध्येताओं को पूरा सहयोग नही कर पाते हैं।
- पूर्णकालिक नियुक्ति न होने के कारण अधिकतर संकाय अपने नियमित विभागों के प्रति अपेक्षाकृत अधिक सजग रहते हैं।
- दूरस्थ शिक्षकों के लिए विशेषकर शैक्षिक उपबोधकों के लिए मुख्यालय पृथक शिक्षण समाग्रियां या जानकारी नही भेजता जिसके कारण उन्हें अधिकतर अपने शिक्षण (परामर्श) कार्य हेतु उपयुक्त पाठ्यक्रम की जानकारी नही हो पाती है।
- दूरस्थ शिक्षकों को अधिकांशतः परामर्श के तरीकों एवं दूरस्थ अध्येताओं की वास्तविक समस्याओं की जानकारी नही हो पाती है। दूरस्थ अध्यापकों के पास आवश्यक कौशलों का अभाव रहता है।
- दूरस्थ अध्यापक मुख्यालय से आवश्यक तकनीकी तथा प्रशासनिक सहयोग से वंचित रहते है।
- दूरस्थ शिक्षकों पर अत्यधिक संचालित पाठ्यक्रमों का भार रहता है। और वे प्रायः अपने परिश्रमिक के बारे में ही सोचते है।
- दूरस्थ शिक्षा की प्रकृति से दूरस्थ शिक्षक प्रायः परिचित नही होते है।

बोध प्रश्न –

3. दूरस्थ शिक्षिकों में दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था के प्रति कैसा दृष्टिकोंण होता है ?

.....

.....

.....

4. शिक्षक उचित जानकारी देने में असमर्थ क्यों होते हैं ?

.....

.....

.....

5. क्या दूरस्थ शिक्षक दूर शिक्षा की प्रकृति से भली–भॉति परिचित होते हैं ?

.....

.....

.....

13.6 समन्वयक सम्बन्धी समस्यायें

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का संगठन आम औपचारिक शिक्षा व्यवस्था से अलग प्रकार का होता है। इसका कार्यक्षेत्र विस्तृत एवं व्यापक होता है। इसका सम्पूर्ण संगठन एवं प्रशासन विकेन्द्रीकृत होता है। मुख्यालय अपने सम्पूर्ण पाठ्यक्रमों के संचालन हेतु अपने क्षेत्रीय अध्ययन केन्द्रों पर निर्भर रहते है। मुक्त विश्वविद्यालय एवं मुक्त विद्यालय अपने सम्पूर्ण क्षेत्रों को क्षेत्रीय केन्द्रों में बांटकर उनके अधिकार क्षेत्र में अनेक अध्ययन केन्द्रों को रख देते है। ये अध्ययन केन्द्र इन क्षेत्रीय केन्द्रों की देख–रेख मे कार्य करते है और इनसे ये सूचनाओं का आदान–प्रदान करते है परन्तु सम्बन्धों के इतने बड़े जाल के बन जाने से ढीलापन आ जाता है।

- अधिकांश सूचनायें समय से प्रेषित नही होती है।
- सूचनाओं का स्पष्टीकरण भी बाधित हो जाता है।
- अध्ययन केन्द्रों एवं क्षेत्रीय केन्द्रों के क्रियाकलापों का पर्यवेक्षण नही हो पाता है।
- पाठ्यक्रमों का संचालन तो नोटिस या सूचना से प्रारम्भ हो जाता है परन्तु स्व शिक्षण सामग्री का निर्माण व प्रेषण सही तरीके से नही हो पाता है।
- अत्याधिक प्रकार के पाठ्यक्रम चलाये जाने से उनकी गुणात्मकता एवं उपयोगिता को बरकरार रखना कठिन हो जाता है।
- क्षेत्रीय स्तर पर प्रबन्धन पूर्णतया अशंकालिक विभाग द्वारा संचालित होता है अतः पूर्ण रूचि एवं संलग्नता का अभाव पाया जाता है।
- क्षेत्रीय केन्द्रों एवं अध्ययन केन्द्रों की समस्याओं का निस्तारण समय पर नही हो पाता है।
- छात्र सहायता सेवाओं के प्रबन्धन में भी समस्या आती है।
- अधिकांशतः प्रबन्धन में स्थानीय समस्याओं की उपेक्षा हो जाती है।
- दूरस्थ शिक्षा में केन्द्रीय प्रबन्धन में क्षेत्रीय एवं अध्ययन केन्द्रों की सहभागिता नही होती है।
- परामर्श कक्षाओं, कार्यशालाओं का संचालन, परीक्षा संचालन जैस क्रियाकलाप भी मुख्यालय द्वारा पर्यवेक्षित नही किये जाते इससे गुणात्मकता को बनाये रखना कठिन होता है।

बोध प्रश्न–

6. दूरस्थ शिक्षा का संचालन कैसा होता है ।

.....

.....

.....

7. क्षेत्रीय स्तर पर दूरस्थ शिक्षण संस्थानों के क्रियाकलापों को कौन संचालित करता है ?

.....

.....

.....

8. दूरस्थ शिक्षण संस्थानों का प्रशासन कैसा होता है?

.....

.....

.....

9. दूरस्थ शिक्षण संस्थानों में पर्यवेक्षण क्यों कठिन होता है?

.....

.....

.....

10. अध्ययन केन्द्र की देख–रेख कौन करता है।

.....

.....

.....

11. सूचना के प्रेषण में सबसे बड़ी समस्या क्या होती है ?

.....

.....

.....

13.7 दूरस्थ शिक्षा की अन्य समस्याएं

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के प्रति एक सबसे बड़ी समस्या इसके प्रति दृष्टिकोंण का न होना है। भारत की अधिकांश जनसंख्या गांवों में बसती है जहां पर औपचारिक शिक्षा के प्रति भी जागरूकता की पर्याप्त कमी पायी जाती है फिर मुक्त एवं दूर शिक्षा के प्रति समझ की कल्पना और भी कठिन हैं। शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी सच यही है कि लोग औपचारिक व नियमित शिक्षा को अधिक महत्व देते है। अत्याधिक जागरूक लोग ही मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा को चुनते है जिनकों यह समझ आता है कि मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा से प्राप्त शिक्षा का नियमित शिक्षा के बराबर ही महत्व है। आज भी यह सत्य है कि मुक्त एवं दूरस्य शिक्षा को दूसरे दर्जे की शिक्षा माना जाता है। दूरस्थ विद्यार्थी घर में रहकर अपनी रूचि के पाठ्यक्रम चयन कर स्वगति से अध्ययन करने हेतु स्वतंत्र होता है। इसके अतिरिक्त अपनी घरेलू जिम्मेदारी के साथ सामाजिक प्रतिबद्धतायें होती है। अतः वह अकेलेपन को झेलने को मजबूर होते है। पृथकता की समस्या दो प्रकार की होती है :–

- दूरस्थ अध्येता अपने नियमित कक्षाओं के अभाव के कारण अपने सहपाठियों से दूर रहते है इससे उसे अभिप्रेरण, प्रतियोगिता अपने सहपाठियों से सहयोग नही मिल पाता। मिलजुलकर सीखने के लाभ से भी वे वंचित रह जाते है और उनकी अपनी शैक्षिक समस्याओं को लेकर अकेले पड़ जाते है।
- दूरस्थ शिक्षा की एक प्रमुख विशेषता अध्यापक एवं अध्येता के मध्य दूरी है। नियमित शिक्षा का यह घनात्मक पक्ष है जबकि मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में इस कमी को दूर करने हेतु परामर्श कक्षाओं का आयोजन एवं दत्त कार्य प्रदान किये जाते है, जिससे कि अल्प काल के लिए ही अध्येता एवं अध्यापक के मध्य द्विमार्गी सम्प्रेषण हो सकें।
- इसके अतिरिक्त यह भी प्रयास किया जाता है कि स्वशिक्षण सामाग्री की संरचना सुस्पष्ट, विचारपूर्ण तथा उद्देश्यपरक हो। शिक्षक दत्त कार्यों एवं परियोजना कार्य में उपयुक्त टिप्पणी देकर द्विमार्गी सम्प्रेषण को जन्म देता है। शिक्षा का एक बहुत बड़ा उद्देश्य व्यक्तित्व का सम्पूर्ण निर्माण है जो कि बिना अध्यापक के कठिन होता है।

13.8 स्व–शिक्षण सामग्री की उपलब्धता और गुणात्मकता की समस्या

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था पूर्णतया स्व शिक्षण सामाग्री के उत्पादकता एवं गुणात्मकता पर निर्भर करती है। स्व शिक्षण सामाग्री ही मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का जीवंत पक्ष है। यह दूरस्थ शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों के लिए सहयोग के रूप में

प्रदान की जाती है। यह व्यवस्थात्मक एवं बोधगम्य होती है तथा सम्पूर्ण पाठ्यवस्तु को अपने मे समेटे रहती है। परन्तु अधिकांशतः अध्ययनों से यह निकल कर आया है कि स्वशिक्षण सामग्री सम्पूर्ण मानकों को पूरा नही करती है यह भी अध्ययन के परिणाम रहे कि अधिकतर स्वशिक्षण सामाग्री को भाषा क्लिष्ट हो जाती है या स्थानीय आवश्यकता को देखकर भाषा माध्यम नही चुना गया। स्वशिक्षण सामाग्री कभी–कभी तैयार भी नही रहती है और पाठ्यक्रम को संचालित करने का फैसला ले लिया जाता है और दूरस्थ अध्येता पूरे सत्र पाठ्यवस्तु का अभाव झेलते रहते है।

बोध प्रश्न–

12. स्व–अध्ययन सामग्री कैसी होनी चाहिए ?

.....

.....

.....

13. स्व–शिक्षण सामग्री की भाषा पर टिप्पणी करें ?

.....

.....

.....

14. अध्यापक से दूरी से दूरस्थ अध्येता को क्या समस्या होती है?

.....

.....

.....

15. पाठ्यक्रमों की गुणात्मकता किन बातों पर निर्भर करती है ?

.....

.....

.....

13.9 छात्र सहयोग सेवाओं से सम्बन्धित समस्यायें

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था अध्येताओं को अनेक सहयोग सेवायें प्रदान करती है जिसमें कि सम्पर्क कार्यक्रमों का आयोजन सूचना सेवायें इत्यादि है। परन्तु अधिकांशतः यह देखा जाता है कि सम्पर्क कार्यक्रमों के आयोजन मे पूर्ण गुणात्मकता एवं उपयोगिता प्रदर्शित नही हो पाती है। सम्पर्क कार्यक्रमों के आयोजन के लिए अध्येताओं की सुविधा एवं ध्यान केन्द्रित किया जाता है परन्तु दूरस्थ अध्यापकों की सुविधायें उपेक्षित है और दोनों की सुविधा को देखकर सम्पर्क कार्यक्रमों का अयोजन

एक दुरूह कार्य बन जाता है।

- सम्पर्क कार्यक्रम अधिकांशतः कक्षा शिक्षण का स्वरूप ले लेते है। क्योंकि अध्यापक एव अध्येता दोनों ही सम्पर्क कार्यक्रमों के स्वरूप से अनभिज्ञ होते हैं।
- सम्पर्क कार्यक्रम के लिए दूर अध्येता पहले से तैयार होकर समस्या लेकर नही आते हैं वे निर्धारित अवधि में ही सम्पूर्ण पाठ्यवस्तु को केवल अध्यापक से शिक्षण कर देने की आशा करते है।
- दूरस्थ अध्यापक को दूर अध्येता की इस प्रवृत्ति से दबाव में आकर सम्पूर्ण विषय सामग्री का शिक्षण करना पड़ता है।
- दूरस्थ अध्यापकों मे प्रायः सम्पर्क कक्षाओं के लिए उदासीनता प्रदर्शित होती है क्योंकि नियमित सम्पर्क न होने के कारण दूर अध्येताओं से नियमित विद्यार्थियों की तरह लगाव नहीं हो पाता है।
- अधिकांशतः सम्पर्क कक्षाओं के आयोजन में पूर्व स्वशिक्षण सामाग्री प्रेषित नही की जाती है। स्वशिक्षण सामाग्री के अभाव में अध्यापक एवं अध्येता दोनों ही सम्पर्क कक्षाओं के उद्देश्यों को पूरा नही कर पाते हैं।
- दूरस्थ अध्येता सम्पर्क कक्षाओं का पूरा लाभ लेने मे उदासीनता प्रदर्शित करते है जिससे कि इसका प्रभाव उनके दत्त कार्य परियोजना कार्य एवं अन्य व्यावहारिक एवं प्रायोगिक कार्यों में परिलक्षित होता है।

सम्पूर्ण दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था की नींव जनसंचार माध्यम एवं सूचना प्रौद्योगिकी है। इसकी सबसे बड़ी दुविधा यह है कि भारत की अधिकांश जनसंख्या भी सभी संचार माध्यमों के उचित प्रयोग से अनभिज्ञ है। ग्रामीण क्षेत्रों में टी0वी0, कम्प्यूटर जैसे माध्यमों की भी कमी है और अधिकतर अध्येता कम्प्यूटर एवं इण्टरनेट का उपयोग करना नही जानते है। इसीलिए वे जनसंचार माध्यमों से उचित रूप में लभान्वित नही होते है। जनसंचार माध्यमों के प्रयोग की प्रवृत्ति का अभाव भी इसका एक प्रमुख कारण है।

बोध प्रश्न –

16. दूरस्थ शिक्षक एव शिक्षार्थी में लगाव क्यों नहीं होता ?

.....

.....

.....

17. सम्पर्क कार्यक्रम कक्षा शिक्षण का स्वरूप क्यों ले लेते हैं ?

.....

.....

.....

13.10 सारांश

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में अनेक समस्यायें है और इन समस्याओं पर ध्यान दिये जाने की आवश्यकता है जिससे कि इसकी संख्यात्मक वृद्धि से गुणात्मकता भी बढ़े। क्योंकि मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा भविष्य की शिक्षा व्यवस्था है।

13.11 अभ्यास कार्य

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा धीरे–धीरे बहुत लोकप्रिय होती जा रही है किन्तु इसें भी अनेक प्रकार की समस्याएं आती हैं । कुछ समस्याएं दूरस्थ छात्रों एवं अध्यापकों से सम्बन्धित होती है। कुछ अध्ययन केन्द्र के समन्वयक सम्बन्धी होती है। मुक्त शिक्षा के प्रति उचित दृष्टिकोंण का अभाव, जन संचार माध्यमों की कमी, छात्र सहायता सम्बन्धी आदि अन्य समस्याएं भी हैं।

- मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की कौन कौन सी समस्यायें है इस पर विस्तार से चर्चा कीजियें।
- दूरस्थ विद्यार्थियों से मिलना ।

13.12 बौद्ध प्रश्नों के उत्तर

1. दूरस्थ शिक्षा छात्र केन्द्रित होती है।
2. पूर्व में औपचारिक शिक्षा से जुड़े होने के कारण वे दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था के बारे में जानकारी नहीं रखते ।
3. दूरस्थ शिक्षकों में दूर शिक्षा व्यवस्था के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोंण का अभाव पाया जाता है।
4. दूरस्थ शिक्षक पूरी तरह प्रशिक्षण न मिलने के कारण अध्येताओं को उचित जानकारी देने में असमर्थ हो जाते हैं।
5. नहीं दूर शिक्षक दूरस्थ शिक्षा की प्रकृति से परिचित नहीं होते।
6. दूरस्थ शिक्षा का संचालन क्षेत्रीय एवं अध्ययन केन्द्रों की सहायता से होता है।
7. समन्वयक क्षेत्रीय स्तर पर संस्थानों के क्रियाकलापों को संचालित करता है।
8. दूरस्थ शिक्षण संस्थानों का प्रशासन विकेन्द्रित होता है।
9. अध्ययन केन्दों का इतना बड़ा जाल होने के कारण इसका पर्यवेक्षण कठिन होता है।
10. समन्वयक अध्ययन केन्द्र की देखरेख करता है।

11. अध्ययन केन्द्रों का जाल सूचना के सम्प्रेषण की सबसे बड़ी समस्या है।
12. स्व अधिगम सामग्री व्यवस्थात्मक एवं बोधगम्य होनी चाहिए।
13. स्व अधिगम सामग्री की भाषा सरल होनी चाहिए तथा स्थानीय आवश्यकताओं के अनुकूल होनी चाहिए ।
14. विद्यार्थी पाठ के स्पष्ट समझ न आने पर शिक्षक से कठिनाई का निवारा नहीं कर सकता।
15. स्व अध्ययन सामग्री की गुणात्मकता भाषा, व्यवस्थात्मकता तथा बोधगम्यता पर निर्भर करती है।
16. दूरस्थ शिक्षक एवं शिक्षार्थी में नियमित सम्पर्क न होने के कारण लगाव नहीं होता।
17. दूरस्थ विद्यार्थी तथा शिक्षक दोनों ही सम्पर्क कार्यक्रम के स्वरूप से अनभिज्ञ होते हैं।

13.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- गुप्ता, एस0 पी0 –भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्यायेः इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन, 1998
- शर्मा, आर0 ए0 – डिस्टैन्स ऐजूकेशन, मेरठः ईगल बुक्स इन्टरनेशनल, 1995
- शर्मा, आर ए0 – दूरवर्ती शिक्षाः मेरठ सूर्या पब्लिशिंग 1996
- साहू, पी0 के0 – ओपन लर्निंग सिस्टमः न्यू देल्ही : उप्पल पब्लिकेशन्स, 1994
- साहू, पी0 के0 – ऐजूकेशनल टेक्नोलोजी इन डिस्टेनसः न्यू देल्हीः अरावती,
- Balasubramaniam, S. (1998). The Status of Correspondence courses in India. University News. New Delhi: Association of Indian Universities.
- Bates, A.W. (1984). The Role of Technology in Distance Education. London

इकाई 14 : दूरस्थ शिक्षा में प्रशिक्षण

संरचना

14.1 प्रस्तावना

14.2 उद्देश्य

14.3 दूरस्थ शिक्षकों एवं कर्मचारियों हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम का स्वरूप

14.4 दूरस्थ शिक्षा का प्रशिक्षार्थी

14.5 दूरस्थ शिक्षा का का प्रशिक्षक

14.6 दूरस्थ शिक्षक की विशेषताएं

14.7 दूरस्थ शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम

14.8 दूरस्थ प्रशिक्षण की प्रमुख विधियाँ

14.9 सारांश

14.10 अभ्यास कार्य

14.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

14.12 उपयोगी पुस्तकें

14.13 बोध प्रश्नों के उत्तर

14.14 कुछ उपयोगी पुस्तकें

14.1 प्रस्तावना

अब तक आप दूरस्थ शिक्षा के विविध आयामों से सुपरिचित हो गये हैं। इस इकाई में आइए में हम यह जानने का प्रयास करें कि प्रशिक्षण जैसे महत्वपूर्ण कार्यक्रम की प्रकृति दूरस्थ शिक्षा में किस प्रकार की है। दूरस्थ शिक्षा में प्रशिक्षण कार्यक्रम किन स्तरों पर उपलब्ध हैं। दूरवर्ती शिक्षा सार्वजनीकरण के लक्ष्य को पूरा करने का महत्वपूर्ण प्रयास है। इस प्रणाली कि विशेषता यह है कि इसमें छात्र और शिक्षक के मध्य भौगोलिक दूरी होती है। अधिन्यास, परामर्श सत्र, सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीक द्वारा इस दूरी को कम करने का प्रयास किया जाता है। ये ही दूरस्थ शिक्षा की प्रमुख विशेषतांए हैं। दूरस्थ शिक्षा में छात्र सहायता सेवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। प्रारम्भ में दूरस्थ शिक्षा संस्थान सिर्फ सामान्य विषयों के पाठ्यक्रम चलाते थे किन्तु धीरे–धीरे व्यवसायिक एवं तकनीकी पाठ्यक्रम भी इसके माध्यम से प्रारम्भ कर दिये गये।

इस इकाई को हम यह समझने का प्रयास करेंगे, प्रथम वे शिक्षक/परामर्शदाता

जो दूरस्थ शिक्षा से जुड़ते हैं परन्तु परम्परागत शिक्षा का अंग होने के नाते दूरस्थ शिक्षा प्रणाली से सुपरिचित नहीं होते। इन दूरस्थ शिक्षकों एवं अन्य कर्मचारियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम की व्यवस्था करना दूरस्थ संस्थानों का कार्य है। दूरस्थ शिक्षकों एवं अन्य कर्मचारियों के लिए प्रशिक्षण के स्वरूप, विधि आदि की चर्चा हम यहाँ पर करेंगे।

14.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आप जान जायेंगे –

- मुक्त एवं दूरस्थ में प्रशिक्षण की आवश्यकता से परिचित हो सकेंगे ।
- दूरस्थ शिक्षकों एवं कर्मचारियों हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम के स्वरूप से परिचित हो सकेंगे ।
- दूरस्थ शिक्षा में प्रशिक्षार्थी की भूमिका समझ सकेंगे।
- दूरस्थ शिक्षा में प्रशिक्षक के दायित्व को जान सकेंगे ।
- दूरस्थ प्रशिक्षक की विशेषताओं को समझ सकेंगे ।
- प्रशिक्षण कार्यक्रम की प्रक्रिया को जान सकेंगे ।

14.3 दूरस्थ शिक्षकों एवं कर्मचारियों हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम का स्वरूप

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली शिक्षा के सार्वजनीकरण हेतु एक उद्देश्यपूर्ण प्रयास है। इस प्रणाली की सामान्य विशेषता यह है कि इसमें शिक्षार्थी शिक्षक से दूर होता है, सम्प्रेषण के बहु माध्यमों का प्रयोग किया जाता है, पाठ्य सामग्री का निर्माण एवं प्रस्तुतीकरण व्यवस्थित होता है, अधिगम को प्रभावी बनाने हेतु छात्र–सहायता सेवाएँ प्रदान की जाती है तथा शैक्षिक संरचना का प्रारूप पत्राचार शिक्षा की तुलना में अधिक विकसित होता है।

दूरस्थ शिक्षकों एवं कर्मचारियों से तात्पर्य इस प्रकार के प्रशिक्षण से है जिसके प्राप्त करने से वे इस प्रणाली को सुचारू रूप से संचालित करने में सक्षम हो सकें। इस प्रकार का प्रशिक्षण इस शिक्षा प्रणाली पर दीर्घकालीन प्रभाव डालने में सक्षम होता है। इस प्रकार के प्रशिक्षण से नये दूरस्थ शिक्षण संस्थानों को प्रारम्भ करने हेतु दूरस्थ शिक्षकों की आवश्यकता को पूरा किया जा सकता है। शिक्षा प्राप्त करने वालों की बढ़ती जनसंख्या, नवीन सामाजिक एवं आर्थिक आवश्येकताओं आदि के कारण दूरस्थ शिक्षा की माँग निरन्तर बढ़ती जा रही है। अतः इसकी पूर्ति हेतु नये संस्थानों को खोलने के साथ–साथ पुरानी दूरस्थ संस्थाओं का पुनर्निर्माण तथा दूरस्थ शिक्षा को एक नई दिशा की आवश्यकता है। यह कार्य दूरस्थ शिक्षकों को समुचित प्रशिक्षण प्रदान करने से ही सम्पन्न किया जा सकता है।

दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में कुछ विशिष्ट एवं सामान्य पदों पर अनेक ऐसे लोग होते हैं जो औपचारिक शिक्षा प्रणाली से आये हुए होते हैं। इन्हें अपने नये कार्य में समस्याएं आती हैं – (1) उन्हें नवीन परिस्थिति के प्रति शीघ्र समायोजित होना होता है, तथा (2) उन्हें दूरस्थ शिक्षा को आगे बढ़ाने में धनात्मक सहयोग प्रदान करना होता है जो समाज एवं विशेष रूप से शिक्षा पर दीर्घकालीन प्रभाव डाल सके। इसमें से पहली समस्या का समाधान तो 'कार्यशाला', 'सेमिनार' आदि के आयोजन से हो भी सकता है किन्तु दूसरी समस्या का समाधान किसी भी तरह उच्च स्तरीय व्यावसायिक प्रशिक्षण के बिना सम्भव नहीं होगा। अतः दूरस्थ शिक्षकों को व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान किया जाना नितान्त आवश्यक है।

इन संस्थानों में विभिन्न शैक्षणिक, गैर शैक्षणिक एवं तकनीकी अथवा प्रशासनिक पदों पर अधिकांश लोग दूसरे क्षेत्रों एवं दूसरी संस्थाओं से आये हुए हैं। इसका कारण इस प्रणाली का एक आकस्मिक उदय रहा है किन्तु अब दूरस्थ शिक्षा प्रणाली एक स्थापित प्रणाली है तथा दूरस्थ शिक्षा' एक शैक्षिक अनुशासन का रूप ले चुकी है। अतः भविष्य में दूरस्थ शिक्षा' के क्षेत्र में 'कैरियर' की अनेक संभावनाएं विकसित हो रही हैं। इसीलिए दूरस्थ शिक्षा में सेवा–पूर्व प्रशिक्षण की बात अब आम रूप से होने लगी है। कई विश्वविद्यालयों ने इस क्षेत्र में कार्य करना भी प्रारम्भ कर दिया है। भारत में इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा दूरस्थ शिक्षा में डिप्लोमा पाठ्यक्रम का प्रारम्भ भी इस दिशा में एक उल्लेखनीय कदम है।

अभी तक दूसरे क्षेत्रों एवं संस्थानों से प्रतिभा सम्पन्न लोगों को लेकर दूरस्थ शिक्षा संस्थाएं अपना काम चला रही हैं किन्तु निकट भविष्य में उन्हें प्रशिक्षित कर्मी मिलने लगेंगे। अतः दूरस्थ शिक्षा को कैरियर के रूप में चुनने वाले अब इसके सेवा–पूर्व प्रशिक्षण अर्थात् इस अनुशासन से सम्बन्धित पाठ्यक्रमों की ओर आकृष्ट होने लगे हैं।

बोध प्रश्न–

1. दूरस्थ शिक्षा में कार्यक्रम की आवश्यकता क्यों होती है ?

.....

.....

.....

2. व्यावसायिक प्रशिक्षण से आप क्या समझते हैं ?

.....

.....

.....

3. मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में कैरियर की क्या संभावनाएं हैं ?

.....

.....

.....

14.4 : दूरस्थ शिक्षा का प्रशिक्षार्थी

दूरस्थ शिक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम में दो समूह आता है। प्रथम –वे जिनको प्रशिक्षित किया जाना है तथा द्वितीय – वे जिनके द्वारा प्रशिक्षण दिया जाना है । दूसरे शब्दों में इन्हें हम प्रशिक्षणार्थी एवं प्रशिक्षक कह सकते हैं। जहाँ तक प्रशिक्षणार्थियों का सम्बन्ध हैं, इन्हें दो प्रमुख वर्गो में रखा जा सकता हे –

- वे प्रशिक्षार्थियों जिन्हें दूरस्थ शिक्षा प्रक्रिया में सक्रिय योगदान देना होता है। चूँकि इस प्रक्रिया में विभिन्न प्रकार के कार्य होते हैं। अतः विभिन्न कार्यो हेतु आवश्यक कौशलों की दृष्टि से विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण की भी आवश्यकता होती है। इस प्रकार दूरस्थ शिक्षा के व्यावसायिक प्रशिक्षार्थियों को उनके कार्य के अनुरूप प्रशिक्षण की आवश्यकता के आधार पर निम्नलिखित वर्गो में रखा जा सकता है – प्रणाली के विभिन्न स्तरों पर कार्य करने वाले प्रशासक एवं नियोजनकर्ता । पाठ्यक्रम निर्माणकर्ता, कोर्स लेखक, सम्पादक, समीक्षक, पाठ्यक्रम समन्वयक, ट्यूटर, काउन्सलर्स, मूल्यांकनकर्ता एवं ग्राफिक्स कलाकार । आडियो प्रोडयूसर्स, स्क्रिप्ट लेखक, मूल्यांकनकर्ता, विशेष प्रभाव उत्पन्न करने वाले कार्मिक । शैक्षिक तकनीकी विशेषज्ञ, विभिन्न कार्यो हेतु तकनीकी स्टाफ, सम्प्रेषण माध्यमों के विशेषज्ञ। विभिन्न सेवाओं के सहायक जैसे– प्रयोगशाला सहायक, लाइब्रेरियन आदि ।
- प्रशिक्षणार्थी से तात्पर्य ऐसे लोगों से है जिनका प्रत्यक्ष रूप से इस कार्यक्रम से कोई लेना–देना नहीं होता है किन्तु उनकी इस प्रणाली की सफलता अथवा असफलता में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। आज के युग में इस प्रणाली की सफलता आवश्यक हैं। अतः हमारा उद्देश्य ऐसे महत्वपूर्ण लोगों को इस प्रणाली की विशेषताओं से अवगत कराना है है। इसीलिए हम उन्हें गैर–व्यावसायिक प्रशिक्षणार्थी की संज्ञा प्रदान कर रहे हैं। इन लोगों को व्यापक रूप से निम्नलिखित वर्गो में रखा जा सकता है –
- नीति निर्माता जो इस प्रणाली को लोकप्रिय बनाने हेतु इसके पक्ष में बयान देते हैं, इनसे सम्बन्धित संस्थाओं की स्थापना को प्रोत्साहित करते हैं तथा इन सबके लिए संसाधनों की व्यवस्था का प्रयास करते हैं।
- दूरस्थ शिक्षा हेतु लक्षित शिक्षार्थी समूहों के विभिन्न प्रकार जैसे– स्कूली छात्र, विश्वविद्यालयी छात्र, विभिन्न व्यवसायों से सम्बन्धित लोग, उच्च आकांक्षा स्तर वाले प्रौढ़ व्यक्ति एवं गृहणियाँ, औपचारिक शिक्षा से वंचित अथवा किसी कारणवश बीच में ही शिक्षा छोड़ देने वाले व्यक्ति आदि। इन सभी समूहों के लोगों को इस प्रकार की जानकारियों की आवश्यकता होती

है कि वे जो कुछ करना चाहते हैं उसे कैसे कर सकते हैं । इसके लिए दूरस्थ शिक्षण संस्थाएं प्रत्यक्ष रूप में कार्य कर सकती हैं।

- विभिन्न प्रकार के सम्पर्क अभिकर्ता जैसे–स्थानीय समुदाय के नेता/कार्यकर्ता, अभिभावक, अन्य स्थानीय व्यवसायी आदि । दूरस्थ शिक्षा के कार्यक्रम सम्बन्धी सूचनाओं से इन सभी को अवगत रहने की इसलिए आवश्यकता होती है क्योंकि ये अपने से जुड़े समूहों या व्यक्तियों को समय–समय पर वांछित जानकारी प्रदान कर सकें ।

बोध प्रश्न–

4. दूरस्थ शिक्षा में प्रशिक्षार्थी कौन होते हैं ?

.....

.....

.....

5. दूरस्थ शिक्षा के प्रशिक्षार्थियों को कितने वर्गो में विभक्त किया जा सकता है?

.....

.....

.....

6. दूरस्थ शिक्षा हेतु लक्षित विद्यार्थी समूह क्या–क्या हो सकते हैं ?

.....

.....

.....

14.5 दूरस्थ शिक्षा का प्रशिक्षक

दूरवर्ती शिक्षकों/कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षक के रूप में योग्य स्रोत व्यक्तियों को प्राप्त कर पाना बहुत कठिन है। सामान्य अध्यापक शिक्षा के प्रशिक्षकों के समान दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में प्रशिक्षकों की सुविधा नहीं है। वर्तमान समय में स्वयं दूरस्थ शिक्षक ही इस शिक्षा को प्रदान करने के लिए दूसरों को प्रशिक्षित करने का कार्य भी करते हैं। इसलिए दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में परम्परागत प्रशिक्षक नहीं होते हैं।

दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत शिक्षक एवं अन्य कर्मचारी प्रायः दूसरे संस्थाओं से आते हैं तथा अपने ज्ञान एवं पूर्व अनुभवों के आधार पर नये कार्य हेतु आवश्यक कौशल का अर्जन कार्य करते–करते ही कर लेते हैं। इस प्रकार वे स्वयं ही अधिगम–प्रक्रिया से गुजरते रहते हैं। अभी तक देखने में यही आया है कि इनमें से

अधिकांश शिक्षक अपना कार्य सफलता पूर्वक करने लगते हैं। इसके अतिरिक्त दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि दूरस्थ शिक्षा को अपनाने वाले व्यक्ति प्रायः प्रशिक्षित एवं अनुभवी शिक्षक, प्रशासक, विशेषज्ञ आदि होते हैं। अतः उनमें दूरस्थ शिक्षा से सम्बन्धित कुछ कौशलों एवं सूचनाओं का पहले से ही समावेश होता है। अतः ये कौशल एवं सूचनाएं नये प्रशिक्षार्थियों एवं पहले से कार्यरत दूरस्थ शिक्षकों के मध्य अन्तःक्रिया में सहायक होती हैं।

बोध प्रश्न –

7 दूरस्थ शिक्षा का प्रशिक्षक कौन होता है ?

.....

.....

.....

8. दूरस्थ शिक्षा के प्रशिक्षण की प्रक्रिया कैसी होती है ?

.....

.....

.....

14.6 दूरस्थ प्रशिक्षक की विशेषताएं

- दूरस्थ शिक्षा में शिक्षण सामग्री का सर्वाधिक महत्व है जो मुद्रित, श्रव्य या दृश्य माध्यमों से प्रदान की जाती है। अतः इस प्रणाली की विश्वसनीयता के लिए इसे यह उच्च गुणवत्ता वाली होनी चाहिए। इसके साथ ही शिक्षण सामग्री लोगों की सामाजिक एवं शैक्षणिक उपयोगिता की दृष्टि से भी प्रासंगिक होनी चाहिए। ऐसा तभी सम्भव हो सकता है जब इस प्रकार की सामग्रियों के निर्माण में लगे लोग कौशलों से युक्त हों। इसके लिए प्रशिक्षकों में उच्चस्तरीय शैक्षिक एवं तकनीकी कौशलों का होना अति आवश्यक है।
- दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के अन्तर्गत लगभग सभी कार्यो के सम्पादन में एक से अधिक लोगों की भूमिका होती है। इसमें कदाचित ही कोई ऐसा कार्य हो जिसे किसी एक व्यक्ति द्वारा बिल्कुल अलग रहकर किया जाता है। यहाँ के लोग तैयारी के उद्देश्य मे एक दूसरे से जुड़े हुए एवं सम्बन्धित होते हैं। इस प्रकार यह सफलता एक–दूसरे के सहयोग से ही प्राप्त हो सकती है। इसलिए इनमें टीम वर्क की प्रकृति के होने चाहिए। इसके लिए उन्हें उसी प्रकार का प्रशिक्षण देकर तैयार भी किया जाना चाहिए। अतः शिक्षकों में टीम भावना के विकास के लिए प्रशिक्षक में भी सहयोग की भावना का होना अति आवश्यक है।

- दूरस्थ शिक्षा को सफल एवं सर्वस्वीकार्य बनाने के मार्ग में कठोर दृष्टिकोंण का होना बाधक होता है जबकि लचीला दृष्टिकोंण इसमें सहायक होंता है। लचीलापन प्रशिक्षणार्थियों को न केवल नवीन परिस्थितियों के साथ तालमेल बैठाने में सहायता प्रदान करता है अपितु एक–दूसरे से विभिन्न प्रकार के समायोजनों में भी सहायक होता है। दूरस्थ शिक्षक का लचीलेपन का गुण ही उसे शिक्षक, तकनीशियन, निर्माता, प्रशासक आदि विभिन्न भूमिकाओं का निर्वहन करने में सहायता करता है। अतः प्रशिक्षक में भी इस गुण का होना आवश्यक है जिससे वह प्रशिक्षणार्थियों को इसकी उपयोगिता से अवगत करा सके।

- जहाँ तक दूरस्थ शिक्षा का सम्बन्ध है, इसके कार्यकर्ताओं में तो इतना होना परम आवश्यक है। नये संस्थानों की स्थापना/नये पाठ्यक्रमों का प्रारम्भ, समाज के विभिन्न वर्गो तक इन्हें पहुंचाना, कम लागत का ध्यान रखना, सामाजिक आवश्यकताओं को तनावग्रस्त, निराशायुक्त, चिंतित एवं उत्तेजित रख सकते हैं। इस प्रकार के दृष्टिकोंण का मूल आधार धैर्य ही हो सकता है। अतः प्रशिक्षकों को स्वयं धैर्यवान होना चाहिए जिससे वे अपने कार्य एवं व्यवहार में इसका प्रदर्शन करते हुए दूरवर्ती शिक्षकों में भी "धैर्य" जैसे गुणों का प्रतिपादन करने में सफल हो सकें।

- दूरस्थ शिक्षा स्वयं ही एक नवप्रवर्तन है तथा इसकी प्रकृति भी निरन्तर नव प्रवर्तनों को समाहित करते रहने की है। जिन नव प्रवर्तनों को यह प्रणाली अधिक से अधिक स्वीकार करती है, वे कोर्स प्रारूप, सम्प्रेषण माध्यम, लागत–लाभ, छात्र सहायक सेवाओं, प्रभावशाली शिक्षण–अधिगम विधियों एवं नवीन आवश्यकताओं के अनुरूप पाठ्यक्रम प्रदान करने से सम्बन्धित होते हैं। अतः दूरस्थ शिक्षा की इस नव प्रवर्तन ग्रहणकारी प्रकृति को बरकरार रखने के लिए इसके शिक्षकों/कार्यकर्ताओं में भी नव प्रवर्तन स्वीकार करने की प्रवृत्ति होनी चाहिए। इस प्रकार की प्रवृत्ति का विकास प्रशिक्षण के माध्यम से किया जा सकता है। किन्तु ऐसा तभी सम्भव है जब प्रशिक्षक स्वयं भी इस प्रकृति के हों अर्थात् वे स्वयं नव प्रवर्तक हों। अतः दूरस्थ शिक्षक प्रशिक्षकों का एक महत्वपूर्ण गुण उनका नव प्रवर्तक होना है।

बोध प्रश्न–

9. लचीले दृष्टिकोंण से आप क्या समझते हैं ?

.....

.....

10. प्रशिक्षक का धैर्यवान होने से क्या तात्पर्य है ?

.....

.....

11. दूरस्थ शिक्षक को नवाचारी क्यों होना चाहिए ?

.....

.....

14.7 दूरस्थ शिक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम

दूरस्थ शिक्षा एक जटिल प्रणाली है अतः इस प्रणाली के कर्मचारी को विभिन्न प्रकार की भूमिकाओं का भी निर्वहन करना पड़ता है। इन कार्मिकों की प्रथम भूमिका तो उन कार्यों एवं कर्तव्यों को पूरा करना होता है जिसके वे विशेषज्ञ होते हैं तथा मुख्य रूप से जिसके लिए वे नियुक्त होते हैं। अतः इस प्राथमिक कार्य हेतु उन्हें प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। द्वितीय, इन कार्मिकों को इस प्रणाली के कार्य तंत्र तथा भूमिका श्रृंखला के अन्तर्गत दूसरे साथियों के साथ कार्य करना होता है। अतः उन्हें इस बात का भी प्रशिक्षण मिलना चाहिए कि उनका कार्य किस रूप में दूसरे साथियों के कार्य से जुड़ा हुआ एवं सम्बन्धित है तथा इस कार्य तंत्र की सफलता के लिए वे किस प्रकार एक दूसरे से सहयोग कर सकते हैं। तृतीय, दूरस्थ शिक्षा के प्रशिक्षणार्थियों को इस प्रकार का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए जिससे वे मन, वचन एवं कर्म से इस प्रणाली के प्रति समर्पित हो सके क्योंकि इस प्रणाली की सफलता के लिए इसके शिक्षकों में प्रतिबद्धता आवश्यक है।

इन उपर्युक्त सिद्धान्तों को आधार मानकर ही दूरवर्ती शिक्षक–प्रशिक्षण हेतु विषय–वस्तु का निर्माण किया जाना चाहिए। अधिगम के तीनों पक्षों – ज्ञानात्मक, भावनात्मक एवं क्रियात्मक की दृष्टि से उपयुक्त एवं पर्याप्त विषय–वस्तु इस प्रशिक्षण के माध्यम से प्रदान की जानी चाहिए जिससे दूरवर्ती शिक्षा प्रणाली के विकास, रख–रखाव एवं विस्तार हेतु प्रभावशाली मानव संसाधन का निर्माण किया जा सके। अतः हमें विषय–वस्तु के निर्धारण हेतु विविध कार्यों के लिए प्रशिक्षण की आवश्यकताओं को जानना एवं समझना आवश्यक है।

बोध प्रश्न–

12. इस प्रणाली की सफलता के लिए क्यों आवश्यक है ?

.....

.....

.....

13. दूरस्थ कर्मचारी की विभिन्न भूमिकाएं बताइए ?

.....

.....

.....

14.8 दूरस्थ प्रशिक्षण की प्रमुख विधियाँ

दूरस्थ शिक्षा प्रशिक्षण हेतु निम्न विधियों का प्रयोग करते हैं ?

1. कार्यशाला (Workshops)
2. फील्ड कार्यक्रम ¼Field Programmes½
3. हस्त पुस्तिकाएं/मार्गदर्शिकाय (Handbooks/Guidelines)
4. अन्य दूरस्थ संस्थानों में प्रतिशत (Training in other Institution of Distance Mod-)

1. **कार्यशाला (Workshop)** : दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र के कर्मचारियों को प्रशिक्षित करने की एक प्रमुख विधि कार्यशालाओं का आयोजन है। कार्यशाला की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार होती हैं–

   - इसके स्पष्ट लक्ष्य एवं उद्देश्य होते हैं जिनकी ओर सभी क्रियाएँ निर्देशित होती हैं ।
   - इसके सहभागियों का एक समांग समूह होता है तथा सामान्यतया उनका इस प्रणाली से सम्बन्ध एक ही स्तर का होता है।
   - कार्यशालाओं की सामान्य अवधि एक सप्ताह (8–10 दिन) की होती है।
   - यह कार्यक्रम के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु लक्षित क्रियाओं एवं भागीदारी पर बल प्रदान करता है।
   - कार्यशालाओं का स्वरूप संस्थानिक, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय स्तर का हो सकता है।
   - स्तर के अनुसार, बाहरी आपूर्ति (External Output) के रूप में यह संस्थानिक, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय अथवा अन्तर्राष्ट्रीय विशेषज्ञों की सेवाएं प्राप्त कर सकता है।
   - इसके अन्तर्गत सृजनात्मक कार्यो की भी पर्याप्त संभावनाएं होती हैं तथा इसके लिए कुछ सहभागियों को छूट एवं उदारता भी प्रदान की जा सकती है किन्तु संभावनाओं एवं अनुभवों का कार्यशाला के लक्ष्यों के साथ टकराव नहीं होना चाहिए।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि कार्यशालाएँ दूरस्थ शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में प्रशिक्षण प्रदान करने का एक प्रमुख साधन है तथा निकट भविष्य में भी इसका महत्व बढ़ने की संभावना है।

2. **फील्ड कार्यक्रम (Field Programmes)** : प्रशिक्षण की यह प्रविधि

दूरस्थ शिक्षा के वास्तविक क्षेत्र में कार्य करने वाले कार्मिकों के लिए अपनाई जाती है। इसकी प्रकृति भी कार्यशाला जैसी ही होती है किन्तु ये बहुत छोटी अवधि (2–3) दिन के कार्यक्रम होते हैं। इस प्रकार के कार्यक्रमों की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार की होती हैं –

- ये कार्यक्रम स्थानीय या जिला स्तरीय स्टाफ, क्षेत्रीय या राज्य स्तरीय स्टाफ, स्थानीय अधिकारियों, राजनैतिक एवं धार्मिक नेताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं एवं अभिभावकों आदि के लिए आयोजित किये जाते हैं।
- ये कार्यक्रम स्थानीय सहभागियों की सुविधा तथा स्थानीय परिस्थितियों को कार्यक्रम का केन्द्र बिन्दु बनाने के उद्देश्य से स्थानीय क्षेत्रों में ही आयोजित किये जाते हैं।

3. **हस्त पुस्तिकाएं/मार्गदर्शनीय (Handbooks/Guidelines)** : दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम के विभिन्न पक्षों की सूचनाओं से युक्त हस्त पुस्तिकायें शिक्षार्थियों, इस व्यवसाय के नव–प्रवेशार्थियों तथा वरिष्ठ एवं अनुभवी कार्मिको सभी के लिए बहुत ही उपयोगी होती है। इस व्यवसाय के नव–प्रवेशार्थियों को इनके माध्यम से स्थापित प्रचलनों, नियमों एवं प्रक्रियाओं, कौशलों एवं तकनीकों आदि की जानकारी प्राप्त नहीं होती है। वरिष्ठ एवं अनुभवी कार्मिकों को इनके माध्यम से दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के अपरिचित पक्षों का पता चलता है तथा साथ ही ये पुस्तिकाएँ कई प्रकार की नई चुनौतियों एवं समस्याओं की ओर भी ध्यान आकर्षित करती हैं।

4. **अन्य दूरस्थ संस्थानों द्वारा (Training in other Institution of Distance Mode):** जिन संस्थानों को इस क्षेत्र में पर्याप्त अनुभव है वे इस कार्य को सरलता से कर सकते हैं जैसे इग्नू सभी राज्य मुक्त विश्वविद्यालयों को प्रशिक्षण के विभिन्न क्षेत्रों में सहायता प्रदान करती है।

बोध प्रश्न–

14. प्रशिक्षण प्रदान करने का प्रमुख साधन इस व्यवस्था में क्या है ?

.....

.....

.....

15. फील्ड कार्यक्रम की प्रकृति कैसी होती है ?

.....

.....

.....

14.9 सारांश

इस इकाई में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में प्रशिक्षण की आवश्यकता, स्वरूप और प्रक्रिया के सम्बन्ध में बताया गया है। दूरस्थ शिक्षा शिक्षा के सार्वजनीकरण का एक उद्देश्यपूर्ण प्रयास है। प्रशिक्षण से नवीन शिक्षण संस्थानों को प्रारम्भ करने सहायता मिलती है। दूरस्थ शिक्षा में नवनियुक्त शिक्षकों एवं अन्य कर्मचारियों को प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। दूरस्थ संस्थानों में विभिन्न शैक्षणिक, तकनीकी एवं प्रशासनिक पदों पर अधिकांश लोग दूसरे क्षेत्र एवं संस्थाओं से आते हैं अतः प्रशिक्षण एक अनिवार्य आवश्यकता बन चुका है। प्रशिक्षण प्रक्रिया में प्रशिक्षक एवं प्रशिक्षार्थी होती है। प्रशिक्षार्थी कई प्रकार के होते हैं जैसे – प्रशासक, शिक्षक, परामर्शदाता, कर्मचारी आदि।

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में प्रशिक्षण देने वाले प्रशिक्षकों का अभाव रहता है क्योंकि इसमें अधिकांश लोग परम्परागत शिक्षण संस्थानों से आये होते हैं जो अपने अनुभवों के आधार पर नवनियुक्त लोगों को प्रशिक्षित करते हैं। दूरस्थ प्रशिक्षक को उच्च स्तरणीय शैक्षिक एवं तकनीकी कौशल से युक्त होना चाहिए। इसमें Team Spirit समूह भावना की आवश्यकता होती है। प्रशिक्षक को लचीले दृष्टिकोण वाला होना चाहिए।

दूरस्थ प्रशिक्षक को नये संस्थानों की स्थापना में सहयोग करना चाहिए, कम लागत का ध्यान रखना चाहिए, सामाजिक आवश्यकताओं के प्रति उत्तरदायी होना चाहिए।

वस्तुतः यह एक जटिल प्रणाली है प्रशिक्षक एवं कर्मचारियों को विभिन्न भूमिकाओं का निर्वहन करना होता है। प्रशिक्षण कार्यक्रम में कार्यशाला, फील्ड कार्यक्रम, हस्त पुस्तिकायें तथा अन्य संसाधनों का उपयोग करना होता है।

14.10 अभ्यास कार्य

- मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षण में प्रशिक्षण किसके किसके लिए आवश्यक है।
- दूरस्थ प्रशिक्षक कौन होता है ।
- प्रशिक्षण कार्यक्रम कैसे आयोजित किया जाना चाहिए ।
- प्रशिक्षक में किन गुणों का होना आवश्यक है।
- किसी दूरस्थ संस्था से नवनियुक्त सदस्य के प्रशिक्षण के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करें ।

14.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. प्रशिक्षित कर्मी इस प्रणाली को सुचारू रूप से संचालित करने में सक्षम हो सके।
2. व्यवसायिक प्रशिक्षण से तात्पर्य उस विशिष्ट व्यवसाय को संचालित करने हेतु आवश्यक कौशलों की जानकारी से है।

3. मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का प्रसार द्रुतगति से हो रहा है अतः इसमें कैरियर की अपार सम्भावनाएं हैं।
4. दूरस्थ शिक्षा में प्रशिक्षार्थी वह होता है जिसे प्रशिक्षित किया जाना है।
5. दूरस्थ शिक्षा में प्रशिक्षार्थियों को उनके कार्य के अनुरूप प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है अतः विभिन्न वर्गो में विभक्त किया जा सकता है।
6. लक्षित विद्यार्थी समूह के अन्तर्गत स्कूली छात्र, विश्वविद्यालीय छात्र, व्यवसाय कर रहे लोग, प्रौढ़ महिलाएं आदि सभी हैं।
7. दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत लोग ही इसके प्रशिक्षक होते हैं।
8. अभी तक कोई औपचारिक व्यवस्था इस सम्बन्ध में बहुत सुदृढ़ नहीं है।
9. आवश्यकतानुसार परिवर्तन करने वाला दृष्टिकोंण ही लचीला दृष्टिकोंण है।
10. धैर्यवान प्रयोग से तात्पर्य यह है कि इस प्रणाली में नवीन प्रयोग हो रहे हैं अतः इसका प्रभाव आने में समय लगता है। बार–बार सुधार की आवश्यकता है अतः धैर्यवान होना आवश्यक है।
11. इसकी आवश्यकता इस प्रणाली में है।
12. प्रतिबद्धता इस प्रणाली की सफलता के लिए आवश्यक है।
13. प्रथम भूमिका है विशेषज्ञ की, दूसरी टीम वर्क तथा तीसरी प्रतिबद्धता की।
14. कार्यशाला इस व्यवस्था में प्रशिक्षण प्रदान करने का प्रमुख साधन है।
15. इसकी प्रकृति कार्यशाला जैसी होती है।

14.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- गुप्ता एस0 पी0 – शिक्षा का ताना–बानाः इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन, 2000
- शर्मा, आर0 ए0 – डिस्टैन्स ऐजूकेशन, मेरठः ईगल बुक्स इन्टरनेशनल, 1995
- शर्मा, आर ए0 – दूरवर्ती शिक्षाः मेरठ सूर्या पब्लिशिंग 1996
- साहू, पी0 के0 – ओपन लर्निंग सिस्टमः न्यू देल्ही : उप्पल पब्लिकेशन्स, 1994

इकाई–15 दूरस्थ शिक्षा में मूल्यांकन

संरचना

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 शैक्षिक मूल्यांकन की अवधारणा

1.4 दूरस्थ शिक्षा में मूल्यांकन के उद्देश्य

1.5 मूल्यांकन के कार्य

1.6 दूरस्थ शिक्षा में मूल्यांकन प्रक्रिया

1.7 दूरस्थ शिक्षा में प्रयुक्त मूल्यांकन प्रविधियाँ

1.8 निबन्धात्मक एवं वस्तुनिष्ठ परीक्षा

1.9 दूरस्थ शिक्षा में मूल्यांकन पद्धति

1.10 साराशं

1.11 अभ्यास कार्य

1.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें

15.1 प्रस्तावना

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में मूल्यांकन का विशेष महत्व है। मूल्यांकन उद्देश्यों एवं तथ्यों को ध्यान में रखकर किया जाता है। इससे यह ज्ञात होता है कि शैक्षिक प्रक्रिया कितने प्रभावशाली ढंग से आगे बढ़ रही है। मूल्यांकन बीच–बीच कार्यक्रम की समीक्षा करने तथा अधिगम की प्रगति को जानने में सहायक होता है। मूल्यांकन दूरवर्ती शिक्षा का आवश्यक तत्व है। वास्तव में दूरवर्ती शिक्षा में इसका और अधिक महत्व है। दूरस्थ शिक्षा से जुड़े लोगों के लिए मूल्यांकन के प्रत्यय, विधियों या प्रयोगों का ज्ञान होना परम्परागत शिक्षकों की तुलना में अधिक आवश्यक है। मूल्यांकन शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति में पृष्ठपोषण का कार्य करती है। यदि उद्देश्यों की प्राप्ति में कमी होती है तब शिक्षक परिस्थितियों का मूल्यांकन करके उसमें आवश्यक सुधार तथा परिवर्तन करता है। मूल्यांकन में शैक्षिक कार्यक्रम और अधिगम प्रणाली का मूल्यांकन किया जाता है। मूल्यांकन की नवीन अवधारणा ने दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में इसे अधिक व्यापक और महत्वपूर्ण बना दिया है। मूल्यांकन शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति को सुनिश्चित

करने के साथ साथ छात्र उपलब्धियों को ग्रेड या श्रेणी भी प्रदान करने में शिक्षक की सहायता करता है।

यह एक शैक्षिक प्रक्रिया है, जिसमें योजना की समीक्षा को जानने का प्रमुख साधन मूल्यांकन ही होता है। शिक्षा को मानवीय कौशलों अभिप्रेरणा, ज्ञान एवं इसी तरह के अन्य अनेक विकास के रूप में मानव हित में किया गया निवेश माना जाता है। दूरस्थ शिक्षा में भी आन्तरिक, सतत और वाह्य सत्रांत परीक्षा आदि पर आधारित विद्यार्थी उपलब्धि का सतत निर्माण होता है। इस इकाई में हम दूरस्थ शिक्षा में मूल्यांकन के विषय में विस्तार से अध्ययन करेंगे।

15.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात् आप इस योग्य हो जायेंगे कि–

- दूरस्थ शिक्षा में शैक्षिक मूल्यांकन की अवधारणा को समझ सकेंगे।
- दूरस्थ शिक्षा में मूल्यांकन के उद्देश्यों को जान जायेंगे।
- मूल्यांकन की प्रक्रिया को जान जायेंगे।

15.3 शैक्षिक मूल्यांकन की अवधारणा

दूरस्थ शिक्षा में मूल्यांकन का स्वरूप अधिक विस्तृत है। औपचारिक शिक्षा में परीक्षाओं का प्रयोग ब्रिटिश काल में हुआ। इसे लार्ड मैकाले ने सन् 1835 में प्रारम्भ किया था। वास्तव में शैक्षिक मूल्यांकन एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा अधिगम परिस्थितियों तथा सीखने के अनुभवों के लिये प्रयुक्त की जाने वाली सभी विधियों एवं प्रविधियों की उपादेयता की जॉच की जाती है तथा छात्र निष्पत्तियों के आधार पर यह पता लागया जाता है कि शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति किस सीमा तक हो सकी है।

"मूल्यांकन विद्यालय कक्षा तथा स्वयं के द्वारा निर्धारित शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त करने के सम्बंध में छात्रों की प्रगति की जॉच है। मूल्यांकन का प्रमुख प्रयोजन छात्रों को सीखने की प्रक्रिया को अग्रसर एवं निर्देशित करना है। इस प्रकार मूल्यांकन नकारात्मक नहीं अपितु एक सकारात्मक प्रक्रिया है।

शैक्षिक मूल्यांकन के अन्तर्गत शिक्षक यह निश्चित करता है कि उसकी शिक्षण व्यवस्था तथा शिक्षण अधिगम को आगे बढ़ाने की क्रियायें कितनी सफल रही है। शैक्षिक मूल्यांकन के कार्य हैं। शैक्षिक कार्यक्रम या अधिगम प्रणाली का मूल्यांकन, अधिगम या निष्पति का मापन करना तथा अधिगम उद्देश्यों को प्राप्त करना।

मापन के अन्तर्गत व्यक्तियों या वस्तुओं में उपस्थित किसी गुण तथा विशेषता का वर्णन करना निहित होता हे। गुण या विशेषता गुणात्मक एवं मात्रात्मक हो सकती

है।

मापन मूल्यांकन प्रक्रिया का ही एक अंग होता है। मूल्यांकन मापन की अपेक्षा एक व्यापक पद है, किन्तु मापन मूल्यांकन प्रक्रिया में सहायक होता है। इसके अतिरिक्त मापन एक परिमाणात्मक प्रक्रिया है, जबकि मूल्यांकन गुणात्मक प्रक्रिया है। परीक्षण मापन का एक साधन होता है परीक्षण अनेक प्रकार के होते हैं, जिनके द्वारा किसी व्यक्ति या व्यक्तियों के किसी विशेषता का मापन किया जा सकता है।

बोध प्रश्न–

1. मूल्यांकन के स्वरूप की व्याख्या कीजिए ।

.....

.....

.....

2. भारत में सर्वाधिक प्रचलित परीक्षा प्रणाली किस प्रकार की है ?

.....

.....

.....

3. मापन से आप क्या समझते है ?

.....

.....

.....

मूल्यांकन की नवीन अवधारणा ने शिक्षा के क्षेत्र में इसकी भूमिका को अधिक व्यापक बना दिया है, अब शिक्षा में मूल्यांकन प्रक्रिया को शिक्षा के तीन प्रमुख तत्वों में से एक तत्व या भाग माना जाता है। अब शैक्षिक प्रशासक एवं नीतिनिर्धारक भी मापन व मूल्यांकन के परिणामों का उपयोग शैक्षिक प्रशासन की व्यवस्था तथा नीति निर्धारण में करते हैं। उचित शैक्षिक निर्णय लेने के लिये मापन एवं मूल्यांकन का प्रयोग न केवल परम्परागत शिक्षा प्रणाली में वरन् मुक्त अधिगम तथा दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में भी अत्यन्त आवश्यक है। दूरस्थ शिक्षा में मूल्यांकन के महत्व को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है –

- मूल्यांकन से दूरस्थ शिक्षा तथा मुक्त अधिगम प्रणाली के उद्देश्यों तथा छात्रों की आवश्यकतायें स्पष्ट होती हैं।

- मूल्यांकन की प्रक्रिया से दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में प्रयुक्त मुद्रित स्व–अनुदेशन सामग्री की प्रभावशीलता व उपादेयता का ज्ञान होता है।
- मूल्यांकन की प्रक्रिया से दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में प्रयुक्त बहु संचार माध्यमों की शैक्षिक प्रभावशीलता ज्ञात होती है।
- मूल्यांकन की प्रक्रिया से दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में शिक्षार्थियों को दी जाने वाली परामर्श सेवा में सुधार आता है।
- मूल्यांकन की सहायता से पाठ लेखकों व सम्पादकों को स्व–अधिगम सामग्री की कमी ज्ञात हो जाती है, जिससे कि उनमे सुधार कर सकते हैं।
- मापन एवं मूल्यांकन प्रणाली के आधार पर दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों के पाठ्यक्रम, अनुदेशन विधियों, अधिगम सामग्री, सहायक सामग्री आदि में सुधार किया जा सकता है।
- इनके आधार पर ही दूरस्थ शिक्षार्थियों को उचित एवं तर्कपूर्ण ढंग से शैक्षिक तथा व्यावसायिक निर्देशन प्रदान किया जा सकता है।
- मूल्यांकन से दूरस्थ अध्येताओं की रूचियों, अभिरूचियों, कुशलताओं, योग्यताओं, दृष्टिकोणों एवं व्यवहार की जॉच का ज्ञान सम्भव है।

15.4 दूरस्थ शिक्षा में मूल्यांकन के उद्देश्य

दूरस्थ शिक्षा में मूल्यांकन के प्रमुख उद्देश्य निम्न हैं –

- दूरस्थ विद्यार्थियों की वृद्धि एवं विकास में सहायता करना।
- दूरस्थ छात्रों द्वारा अर्जित उपलब्धियों, ज्ञान, बोध एवं कौशलों को जॉचना।
- दूर छात्रों के वृद्धि एवं विकास में आये अवरोधों को जानना ।
- दूरस्थ विद्यार्थी की व्यक्तिगत भिन्नताओं की जानकारी देना।
- दूरस्थ विद्यार्थियों की कमियों को जानकर स्व अधिगम को अभिप्रेरित करना।
- दूरस्थ छात्रों में प्रयुक्त स्व–अनुदेशन शिक्षण सामग्री की प्रभावशीलता को ज्ञात करना।
- दूरस्थ छात्रों में प्रयुक्त किये जा रहे पाठ्यक्रम में सुधार लाना।
- दूरस्थ छात्रों को उपयोगी अनुदेशन विधियों व अन्य सामग्री की उपादेयता को जॉच करना।
- दूरस्थ शिक्षा के शैक्षिक परामर्शदाताओं की प्रभावशीलता को जानना।

- दूरस्थ शिक्षा के शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन के लिय आधार तैयार करना।
- दूरस्थ शिक्षा हेतु प्रवेशार्थियों को प्रवेश हेतु चयन करना।
- दूरस्थ अध्येता को उपलब्धि के आधार पर वर्गीकृत करना।
- दूरस्थ अध्येता में कक्षा उन्नति एवं रोजगार हेतु योग्यता विकसित करना।
- शैक्षिक मानकों का निर्धारण करना ।

15.5 मूल्यांकन के कार्य :

शैक्षिक कार्यक्रम के मूल्यांकन के अन्तर्गत शिक्षक को नियोजन, शिक्षण विधियों, प्रविधियों, अनुदेशन तथा अन्य शिक्षण सामग्री की उपयेागिता का मूल्यांकन करना होता है, जिससे उनमें सुधार तथा विकास के लिये शिक्षक को प्रोत्साहन मिलता है। शिक्षा के क्षेत्र में मूल्यांकन के कार्यों को निम्नांकित तीन अन्तः सम्बंधित भागों में बांटा है–

क्र शैक्षिक कार्य

क्र प्रशासनिक कार्य

क्र निदेशन कार्य

शैक्षिक कार्य :

शिक्षा में मूल्यांकन की परम्परा अति प्राचीन है। अब मूल्यांकन की नवीन अवधारणा ने शिक्षा के क्षेत्र में इसकी भूमिका को अधिक व्यापक एवं महत्वपूर्ण बना दिया है। मूल्यांकन की प्रक्रिया दूर अध्येताओं को प्रतिपुष्टि, अभिप्रेरण, अति–अधिगम कराने व उन्नति प्रदान करने हेतु की जाती है। शिक्षा के तीन भाग शैक्षिक उद्देश्य, अधिगम अनुभव एवं मूल्यांकन प्रक्रिया। प्रत्येक तत्व अन्य दो तत्वों के साथ लाभार्थी तथा लाभकारी के रूपों में दूहरी भूमिका का निर्वहन करता है। किसी भी शैक्षिक कार्यक्रम की प्रभावशीलता इस बात पर निर्भर करती है कि इसके तीनों तत्वों के मध्य दोहरी भूमिका कितने प्रभावशाली ढंग से सम्पन्न होती है।

प्रशासनिक कार्य :

इसके अन्तर्गत गुणवत्ता नियंत्रण करना, अनुसंधान करना, वर्गीकरण व व्यवस्थापना करना, चयन करना, प्रमाणन करना इत्यादि कार्य आते हैं। सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता को नियंत्रित करने का कार्य मापन एवं मूल्यांकन के द्वारा होता है। विभिन्न प्रकार के अनुसंधानों में उद्देश्यों की पूर्ति हेतु मापन एवं मूल्यांकन का सहारा लिया जाता है। मापन के द्वारा ही अध्येताओं को योग्यता के आधार पर वर्गीकृत

किया जाता है। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के पाठ्यक्रमों के चयन व अध्ययन का प्रमाणयन भी मूल्यांकन से ही सम्भव है।

निर्देशन कार्य :

मापन एवं मूल्यांकन व्यक्ति विशेष की रूचियों अभिवृत्तियों उपलब्धि दृष्टिकोण तथा समस्याओं के आधार पर अन्य समूह से अलग करता है। यह निदान चयन तथा श्रेणी करण की प्रक्रिया हेतु प्रयुक्त होता है। इसके आधार पर ही अन्ततः निर्देशन प्रदान किया जाता है।

बोध प्रश्न–

1. मापन एवं मूल्यांकन में क्या अन्तर है?

.....

.....

.....

2. मूल्यांकन के प्रमुख उद्देश्यों की चर्चा कीजिए ?

.....

.....

.....

3. मूल्यांकन के शैक्षिक कार्य क्या होते हैं ?

.....

.....

.....

4. निर्देशन कार्य किसे कहते हैं ?

.....

.....

.....

15.6 दूरस्थ शिक्षा में मूल्यांकन प्रक्रिया

शैक्षिक मूल्यांकन वस्तुतः शिक्षा की अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। सत्र की समाप्ति मूल्यांकन से ही होती है। परम्परागत परीक्षाओं के द्वारा सामान्यतया ज्ञानात्मक उद्देश्यों का ही मापन किया जाता है। परन्तु वास्तव में यह ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक तीनो प्रकार के उद्देश्यों की प्राप्ति के सम्बंध में मूल्यांकन किया जाता है। इसके द्वारा शिक्षार्थियों को समय–समय पर उसकी प्रगति का ज्ञान दिया जाता है।

अतः दूरस्थ शिक्षा के किसी कार्यक्रम के लिये ऐसे मूल्यांकन कार्यक्रम का

निर्माण करना अत्यन्त आवश्यक है जिसकी सहायता से शिक्षार्थियों की शैक्षिक प्रगति को समय–समय पर ठीक ढंग से ज्ञात किया जा सके एवं जिसके परिणामों को प्रतिपुष्टि के लिये सफलतापूर्वक प्रयुक्त किया जा सके। दूरस्थ शिक्षा संस्था में सामान्य रूप से मूल्यांकन कार्यक्रम निम्न प्रकार से होता है –

1. सत्रांन्त मूल्यांकन
2. सतत् मूल्यांकन

1. सत्रांत मूल्यांकन :

सत्रांत मूल्यांकन एक अत्यन्त आवश्यक एवं महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। दूरस्थ शिक्षा संस्थाओं के द्वारा नियोजित किये जाने वाले किसी अच्छे सत्रांत मूल्यांकन कार्यक्रम में निम्न विशेषतायें होती है –

- सत्रांत मूल्यांकन का कार्य सहभागिता के आधार पर किया जाना चाहिये। किसी भी अच्छे सत्रांत मूल्यांकन कार्यक्रम में अध्यापकों व छात्रों तथा अभिभावकों का पूर्ण सहयोग तथा समर्थन होना चाहिये।
- सत्रांत मूल्यांकन कार्यक्रम को सुयोग्य व्यक्तियों की सहायता से तर्कसंगत आधार पर सुनियोजित ढंग से तैयार किया जाना चाहिये।
- शैक्षिक कार्यक्रम के क्या उद्देश्य है तथा उनकी प्राप्ति का अभिनिर्धारण किस प्रकार से सम्भव हो सकता है इस बात पर समुचित ढंग से विचार करने के उपरान्त ही सत्रांत मूल्यांकन के कार्यक्रम की योजना बनानी चाहिये।
- सत्रांत मूल्यांकन कार्यक्रम का नियोजन तथा निष्पादन शैक्षिक कार्यक्रम में सहभागी, प्रशिक्षित तथा अनुभवी व्यक्तियों की सहायता से कराना चाहिये।
- सत्रांत मूल्यांकन में शिक्षार्थियों द्वारा प्राप्त अंकों का शैक्षिक दृष्टि से उचित ढंग से उपयोग करना चाहिये। केवल परिक्षायें लेना, अंकों को प्राप्त करना, संचयी अभिलेख बनाना जैसे कार्य मूल्यांकन के लिये पर्याप्त नहीं है।
- सत्रांत मूल्यांकन पूर्णरूपेण संतुलित होना चाहिये। सत्रांत मूल्यांकन न तो इतना अधिक विस्तृत होना चाहिये कि वह सत्र के अधिकांश समय तथा उपलब्ध संसाधनों को निगल जाये जिसकी वजह से अनुदेशन अधिगम के प्रमुख कार्य के लिये उचित मात्रा में समय तथा संसाधन उपलब्ध न हो सके और न ही इतना अधिक सीमित होना चाहिये कि उसके आयोजन का उद्देश्य ही नष्ट हो जाये।

सतत् मूल्यांकन

सतत् मूल्यांकन के दौरान समय–समय पर शिक्षार्थियों की शैक्षिक निष्पति का मापन व मूल्यांकन करना होता है ।

- निःसन्देह दूरस्थ अध्यापकगण व परामर्शदातागण समय–समय पर मापन व मूल्याकन के विभिन्न उपकरणों का औपचारिक अथवा अनौपचारिक ढंग से प्रयोग करके अपने शिक्षार्थियों के द्वारा किये गये अधिगम का अभिनिर्धारण करते रहते हैं।
- दूरस्थ अध्यापक व परामर्शदाता न केवल शिक्षार्थियों के व्यवहार का मात्रात्मक मापन करते हैं वरन् उसका गुणात्मक मापन भी करते हैं। निःसन्देह केवल मात्रात्मक मापन की सहायता से किये जा रहे मूल्यांकन को अपने–आप में परिपूर्ण तथा वैध अभिनिर्धारण करते रहते हैं।
- दूरस्थ अध्यापक व परामर्शदाता न केवल शिक्षार्थियों के व्यवहार का मात्रात्मक मापन के लिये लिखित, प्रयोगात्मक व मौखिक परीक्षणों का उपयोग किया जाता है जबकि गुणात्मक मापन के लिये अवलोकन, स्वसूचना, साक्षात्कार, मापनी, प्रक्षेपण जैसी विभिन्न तकनीकों का प्रयोग किया जाता है।
- आजकल कुछ संस्थाओं के द्वारा कम्पयूटर नेटवर्किंग का प्रयोग करके दूरस्थ शिक्षार्थियों की शैक्षिक प्रगति के अभिनिर्धारण को समय व स्थान की दृष्टि से सर्वव्यापी स्वरूप दिया जाने लगा है।
- दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षण अथवा अनुदेशन कार्य को सरल, सुगम, व्यवस्थित तथा द्विमार्गी बनाने के लिये अधिन्यासों का प्रावधान किया जाता है। अधिन्यास वस्तुतः एक परीक्षण होता है, जिसे छात्र मनचाही जगह पर देते हैं एवं इसके उत्तरों को देते समय वे किसी भी प्रकार की अध्ययन सामग्री का उपयोग करने के लिये स्वतंत्र होते है।
- दूरस्थ शिक्षक अपने अनुदेशन शिक्षण कार्य के दौरान भी विभिन्न प्रकार की मूल्यांकन प्राविधियों का उपयोग करता है। सामान्यतः अध्यापक मौखिक प्रश्नों की सहायता से यह कार्य करते है। प्रश्नों की सहायता से ही परामर्शदाता शिक्षार्थियों के ज्ञान, अवबोध, अनुप्रयोग, कौशल आदि की जानकारी प्राप्त करके अपने शिक्षण/ परामर्श कार्य की सफलता का अनुमान लगाते हैं तथा तद्नुसार अपनी शिक्षण परामर्श योजना में सुधार करते है। दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में परामर्श सत्रों व सम्पर्क कार्यक्रमों में शैक्षिक परामर्शदाताओं को दिन–प्रतिदिन अनुदेशन के दौरान पूछे गये मौखिक प्रश्न ठीक ढंग से शिक्षार्थियों के समक्ष प्रस्तुत करने चाहिये जिससे वांछित परिणाम प्राप्त हो सकें।

15.7 दूरस्थ शिक्षा में प्रयुक्त मूल्यांकन प्रविधियाँ

दूरस्थ शिक्षा में मूल्यांकन हेतु विविध प्रविधियों का प्रयोग होता है। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के विभिन्न स्तरों एवं चरणों में प्रयुक्त परीक्षणों को निम्न रूपों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

परीक्षणों में प्रयुक्त प्रश्नों तथा उनके उत्तरों की अभिव्यक्ति के माध्यम के आधार पर परीक्षणों को निम्न भागों में बांटा जा सकता है–

1. मौखिक परीक्षण
2. लिखित परीक्षण
3. प्रयोगात्मक परीक्षण

परीक्षण के विभिन्न प्रश्नों में समस्याओं के प्रस्तुतिकरण के माध्यम के आधार पर परीक्षणों का

निम्नलिखित दो भागों में बांटा जा सकता है :–

1. शाब्दिक परीक्षण
2. अशाब्दिक परीक्षण

यहाँ पर सर्वाधिक उपयोगी परीक्षणों के बारे में विस्तार से चर्चा की गयी है –

- **अर्हता परीक्षण**

अर्हता परीक्षण से तात्पर्य किसी पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए न्यूनतम आवश्यक ज्ञान, बोध, कौशल तथा अनुप्रयोग आदि का मापन करने वाले विधियों से है। क्योंकि दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के अनेक पाठ्यक्रमों/कार्यक्रमों में प्रवेश के लिए औपचारिक शिक्षा प्रमाणपत्रों की अनिवार्यता नही होती है। इसलिए इन पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु न्यूनतम और शैक्षिक स्तर के सुनिश्चयन के लिए प्रवेश से पूर्व प्रवेशार्थियों से अर्हता परीक्षण उत्तीर्ण करने की अपेक्षा की जाती है। अर्हता परीक्षणों की प्रकृति एवं इसमें सम्मिलित प्रश्न मूलतः सामान्य उपलब्धि परीक्षण के समान होते हैं।

उपलब्धि परीक्षणों से तात्पर्य उन परीक्षणों से है जो छात्रों के ज्ञान, ज्ञान की अर्जित योग्यता का मापन करते है। विभिन्न विषयों में छात्रों ने क्या सीखा है, इसका मापन करने के लिए प्रायः सम्प्राप्ति परीक्षणों का ही प्रयोग किया जाता है। अतः कहा जा सकता है कि किसी निश्चित समयावधि में शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के द्वारा किसी एक या अनेक विषयों में शिक्षार्थी के ज्ञान अदबोध व कौशल आदि में हुए परिवर्तन का मांपन करने वाले उपकरणों को सम्प्राप्ति परीक्षण कहते हैं। सम्प्राप्ति परीक्षण प्रायः शिक्षण व अनुदेशन के उद्देश्यों पर आधारित होते हैं तथा इनके प्रयोग से इन उद्देश्यों की प्राप्ति के सम्बन्ध में सूचना प्राप्त होती है। दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में उपलब्धि परीक्षण के प्रमुख उद्देश्य निम्नवत् हैं–

1. दूरस्थ शिक्षार्थियों के शैक्षिक स्तर को जानना।
2. दूरस्थ शिक्षार्थियों को अध्ययन के लिए प्रेरित करना।

3.दूरस्थ शिक्षण अधिगम व्यवस्था में सुधार लाना।

4.दूरस्थ शिक्षार्थियों को शैक्षिक मार्गदर्शन व परामर्श देने में सहायता करना।

5.दूरस्थ शिक्षा संस्थाओं में प्रवेश के लिए शिक्षार्थियों का चयन करना।

6.दूरस्थ शिक्षार्थियों के वर्गीकरण व प्रोन्नति में सहायता करना।

7.दूरस्थ शिक्षा की अनुदेशन सामग्री व प्राविधियों का मूल्यांकन करना।

8.दूरस्थ शिक्षा संस्थाओं के स्तर का निमार्ण करना।

• निदानात्मक परीक्षण

निदानात्मक परीक्षण वस्तुतः उपलब्धि परीक्षणों का ही एक विशिष्ट रूप है। परन्तु निदानात्मक परीक्षण का उद्देश्य उपलब्धि परीक्षण से अधिक व्यापक व विस्तृत होता है। उपलब्धि परीक्षण किसी विशेष विषय में अथवा विषयों के समूह में शिक्षार्थियों के द्वारा अर्जित ज्ञान, बोध, कौशल, अनुप्रयोग आदि का मापन करते हैं जबकि निदानात्मक परीक्षण उस अर्जित ज्ञान, बोध, कौशल आदि की विशिष्टता तथा ज्ञान–प्राप्ति में आ रही बाधाओं को ज्ञात करने का प्रयास करते हैं। निदानात्मक परीक्षण से प्राप्त सूचनाओं के विस्तृत विश्लेषण से शिक्षार्थियों की कमजोरियों का पता चल जाता है जिसमें उनकी अधिगम प्रक्रिया में तथा अध्यापकों की शिक्षण विधि में परिवर्तन लाकर उनके लिए उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था की जा सकती है। अतः कहा जा सकता है कि निदानात्मक परीक्षण एक प्रकार के सम्प्राति परीक्षण ही है, परन्तु इनका उद्देश्य सम्प्राप्ति परीक्षण से भिन्न तथा अधिक व्यापक होता है। यह विषय–विशेष में शिक्षार्थियों की कठिनाई, कमियां या कमजोरियों को ज्ञात करता है जिसमें उन्हें दूर करने के लिए समुचित प्रयास किये जा सकें। निदानात्मक परीक्षणों के परिणाम प्रायः पूर्ण प्राप्तांक के रूप में न होकर पाठ्यवस्तु के विभिन्न पक्षों पर अंश प्राप्तांकों के रूप में होते हैं।

• अध्यापक निर्मित उपलब्धि परीक्षण

अध्यापक निर्मित परीक्षण वे परीक्षण हैं जिन्हें परामर्शदाता स्थानीय आवश्यकता व उद्देश्यों की पूर्ति हेतु बना लेते हैं इन परीक्षणों की रचना अत्यन्त सरल व सहज ढंग से की जाती है। अध्यापकगण प्रायः अपने अनुभवों, स्थानीय परिस्थितियों तथा छात्रों के उपलब्धि स्तर को ध्यान में रखकर इनका निर्माण कर लेते हैं। अतः अध्यापक निर्मित परीक्षण प्रायः प्रश्नों का एक ऐसा समूह होता है जिसे अध्यापकगण स्वविवेक से शिक्षार्थियों की सम्प्राप्ति का मापन करने के तात्कालिक उद्देश्य से तैयार करते है।

• प्रमापीकृत परीक्षण

प्रमापीकृत परीक्षण वे परीक्षण होते हैं जिनमें सम्मिलित पदों या प्रश्नों का चयन उनकी मनोमितीय विशेषताओं से सम्बन्धित अनुभाविक प्रमाणों के आधार पर किया गया हो, जिनके प्रशासन व अंकन की विधि स्पष्ट व पूर्ण निश्चित हो, जिनकी विश्वसनीयता व वैधता सुनिश्चित की गई हो तथा जिनके प्राप्तांकों की व्याख्या के लिए मानक विकसित किए गए हों। ये परीक्षण व्यापक जनसंख्या की उपलब्धि का सटीक ढंग से मापन करने तथा उसकी व्याख्या करने के लिए सफलतापूर्वक उपयोग में लाये जा सकते हैं।

विविध परीक्षणों की सहायता से शिक्षार्थियों की विभिन्न योग्यताओं तथा गुणों आदि का मूल्यांकन किया जाता है। शैक्षिक सन्दर्भ में परीक्षणों के द्वारा शिक्षार्थियों के ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा क्रियात्मक व्यवहार का अध्ययन किया जाता है। दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में अध्ययकेन्द्र पर कार्यरत परामर्शदातागण विभिन्न प्रकार के परीक्षणों का प्रयोग करके समय–समय पर शिक्षार्थियों की शैक्षिक प्रगति का मापन कर सकता है।

बोध प्रश्न :–

4. परीक्षण से आप क्या समझती हैं ?

.....

.....

.....

5. प्रमापीकृत परीक्षण के विशेषताएं बताइये?

.....

.....

.....

6. अध्यापक निर्मित उपलब्धि परीक्षण किसे कहते है?

.....

.....

.....

7. अर्हता परीक्षणों का उपयोग कब होता है?

.....

.....

.....

15.7 निबन्धात्मक एवं वस्तु निष्ठ परीक्षण

विद्यार्थी को पहले से तैयार व रटे–रटायें उत्तर नहीं देने होते हैं, बल्कि उन्हें उत्तर देने के लिए अपने विषय का अच्छा ज्ञान व बोध होना चाहिए, जिससे वे विभिन्न तथ्यों तथा सिद्धान्तों को एक दूसरें से सम्बन्धित कर सकें तथा इन विचारो को लिखित अभिव्यक्ति आवश्कतानुसार करने में सफल हो सकें। इसके अतिरिक्त निबन्धात्मक परीक्षणों पर छात्रों के द्वारा दिये गये उत्तर उनकी विचार प्रक्रियाओं तथा अभिव्यक्ति की प्रकृति तथा गुणवत्ता का ज्ञान भी प्रदान करते हैं। आलोचनात्मक चिन्तन, सृजनशीलता अभिव्यक्ति क्षमता, ज्ञान का तार्किक संश्लेषण, मूल्यांकन क्षमता आदि अनेक योग्यताओं का मापन वस्तुतः निबन्धात्मक परीक्षण के द्वारा ही किया जाना सम्भव हो सकता है। जिनको रूपों का मूल्यांकन की सर्वाधिक लोकप्रिय विधि निबन्धात्मक और वस्तुनिष्ठ परीक्षण है। बहुधा इन दोनों को सम्मिलित रूप से प्रयुक्त कर छात्र का मूल्यांकन किया जाता है।

निबन्धात्मक प्रश्नों के प्रकार

1. **वर्णनात्मक प्रश्न** :– इस प्रकार के प्रश्नों छात्रों से किसी घटना, वस्तु, प्रक्रिया सिद्धान्त, परिभाषा सूत्र आदि का वर्णन करने के लिए कहा जाता है। सर्वाधिक सरल प्रकार के निबन्धात्मक प्रश्न होते हैं।
2. **व्याख्यात्मक प्रश्न** :– इस प्रकार के प्रश्नों में छात्रों को किसी सम्बन्ध या कारण व प्रभाव की तार्किक व्याख्या करने के लिए कहा जाता है। छात्र र्तक देकर अपने द्वारा प्रस्तुत पक्ष को स्पष्ट करते हैं।
3. **विवेचनात्मक प्रश्न** :– इस प्रकार के प्रश्नों में छात्रों द्वारा किसी स्थिति के पक्ष तथा विपक्ष मे तर्क देते हुए एक निष्कर्ष पर पहुंचा जाता है। शिक्षार्थीगण उस स्थिति के पक्षा तथा विपक्ष दोनों पर अपने विचार प्रस्तुत करने के उपरान्त पक्ष या विपक्ष में से किसी एक का समर्थन करते हैं।
4. **उदाहरणार्थ प्रश्न** :– इस प्रकार के प्रश्नों में शिक्षार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे विभिन्न उदाहरणों तथा दृष्टांतों की सहायता से अपनी बात को अच्छी तरह से प्रस्तुत करते हुए स्पष्ट करें।
5. **तुलनात्मक प्रश्न** :– इस प्रकार के प्रश्नों में शिक्षार्थियों को किन्हीं दो प्रत्ययों वस्तुओं, विचारों, सिद्धान्तों आदि में समानता व असमानता तथा गुण व दोषों के आधार पर तुलना करनी होती है।
6. **आलोचनात्मक प्रश्न** :– इस प्रकार के प्रश्नों में शिक्षार्थियों को किसी विचार या पक्ष की आलोचना करनी होती है, जिससे उसकी शुद्धता, सत्यता, दृढ़ता आदि का मूल्यांकन हो सकें।

7. **विश्लेषणात्मक प्रश्न** :– इस प्रकार के प्रश्नों में शिक्षार्थियों को किसी तथ्य के विभिन्न पक्षों को विश्लेषण द्वारा स्पष्ट करते हुए उन सभी का वर्णन करते हुए उनमें निहित परस्पर सम्बन्ध को स्पष्ट करना होता है।

निबन्धात्मक प्रश्न के अनेक रूप उभर कर आ रहे हैं जैसे दीर्घ उत्तरीय प्रश्न, लघु उत्तरीय प्रश्न, अति लघु उत्तरीय प्रश्न । उत्तर के लिए सीमा का प्रयोग भी किया जाता है।

वस्तुनिष्ठ परीक्षण :

वस्तुनिष्ठ परीक्षण का व्यापक प्रयोग बीसवीं शताब्दी में आरम्भ हुआ। ये परीक्षण तकनीकी दृष्टि से निबन्धात्मक परीक्षण की अपेक्षा न केवल वस्तुनिष्ट होते हैं वरन् अधिक विश्वसनीय तथा वैध भी होते हैं। वस्तुनिष्ठ प्रश्नों में प्रत्येक प्रश्न का एक निश्चित सही उत्तर होता है तथा परीक्षार्थी से उसी उत्तर की अपेक्षा की जाती है। अतः किसी वस्तुनिष्ठ प्रश्न पर किसी छात्र द्वारा दिया गया उत्तर या तो सही होता है अथवा गलत होता है। सही होने पर परीक्षार्थी को पूर्ण अंक प्राप्त होते हैं, जबकि गलत होने पर कोई अंक प्राप्त नहीं होता है। प्रश्नों के उत्तर की इस प्रवृत्ति की वजह से वस्तुनिष्ठ परीक्षणों का अंकन करते समय परीक्षक को किसी प्रकार की स्वतंत्रता अथवा व्यक्तिगत निर्णय लेने की छूट नहीं होती है, चाहे कोई भी व्यक्ति ऐसे प्रश्नों का अंकन करे किसी परीक्षार्थी द्वारा प्राप्त अंक वही रहते हैं।

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में किये जाने वाले शैक्षिक मूल्यांकन के क्षेत्र में इनका प्रयोग दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। वस्तुनिष्ठ परीक्षणों के प्रमुख लाभ निम्नवत् लिखे जा सकते हैं–

1. वस्तुनिष्ठ परीक्षणों में प्रश्नों की संख्या अधिक होती है, जिनके कारण इनमे सम्पूर्ण पाठ्यवस्तु तथा शिक्षण उद्देश्यों का उचित प्रतिनिधित्व होता है।
2. वस्तुनिष्ठ परीक्षणों में प्रश्न स्पष्ट होते हैं, जिससे परीक्षार्थी को उत्तर देने में तथा परीक्षक को अंकन करने में सुगमता होती है।
3. वस्तुनिष्ठ परीक्षणों का अंकन अधिक सरलता व शीघ्रता के साथ तथा त्रुटि रहित ढंग से करना सम्भव होता है।
4. वस्तुनिष्ठ परीक्षण निबंधात्मक परीक्षणों की तुलना में अधिक विश्वसनीय तथा वैध होते हैं।
5. वस्तुनिष्ठ परीक्षण में सम्मिलित प्रश्नों की रचना भलीभांति ढंग से करने पर इनकी सहायता से उच्च मानसिक योग्यताओं का मापन भी किया जा सकता है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के प्रकार :

वस्तुनिष्ठ प्रकार के प्रश्नों को दो मुख्य प्रकारों आपूर्ति प्रकार के प्रश्न तथा चयन प्रकार के प्रश्न में विभक्त किया जा सकता है। बहुविकल्पात्मक प्रश्न, सत्यासत्य प्रश्न, मिलान प्रश्न, तथा वर्गीकरण प्रश्न चयन प्रकार के वस्तुनिष्ठ प्रश्न है। इन सभी प्रकार के प्रश्नों में शिक्षार्थियों को कुछ दिये गये उत्तरों में सही उत्तर का चयन करना होता है। प्रत्यास्मरण प्रश्न तथा रिक्त स्थान पूर्ति को आपूर्ति प्रकार के वस्तुनिष्ठ प्रश्न कहा जाता है। उनमें छात्रों को अपनी स्मृति के आधार पर कुछ लिखकर उत्तर देना होता है। वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के इन दोनो प्रकारों एवं इनके विभिन्न उप प्रकारों का संक्षिप्त वर्णन आगे प्रस्तुत किया गया है।

- इस प्रकार के प्रश्नों में परीक्षार्थी को उत्तर की पूर्ति करनी होती है। इनमें या तो कोई प्रश्न सीधे–सीधे पूछा जाता है तथा विद्यार्थियों को इसका उत्तर अपने ज्ञान का स्मरण करके देना होता है अथवा कोई अपूर्ण वाक्य दिया जाता है तथा शिक्षार्थियों को अपने ज्ञान के आधार पर इस वाक्य को पूर्ण करना होता है। अतः पूर्ति प्रश्न के अन्तर्गत शिक्षार्थियों को प्रश्न का उत्तर स्वयं अपनी ओर से देना होता है। यदि शिक्षार्थियों को सम्बंधित तथ्य ज्ञात होता है तो वे प्रश्न का सही उत्तर दे पाते हैं अन्यथा वे प्रश्न का सही उत्तर देने में असमर्थ रहते हैं। इस प्रकार के प्रश्नों में मुख्यतः शिक्षार्थियों की प्रत्यास्मरण करने की योग्यता का मापन होता है इसलिये आपूर्ति प्रश्नों को प्रत्यास्मरण प्रकार के वस्तुनिष्ठ प्रश्न भी कहते हैं। प्रश्नों की प्रकृति के आध ाार पर आपूर्ति प्रश्नों को दो भागों में सामान्य प्रत्यास्मरण प्रश्न तथा रिक्त स्थान पूर्ति प्रश्न में बांटा जा सकता है।
- इस प्रकार के प्रश्नों में शिक्षार्थियों से सीधे–सीधे प्रश्न पूछे जाते हैं। प्रश्न का स्वरूप इस प्रकार होता है, कि उनका उत्तर अत्यन्त संक्षिप्त तथा विशिष्ट होता है। शिक्षार्थियों को प्रश्नों के उत्तर के रूप में केवल एक शब्द, अंक, नाम अथवा वाक्यांश आदि ही लिखना होता है।
- इस प्रकार के प्रश्नों को अपूर्ण कथन अथवा वाक्य के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। शिक्षार्थियों को अपने ज्ञान के आधार पर इन वाक्यों की पूर्ति करनी होती है। रिक्त स्थान की पूर्ति करने के लिये साधारणतया एक शब्द, नाम, अंक अथवा वाक्यांश पर्याप्त होता है।

आपूर्ति प्रश्नों की मुख्य विशेषतायें इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर अनुमान से देना सम्भव नहीं होता है। आपूर्ति प्रश्नों की रचना करते समय निम्न सावधानियां रखनी चाहिये।

1. प्रश्न ऐसे होने चाहिये, जिनका केवल एक ही सही उत्तर हो।
2. प्रश्नों तथा वाक्यों की भाषा सरल तथा स्पष्ट होनी चाहिये।

3. परीक्षण में आपूर्ति प्रश्नों की संख्या कुल प्रश्नों के लगभग 10 प्रतिशत से अधिक नहीं होनी चाहिये।

4. सामान्य प्रत्यास्मरण प्रकार के प्रत्येक प्रश्न में केवल एक ही तथ्य को पूछना चाहिये।

5. रिक्त स्थान पूर्ति के प्रत्येक प्रश्न में केवल एक ही रिक्तस्थान की पूर्ति करायी जानी चाहिये।

6. सही उत्तर के लिये प्रश्न की भाषा अथवा व्याकरण से कोई संकेत नहीं मिलना चाहिये।

चयन प्रश्न :

- चयन प्रकार के प्रश्नों में प्रत्येक प्रश्न के अनेक सम्भावित उत्तर दिये जाते हैं, तथा शिक्षार्थियों से सही उत्तर का चयन करने के लिये कहा जाता है। इस प्रकार के प्रश्नों से शिक्षार्थियों की पहचान करने की योग्यता का मापन होता है इसलिये इन्हें अभिज्ञान प्रश्न अथवा पहचान प्रश्न भी कहते है। परन्तु इस प्रकार के प्रश्नों में शिक्षार्थी अनुमान से भी प्रश्न का उत्तर दे सकता है। प्रश्नों की प्रकृति के आधार पर चयन प्रश्नों को चार भागों सत्यासत्य प्रश्न, बहुविकल्पीय प्रश्न, मिलान प्रश्न तथा वर्गीकरण प्रश्न में बांटा जा सकता है।

सत्य असत्य प्रश्न :

- इस प्रकार के प्रश्नों में कुछ कथन दिये जाते हैं। इनमें से कुछ कथन सत्य होते हैं तथा कुछ कथन असत्य होते हैं। शिक्षार्थियों को यह देखना होता है कि कौन सा कथन सत्य है, तथा कौन सा असत्य है। इस प्रकार से शिक्षार्थी प्रत्येक कथन के संदर्भ में सत्य अथवा असत्य के रूप में दिये गये दो विकल्प में से किसी एक विकल्प का चयन करता है।

बहुविकल्पीय प्रश्न :

- इस प्रकार के प्रश्नों में एक ही प्रश्न के दो से अधिक उत्तर दिये जाते हैं। इनमें से केवल एक ही उत्तर सही होता है तथा शेष उत्तर गलत होते है। शिक्षार्थियों को दिये गये उत्तर में से ही उत्तर का चयन करना होता है। दिये गये उत्तरों की संख्या 3, 4 या 5 कुछ भी हो सकती है।

मिलान प्रश्न :

- इस प्रकार के प्रश्नों में प्रत्येक प्रश्न के दो भाग होते हैं, जिन्हे दो अलग–अलग स्तम्भों में लिखा जाता है। प्रश्न के एक भाग की विभिन्न प्रविष्टियों का प्रश्न के दूसरे भाग की प्रविष्टियों से मिलान करना होता है। परन्तु दूसरे स्तम्भ में

लिखे भागों को पहले स्तम्भ में लिखे भागों के क्रम में नहीं लिखा जाता है। छात्रों को पहले स्तम्भ में लिखी प्रविष्टियों के लिये दूसरें स्तम्भ से ही प्रवृष्टि को छांटना होता है। प्रायः दूसरे स्तम्भ की प्रवृष्टियों की संख्या प्रथम स्तम्भ की प्रवृष्टियों से एक दो अधिक होती है।

वर्गीकरण प्रश्न :

- इस प्रकार के प्रश्नों में शिक्षार्थियों के सम्मुख शबदों का एक ऐसा समुह प्रस्तुत किया जाता है, जिसमें एक को छोड़कर शेष सभी शब्द एक ही प्रकार की वस्तुओं अथवा क्रियाओं से सम्बन्धित होते है।कहने का अभिप्राय यह है कि दिये गये प्रत्येक शब्द समूह में केवल एक ही असंगत शब्द समूह होता है। शिक्षार्थियों को उस असंगत शब्द का चयन करके इंगित करना होता है।

बोध प्रश्न–

8. बहुविकल्पीय प्रश्न क्या है।

.....

.....

.....

9. आलोचनात्मक प्रश्न किसे कहतें है।

.....

.....

.....

10. विश्लेषणात्मक प्रश्न की विशेषता बताइये।

.....

.....

.....

अधिन्यावास कार्य दूरस्थ शिक्षा का आवश्यक अंग इसके विषय में हम पूर्व में अध्ययन कर चुके है।

15.9 दूरस्थ शिक्षा में मूल्यांकन पद्धति

दूरस्थ संस्था को शिक्षार्थियों की मूल्यांकन पद्धति अन्य परम्परागत विश्वविद्यालयों की मूल्यांकन पद्धति से कुछ भिन्न है। इसमें सामान्यतः तीन स्तरीय मूल्यांकन विधि अपनायी जाती है, जिसका विवरण निम्नवत है :–

1. **स्व अध्ययन सामग्री द्वारा मूल्यांकन :**

स्व अध्ययन सामग्री द्वारा शिक्षार्थी स्वयं भी करता है। इस मूल्यांकन को प्रायः परीक्षा परिणाम में नहीं जोड़ा जाता है। इस मूल्यांकन का उद्देश्य शिक्षार्थियों को समय–समय पर अपनी प्रगति की जानकारी स्वयं करना तथा तदनुसार अध्ययन योजना बनाना है । इससे शिक्षार्थी को अभिप्रेरणा मिलती है।

2. **अधिन्यास का मूल्यांकन :**

अधिन्यास द्वारा मूल्यांकन शिक्षार्थियों का सतत् मूल्यांकन शिक्षार्थियों का सतत मूल्यांकन सत्रीय कार्य के आधार पर सत्र के दौरान किया जाता है। यह परीक्षक द्वारा अथवा कम्प्यूटर की सहायता से किया जाता है। इसके अतिरिक्त जिन पाठ्यक्रमों में प्रयोगात्मक कार्य या प्रोजेक्ट कार्य अनिवार्य है, उसका मूल्यांकन अलग से किया जाता है। प्रत्येक शिक्षार्थी के लिए अनिवार्य है कि संत्रात परीक्षा में भाग लेने के पूर्व सत्रीय कार्य को समय से पूरा करें। सत्रीय कार्य का मूल्यांकन दो प्रकार से किया जाता है।

3. **सत्रांत परीक्षा :**

सत्र के अन्त में शिक्षार्थियों को सत्रान्त परीक्षा में सम्मिलित होना होता है। इस सत्रान्त परीक्षा का स्वरूप परम्परागत प्रकार का होता है। सेमेस्टर के अनुसार वर्ष में दो बार, प्रायः दिसम्बर एवं जून में सत्रान्त परीक्षा का आयोजन किया जाता है। परन्तु परिणाम घोषित करने की दृष्टि से इस विश्वविद्यालय की परीक्षा व्यवस्था प्रदेश के अन्य विश्वविद्यालयों से कुछ भिन्न है यहाँ पर शिक्षार्थियों को प्रत्येक कोर्स की निर्धारित न्यूनतम अवधि से अधिक अवधि के बीच सुविधानुसार विभिन्न प्रश्न पत्रों को उत्तीर्ण करने का अवसर प्रदान किया जाता है।

अधिन्यास/गृह कार्य के मूल्यांकन के प्राप्तांक का कुछ प्रतिशत अंक तथा लिखित परीक्षा के प्राप्तांक का तीस प्रतिशत अंक जोड़कर किसी प्रश्न पत्र का परीक्षाफल घोषित किया जाता है। परन्तु प्रत्येक प्रश्न पत्र के अधिन्यास एवं सत्रान्त परीक्षा में अलग–अलग उत्तीर्ण होना आवश्यक है। परीक्षा में अन्य विश्वविद्यालयों की भाँति अंक एवं श्रेणी प्रदान करने की व्यवस्था है। जिसे आवश्यकता पड़ने पर ग्रेड प्रणाली में भी परिवर्तन किया जा सकता है। प्रत्येक कार्यक्रम में शिक्षार्थी को श्रेणी प्रदान की जाती है।

बोध प्रश्न–

11. परम्परागत एवं दूरस्थ संस्थानों की परीक्षा प्रणाली में अन्तर बताइए

.....

.....

.....

12. सेमेस्टर पद्धति क्या है ?

.....

.....

.....

13. दूरस्थ शिक्षा में छात्र स्व–मूल्यांकन कैसे करता है ?

.....

.....

.....

15.10 सारांश

प्रस्तुत इकाई में शैक्षिक दूरस्थ छात्रों का मूल्यांकन करने के लिये प्रयुक्त किये जाने वाले परिक्षणों एवं परीक्षा के सम्बन्ध में चर्चा की गयी है। सामान्य रूप से दूरस्थ शिक्षा में मुक्त अधिगम के क्षेत्र में भी ठीक उन्ही उपकरणों का प्रयोग किया जाता है जो परम्परागत शिक्षा प्रणाली में प्रयुक्त किया जाता है। वास्तव में दूरस्थ शिक्षा में सतत मूल्यांकन की प्रक्रिया, स्वमूल्यांकन, अधिन्यास द्वारा आन्तरिक मूल्यांकन एवं सत्रीय मूल्यांकन द्वारा चलती रहती है। जैसा आप जानते है अधिन्यास में शिक्षक टिप्पणियाँ दी जाती है जिनसे छात्र सीखने के लिए प्रेरित होने के साथ अपनी कृतियां जानकर उसे दूर करने का उपाय करता है। मूल्यांकन का कार्य सिर्फ छात्र को सफल/असफल घोषित करना नहीं है वरन् इससे परामर्श सेवाओं, स्व.अध्ययन सामग्री, छात्र सहायता सेवाओं में यथोचित परिवर्तन भी लाते हैं। मूल्यांकन के तीन प्रमुख कार्यो शैक्षिक, प्रशासनिक एवं निर्देशन की चर्चा भी इस इकाई से की गयी है। दूरस्थ शिक्षा की मूल्यांकन प्रक्रिया सतत और सत्रान्त मूल्यांकन पर निर्भर करती है।

दूरस्थ शिक्षा में बहुत प्रकार के परीक्षणों का उपयोग किया जाता है जैसे अर्हता परीक्षण, निदनात्मक परीक्षण, अध्यापक निमित्त उपलब्धि परीक्षण। निबन्धात्मक और वस्तुनिष्ठ परीक्षण सर्वाधिक लोकप्रिय है। निबन्धात्मक प्रश्नों के अन्तर्गत दीर्घ

उत्तरीय और लघुउत्तरीय प्रश्न आते हैं। इस इकाई में इन दोनों प्रकार के परीक्षणों पर व्यापक चर्चा की गयी है और अन्त में दूरस्थ शिक्षा में सामान्य रूप से परीक्षा के तरीके बताये गये हैं। दूरस्थ शिक्षा में स्व अध्ययन सामग्री द्वारा छात्र स्वयं का मूल्यांकन कर सकता है। अधिन्यास जो एक प्रकार का गृह कार्य होता है उस पर अन्तिम परीक्षा का 20–30% अधिभार होता है। शेष 70–80 प्रतिशत हेतु सत्रान्त परीक्षा सेमेस्टर पद्धति के आधार पर आयोजित की जाती है।

अभ्यास कार्य

1. परम्परागत और दूरस्थ शिक्षा की परीक्षा प्रणाली की तुलना कीजिए ।
2. आपकी दृष्टि में किस किस प्रकार के परीक्षण दूरस्थ शिक्षा के लिए उपयोगी है और क्यों?
3. सामान्य ज्ञान के किसी क्षेत्र में 20 वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का निर्माण कीजिए ।
4. निबन्धात्मक परीक्षा प्रणाली की कमियाँ उदाहरण देकर समझाइए ।
5. 'सेमेस्टर सिस्टम दूरस्थ शिक्षा के लिए उपयुक्त है। विवेचना कीजिए ।

15.11 अभ्यास कार्य

1. शैक्षिक मूल्यांकन की अवधारणा स्पष्ट कीजिए ।
2. मूल्यांकन के प्रमुख कार्यो से आप क्या समझते हैं ?
3. निदानात्मक परीक्षण के उपयोग बताइए ।
4. निबन्धात्मक परीक्षण को उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए ।
5. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के प्रकारों को उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए ।

15.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. "मूल्यांकन विद्यालय कक्षा तथा स्वयं के द्वारा निर्धारित शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त करने के सम्बंध में छात्रों की प्रगति की जॉच है। मूल्यांकन का प्रमुख प्रयोजन छात्रों को सीखने की प्रक्रिया को अग्रसर एवं निर्देशित करना है। इस प्रकार मूल्यांकन नकारात्मक नहीं अपितु एक सकारात्मक प्रक्रिया है।
2. प्रचलित परीक्षा प्रणाली में निबन्धात्मक तथा वस्तुनिष्ठ दोनों प्रकार के प्रश्नों का समन्वय होता है।
3. मापन मूल्यांकन प्रक्रिया का ही एक अंग होता है। मूल्यांकन मापन की अपेक्षा एक व्यापक पद है ।

4. परीक्षण से तात्पर्य किसी पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए न्यूनतम आवश्यक ज्ञान, बोध, कौशल तथा अनुप्रयोग आदि का मापन करने वाले विधियों से है।

5. प्रमापीकृत परीक्षण वे परीक्षण होते हैं जिनमें सम्मिलित पदों या प्रश्नों का चयन उनकी मनोमितीय विशेषताओं से सम्बन्धित अनुभाविक प्रमाणों के आधार पर किया गया हो, जिनके प्रशासन व अंकन की विधि स्पष्ट व पूर्ण निश्चित हो, जिनकी विश्वसनीयता व वैधता सुनिश्चित की गई हो तथा जिनके प्राप्तांकों की व्याख्या के लिए मानक विकसित किए गए हों। ये परीक्षण व्यापक जनसंख्या की उपलब्धि का सटीक ढंग से मापन करने तथा उसकी व्याख्या करने के लिए सफलतापूर्वक उपयोग में लाये जा सकते हैं।

6. अध्यापक निर्मित परीक्षण वे परीक्षण हैं जिन्हें परामर्शदाता स्थानीय आवश्यकता व उद्देश्यों की पूर्ति हेतु बना लेते हैं इन परीक्षणों की रचना अत्यन्त सरल व सहज ढंग से की जाती है। अध्यापकगण प्रायः अपने अनुभवों, स्थानीय परिस्थितियों तथा छात्रों के उपलब्धि स्तर को ध्यान में रखकर इनका निर्माण कर लेते हैं।

7. अर्हता परीक्षणों की प्रकृति एवं इसमें सम्मिलित प्रश्न मूलतः सामान्य उपलब्धि परीक्षण के समान होते हैं।

8. इन सभी प्रकार के प्रश्नों में शिक्षार्थियों को कुछ दिये गये उत्तरों में सही उत्तर का चयन करना होता है। प्रत्यास्मरण प्रश्न तथा रिक्त स्थान पूर्ति को आपूर्ति प्रकार के वस्तुनिष्ठ प्रश्न कहा जाता है। उनमें छात्रों को अपनी स्मृति के आधार पर कुछ लिखकर उत्तर देना होता है।

9. इस प्रकार के प्रश्नों में शिक्षार्थियों को किसी विचार या पक्ष की आलोचना करनी होती है, जिससे उसकी शुद्धता, सत्यता, दृढ़ता आदि का मूल्यांकन हो सकें।

10. इस प्रकार के प्रश्नों में शिक्षार्थियों को किसी तथ्य के विभिन्न पक्षों को विश्लेषण द्वारा स्पष्ट करते हुए उन सभी का वर्णन करते हुए उनमें निहित परस्पर सम्बन्ध को स्पष्ट करना होता है।

11. दूरस्थ संस्था को शिक्षार्थियों की मूल्यांकन पद्धति अन्य परम्परागत विश्वविद्यालयों की मूल्यांकन पद्धति से कुछ भिन्न है। इसमें सामान्यतः तीन स्तरीय मूल्यांकन विधि अपनायी जाती है ।

12. सत्र के अन्त में शिक्षार्थियों को सत्रान्त परीक्षा में सम्मिलित होना होता है। इस सत्रान्त परीक्षा का स्वरूप परम्परागत प्रकार का होता है। सेमेस्टर के अनुसार वर्ष में दो बार, प्रायः दिसम्बर एवं जून में सत्रान्त परीक्षा का आयोजन किया जाता है। परन्तु परिणाम घोषित करने की दृष्टि से इस विश्वविद्यालय की

परीक्षा व्यवस्था प्रदेश के अन्य विश्वविद्यालयों से कुछ भिन्न है यहाँ पर शिक्षार्थियों को प्रत्येक कोर्स की निर्धारित न्यूनतम अवधि से अधिक अवधि के बीच सुविधानुसार विभिन्न प्रश्न पत्रों को उत्तीर्ण करने का अवसर प्रदान किया जाता है।

13. स्व अध्ययन सामग्री द्वारा शिक्षार्थी स्वयं भी करता है। इस मूल्यांकन को प्रायः परीक्षा परिणाम में नहीं जोड़ा जाता है। इस मूल्यांकन का उद्देश्य शिक्षार्थियों को समय–समय पर अपनी प्रगति की जानकारी स्वयं करना तथा तदनुसार अध्ययन योजना बनाना है । इससे शिक्षार्थी को अभिप्रेरणा मिलती है।

15.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- शर्मा, आर० ए० – डिस्टैन्स ऐजूकेशन, मेरठः ईगल बुक्स इन्टरनेशनल, 1995
- साहू, पी० के० – ऐजूकेशनल टेक्नोलोजी इन डिस्टेनसः न्यू देल्हीः अरावती, 1999
- Holmberg, B. (1977). Distance Education: A Survey and Bibliography, London Indira Gandhi National Open University: www.ignou.edu
- Kota Open University: www.koukota.com
- Madhukar N.S. (1998). Networking of Indian Open Universities: www.ouhk.edu.hk.
- NCTE: Norms and Standards for Teacher Education Institutions (M.Ed. Distance Education Including Correspondence) www.ncte-in.org
- NCTE: Norms and Standards for Teacher Education Institutions (B.Ed. Distance Education Including Correspondence) (Secondary). www.ncte-in.org

इकाई 16 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में अनुसंधान

संरचना

16.1 प्रस्तावना

16.2 उद्देश्य

16.3 अनुसंधान की अवधारणा

16.4 शैक्षिक अनुसंधान का स्वरूप

16.5 दूरस्थ शिक्षा में अनुसंधान की भूमिका

16.6 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में अनुसंधान के विषय

16.7 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में अनुसंधान की उपयोगिता

16.8 सारांश

16.9 अभ्यास कार्य

16.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

16.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

16.1 प्रस्तावना

दूरस्थ शिक्षा में पिछले कुछ दशक में बड़ी तेजी से प्रगति हुई है क्योंकि यह प्रणाली मितव्ययी तथा लचीली है। अनेक विश्वविद्यालयों एवं संस्थानों ने दूरस्थ–शिक्षा के पाठ्यक्रम आरम्भ कर दिये हैं। केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (CBSE) ने मुक्त विद्यालयों द्वारा पाठ्यवस्तु का निर्माण अभिक्रमित अनुदेशन के रूप में कराया जाता है। इन विद्यालयों में प्रवेश की संख्या बड़ी तेजी से बढ़ रही है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सुझाव के अनुसार इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना की गयी है तथा इसके अतिरिक्त राज्य स्तर पर भी मुक्त विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई है। इस प्रणाली का आरम्भ पत्राचार पाठ्यक्रम के रूप में हुआ परन्तु नवीन दूरस्थ शिक्षा प्रणाली की अपनी समस्याएं, चुनौतियां, सीमाएं तथा कमजोरियाँ भी हैं, इसलिए दूरस्थ शिक्षा पर अनुसंधान कार्यो की अधिक आवश्यकता है। अनुसंधान के आधार प दूरवर्ती–शिक्षा व्यवस्था में सुधार तथा विकास प्रभावी ढंग से किया जा सकता है। फलस्वरूप इस प्रणाली को अधिक उपयोगी तथा सार्थक बनाया जा सकता है। समाज और राष्ट्र की मूल समस्याओं का समाधान अनुसंधान कार्यों द्वारा किया जाता है। ठीक इसी प्रकार अनुसंधान का शिक्षा प्रक्रिया में भी बहुत महत्व है क्योंकि यह

सम्पूर्ण शिक्षा प्रक्रिया के सभी पक्षों का स्वरुप बदल देता है। दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में भी अनुसंधान की आवश्यकता है जिसमें कि इसके विभिन्न पक्षों का गुणात्मक सुधार हो सकें। इस इकाई में हम दूरस्थ शिक्षा में अनुसंधान के विषय में विस्तार से पढ़ेगें।

16.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात आप इस योग्य हो जायेगे कि–

- दूरस्थ शिक्षा में अनुसंधान की अवधारणा को समझ सकेगें।
- अनुसंधान की प्रकृति एवं विशेषताओं की विवेचना कर सकेगें।
- दूरस्थ शिक्षा में अनुसंधान अध्ययनों की आवश्यकता का वर्णन कर सकेगें।

16.3 अनुसंधान की अवधारणा

अनुसंधान अध्ययनों द्वारा प्रदत्तों के विश्लेषण के आधार पर किसी समस्या के विश्वसनीय समाधान को ज्ञात क़िया जाता है। यह एक व्यक्तिगत एवं सुनियोजित प्रक्रिया है जिसके द्वारा मानवीय ज्ञान में वृद्धि की जाती है और मानव जीवन को सुगम तथा प्रभावी बनाया जाता है।

वास्तव में अनुसंधान द्वारा नवीन तथ्यों की खोज की जाती है तथा नवीन सत्यों का प्रविपादन किया जाता है। अंग्रेजी में अनुसंधान को "रिसर्च" कहा जाता है व दो शब्द से मिलकर बना है। **रि+सर्च** "रि" का अग्रेंजी में अर्थ है बार–बार तथा "सर्च" शब्द का अर्थ है "खोजना"। अग्रेंज़ी का यह शब्द अनुसंधान की प्रक्रिया को प्रस्तुत करता है जिसमें अनुसंधानकर्ता किसी तथ्य को बार–बार देखता है जिसके सम्बन्ध में प्रदत्तों को एकत्रित्र करता है तथा उनके आधार पर उसके सम्बन्ध में निष्कर्ष निकालता है। विद्वानों ने इसे निम्न प्रकार से परिभाषित करने का प्रयास क़िया है।

- "शैक्षिक समस्याओं के समाधान के लिए व्यवस्थित रूप में बौद्धिक ढंग से वैज्ञानिक विधि के प्रयोग को अनुसंधान कहते हैं।यदि किसी व्यवस्थित अध्ययन के द्वारा शिक्षा में विकास किया जाय तो उसे शैक्षिक अनुसंधान कहते है।"
- शोध या "अनुसंधान एक प्रक्रिया है, जिसमें खोज प्रविधि का प्रयोग किया जाता है, जिसके निष्कर्षों की उपयोगिता हो, ज्ञान वृद्धि की जाय, प्रगति के लिए प्रोत्साहित करे, समाज के लिए सहायक हो तथा मनुष्य को अधिक प्रभावशाली बना सकें। समाज तथा मनुष्य अपनी समस्याओं को प्रभावशाली ढंग से हल कर सकें।"

- "अनुसंधान अधिक औपचारिक, व्यवस्थित, तथा गहन प्रक्रिया है जिसमे वैज्ञानिक विधि विश्लेषण को प्रयुक्त किया जाता है। अनुसंधान में व्यवस्थित स्वरूप को सम्मिलित किया जाता है जिसके फलस्वरूप निष्कर्ष निकाले जाते है और उनका औपचारिक आलेख तैयार किया जाता है।"

– जॉन0डब्लू0 बैस्ट

- "अनुसंधान की परिभाषा समस्या के अध्ययन विधि के रूप में की जा सकती है जिसके समाधान आंशिक तथा पूर्ण रूप में तथ्यों एवं प्रदत्तों पर आधारित होते है। शोध कार्यों में तथ्य–कथनों, विचारों, ऐतिहासिक तथ्यों, आलेखों पर आध ारित होते है, प्रदत्त प्रयोगों तथा परीक्षाओं की सहायता से एकत्रित किये जाते है। शैक्षिक अनुसंधानों का अन्तिम उद्देश्य यह होता है कि सिद्धान्तों की शैक्षिक क्षेत्र में क्या उपयोगिता है। प्रदत्तों का संकलन शोध कार्य नहीं है। अपितु एक प्राथमिक आवश्यकता है।"

– डब्लू0 एस0 मुनरो

स्पष्ट है कि शोध या अनुसंधान "नवीन ज्ञान की प्राप्ति के लिए व्यवस्थित प्रयास है।" यह किसी समस्या के प्रति ईमानदारी, एवं व्यापक रूप में समझदारी के साथ की गई खोज है, जिसमें तथ्यों, सिद्धान्तों तथा अर्थों की जानकारी की जाती है। शोध कार्य की उपलब्धि तथा निष्कर्ष प्रामाणिक तथा पुष्टियोग्य होते हैं जिससे ज्ञान में वृद्धि होती है।" अनुसंधान की प्रक्रिया से नवीन ज्ञान की वृद्धि एवं विकास किया जाता है। इसमें सामान्य नियमों तथा सिद्धान्तों के प्रतिपादन पर बल दिया जाता है। अनुसंधान की प्रक्रिया वैज्ञानिक, व्यवस्थित तथा सुनियोजित होती है। इसमें विश्वसनीय तथा वैध प्रविधियों को प्रयुक्त किया जाता है। यह तार्किक तथा वस्तुनिष्ठ प्रक्रिया है। अनुसंधान की प्रक्रिया में प्रदत्तों के आधार पर परिकल्पनाओं की पुष्टि की जाती है। इसमें व्यक्तिगत पक्षों, भावनाओं तथा विचारों और रूचियों को महत्व नही दिया जाता है। इन प्रभावों के लिए सावधानी रखी जाती है। अनुसंधान–कार्य में गुणात्मक तथा परिमाणात्मक प्रदत्तों की व्यवस्था की जाती है और उनका विश्लेषण करके निष्कर्ष निकाले जाते हैं।अनुसंधान –कार्य में धैर्य रखना होता है तथा इसमें शीघ्रता नही की जा सकती है। प्रत्येक अनुसंधान –कार्य की अपनी विधि तथा प्रविधियां होती है जो अनुसंधान के उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक होती है। अनुसंधान –कार्य का आलेख सावधानीपूर्वक तैयार किया जाता है तथा अनुसंधान प्रबन्ध तैयार किया जाता है। प्रत्येक अनुसंधान –कार्य से निष्कर्ष निकाले जाते है और सामान्यीकरण का प्रतिपादन किया जाता है।

16.4 शैक्षिक अनुसंधान का स्वरूप

शिक्षा का मुख्य लक्ष्य बालकों के व्यवहार मे विकास एवं परिवर्तन करना है। अनुसंधान तथा शिक्षण क्रियाओं द्वारा इन लक्ष्यों की प्राप्ति की जाती है। शिक्षण की समस्याओं तथा बालकों के व्यवहार के विकास सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन करने वाली प्रक्रिया को शैक्षिक अनुसंधान कहते है। शिक्षा के क्षेत्र में नवीन 'तथ्यों' की खोज, नवीन सिद्धान्तों तथा सत्यों का प्रतिपादन करना अर्थात् नवीन ज्ञान की वृद्धि करना। नवीन ज्ञान की शिक्षा के क्षेत्र में व्यावहारिक उपयोगिता होनी चाहिए, जिससे शिक्षण अभ्यास में सुधार तथा विकास करके उसे प्रभावशाली बना सकें। शैक्षिक अनुसंधान की समस्या क्षेत्र–शिक्षण या बाल विकास होना चाहिए। शैक्षिक अनुसंधान की समस्या का स्वरूप इस प्रकार हो जिसका प्रत्यक्षीकरण किया जा सकें तभी उसकी उपयोगिता हो सकती है। शैक्षिक अनुसंधान का कार्य शिक्षा की समस्याओं का समाधान करके उनमें योगदान करना है। अनुसंधान में वैज्ञानिक विधि, दार्शनिक विधि तथा चिन्तन का प्रयोग किया जाता है। वैज्ञानिक स्तर पर विशिष्ट अनुभवों का मूल्यांकन और व्यवस्था की जाती है। इसके अन्तर्गत परिकल्पनाओं का प्रतिपादन किया जाता है। इनकी पुष्टि से सिद्धान्तों का प्रतिपादन होता है ।

शैक्षिक अनुसंधान की विशेषताएं :

शिक्षा अनुसंधान की समस्याओं में विविधता अधिक है इसके प्रमुख निम्न हैं :

- शिक्षा अनुसंधान द्वारा नये सिद्धान्तों तथा नये नियमों का प्रतिपादन किया जाता है। इस प्रकार के अनुसंधान–कार्य व्याख्यात्मक होते है। इनके अन्तर्गत चरों के सह–सम्बन्धों की व्याख्या की जाती है। इस प्रकार के अनुसंधान कार्यों से प्राथमिक रूप से नवीन ज्ञान की वृद्धि की जाती है।, जिनका उपयोग शिक्षा की प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाने में किया जाता है।
- शिक्षा के अन्तर्गत ऐतिहासिक शोध–कार्यों द्वारा नये तथ्यों की खोज की जाती हैं इनके आधार पर वर्तमान को समझने में सहायता मिलती है। इन उद्देश्यों की प्रकृति वर्णनात्मक होती है, क्योंकि तथ्यों की खोज करके, उसका अथवा घटनाओं का वर्णन किया जाता है। नवीन तथ्यों की खोज शिक्षा–प्रक्रिया के विकास तथा सुधार में सहायक होती है।
- दार्शनिक 'अनुसंधान कार्यों द्वारा नवीन सत्यों का प्रतिस्थापन किया जाता है। इनकी प्राप्ति अन्तिम प्रश्नों के उत्तरों से की जाती है। दार्शनिक अनुसंधान–कार्यों द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों, सिद्धान्तों तथा शिक्षण विधियों तथा पाठ्यक्रम की रचना की जाती है। शिक्षा प्रक्रिया के अनुभवों का चिन्तन बौद्धिक स्तर पर किया जाता है जिससे नवीन सत्यों तथा मूल्यों का

प्रतिस्थापन किया जाता है।

- शिक्षा अनुसंधान के निष्कर्षों का व्यावहारिक प्रयोग होना चाहिये, परन्तु कुछ अनुसंधान--कार्यों मे केवल उपयोगिता को ही महत्व दिया जाता है, ज्ञान के क्षेत्र में योगदान नही होता है। इन्हे विकासात्मक अनुसंधान भी कहते है। क्रियात्मक अनुसंधान से शिक्षा की प्रक्रिया में सुधार तथा विकास किया जाता है अर्थात् इनका उद्देश्य व्यावहारिक होता है। स्थानीय समस्या के समाधान से भी इस उद्देश्य की प्राप्ति की जाती है।
- इन अनुसंधान--कार्यों द्वारा नवीन ज्ञान की वृद्धि की जाती है-- नवीन सिद्धान्तों का प्रतिपादन नवीन तथ्यों की खोज, नवीन सत्यों का प्रतिस्थापन होता है। मौलिक अनुसंधानों से ज्ञान क्षेत्र में वृद्धि की जाती है।
- अनुसंधानों से नवीन सिद्धान्तों तथा नियमों का प्रतिपादन किया जाता है। सर्वेक्षण--अनुसंधान इसी प्रकार का योगदान करते है।
- अनुसंधान कार्यों से नवीन तथ्यों की खोज की जाती है, जिनमें अतीत का अध्ययन किया जाता है और उनके आधार पर वर्तमान को समझने का प्रयास किया जाता है।
- अनुसंधान कार्यों से स्थानीय समस्याओं का अध्ययन किया जाता है, जिससे शिक्षण की प्रक्रिया में सुधार तथा विकास किया जाता है। इनसे ज्ञान--वृद्धि नही की जाती है। इन्हें प्रयोगात्मक अनुसंधान भी कहते है।

शैक्षिक अनुसंधान के कार्य :

शिक्षा अनुसंधान के प्रमुख कार्य निम्न हैं--

- शैक्षिक अनुसंधान का प्रमुख कार्य शिक्षा की प्रक्रिया में सुधार तथा विकास करना है।
- शिक्षा की प्रक्रिया के विकास के लिए नवीन ज्ञान में वृद्धि करना तथा वर्तमान ज्ञान में सुधार करना है।
- शिक्षा के विशिष्ट क्षेत्र में ज्ञान में वृद्धि करना, उसमें सुधार करना तथा प्रसार करना है।
- शिक्षा की समस्याओं का समाधान करना, छात्रों के अधिगम में विकास करना। शिक्षण की प्रभावशाली प्रविधियों का विकास करना।
- शिक्षा प्रशासन तथा शिक्षा प्रणाली में अनुसंधान प्रक्रिया द्वारा सुधार तथा विकास करना।

अतः स्पष्ट है कि शैक्षिक शोध प्रक्रिया द्वारा शिक्षा के सिद्धान्तों तथा अभ्यास में योगदान करती

है। शिक्षा शास्त्रियों को शैक्षिक प्रक्रिया के विकास हेतु नवीन प्रविधियों के प्रयोग में 'शिक्षा–अनुसंधान' सहायता करती है।

बोध प्रश्न–

1. अनुसंधान का क्या तात्पर्य है ?

.....

.....

.....

2. कार्य शैक्षिक विकास में कैसे सहायता देता है ?

.....

.....

.....

3. शैक्षिक अनुसंधान क्या है?

.....

.....

.....

4. दूरस्थ शिक्षा मे अनुसंधान की क्या आवश्कता है।

.....

.....

.....

16.5 दूरस्थ शिक्षा में अनुसंधान की भूमिका

आप जानते हैं कि दूरस्थ शिक्षा यह परम्परागत शिक्षा व्यवस्था से भिन्न है । अनुसंधान का कार्य किसी भी व्यवस्था को नयी नवीन मार्गदर्शन देना है और इसके निष्कर्ष व्यवस्था में नया आयाम देते है। दूरस्थ शिक्षा में अनुसंधान की भूमिका निम्न है :–

- मुक्त दूरस्थ शिक्षा के नियोजन को नया स्वरूप मिले और प्रभावकारी नियोजन सुनिश्चित हो सकें।
- मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में शोध व्यवस्था को पुर्नसंगठित करने के लिए

आवश्यक है।

- इसके द्वारा दूर शिक्षा को समय–समय पर पाठ्यक्रम के संचालन, सम्पादन निर्माण में गुणवत्ता सुनिश्चित करने में सहायता मिलती है।
- दूर शिक्षा को स्वशिक्षण सामाग्री की उपयोगिता एवं गुणवत्ता सुनिश्चित करने में आसानी होगी।
- यह दूरस्थ शिक्षा के संगठन व्यवस्था को प्रभावकारी बनाने में सहायक होगें।
- इसके द्वारा दूरस्थ शिक्षा में आवश्यक सम्प्रेषण प्रणाली सुनिश्चित की जा सकती है।
- पूर्व की इकाई में हम दूरस्थ अध्येताओं की समस्याओं के विषय में पढ़ चुकें है। अनुसंधान हमें इन समस्याओं के सही उपाय सुझाने का प्रयास करते हैं।
- अनुसंधान के निष्कर्ष दूर संचार माध्यमों के उपयोग के स्तर को बताने के साथ इनके प्रयोग हेतु उपायों को भी प्रदर्शित करते है।

16.6 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में अनुसंधान के विषय

दूरस्थ शिक्षा में अनुसंधान कार्य हेतु अनेक मुद्दे भी है जैसे कि–

- दूरस्थ शिक्षा के प्रोन्नति एवं विकास हेतु आवश्यक अभिवृत्ति।
- दूरस्थ शिक्षा में सम्पूर्ण गुणवत्ता प्रबन्धन की समस्या।
- अध्ययन केन्द्रों में शिक्षण अधिगम वातावरण निर्माण हेतु आवश्यक चुनौतियां।
- दूरस्थ शिक्षा के विकास हेतु प्रशासकों के अभिवृत्ति एवं जागरूकता सम्बन्धी समस्यायें।
- प्रमुख संस्था एवं अध्ययन केन्द्रों में सम्बन्ध स्थापन की समस्या।
- अध्ययन केन्द्रों में भौतिक संसाधनों की आपूर्ति की समस्यायें।
- अध्ययन केन्द्रों क सम्पू सहयोग की समस्या।
- अध्ययन केन्द्रों के निरीक्षण एवं पर्यवेक्षण की समस्या।
- परामर्श सत्रों के गुणवत्तापूर्ण प्रबन्धन को सुनिश्चित करने की समस्या।
- पाठ्यक्रम निर्माण एवं विकास की समस्या।
- दूरस्थ अध्येताओं से सम्प्रेषण की समस्या।
- दूरस्थ अधिगम के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का अभाव।
- दूरस्थ अध्येताओं के प्रति कम लगाव, सम्प्रेषण की समस्या।
- दूरस्थ अध्येताओं को शिक्षण हेतु उचित माध्यम का अभाव।
- संचार एवं तकनीकी मध्यमों द्वारा शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति।

- दूरस्थ अध्येताओं के साथ उचित सम्प्रेषण का अभाव।
- दूरस्थ अध्येताओं के लिए स्व अधिगम सामग्री के निर्माण के प्रति लगाव।
- दूरस्थ माध्यम द्वारा शिक्षण हेतु कौशल सम्बन्धी समस्या।
- परामर्श सत्रों के आयोजन सम्बन्धित समस्यायें।
- अधिन्यास कार्यों को उचित मूल्यांकन हेतु कौशल।
- दूरस्थ छात्रों को प्रतिपुष्टि से सम्बन्धित समस्या।

दूरस्थ छात्र के स्तर पर :–

अनुसंधान के विषय निम्न हो सकते हैं –

- मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के प्रति नकारात्मक/सकारात्मक दृष्टिकोण।
- मुक्त शिक्षा के प्रति रूचि एवं अभिप्रेषण।
- दूरस्थ शिक्षा के छात्र सहायता सेवाओं के प्रति दृष्टिकोण।
- परामर्शदाताओं से सहयोग की समस्या।
- सम्प्रेषण सम्बन्धी समस्या।
- स्वशिक्षण सामग्री के प्रयोग से सम्बन्धित समस्या।
- अधिन्यास कार्यों को करने, प्रस्तुत करने के प्रति अभिवृत्ति।
- आधुनिक संचार माध्यमों को प्रयोग करने हेतु दक्षता की समस्या।
- मुद्रित स्वशिक्षण सामग्री के प्रति उचित दृष्टिकोण।
- पूरक शिक्षण सामग्री एकत्र करने के प्रति दृष्टिकोण।
- प्रयोगात्मक कार्यों से सम्बन्धित समस्या।
- मूल्यांकन व्यवस्था के प्रति दृष्टिकोण।
- अध्ययन केन्द्रों में दी गयी सुविधा।
- दूरस्थ शिक्षा प्राप्त करने मे लगने वाले खर्च से सम्बन्धित दृष्टिकोण।

बोध प्रश्न–

5. अध्ययन केन्द्र से सम्बन्धित अनुसंधान क्या हो सकते हैं ?

.....

.....

.....

6. दूरस्थ छात्र की कौन–कौन से समस्यायें अनुसंधान का विषय हो सकती है?

.....

.....

.....

7. दूरस्थ अध्यापक की कौन सी समस्याओं पर अनुसंधान किया जा सकता है?

.....

.....

.....

8. प्रशासनिक स्तर की किन समस्याओं पर अनुसंधान किया जा सकता है ?

.....

.....

.....

16.7 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में अनुसंधान की उपयोगिता

प्रशासनिक समस्याओं के सम्बन्ध में :–

- भारतीय आवश्यकताओं एवं परिप्रेक्ष्य में दूरस्य शिक्षा व्यवस्था के प्रशासनिक स्वरूप का पुर्नसंगठन करना।
- दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम के उद्देश्य एवं समस्याओं को दूर करना सम्भव होगा।
- प्रमुख संस्था एवं अध्ययन केन्द्रों के मध्य समन्वय स्थापित हो पायेगा।
- निरीक्षण एवं पर्यवेक्षण तंत्र की स्थापना हो सकेगी।
- अध्ययन केन्द्रों में उपयोगी माननीय एवं भौतिक संसाधन की व्यवस्था सुनिश्चित होगी।

स्वअध्ययन सामग्री के सम्बन्ध में :

- दूरस्थ शिक्षा में पाठ्यक्रम की गुणवत्ता एवं विकास सुनिश्चित की जा सकती है।
- शिक्षण अधिगण प्रक्रिया का पुर्नसंगठन हो पायेगा।
- पाठ्यक्रम में शारीरिक, सामाजिक, संज्ञानात्मक, सर्वेगात्मक तथा अध्यात्मिक पक्षों का समावेशन सुनिश्चित होगा।
- अध्येता आवश्यकता के अनुसार विविध प्रकार के पाठ्यक्रमों का निर्माण एवं विकास हेतु आवश्यक सहयोग मिल सकेगा।

सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीक के सम्बन्ध में :

- स्वशिक्षण सामग्री के पुर्निमाण एवं विकास को सुनिश्चित किया जा सकेगा।
- अधिन्यास कार्यों के स्तर एवं प्रकार को सुनिश्चित किया जा सकेगा ।
- दूरस्थ छात्र के अनुसार आधुनिक संचार माध्यमों के प्रभावी उपयोग हेतु प्रबन्ध ा सुनिश्चित किया जा सके ।
- परामर्शदाताओं के लिए दूर संचार माध्यमों के प्रभावी प्रयोग हेतु प्रशिक्षण की

कौन–कौन से क्षेत्र है और अनुसंधान इसमें गुणवत्ता एवं प्रभाव कारिता कैसे सुनिश्चित करेगा। अब आपको स्पष्ट हो गया होगा कि अनुसंधान की आवश्यकता है। दूरस्थ शिक्षा में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा विकास की अवस्था में हैं। जहाँ बहुत संभावनाएं हैं अतः इसको प्रत्येक स्तर यथा– प्रशासनिक शैक्षणिक अधिन्यास, परामर्श, सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीक, अध्ययन केन्द्र आदि के सम्बन्ध में अनुसंधान में कार्य करना आवश्यक है।

16.9 अभ्यास कार्य

1. मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में अनुसंधान की क्या भूमिका है ?
2. दूरस्थ शिक्षा अनुसंधान के क्षेत्र बताइये ?
3. मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में अनुसंधान की आवश्यकता बताइए ?
4. मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में अनुसंधान क्या लाभ हैं ?

16.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. वास्तव में अनुसंधान द्वारा नवीन तथ्यों की खोज की जाती है तथा नवीन सत्यों का प्रविपादन किया जाता है। अंग्रेजी में अनुसंधान को "रिसर्च" कहा जाता है व दो शब्द से मिलकर बना है। **रि+सर्च** "रि" का अग्रेंजी में अर्थ है बार–बार तथा "सर्च" शब्द का अर्थ है "खोजना"। अग्रेंजी का यह शब्द अनुसंधान की प्रक्रिया को प्रस्तुत करता है जिसमें अनुसंधानकर्ता किसी तथ्य को बार–बार देखता है जिसके सम्बन्ध में प्रदत्तों को एकत्रित्र करता है तथा उनके आधार पर उसके सम्बन्ध में निष्कर्ष निकालता है।
2. अनुसंधान कार्य की उपलब्धि तथा निष्कर्ष प्रामाणिक तथा पुष्टियोग्य होते हैं जिससे ज्ञान में वृद्धि होती है।"
3. शिक्षा के क्षेत्र में नवीन 'तथ्यों' की खोज, नवीन सिद्धान्तों तथा सत्यों का प्रतिपादन करना अर्थात् नवीन ज्ञान की वृद्धि करना। नवीन ज्ञान की शिक्षा के क्षेत्र में व्यावहारिक उपयोगिता होनी चाहिए, जिससे शिक्षण अभ्यास में सुधार तथा विकास करके उसे प्रभावशाली बना सकें।
4. अनुसंधान का कार्य किसी भी व्यवस्था को नयी नवीन मार्गदर्शन देना है और इसके निष्कर्ष व्यवस्था में नया आयाम देते है।
5. 1. अध्ययन केन्द्रों के निरीक्षण एवं पर्यवेक्षण की समस्या।
   2. परामर्श सत्रों के गुणवत्तापूर्ण प्रबन्धन को सुनिश्चित करने की समस्या।
   3. पाठ्यक्रम निर्माण एवं विकास की समस्या।
6. 1. दूरस्थ अध्येताओं से सम्प्रेषण की समस्या।
   2. दूरस्थ अधिगम के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का अभाव।
   3. दूरस्थ अध्येताओं के प्रति कम लगाव, सम्प्रेषण की समस्या।
   4. दूरस्थ अध्येताओं को शिक्षण हेतु उचित माध्यम का अभाव।

5. संचार एवं तकनीकी मध्यमों द्वारा शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति।
6. दूरस्थ अध्येताओं के साथ उचित सम्प्रेषण का अभाव।

7. 1. परामर्श सत्रों के आयोजन सम्बन्धित समस्यायें।
   2. अधिन्यास कार्यों को उचित मूल्यांकन हेतु कौशल।

8. 1. प्रयोगात्मक कार्यों से सम्बन्धित समस्या।
   2. मूल्यांकन व्यवस्था के प्रति दृष्टिकोण।
   3. अध्ययन केन्द्रों में दी गयी सुविधा।
   4. दूरस्थ शिक्षा प्राप्त करने मे लगने वाले खर्च से सम्बन्धित दृष्टिकोण।

9. दूरस्थ शिक्षा में पाठ्यक्रम की गुणवत्ता एवं विकास सुनिश्चित की जा सकती है।

10. 1. स्वशिक्षण सामग्री के पुर्निमाण एवं विकास को सुनिश्चित किया जा सकेगा।
    2 .अधिन्यास कार्यों के स्तर एवं प्रकार को सुनिश्चित किया जा सकेगा ।
    3. दूरस्थ छात्र के अनुसार आधुनिक संचार माध्यमों के प्रभावी उपयोग हेतु प्रबन्ध सुनिश्चित किया जा सके ।

11. 1. दूर शिक्षा में मूल्यांकन प्रक्रिया को प्रभावी बना पायेगें।
    2. अध्येता उपयोग के अनुकुल मूल्यांकत सुनिश्चित किया जा सकेगा।
    3. सतत् आंकलन एवं मूल्यांकन का आधार तैयार होगा।
    4. मूल्यांकन तंत्र में गुणवत्त सुनिश्चित की सकेगी।

16.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- गुप्ता एस0 पी0 – आधुनिक शिक्षा मनोविज्ञानः इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन, 1999
- शर्मा, आर0 ए0 – डिस्टैन्स ऐजूकेशन, मेरठः ईगल बुक्स इन्टरनेशनल, 1995
- साहू, पी0 के0 – ऐजूकेशनल टेक्नोलोजी इन डिस्टेनसः न्यू देल्हीः अरावती, 1999
- Holmberg, B. (1977). Distance Education: A Survey and Bibliography, London Indira Gandhi National Open University: www.ignou.edu
- Kota Open University: www.koukota.com
- Madhukar N.S. (1998). Networking of Indian Open Universities: www.ouhk.edu.hk.
- NCTE: Norms and Standards for Teacher Education Institutions (M.Ed. Distance Education Including Correspondence) www.ncte-in.org
- NCTE: Norms and Standards for Teacher Education Institutions (B.Ed. Distance Education Including Correspondence) (Secondary). www.ncte-